कालज्ञान

सटीक

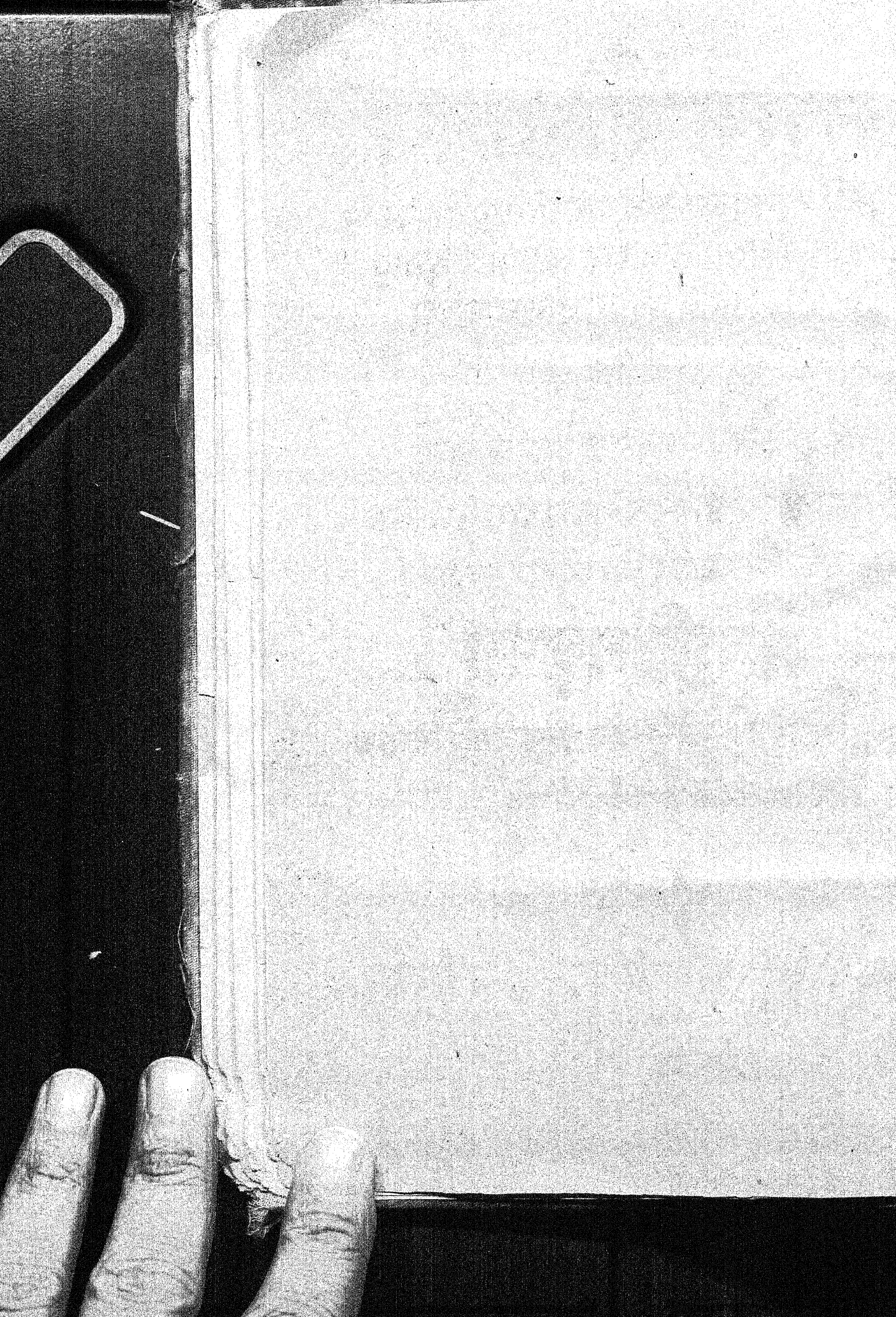
विन्ध्येश्वरीयन्त्रालय

मिरजापूर

नई कुतवाली के समीप

मिती चैत्र वदी अमावस्या

॥ सम्वत् १९२५



सटीक कालज्ञान

इदानीं नानाविध तन्त्र एवं सांगायुर्वेदान्तर्गत
॥ श्लोकावलोकन द्वारा तदीयार्थ सुसाधु
* सरल भाषा प्रणीत दीननाथ वैद्य

के आज्ञानुसार

॥ तच्छात्र रामचरण दास आचार्य्य

भिषक् ज्ञात एवं बहु पण्डित द्वारा संशोधित

॥ करके मिरजापूर विन्ध्येश्वरी यन्त्रालय

में मुद्रित हुआ

परन्तु विज्ञापन करते हैं अन ग्रन्थ हमारे बिना अ-

नुमति के अपर कोई न छापे

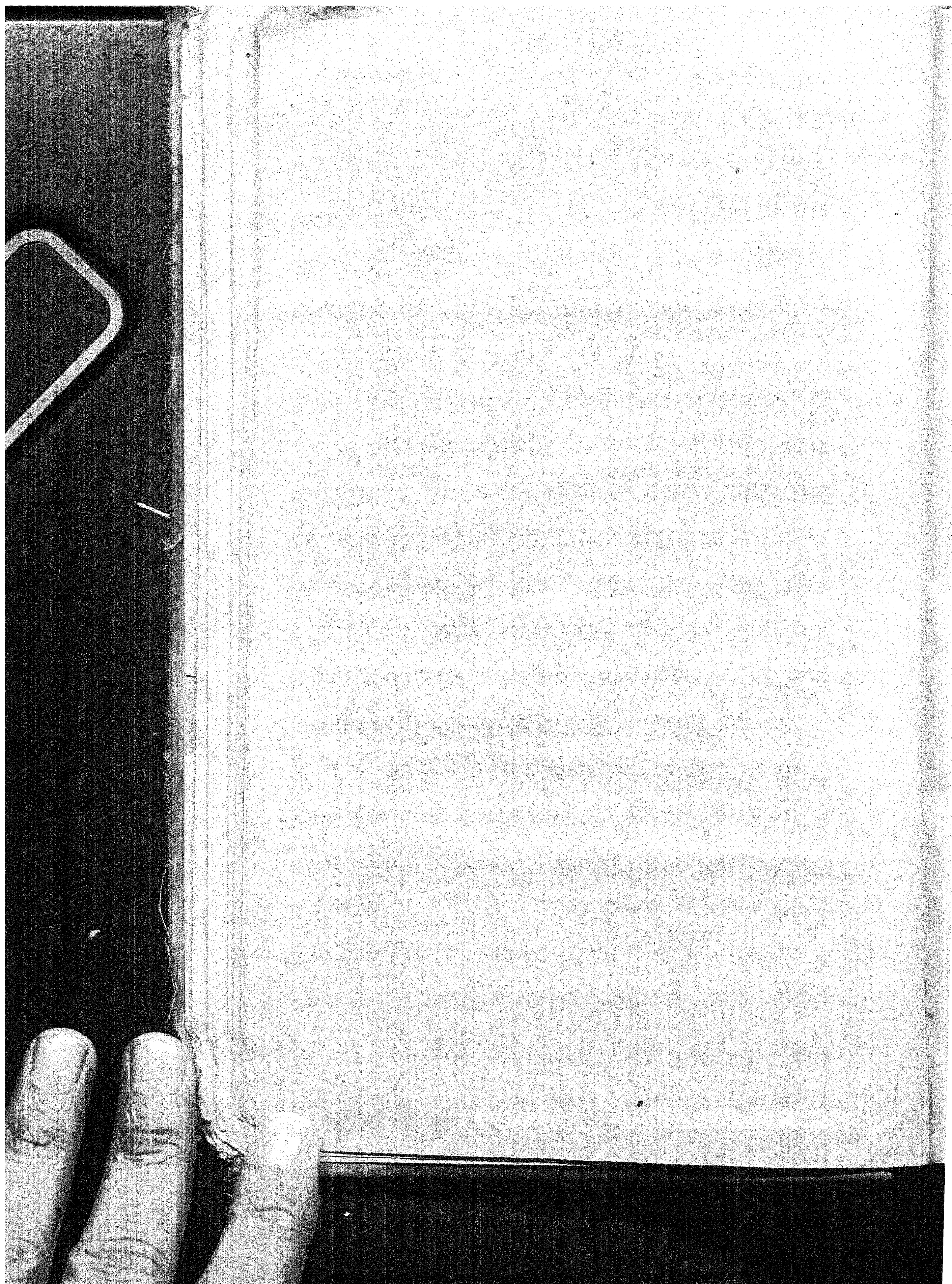
इति

सम्वत् १९२५ मिती चैत्र बदी अमावस्या

ग्रन्थ प्रति मूल्य ।)

सूचीपत्रम्

इति



भूमिका

समस्त महा महोपाध्याय जन गण सन्निधान मे विहित सम्बोधन पूर्व्वक मदीय निवेदन मेतत्,॥

पुराकाल मे एही भूमण्डल मध्ये मनुष्यों के कल्याण निमित्त अथर्व्व वेदान्तर्गत अङ्ग आयुर्वेद नामक प्रतिष्ठित शास्त्र बहु यत्न द्वारा अनेक महर्षिकृत विख्यात रहा, एवं तत्समय मे सत्यावलम्बी मनुष्य दया, धर्म्म, निष्कपटता, और शास्त्र प्रति दृढ़ विश्वास द्वारा दीर्घजीवी होते रहे, सो स्मरण होने से विषाद होता है, अर्थात् वर्त्तमान समय में संसर्ग दोष प्रयुक्त प्राणी समस्त नानाविध अहिताचार द्वारा हिन्दु शास्त्र को तुच्छ ज्ञान कर्के सम्पूर्ण अनादर किया, हा एह अत्यन्त परिताप के विषय, अर्थात् कालवस प्रयुक्त गुरू शिष्य प्रति कपटता, एवं शिष्य गुरू प्रति प्रवञ्चना, एही क्रम से हिन्दु जाति का शास्त्र विलोप होता है, विशेष कर्के वैद्यक शास्त्र एक काल मे लुप्त हुआ, अर्थात् जो आयुर्वेद दर्शी प्राज्ञ वैद्यवर हैं सो भी कहते हैं अप्रकाश्यो ऽयमभ्यास्यः पिता पुत्रेण सर्व्वदा, अर्थात् पिता पुत्र से एवं पुत्र पिता से सर्व्वदा गुप्त रखते हैं, इत्यादि अनेक कारण जन्य विद्यार्थी शीक्षा विहीन हुए, सुतरां रोगादि निवृत्ति होना अधुना दुष्कर, अतएव अल्प बुद्धि वैद्य द्वारा समुद्र तुल्य आयुर्व्वेद शास्त्र का संका समाधान होना दुःसाध्य, तत्प्रयुक्त प्राणी समस्त अल्पायु होते हैं, एही भावी आशंका प्रयुक्त नानातंत्रावलोकन अर्थात् चरकादि अनेक संहिता दृष्टिपूर्वक तत्तच्छो कार्य सुसाधु सरल भाषा मे आयुर्व्वेद सार संग्रह नामक वृहद्ग्रन्थ संग्रह किया इस ग्रन्थ मे समस्त शंका समाधान कर्के विस्तार पूर्व्वक आयुर्व्वेद व्याख्या किया, परन्तु एकत्र लिखने मे विस्तार होगा एवं ग्राहक गण ग्रहण करने मे असमर्थ होंगे अतएव खण्ड २ कर्के यथा क्रम से प्रकाश करते हैं, प्रथमतः आयुर्वेदान्तर्गत नाड़ीज्ञान, द्वितीय कालज्ञान, तृतीय अजीर्ण मंजरी, प्रकाश किया अनुपान मंजरी, और देशकाल, आयुर्वेद सार संग्रह वृहत् ग्रन्थ यंत्रस्थ हैं विज्ञापन मिति ॥*॥

वन्दना

।।श्रीगणेशायनमः।।श्रीमान्क्षीरनिधे
स्तटङ्गतवतोयोब्रह्मणःप्रार्थनांस्वीकुर्वन्नि
ह देवकीजठरतःप्रादुर्बभूवाद्भुतम् विभ्रद्रूप
मितस्ततोऽप्यभवनंनन्दस्य तत्राद्भुतम् त
त्रत्यैर्विजहारसस्मितमुखो मोदायकृष्णोऽ
स्तुनः।।२।।

टीका।।जो लक्ष्मी सहित श्रीमन्नारायणजीक्षीरस
मुद्र मे विराजमान रहे तत्तट मे ब्रह्मादिक समस्त
देवतों की दीनता स्वीकार कर्के देव की महारानी के ग
र्भ से अत्र संसार मे प्रगट भये तथा अद्भुत रूप धा
रण किया एवं वसुदेवादि स्तुत कर्के तत्पश्चान्नन्द
गोप के भवन मे सम्पूर्ण गोपियों के साथ अत्युत्तम
विहार करते भये एतादृश एवं मन्दहास युक्त सोई
श्रीकृष्णजी हम लोगों को आनन्द देय।।२।।

॥श्रीगणेशायनमः॥

अथकालज्ञानप्रकरणम्

अथाष्टमिस्थानैरामय परीक्षणम्

रोगाक्रान्तशरीरस्यस्थानान्यष्टौपरीक्षय
त नाड़ीमूत्रमलंजिह्वाशब्दस्पर्शरूप
दृक ॥१॥

अनन्तर अष्ट स्थान से आमय परीक्षा कहते हैं रोगाक्रा-
न्त शरीर विशिष्ट मनुष्यों का अष्ट स्थान से परीक्षा करें य
था नाड़ी१ मूत्र २ मल ३ जिह्वा ४ शब्द ५ स्पर्श ६ रूप ७
दृक अर्थात नेत्र एही अष्ट स्थान हैं॥१॥

दर्शनंस्पर्शनंप्रश्नैर्व्याधेर्ज्ञानंत्रिधामतम्
दर्शनान्मूत्रजिह्वाद्यैः स्पर्शनान्नाड़िकादि
भिः प्रश्नैर्दूतादिवचनादितित्रेधात दुच्य
ते ॥२॥

दर्शन स्पर्शन एवं प्रश्न द्वारा व्याधिका निरूपण होता है
अर्थात मूत्र जिह्वादि दर्शन से वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक
द्वन्द्वज सन्निपातिक लक्षण बोध होता है एवं सुखसा-
ध्य कृच्छ्र साध्य असाध्य ज्ञान नाड़िकादि स्पर्श से एवं

दूत वाक्य से तावत लक्षण बोध होना है अतएव रोग ल-
क्षण कथनानन्तर मूत्र एवं नेत्र जिह्वा चिन्ह और नाड़ि-*
ज्ञान दूत वाक्य बिचार कथित हुआ ॥ २॥

अथजिह्वापरीक्षामाह

जिह्वापरीक्षास्तिमूत्रपरीक्षाचपृथक्पृथक् ।
कथयामिसमासेनलक्षणंमुनिभाषणात् ॥
३॥

अनन्तर जिह्वा परीक्षा कहते हैं जिह्वा एवं नेत्र तथा मूत्र परी
क्षादि का ज्ञान पृथक पृथक मुनि वाक्यानुसार संक्षेप-
में कहते हैं ॥ ३॥

जिह्वापीताखरस्पर्शास्फुटितामारुताधिके
रक्ताश्यावाभवेत्पित्तेकफात्शुक्लार्द्रवा-
घना॥४॥

वायु के आधिक्य मे जिह्वा पीत वर्ण एवं खरस्पर्श अर्थात
स्पर्श मे खर एवं फटा फटा होती है और पित्ताधिक्य से*
रक्त मिश्रित श्याम वर्ण होती है एवं कफाधिक्य मे शुक्ल
वर्ण आर्द्र और घना अर्थात पुष्ट होती है ॥ ५॥

कृष्णासकंटकाशुष्कासन्निपाताधिकेमता
मिश्रितेमिश्रिताज्ञेयारिष्टेलक्षणवर्ज्जिता
मनुष्याणांभवेद्घोराजिह्वाविषविसर्पिणी
५।६॥

सन्निपाताधिक्य में जिह्वा कृष्ण वर्णा होतीहै एवं सकंटका अतएव सोई रसना कष्ट के सहित वर्त्तमान एवं कदापि धुम्रवर्णा होतीहै द्वन्द्वज दोष से उभय चिह्न होतीहै एवं नितांत मरण रूप चिन्ह वर्जिता अर्थात् कथित चिह्न का कोई चिन्ह नहीं रहता अन्य प्रकार चिन्ह होताहै एवं भयानक लम्बमाना हो के मुख से बाह्य होतीहै अथवा जिह्वा उलट जातीहै इत्यादि भिन्न भिन्न चिन्ह को असाध्य चिन्ह कहते हैं ॥५॥६॥

अन्यच्च ॥ वातेनस्फुटिताजिह्वासुप्ताशाकदलोपमा सरक्ताकंटकापित्तेश्लेष्मणासुप्तलिप्तका मिश्रलिङ्गैर्द्वन्द्वजाचसर्वैःसर्व्वंविभावयेत् ॥७॥

अन्य प्रकार चिन्ह यथा वायु मेंस्फुटितअर्थात् विदीर्णा एवं जडा और शाक पत्र तुल्याहोतीहै और पित्त में रक्त वर्णा होतीहै एवं कंटक प्राप्ताअर्थात् कंटक सदृशीहोतीहै कफ में स्पन्द रहिता एवं लेप युक्ता मिश्रित दोष में दोष द्वय का चिन्ह एवं सन्निपातिक में दोष त्रय का चिन्ह होताहै ॥७॥

जिह्वावातात्प्रसुप्तास्फुटितविकसिता शाकपत्रोपमेयापित्ताद्रक्तामदाहाभवतिचपरितःकंटकैर्व्यापरीता गुर्वीस्थू

लासपीताश्रितबहुलकफाशान्मलीकं
टकाभाः॥ः स्यात सर्व्वलिङ्गासितरुधिर
वहाचित्रवर्णानिरुक्षा॥ ८ ॥ ६॥

अन्य प्रकार चिन्ह कथित होताहे यथा वायु मे जिह्वा ज्ञा
न रहिता एवं प्रकाशित रूप मे विसीर्णा और शाक पर्ण
सदृशा पित्त मे दाह युक्ता एवं रक्त वर्णा और साकल्य स्था
न जिह्वा मे कंटक वत होताहे कफ मे स्थूला शीतला बहु
श्लेष्मान्विता एवं सेमर कंटक सदृश विशाल कांटा यु
क्त होतीहे सन्निपात मे एही साकल्य लक्षण युक्ता अ-
थच कृष्ण रुधिर वाहिनी एवं नाना वर्ण युक्ता एवं रु-
क्षा होतीहे ॥ ८ ॥ ६॥

अथ नेत्र परीक्षा माह

अरुणंधूम्रवर्णञ्च सरौद्रञ्चलचञ्चलं
अभ्यन्तरे किंचहाहं वाते नेत्रंतदुच्यते॥

वातिक मे नेत्र का एताद्दृश लक्षण होताहे अर्थात रक्त
वर्ण धूम्र वर्ण रौद्र वर्ण अर्थात भयानक वर्ण एवं चञ्च
ल और अन्तर मे किञ्चित दाह होताहे ॥१०॥

हरिद्रापीतसंकाशंरक्तंवानीलवर्णकम।
दीपद्वेषीससन्तापंपित्ते नेत्रंतदुच्यते ११

पित्ताधिक्य मे नेत्र एतद्रूप चिन्ह होताहे यथा हरिद्रा स-

दृष्टि पीत वर्ण एवं रक्त वर्ण अथवा नील वर्ण मिश्रित ❋ होताहै एवं दीप दर्शन से सन्ताप युक्त होताहै ॥ ११ ॥

सजलंविह्वलंश्वेतंज्योतिर्हीनंसचञ्चलम्
दीप्यतेमन्दमन्दञ्चतच्चक्षुःकफजंवि-
दुः ॥ १२ ॥

कफाधिक्य मे नेत्र सजल होताहै दृष्टि विह्वल शुक्ल वर्ण ज्योति हीन एवं चञ्चल अल्प दर्शन होता है ॥ १२ ॥

अन्यच्च ॥ नेत्रंधूम्रंसजलमनिले रात्रि
पीतेनतुल्यं नीलंदीपासहत्वंसरुधिरम-
सितंदाहयुक्तञ्चपित्ते मन्दंमन्दञ्चपश्ये
त्ससितजलमतःकान्तिहीनंकफात्तु द्वे
यंद्वंद्वाद्विलिङ्गंत्रिमलजनयनंश्यामभुग्नं
सरौद्रम् ॥ १३ ॥ १४ ॥

अन्य प्रकार चिन्ह यथा वायु मे नेत्र धूम्र वर्ण एवं रूक्ष और सजल एवं हरिद्रा तुल्य पीत वर्ण होताहै पित्ताधिक्य मे नील वर्ण प्रदीप द्वेषी कृष्ण वर्ण एवं रक्त वर्ण मिश्रित तथा दाह युक्त होताहै और कफ मे मन्द मन्द दृष्टि शुक्ल वर्ण जल युक्त दीप्ति हीन होताहै द्वन्द्वज मे द्विदोष का लक्षण त्रिदोष मे त्रिलक्षण मिलित एवं श्याम वर्ण और भुग्न नेत्र अति भयानक होताहै ॥ ❋ ॥
॥ १३ ॥ १४ ॥ । ।

अन्यच्च॥ शुक्लेकफेऽक्षिणीज्ञेयेरक्तेपित्ते सपीतके रूक्षेधूम्रेतथावातेसुस्थेपद्मदलोपमे श्यावंनिर्भग्नसंकाशंतंद्रामोहसमन्वितं सरौद्रंरक्तवर्णञ्चभवेच्चक्षुस्त्रिदोषजं एकचक्षुर्यदारौद्रमुन्मीलतिनिमीलति त्रिभिर्दिनैर्विजानीयात्स्ययातियममन्दिरं कालज्योतिर्विहीनञ्चगताभ्यन्तरलोचनं मन्दहष्टिर्विशेषेणाकालप्राप्तमादिशेत् एकचक्षुरचेतन्यंविभ्रमं स्फुरणंनच दिनैकेनविजानीयात्तस्यमृत्युर्नसंशयः॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥

अन्य प्रकार एही सकल लक्षणान्वित नेत्र होताहै यथाकफ से शुक्ल वर्ण पित्त से रक्त एवं पीत वर्ण वात से धूम्र वर्ण अथच रूक्ष एवं सुस्थ अतएव सपद्म पुष्पदलसदृश और सन्निपात मे श्याम वर्ण अन्तःप्रविष्ट मग्न नेत्र एवं तंद्रा मोह युक्त भयानक रक्त वर्ण होताहै सन्निपातिक लक्षणान्वित एक नेत्र यो मनुष्य भयानक रूप से उन्मीलन एवं मिलन करें सोई मनुष्य त्रय दिवस के मध्यमे यमालय गमन करतेहैं और कृष्ण वर्ण ज्योति हीन नेत्र अथच कोटराक्ष अर्थात् अन्तःप्रविष्ट नेत्र एवं मन्द दृष्टि सोई मनुष्य अवश्य करके काल

प्राप्त होतेहैं एक नेत्र चेतना रहित विघूर्णित स्फुर्ति हीन तस्य एक दिवस के मध्यमे मृत्यु होतीहै संशय नहीं ॥ * १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ * ॥

अथनासिकापरीक्षा

शुक्लाशुष्कागुरुश्यावालिप्तलुप्ताचनासिका नासिकामंडविकृतासंवृतापित्तकाचिता उर्द्धवास्फुटितास्यान्नांमरणायभवेन्नृणां ॥ २० ॥

नासिका शुक्ल वर्ण अथवा श्याम वर्ण एवं शुष्क वा पुष्ट अथवा वक्र गति होना और बैठ जाना एवं घ्राणेन्द्रिय * का नाश अर्थात् गंध रहित एवं स्फुटिता होताहै वा अन्य पीडा युक्त होताहै एवं नासाग्र मे अत्यन्त स्फोटक होताहै एतादृश चिन्ह मृत्यु लक्षण अपर मल चिन्ह एवं निश्वास चिन्ह और नेत्र तथा त्वचा चिन्ह इत्यादि स्वस्व रोग के निदान मे विख्यात करैंगे यथा अतीसार मे मल चिन्ह श्वास अथवा अन्य रोग मे निश्वास का चिन्ह एवं आंत्रिक रोग मे और ज्वर कास इत्यादि रोग मे घर्म्म चिन्ह अर्थात् पसीना तथा हलीमकादि रोग मे नेत्र चिन्ह निर्दिष्ट होताहै सो पश्चात् विख्यात करैंगे ॥ २० ॥

अथमूत्रपरीक्षा



पश्चिमेरजनीयामे घटिकापाश्चतुष्टये उत्था
यरोगिणांवैद्योमूत्रोत्सर्गन्तुकारयेत् आद्य
धारांपरित्यज्यमध्यधारासमुद्भवम् शुभ्रेका
ञ्चमयेपात्रेधृत्वामूत्रंपरीक्षयेत् संगृह्यरो
गिणोमूत्रंसूर्य्यरश्मिषुधारयेत् तस्यमध्ये
क्षिपेतैलंततोरोगंविचारयेत् ॥ २१ ॥ २२ ।
२३ ॥

रात्रि के उत्तरार्द्ध द्वितीय प्रहर मे चतुर्घटिका अवशिष्ट रहने से वैद्य रोगी को उत्थान कराय के मूत्रोत्सर्ग करावें तत्पश्चात् मूत्र का प्रथम धारा परित्याग करके मध्य धारा मूत्र को दिव्य कान्च पात्र मे निक्षेप करें सोई मूत्र सूर्य्यो-दय समय घर्म्म मे स्थापन करके तैल विन्दु निक्षेप द्वारा रोग का विचार करें ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

पित्तेनपाण्डुरंमूत्रंसफेनंकफरोगिणाम् ।
रक्तवर्णंभवेत्वातेद्वन्द्वजेमिश्रितंभवेत् ॥
सन्निपातेतुकृष्णंस्यादेतन्मूत्रस्यलक्षण
म् ॥ २४ ॥

पित्ताधिक्य मे श्वेत लोहित मिश्रित वर्ण मूत्र होता है अर्था-त् पाण्डु वर्ण एवं वात दोष मे रक्त वर्ण और कफ कोप-मे फेन विशिष्ट द्वि दोष मे द्वि चिन्ह एवं त्रिदोष मे मिलि-त चिन्ह यथा वात पित्त मे पीत एवं रक्त वर्ण वात श्लेष्मा

मे फेनाधिक्य एवं रक्त वर्ण पित्त श्लेष्मा मे पाण्डु वर्ण एवं * फेन युक्त समस्त मिलित अर्थात् त्रिदोष मे कृष्ण वर्ण होताहै ॥ २४ ॥

अन्यच्च ॥ अच्छं चरूक्षञ्च सितञ्च वातात् दुष्णारुणं पीतमथोऽतिपित्तात् स्निग्धं घनं शुक्लतरं कफाच्च मिश्रे तु मिश्रं स कलस्य चिन्हं वातेन मंडं वन्धाति पित्ते न बुद्बुदायते, कफे न विन्दु मायाति निमज्जति त्रिदोषके ॥ २५ ॥

प्रमाणान्तर कहते हैं वाताधिक्य मे मूत्र निर्मल एवं रूक्ष तथा सित वर्ण होताहै एवं पित्ताधिक्य मे उष्ण मिलित रक्त वर्ण एवं पीत वर्ण और कफाधिक्य मे स्निग्ध एवं सान्द्र अतिशय शुक्ल वर्ण एवं त्रिदोष मे मिश्रित सम्पूर्ण चिन्ह होताहै और वात दोष से मूत्र मंडाकार अर्थात् जम जाताहै तथा पित्त दोष से बुद्बुदाकार एवं कफ से विन्दु भाव प्राप्त होताहै सन्निपात से मूत्र मे तैल विन्दु निमग्न होताहै ॥ २५ ॥

भद्रपीठ पृथु कदर्पण पद्म छत्र शंख सचामर वीणाः कुण्डलाकृति यदि भवेत्तैलं रोगिणो हि यस्य सतु साध्यः ॥ २६ ॥

जो रोगी के मूत्र मे तैल विन्दु निक्षेप करने से भद्रपीठ

अर्थात पीड़ा के ऊपर चित्राकार सदृश दृश्य होय एवं पृथुक अर्थात् चिउरा वा चिपिटक के आकार एवं दर्पणाकार और पद्म पुष्प सदृश किम्वा छत्राकृति तथा शंख सदृश एवं चामर तुल्य किम्वा वीणाकृति अथवा कुण्डलाकार होता है सोई रोगी का रोग साध्य जानना॥ २६॥

पक्षिकूर्म्मवृषसिंहशूकरैः सर्पवानरवि
तान वृश्चिकैः कुक्कुटैः सदृशन्तु रोगिणो-
यस्य मूत्र पतितं सगतायुः॥ २७॥

रोगी के मूत्र में तैल विन्दु पतित होने से यदि पक्ष्याकार कच्छपाकार वृषाकार सिंहाकार शूकराकार सर्प विडाल्लाकार वृश्चिकाकार एवं कुक्कुटाकार विशिष्ट हो यतो सोई रोगी गतायु अतएव शान्ति उपाय रहित जानना॥ २७॥

श्वेतधारा महाधारा पीतधारा तदा ज्वरः र
क्तधारा दीर्घरोगः कृष्णा च मरणं ध्रुवं सौवी-
रासमं सक्तं मातुलुङ्ग समप्रभम् पानी
यस्य समं मूत्रं अपक्वरसतो भवेत् २८

श्वेत धारा एवं महाधारा तथा पीत धारा मूत्र स्राव से ज्वर रोग एवं रक्त धारा से दीर्घ रोग और कृष्ण धारा से ध्रुव मरण होता है एवं सौवीर अर्थात् सिरका सदृश

वानराकार

वर्ण मूत्र होने से शुभ एवं मातुलुङ्ग अर्थात विजौरा नी-
बू वर्ण सदृश आकृति होने से शुभ एवं जल तुल्य आ-
कृति द्वारा अपक्व रस होता है ॥ २८ ॥

अधोवहुलमारक्तं मूत्रमालोक्यते यदा
वदंति तदतीसार लिङ्गं तल्लिङ्गवेदिनः
जालोदरसमुद्भूतं मूत्रं घृतकणोपमम
आमवाते वसा तुल्यं तक्र तुल्यं तु जाय-
ते वातज्वरसमुद्भूतं मूत्रं कुंकुम पिंजरं
मलेन पीत वर्णञ्च वहुलञ्च प्रजायते-
॥ २९ ॥

अधो भाग में अत्यन्त रक्त दृष्टि द्वारा अतीसार रोग एवं घृत
कणा सदृश मूत्र दर्शन से जलोदरी रोग होता है आम वात
में वसा सदृश एवं तक्र तुल्य मूत्र होता है वात ज्वर में कुं-
कुम सदृश पीत रक्त वर्ण मूत्र एवं मल द्वारा पीत वर्ण
एवं बाहुल्य होता है ॥ २९ ॥

पीतमच्छं च जायेत मूत्रं पित्तोदये ति सम-
धातो पुनः कूप जलतुल्यं प्रजायते मूत्रञ्च
कृष्णतां याति क्षयरोगाकुलस्य च क्षयरो-
गो भवेद्यस्य तमसाध्यं विनिर्दिशेत् ऊर्द्ध पी
तमधो रक्तं मूत्रं वैद्यवरस्तदा पित्तप्रकृति
संभूतं सन्निपातस्य लक्षयेत ॥ ३० ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥

पित्ताधिक्य मे पीत और स्वच्छ अर्थात निर्मल मूत्र होताहै तथा समधातु मे कूप जल तुल्य होय रोगा कुल मनुष्य का कृष्ण वर्ण मूत्र होताहै मांद्य क्षय रोगवान् मनुष्य असाध्य होतेहैं एवं ऊर्द्ध भाग मे पीत और अधो भाग मे रक्त दर्शन द्वारा वैद्य वर पित्त प्रकृति संभूत सन्निपात वा त्रिदोष का लक्षण कहतेहैं ॥३०॥३१॥३२॥

यस्येक्षुरससंकाशंमूत्रंनेत्रेचपिंजरे रसा
धिक्यंविजानीयान्निर्दिशेत्तस्यलंघनं पी
तंचवहुलंचैव आमवातात्मजायते रक्तं
स्वच्छंचयन्मूत्रंतज्ज्वराधिक्यलक्षणम्
धूम्रवर्णंयदामूत्रंज्वराधिक्यंवदेत्तदा कृ
ष्णमच्छंचजानीयात्सन्निपातज्वरोद्भवम्
॥३३॥३४॥३५॥

जिस मनुष्य का मूत्र इक्षुरस के सदृश होय एवं नेत्र पिञ्जर वर्ण होय तो रसाधिक्य ज्ञान करके लंघन का निर्देश करे पीत वर्ण एवं बहु मूत्र होने से आम वात रोग होताहै रक्त एवं स्वच्छ मूत्र से ज्वराधिक्य लक्षण होताहै धूम्र वर्ण मूत्र से ज्वराधिक्य कृष्ण एवं स्वच्छ मूत्र से सन्निपात ज्वर ३६॥३७॥३८॥

पीतंतथोपरिकृष्णच्छायंवुद्बुदसंयुतं मूत्रं
प्रसूतिदोषेणसंशयोनात्रवैद्यराट् आपीत

रक्तफेनाधिमस्तु चेक्षुरसोपमम् पित्ते निले कफे
मूत्रं निरामे चज्वरे भवेत् तैलविन्दुर्यदा मूत्रं वि
कारान्न कुरुते स्वयम् स्वरूपं तस्य वक्ष्यामि शु
भाशुभ चिकित्सितम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

पीत तथा उपरि भाग में कृष्ण एवं बुद्बुद युक्त मूत्र होने से प्रकृति-
दोष तथा पित्ताधिक्य से पीत वर्ण एवं वाताधिक्य से रक्त तथा कफा-
धिक्य से फेन तुल्य और निराम से मस्तु अर्थात् बिजोरा नीबू सदृ
श एवं ज्वर में इक्षु रसोपम होता है एवं मूत्र में तैल विन्दु विकृतिमा
त्र होय तो सोई मूत्र का स्वरूप और शुभाशुभ एवं चिकित्सा कह
ते हैं ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

चिकित्सकैः कूर्म्म हलं सौरभाकृति जंभुजं करभं
माण्डलं कोलं असाध्यस्यैव लक्षणम् चतुःपंथं-
त्रिपंथञ्च द्विपंथञ्चैव दृश्यते एकपंथं यदा वि
न्दुर्मृत्युस्तस्य न संशयः शास्त्रं खड्गं धनुर्दण्डं मु
सलं वज्रपल्लकं लकुटाकारं यदा तैलं तत्क्षणा
वावशानिकम् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

कूर्म्म हल वत्साकृति भुजा करभ माण्डल सूकर एतत्सम-
स्त तुल्य मूत्र होने से चिकित्सक द्वारा असाध्य लक्ष्य होता है
चतुःपथ त्रिपथ द्विपथ और एक पथ एतादृश मूत्र होने से मृत्यु
होती है यथा शास्त्र खड्ग धनुष दण्ड वज्र पल्ल मूसल एवं लगुडा-
कार एतादृश होने से मृत्यु होती है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

हंसकारण्डसम्पूर्णं तडागं दृश्यते यदा पद्मरूपं फलाकारं तैलमात्रे प्रजायते सर्व्वदा सकलं गात्रं प्रासादं गज चामरं छत्रं च तोरणं चैव तैलबिन्दु श्चिरायुषं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

हंस और कारण्ड अर्थात् वत्तक एवं तडाग तुल्य तथा पद्माकार और फलाकार एतादृश तैलविन्दु होने से एवं सर्व्व काल में शरीर गृह गज चामर छत्र तोरण एतादृश तैल विन्दु होने से मनुष्य चिरायु होतेहैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

तैलविन्दुर्यदा मूत्रे चालनिच्छिद्रसन्निभः शाकिन्यागोत्रदेव्याश्च हयोर्दोषसमुद्भवः मूत्रमध्ये यदा तैलं पुरुषाकारश्च दृश्यते गृहदोषश्च देव्याश्च विजानीयाद्विचक्षणः मूत्रमध्ये यदा तैलं माण्डलं वंधयेध्रुवं निर्द्दोषञ्च ततो ज्ञात्वा औषधं चैव कारयेत् ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

मूत्र में तैलविन्दु चालनी के छिद्र सदृश होय तदा शाकिनी एवं गोत्रदेवी एही द्वय के दोष से रोगोत्पत्ति होताहै तथा मूत्र में तैल निक्षेप द्वारा पुरुषाकार दर्शन होने से गृह एवं देवी के दोष से रोग होताहै तथा मूत्र में तैल विन्दु माण्डलाकार दर्शन होय तदा निर्दोष ज्ञान करके औषधी करना चाहिये ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९

तैलविन्दुर्यदा मूत्रे त्रिकोणाढ्यं प्रजायते शाकिन्यागोत्रदेव्याश्च द्वाभ्यां दोषसमुद्भवः तैलविन्दु

यदामूत्रेचालिनीसदृशोभवेत् प्रेतव्यंतरपोदोषं
ध्रुवंज्ञेयंचिकित्सकैः तैलविन्दुर्यदामूत्रेनराका
रंप्र जयते गृहदोषञ्च देव्याश्चविचार्य्योऽयंनि
त्रक्षणे : ॥५०॥५१॥५२॥

मूत्र मे तैल बिन्दु त्रिकोणाङ्क तुल्य होने से शाकिनी और गोत्र देवी इन्ही द्वय से दोष उत्पन्न होता है तैलविन्दु चालनी सदृश होने से प्रेतजनित दोष एवं नराकार होने से गृह और देवी के के दोष विचार्य्य है ॥ ५०॥५१॥५२॥

तैलविन्दुर्यदामूत्रे मंडपं वद्दयेत्ततः निर्दोष
ञ्चततोज्ञात्वाभेषजंतन्नकारयेत् पूर्व्व-
स्यांवर्द्दतेतैलविन्दूनांप्रसरोयदि आरोग्य
तातदानूनंरोगोनेवायुषोस्तुधि ॥५३॥५४

मूत्र मे तैलविन्दु निक्षेप द्वारा मंडप सदृश दर्शन होने से निर्दोष ज्ञान करके औषधी न करै एवं पूर्व्व दिशा मे तैल वर्द्धन होने से और तैलविन्दु प्रसार होने से आरोग्यता और आयु वृद्धि निश्चय होती है ॥५३॥५४॥

दक्षिणस्यांयदाज्ञेयंतैलविन्दुःप्रसर्प्यति कि-
यद्भिर्वासरैस्तस्यमृत्युरेवनसंशयः कौवेरींना
रुणींचैवतैलविन्दुःप्रसर्प्यति आरोग्यंचत-
दानूनंपुरस्यापिप्रजायते ईशान्यांतैलविन्दूनां
प्रसरोयदिजायते सजीवेन्मासमेकन्तुपश्चा

ग्नानियमालयम् ॥५५॥५६॥५७॥

दक्षिण दिक में तैल प्रसार होनेसे अल्प काल में मृत्यु कहना चाहिये उत्तर तथा पश्चिम दिक में प्रसार होने से आरोग्य तथा ईशान दिक में प्रसार होने से एक मास के पश्चात रोगी यमालय गमन करता है ॥५५॥५६॥५७॥

प्रसारो यदि तैलस्य नैऋत्यां दिशिमाश्रितः सच्छि द्रञ्च भवेन्मूत्रं तस्य मृत्युर्न संशयः वायव्यां दि शिमाश्रित्य तैलस्य प्रसरो भवेत् सरोगी यमगेहं-वशीघ्रं कोऽपि करोति सः ॥५८॥५९॥

नैऋत्य दिक में तैल बिन्दु प्रसारण करने से एवं मूत्र सच्छिद्र दर्शन होने से मृत्यु होती है एवं वायव्य दिक में प्रसार होने से रोगी का यमालय में शीघ्र वास होता है ॥५८॥५९॥

अथ कालज्ञान विवरणं व्याख्यास्यामः।

कालज्ञानं कालपुत्रं शम्भुना यत्र भाषितम् मासैः षड्भिरथाऽयोक्तं ज्ञायते मरणं नृणाम् काल स्त्रिविधो ज्ञेयस्त्वतीतोनागतस्तथा वर्त्तमा-नस्तृतीयोन्यस्तं वक्ष्ये च्छृणु पुत्रक कालः कल्पयंते विश्वं कालश्च सृजति प्रजाः कालः काल्पयते लोकान् तेन कालो विधीयते ॥६०॥६१॥६२

अनन्तर कालज्ञान विवरण कहते हैं काल पुत्र कालज्ञान शिवद्वारा उक्त भया जिस कालज्ञान विषय में मनुष्यों का षट् मास म

रणावधि शेष रहने से मृत्युज्ञान होताहै सो काल त्रिप्रकार है हे पुत्र श्रवण करो यथा भूत काल अर्थात् गतकाल एवं वर्त्तमान अर्थात् उपस्थित काल और भविष्यत् अर्थात् भावी काल सोई काल से विश्व का स्थिति पालन एवं संहार होताहै अतएव कालनाम विधान हुआ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

अथ कालप्रशंसा

कालःसृजतिभूतानिकालःसंहरतेप्रजाः कालः स्वपतिजागर्तिकालोहिदुरतिक्रमः कालेदेवाविनश्यंतिकालेचासुरपन्नगाः नरेन्द्राजन्तवःसर्व्वे सर्व्वेकालेचनश्यति कालोहिभगवान्विष्णुः स्वयंकालोमहेश्वरः ब्रह्मापिकालरूपीचवर्त्तते-कालसंज्ञया॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

काल से समस्त भूतों का पालन एवं संहार होताहै और सोई काल शयन एवं जागरण करते हैं सो अति पराक्रम युक्त है एवं काल प्राप्त होने में देवता असुर मनुष्य तथा यावज्जीव का नाश होताहै किन्तु विष्णु भगवान शिव ब्रह्मा एतत सर्व कालज्ञान द्वारा वर्त्तमान-हैं ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

कालेचफलतेवृक्षःकालेधान्यंप्रजायते कालेचद्रवंतंनारीमांऽपिकालांविधीयते कालेनक्षत्रःपिंडासांनकालोमहिषासनः चन्द्रार्त्येस्तरेणेवसांऽपिकालांविधीयते विरंचिदिनमध्येतुपतंतीन्द्राश्चतुर्दश

सत्वादिसतिमानेषुसोऽपिकाले विनश्यति।६६
६७॥६८॥

पुनः काल मे वृक्ष फल युक्त एवं धान्य प्राप्ति तथा स्त्रियों का रजोदर्शन इत्यादि सर्व्व सम्भव होताहै एवं काल से कृष्ण पीत वर्ण होताहै एवं ब्रह्मा के एक दिन मे चतुर्दश इन्द्र पतन होतेहैं एवं ब्रह्मा का नाश काल प्राप्त होनेसे होताहै ॥६६॥६७॥६८॥

मानुषः शतजीवी च पुरावेदेषुभाषितम्। विकर्म्म
णः प्रभावेन शीघ्रकालेविनश्यति वर्षाशीतंतथा
चोष्णंप्रत्यूषंमध्यमंदिनम्। अपराह्णेतथारूप
कालःकालेनकथ्यते क्रोधलोभप्रसंगेन कालः
कलतिप्राणिनां ज्ञानयोगसदाभ्यासैःकालोर
क्षतिसर्व्वदा॥६९॥७०॥७१॥

मनुष्यों का आयुर्बल शतवर्ष पूर्व्वमे वेद द्वारा उक्त हुआ पापकर्म्म प्रभाव से स्वल्प काल मे नाश को प्राप्त होतेहैं तथा वर्षा शीत ग्रीष्म एवं दिवा प्रातः मध्यान्ह अपरान्ह एही समस्त काल उक्त हुआ क्रोध एवं लोभ प्रसंग द्वारा काल प्राणियोंका नाश कर्ता एवं ज्ञान योगाभ्यास द्वारा रक्षित होताहै ॥६९॥ ७०॥७१॥

कालेपानीयमशनंकाले वीजन्तुवापयेत्। का
लेकर्म्मसमुद्दिष्टंविपरीतेविपर्य्ययः नाकाले
म्रियतेकश्चिन्नास्तिजीवत्यकालजः योयस्मिन्म्रि

यतेकश्चिद्विद्धः शरशतैरपि कालप्राप्तस्यकौंते-
यवज्रायन्ते तृणान्यपि एकोत्तरंमृत्युशतंब्रु-
वतेवेदवेदिनः तत्रैकः कालसंयुक्तः शेषाआगं-
तवःस्मृता ॥७२॥७३॥ ७४॥

काल मे जलपान एवं अन्न भोजन वीजवापन कर्म्मोदिपा हो-
ताहै एवंविपरीत मे विपर्य्यय काल प्राप्ता भाव से प्राणियों का मृत्यु
एवं जन्म नहीं होता अकाल मे शत वाण वेध द्वारा मृत्यु नहींहोती
एवं काल प्राप्त भावसे तृण वज्र तुल्य होताहै एकोत्तर शत वर्ष-
मृत्यु काल वेद वादी द्वारा उक्त हुआ तत्र एक काल संयुक्त एवं
शेष आगन्तुक काल॥७२॥७३॥७४॥

यथावर्षाप्यकालेषु यथापुष्पंयथाफलम् यथा-
स्याद्दीपनिर्वापमकालेमरणंतथा जलमग्नि-
विषंशस्त्रंस्त्रियोराजकुलानिच अकालमृत्युवो
ह्येतेतेभ्योविभ्यंति पण्डिताः ॥७५॥७६॥

यादृश अकाल मे वृष्टि एवं पुष्प फल और दीप निर्वापन होताहै
तादृश जल अग्नि विष शस्त्र स्त्री राज कुल एही समस्त से अका
ल मृत्यु कथित भया और इत्यादि अकाल मृत्यु स्थान से पंडि-
त जन त्रासित होतेहैं॥ ७५॥७६॥

अस्त्रमेनियथावानादीपस्तैलादिसंयुतः नि
र्व्वातरक्षणाद्देहीनथैवागन्तुमृत्युभिः येचा-
प्यागन्तवःप्रोक्तास्तेप्रशाम्यंति भेषजैः विविधै

र्म्मंत्रमांगल्यैःकालमृत्युःप्रशाम्यति नायु-
र्धैर्विषविप्राद्यैर्नैर्धिर्नरान्नमश्विनौ उपक्रमेयं
नभवेदकालमरणंयदि॥ ७७ ॥७८॥७९।

यादृश तैल पूर्ण दीप अस्त गत होताहै तादृश वायु रक्षार-
हित होनेसे प्राणियों का मृत्यु होतीहै एही आगन्तुक मृत्यु
कथित हुआ तत्र भेषज एवं विविध प्रकार मंत्र तंत्र मंगलाचर-
ण से शान्ति होताहै एवं मृत्यु काल प्राप्त होने से अश्विनीकु-
मार के अस्त्र एवं औषधी तथा ब्राह्मण के मंत्र से मृत्यु निवृत्त
नहीं होती॥७७॥७८॥७९॥

अथ शरीर रक्षणो पदेशः॥*।

सर्व्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।
तदभावेहिभावानांसर्व्वभावःशरीरिणां नग
रीनगरस्येवरथस्येवरथीसदा स्वशरीरस्य
मेधावीकृत्येष्वेवहितोभवेत् हितमभ्यस्य
तःपुंसोनाकालेकालदृष्टिना संजायतेप-
रामर्षोवलोत्साहेन्द्रियायुषम्।८०।८१।८२

मनुष्य अन्य समस्त कार्य्य परित्याग करके शरीर पालन क-
रैं यद्देतुक शरीर भावसे शुभ एवं अशुभ भाव समस्त का अ-
भाव होताहै यादृश नगर वासी नगर पालन एवं रथी रथ पाल-
न करते हैं तादृश बुद्धिमान मनुष्य शरीर के कार्य्य मे हित-
कर होतेहैं एवं शरीर हिताभ्यस्त पुरुष के अकाल मे काल दृ-

ष्टिद्वारा पराक्रम उत्साह इन्द्रिय आयुर्बल इत्यादि का ज्ञान होताहै ॥८०॥८१॥८२॥

अहितानि च संत्यज्य दोषमप्याप्नुयादपि न
थाप्यानृण्यमायाति साधूनां सात्म्यवान्यपि हि
ताहारविहाराणां सदाचारनिषेविणां लोक
द्वयमपेक्षाणां जीवितममृतायते विदुषा-
न्तःशरीरस्थान नित्यं सन्निहितानरीन् जि
त्वा वर्ज्यानि वर्ज्यानि चिरंजीवीतुमिच्छ-
ता॥८३॥८४॥८५॥

हित आहार एवं विहार तथा सदाचार वलोकन द्वय अपेक्षा युक्त पुरुष का जीवित अमृत तुल्य होताहै एवं चिरंजीवी होने की इच्छा करके पंडितजन नित्य सन्निहित शत्रु को विजय-करके स्थित रहते हैं ॥८३॥८४॥८५॥

कालाग्निर्जठरे यातितस्य वाञ्छा चतुर्विधा
आहार उदकं निद्रा कामं चैव चतुर्थक-
म् अन्नहीना द्हेद्धातुम् क्षुहीनाच्छशो
णितं कामहीनाद्दहेच्चक्षुर निद्रारोगका-
रिणी॥८६॥८७॥

कालाग्नि के जठर मे प्राप्त होने से चतुःप्रकार वाञ्छा होतीहै यथा आहार जल निद्रा काम तन्मध्ये अन्न प्राप्त न होने से धातु नाश होताहै और जलाभाव होनेसे रक्त शुष्क

एवं कामा भाव से नेत्र क्षय प्राप्त एवं निद्रा भाव से रोग प्राप्त होता है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

॥ अथ म्रियमाण लक्षणम् ॥

आत्मा शरीरं श्रुत्युक्तं मन अन्तरात्मा मनो भवेत् परमात्मा भवेत्प्राणः पञ्च तत्वानि धारयेत् वर्ण हीनं यदात्मानं पश्यत्यात्मा कथञ्चन: नासौ जीवति लोकेस्मिन् कालेनैवावलोकितः ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

श्रुति द्वारा उक्त हुआ शरीर का आत्मा संज्ञा मन अन्तरात्मा एवं प्राण परमात्मा सोई प्राण पञ्च तत्व को धारण करते हैं यदि आत्मा मन द्वारा विकृत दर्शन प्राप्त होय तो मनुष्य लोक मे जीवित नहीं रहते कालावलोकन से उक्त हुआ ॥ ८८ ॥ ८९ ।

अथ पाक्षिक मृत्यु लक्षणम्

प्रकृतिस्थ: सदा जीवे विकृतिं श्चैव गच्छति सच वै काल दृष्टस्तु कियते ज्योति वर्जित: सम्पूर्णो वहते सूर्य: सोम श्चैव न दृश्यते पक्षं न जायते मृत्यु: कालज्ञानेन भाषितम् ॥ ९० ॥ ९१ ।

प्रकृतिस्थ जीव विकृति प्राप्त होने से काल दृष्ट ज्योति वर्जित होते हैं अर्थात् सूर्य सम्पूर्ण दर्शन होय एवं चन्द्रमा दर्शन रहित होय तो पञ्चदश दिवस में सोई मनुष्य मृत्यु प्राप्त होते हैं कालज्ञान द्वारा उक्त हुआ ॥ ९० ॥ ९१ ॥

यस्य वस्त्रे स्वरे गन्धो वा गात्रानन योरपि तस्या
ई मासिकं ज्ञेयं योगिनां देवि जीवनम् ॥ ९२ ॥

हे देवी जिन्के वस्त्र मे कंठ स्वर मे गात्र मे एवं मुखादि मे गन्ध होय सो व्यक्ति योगी होने से भी अर्द्ध मास पर्य्यन्त जीवित रह के मृत्यु प्राप्त होते हैं ॥ ९२ ॥

मासेन स्वड्भिर्मासैश्च पक्षेणैव त्रिमासिकम् प
ञ्चरात्रेण मासैकं मृत्योश्चैव हि लक्षणम् उद
पः सूर्य्य मार्गेण चन्द्रेणास्त गतं यदि ददाति शु
णासंघातं विपरीते विपर्य्ययः चन्द्रोदये यदा
सूर्य्यः चन्द्रः सूर्य्योदये तथा अशुभं हानि रुद्वे
गः शुभं सर्व्व निजोदये ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

षाण्मासिक मासिक पाक्षिक त्रैमासिक पञ्च मासिक एवं पञ्च रात्रिक एही समस्त मृत्यु के लक्षण हैं और सूर्य्य मार्ग से उदय एवं चन्द्र मार्ग से यदि अस्त प्राप्ति होय तदा समस्त शुभ होता है एवं चंद्रोदय मे सूर्य्य सूर्य्योदय मे चन्द्रमा उदय होंय तदा अशुभ हानि उद्वेग एवं निजोदय मे शुभ प्राप्ति होता है ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

अथ सूर्य्य चन्द्र स्वर लक्षणम्

शुक्लपक्षे भवेद्वामा कृष्णपक्षे च दक्षिणा उभ
योस्त्रिदिनान्याहुर्दैवयते चन्द्र सूर्य्ययोः पञ्च
भूतात्मको दीपः प्राणिस्नेहेन संयुतः वात

स्परसिता सूर्य्य स्नेन् जीव स्थिरो भवेत आत्मादी पशिषा तेन आयुः स्नेहक लामतः कालःक ज्जलसंभारो वर्त्तिर्षा ननुस्मृता ॥९६॥९७ ९८॥

सूर्य्य एवं चन्द्रमा का क्रम शुक्ल पक्ष मे वामा एवं कृष्ण पक्ष मे दक्षिण। अथवा पक्ष द्वय मे सोई त्रिदिवस आचार्य्यों करके उक्त हुआ सो दर्शन होताहै पञ्च भूतात्मा दीप शरीर रूप तेल युक्त वात रक्षिता सूर्य्य एतद्द्वारा जीव स्थिर होतेहैं आत्मादीप शिषाहै एवं आयुर्बल स्नेह कलाहै और काल कज्जल संभार अर्थात् धूम शरीर वर्त्तिका है सो कथित हुआ ९६॥९७॥९८॥

॥ अथ मानस लक्षणम्

शब्दे स्पर्शे तथा घ्राणे स्वादे रूपे तथैव च मनश्च हरते यत्र रहमानस उच्यते तीर्थस्नाने गुरौ देवे ध्याने दाने तपस्सु च मनश्च हरते यत्र कर्त्ता मानस उच्यते कायाभवन मध्ये च शान्तिः कर्म्माणि कारणम् मनश्च हरते येन रहमानस उच्यते ॥९९॥१००॥१॥

शब्द स्पर्श घ्राण स्वाद रूप इन्मे मन हरण करने से रहमानस अर्थात विविक्त उक्त हुआ तीर्थ स्नान गुरुदेव ध्यान दान तप एही सम्पूर्ण हरण करने मे कर्त्तामानस उक्त हुआ एवं

कायाभवन विषे शान्तिकर्म्म मे कारण एतद्द्वारा मनहरण करने से रहमानस उक्त हुआ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥

अथ प्राणसंख्याप्रमाणानि

एकविंशतिसहस्राणि शतानि षट्तथैव च ।
निशाहे चलतः प्राणाः सच कालेविनस्यति ।
कायाभवनमध्ये च मारुतो रक्षपालकः प्रवे
शे दशभिः प्रोक्तो द्वादशाङ्गुल निर्गमे मनश्चै
व स्थिरं कुर्य्यात् मनसा मारुतस्थिरः मारु
तेन स्थिरं तेजः कालः सद्दप्यते तदा ।१०२
१०३ ॥ १०४ ॥

रात्रि एवं दिवस मे षट्शतोत्तर एकविंशति सहस्र २१६०६ स्वासा शरीर मे चलते हैं सो काल प्राप्त होने से नाश प्राप्त होते हैं शरीर रूप गृह का पवन रक्षपालक सो प्रवेशावस्था मे दशाङ्गुल प्रमाण और निर्गमनावस्था मे द्वादशाङ्गुल प्रमाण होता हैं एवं मन स्थिर करके तद्द्वारा पवन एवं वात से अग्नि-स्थिर करने से काल दग्ध होता हैं ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥

॥ अथ वातादि स्वरलक्षणम्

वातः पित्तं कफश्चैव ज्ञायते धातुदर्शनात् भे
दाभेदनिबंधेन कालज्ञाने सदाध्रुवं गम्भी
रश्च भवेत् श्लेष्मा स्फुटवक्रा च पित्तलः उभा-
भ्यां हीनतो वातस्तेषां श्च स्वरलक्षणम् त्रि

ताङ्क्षोभवेत्पित्तेवातेचैवतुमंदता स्थिरगा मीभवेच्छ्लेष्मागतेरेतच्चचेष्टितम् ॥ १०५॥ १०६ ॥१०७॥

भेदाभेद युक्त कालज्ञान विषय मे वात पित्त कफ एतत्समस्त के धातु दर्शन से सर्व्वदा निश्चित ज्ञान होताहै श्लेष्मायुक्त मनुष्य गंभीर स्वर एवं पित्त युक्त का स्फुट और वात विशिष्ट का समस्वर अर्थात् उभय मिलित स्फुट मन्द स्वर युक्त लक्षण होताहै एवं पित्त मे त्वरिता गति और वात मे मन्दा एवं कफ मे स्थिरा गति चेष्टा होतीहै ॥१०५॥१०६ ॥१०७।

अथ वातादि प्रकृति देह लक्षणम् ॥

पित्तरोगीभवेदुष्णोवातरोगी चशीतलः श्लेष्मरोगीतथार्द्रश्चदेहस्तस्यैवलक्षणम् आदौचजायतेरोगः साध्योऽसाध्यस्तथैवच सकलेनिष्फलश्चापिजीवितंमरणंध्रुवम् सकलंकालहीनञ्च निष्फलंकालसंयुतम् इन्द्रियाणांविकारैश्च ज्ञायतेमृत्युजीवितम् ॥१०८ ॥१०९ ॥ ११० ॥

पित्तरोगी का देह ऊष्ण एवं वातरोगी का शीतल श्लेष्म रोगीका आर्द्र एही समस्त चेष्टा देह का होतीहै प्रथम साध्य एवं असाध्य रोग होताहै सो कालज्ञान बिना जीवन का ध्रुव मरण कर्ता होताहै काल ज्ञानहीन सकल निष्फल एवं कालज्ञा

न युक्त इन्द्रियों के विकार से जीवन एवं मृत्यु ज्ञान होताहै ॥
१०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

॥ अथ रोग निवृत्ति लक्षणम्

पाणिपादौ भवेद्दुष्टौ दीर्घस्वल्यस्तथैवच जि
ह्वाकोमलतांयातिसरोगीनविनश्यति स्वेद
हीनोज्वरोयस्यनासाश्वासःप्रवर्त्तते काण्ठोऽ
पिकफहीनस्तुसरोगीजीवतिध्रुवम् ॥ १११ ॥
११२ ॥ * ॥ * ॥

पाणि एवं पाद दुष्ट हो के दीर्घ अथवा ह्रस्व और जिह्वा कोमल-
ता प्राप्त होय एतादृश रोगी का विनाश नहीं होता एवं जिसपु
रुष का स्वेद हीन ज्वर एवं स्वास नासिका मार्ग से प्रवृत्त होय-
एवं कण्ठ कफ से हीन होय सोई मनुष्य का ध्रुव जीवन होता
है ॥ १११ ॥ ११२ ॥

निद्रासौख्यंभवेद्यस्यशरीरःसोद्यमस्तथा इ-
न्द्रियाणिप्रसन्नानिसरोगीनविनस्यति चैत
न्यंसकलंयस्यगंधस्वादंस्फुटंभवेत् कला
पूरितकंठस्तु सजीवेन्नात्रसंशयः ।११३ ।११४

निद्रा एवं सौख्य और शरीर उद्यम युक्त सर्व्व इन्द्रिय प्रसन्नता
युक्त होने से रोगी का जीवन होताहै एवं सर्व्व इन्द्रिय चैत
न्य द्वारा गंध स्वाद का स्पष्ट ज्ञान होताहै कण्ठ से स्फुट व
चन उच्चारण होने से रोगी का जीवन होताहै अत्र संशय न-

हीं ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

अथासाध्यलक्षणम्

अनिलोयातिपित्तस्य पित्तंयातिकफग्रहे। कफश्चकण्ठमायातिदुर्ल्लभंतस्यजीवितम् रात्रौदाहंभवेद्यस्यदिवाशीतंचजायते कफपूरितकण्ठस्तुतस्यमृत्युर्भवेद्ध्रुवम् हीनस्वरोभ्रष्टगुदःकासश्वाससमाकुलः हिक्काशोषसमायुक्तःकुक्षशूलीनजीवति ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

वातपित्त स्थान मे एवं पित्त कफ स्थान मे और कफ कण्ठस्थान मे प्राप्त होने से मनुष्य का मृत्यु होतीहै जिस मनुष्य को रात्रि मे दाह एवं दिवा मे शीत प्राप्त होय और कफ कंठ प्राप्त होय तदा ध्रुव कर्के मृत्यु होतीहै एवं हीन स्वर और गुदभ्रष्ट कास श्वास हिक्का शोष कुक्ष शूल एतत्समस्त रोग विशिष्ट होने से मनुष्य का मृत्यु होतीहै ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

हृदयञ्चतथानासापादौपाणीचशीतलौ शिरस्तापोभवेद्यस्यतस्यमृत्युर्भवेद्ध्रुवम् धूपाभमरुणश्यावहरितंनीलपीतकम् ष्ठीवतिश्वासकाशार्तोनजीवतिहतस्वरः अङ्गकंपोगतेर्भङ्गोवर्णभ्रंशस्तथैवच गंधंस्वादंनजानातिसगच्छेद्यमशासने ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

हृदय नासा हस्त पादादि शीतल और शिर तप्त होनेसे मृत्यु होतीहै एवं पूणभस्मरुण श्याव हरित नील पीन एतादृश कफकास्वरूप काशस्वास युक्त मनुष्य को ष्ठीवन अर्थात् मुख से श्लेष्मादि वमन होने से मृत्यु होतीहै और कम्पयुक्त अङ्ग एवं गति भङ्ग और वर्ण भ्रंश गन्ध एवं स्वाद का ज्ञानाभाव होनेसे मृत्यु होतीहै ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

शिरःस्वेदोभवेद्यस्य मुखेस्वासःप्रवर्त्तते अष्ट-
नाडीअनिर्वाहंसोऽपिकालेनवीक्षितः अरुंध-
तींध्रुवंचैवविष्णोस्त्रिणिपदानिच आयुर्हीना
नपश्यंतिचतुर्थमातृमाण्डलं अरुंधतीभवे
ज्जिह्वाध्रुवोनासाग्रमेवच भ्रुवौविष्णुपदावि
द्यात्तारिकोमातृमंडलम् ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३

मस्तक स्वेद युक्त मुख द्वारा श्वास का प्रवृत्ति एवं अष्टनाड़ी अनिर्वहन शील होनेसे मृत्यु होतीहै अरुंधती तारा एवं ध्रुव औरविष्णु त्रिपद मातृ मण्डल एही चतुर तारा का आयुहीन मनुष्यों को दर्शन नहीं होता प्रकारान्तर से अरुंधती जिह्वा और ध्रुव नासाग्र विष्णु त्रिपदी भ्रुवद्वय मातृ मण्डल तालुदेश को कहते हैं ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

मतिभ्रंशेतुस्खलेत्वाणीधनुरन्ध्रंनवीक्षते ।
रात्रौचन्द्रद्वयंवापिरात्रौचन्द्रदिवाकरौ दि-
वावातारकाचन्द्रंरात्रौव्योम्निवितारकम् ।

युगपच्चचतुर्द्दिक्षुशक्रकोदण्डमण्डलं भूधरोभूधराग्रोवागंधर्व्वनगरालयं दिवानिशि चन्द्रशम्भुरेतेपञ्चत्वहेतवः ॥१२४।१२५।१२६॥

मनका भ्रमहोके जिन्का वाक्य स्खलित होताहै एवं धनुरंध्र अर्थात् धनुषका छिद्र दृष्ट नहीं होता एवं निशा मे द्वय चन्द्र अथवा चन्द्र सूर्य्य और दिवा मे नक्षत्र सहित चन्द्र रात्रि समय आकाश मे नक्षत्र हीन एवं एक काल मे चतुर्दिक्षु मे इन्द्र धनुषमंडल सदृश एवं पर्व्वत और पर्व्वताग्र गन्धर्व्व गण का नगरालय और दिवामे चन्द्र रात्रि मे शम्भु का आकृति एही समुदाय दर्शन पञ्चत्वका हेतु ॥ १२४ १२५ ॥१२६ ॥

अथ नक्षत्र लग्नतिथिवारैरसाध्यलक्षणाम्

अहिर्बुध्नेतिष्यसंज्ञेऽप्यमर्क्षेप्राजापत्यादित्ययोस्सन्नरात्रात् रोगोत्पत्तिर्ज्जायतेमानवानांनिस्संदिग्धंजल्पितंगर्गमुख्यैः नन्दाचवृश्चिकेमेषेभद्रामिथुनकन्ययोः। कर्कचैवजयासिंहेकुंभेरिक्तातुलेवृषे धनेयुग्मे चमकरंपूर्णातिथिरुदाहृता विरुद्धोरोगिणांनूनंनन्दादिस्तिथिपञ्चकः

भौमकृत्तिकयोर्नन्दाभद्राचबुधनागयोः ज-
याःगुरौमघायाञ्चरिक्ताःशुक्रधनिष्ठयोःभर
ण्याःशनिवारेचपूर्णाचतिथिपञ्चके योगे-
स्मिन्व्याधिरुत्पन्नेनसिध्यतिकदाचन ॥*

१२७।१२८।१२९।१३०।१३१।१३२॥

मनुष्यों के उत्तर भाद्रपद पुष्य उत्तर फाल्गुनी रोहिणी पुन
र्वसु एतन्नक्षत्र मे रोगोत्पत्ति होने से सप्त वासर मे रोग से वि
मुक्त होताहै नत्र संदिग्ध रहित गर्ग द्वारा उक्त हुआ वृश्चि
कनथा मेषलग्न नंदातिथि मिथुन तथा कन्यालग्न भद्रातिथि कर्क
लग्न जया तिथि कुम्भ एवं सिंह लग्न रिक्ता तिथि धनल
ग्न भद्रा तिथि मिथुन लग्न जया तिथि मकर लग्न पूर्णा ति
थि एही तिथि एवं लग्न मे रोगोत्पन्न होने से रोगी का नि-
श्चय विरुद्ध होताहै एवं मंगलवार कृत्तिका नक्षत्र नन्दा
तिथि बुद्धवार अश्लेषा नक्षत्र भद्रा तिथि वृहस्पतिवार
मघा नक्षत्र जया तिथि शुक्रवार धनिष्ठा नक्षत्र रिक्ता-
तिथि शनिवार भरणी नक्षत्र पूर्णा तिथि ए समस्त योग मे
रोगोत्पत्ति होने से रोग असाध्य होताहै ॥१२७।१२८

अथ दूत लक्षणम्

आतुरोपक्रमार्थीच दूतोयाति भिषक्गृहे त
स्यपरीक्षणं कार्य्ययेन संलक्ष्यते गदाः १३३
एकोवागच्छते दूतो गृहीत्वानंशायष्टिकां म-

रणांतस्यजानीयाद्दिवसेसप्तमेतथा १३४ एको
वागच्छतेदूतोब्रवीतिचपुनःपुनः लिखितं-
मरणंतस्ययामेकेनचनिश्चितम् १३५ द्वौत्र
यश्चैवचत्वारःस्त्रीवालवृद्धषण्डकाःदुष्टवाक्य
प्रवक्तारोरक्षाग्निनयमदिक्स्थिताः १३६ श
स्त्राणिधारिणोभस्मपाषाणास्थिसमाश्रिताः
एवंनगच्छेत्तुभिषक्यशःप्राप्तिर्नविद्यते ॥
१३७ ॥ * ॥

आतुरोपक्रमार्थी अर्थात् आतुरका चिकित्सार्थी दूत वैद्यगृह मे गमन करै सोई दूत का परिक्षा करने से रोग लक्षित होता है सो कहते हैं एक दूत वंशलगुड ग्रहण करके वैद्य समीप मे गमन करने से सप्तम दिवस मे आतुर की मृत्यु होती है एवं एक दूत वैद्य समीप हो के वारम्वार भाषण करै तदा एक प्रहर मे निश्चय मृत्यु होय द्वय २ अथवा त्रय ३। किम्वा चत्वारः ४ स्त्री वालक और वृद्ध तथा नपुंसक दक्षिण वा अग्नि अथवा नैऋत्य दिक्को स्थित होके दुष्ट भाषण करै और शस्त्र अस्त्र एवं भस्म धारी पाषाण और अस्थि समाश्रित एतत्समस्त दर्शन होय तदा वैद्य-यशाभाव ज्ञान करके गमन न करै ॥१३३॥१३४॥
१३५॥१३६॥१३७॥

षंडांधमूढवधिरंकुब्जपीडितंवावालं ।

त्रियंचविकलंत्रिषितंचदीनं श्रांतंक्षुधातुरमपिम्नमितंचजीर्णंदूतंनशस्तमपिवेदविदोवदन्ति १३५ अग्रभागेपिचायुष्यंकष्टंपृष्ठविभागतः वामेचसिरसःपीडामृत्युर्भवतिदक्षिणे १३६ खरोष्ट्रमहिषारूढःस्रुतंगद्गदरूक्षवाक् पाषण्डीस्त्रीचरोगार्त्तो नशस्तोदूतकर्म्मणि १३७ नपुंसकस्त्रीवृन्दश्चनग्नाःपाशायुधाःपाणिकृपाणिनोवा। सितेतरैश्चापिपटैर्वृताङ्गाःस्निग्धार्द्रदेहास्तृणाषंडिनश्च १३८ संन्यासिनःपाणिविमर्दकाश्चघ्राणस्पृशःप्रस्तरभेदिनश्च नखद्विजोद्घाङ्गकघर्षशीलाःशोकाकुलाश्चापिगदाभिभूताः १३९ ॥

नपुंसक अन्ध मूर्ख बधिर रोगी बालक स्त्री विकल तृषायुक्त खेदविशिष्ट क्षुधातुर मत्त जीर्ण देह एतत्समस्त दूत कर्म्म मे प्रशस्त नहीं है सो वेद द्वारा उक्त हुआ वैद्यों के अग्रभाग मे स्थित होके कुशल उच्चारण करें तो आयु वृद्धि एवं पृष्ठ भाग मे कष्ट वाम भाग मे शिर पीडा दक्षिण भाग द्वारा मृत्यु खर उष्ट्र महिष इन्के ऊपर आरूढ आर्द्र गद्गद दुष्ट वचन युक्त पाषाण्डी स्त्री रोगार्त्त ये दूत कर्म्म मे शुभ नही है नपुंसक स्त्री समूह एवं नग्न रहै पाशादि यु-

क अर्थात् फाँसी शस्त्र युक्त सित मे इतर वस्त्र अर्थात् स्वेत वस्त्र विहीनआच्छादित स्निग्ध एवं आर्द्र देह त्रिणषएडी संन्यासी करमर्दनशील घ्राणेंद्रियस्पर्शशीलप्रस्तरभेदीनखद-न्तअङ्घ्रिघर्षणशीलशोकाकुलगद्गदभिभूतअर्थात्पीडित १३५ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥

चर्म्मादिहस्तापरिषेककाले तथैवभोज्यस्य निशासुचापि पृष्ठप्रदेशेदिशिचापियाम्याम त्युच्चभागेभिषजांविशेषात् १४० दूताःसमा यान्तिनिरर्थमेतेविपर्य्ययाव्याधितप्रश्नतो वा वैद्यस्यगेहेनहितस्यदृष्टाजीवस्थितिर्ज्ञा निभिरत्रमुख्यैः १४१ आर्द्राश्लेषामघामू लज्येष्ठासुभरणीषुच उपसर्प्पन्तियेवैद्यं-दूतास्तेचापिगर्हिताः १४२ शुक्लाम्बराफ-लकरा दूताश्चप्रियवादिनः अहितीयाश्च भक्ताश्चवैद्याह्वानेप्रपूजिताः १४३ ॥ ॥

हस्त मे चर्म्म विशिष्ट एवं परिषेक काल और भोजन काल तथा रात्रि समय मे वैद्य के पृष्ठ प्रदेश एवं दक्षिण दिशा मे स्थित होके और ऊर्द्ध भाग मे स्थित होके प्रश्नक रै एतादृश दूत के आगमन से अर्थ प्राप्त नहीं होता एवं * आतुर के प्रश्न से विपरीत भाव होताहै वैद्य के गृह मे एतादृश दूत प्राप्त होने से ज्ञानीमुख्य द्वारा कोई रोगी का कल्या-

ण नहीं होता आर्द्रा अश्लेषा मघा मूल ज्येष्ठा भरणी एही नक्षत्र
मे यो वैद्य के आह्वान मे गमन करते हैं सो निन्दित होते हैं शु-
क्ल वस्त्र आच्छादित करमे फल युक्त प्रियवादी अद्वितीयभ
क्त एता दृश दूत वैद्यके आह्वान मे गमन करने से पूजित हो
ते हैं ॥१५०॥१५१॥१५२॥१५३॥

अथ वैद्योत्तमशकुनानि

भेरीमृदङ्गमृदुलर्दूलशंखवीणावेदध्वनिर्म
धुरमङ्गलगीतघोषाः पुत्रान्विताचयुवतीसु
रभीसवत्साधौताम्बरश्वरजकोभिमुखप्रशस्ताः
१५४ राजाविप्रःसुहृद्वेश्याकुमारीवरवर्णिनी
दधिचन्दनदूर्वाश्वगजाश्वसुरभीवृषाः म
द्यमांसंमधुच्छत्रंचामरास्तनदर्पणाः गोरो
चनलतापुष्पवस्त्रालंकरणानिच १५६ रौ
प्यताम्रमणिस्वर्णप्रतिमागोमयध्वजाः मृ
त्तिकाशस्त्रशाकानिघृतमीनप्रदीपकाः१५७
फलंवर्द्धापनंवीणापंकजानिनृपासनम् दृ
ष्टैतानिनरःकुर्य्याद्दक्षिणेनविशेषनः १५८
भेरी मृदङ्ग शंख वीणा मादल पुत्र विशिष्ठा युवती वत्स यु-
क्ता गौ वेदध्वनि मंगल गीत शब्द धौत वस्त्र विशिष्ट रजक
राजा ब्राह्मण मित्र वेश्या कुमारी उत्तमा स्त्री दधि चन्दन
दूर्वा हस्ती अश्व गौ वृष मद्य मांस मधु छत्र चामर दर्पण-

गोरोचना लता पुष्प वस्त्र आभूषण रौप्य ताम्र मणि स्वर्ण प्रतिमा गोमय पताका मृत्तिका शास्त्र शाक घृत मत्स्य प्रज्वलित दीपपक्व फल कमल सिंहासन एतत्सम्पूर्ण वस्तु वैद्य के अग्र-भाग मे अथवा दक्षिण भाग मे दृष्ट होने से समस्त कार्य्यसिद्धि होती है ॥१४४॥१४५॥१४६॥१४७॥१४८॥

॥ अथ वैद्यस्य निषिद्धशकुनानि

तृण तुष फणि चर्म्मांगार कर्प्पास पंके लव णगुड वसास्थि क्लीव तैलौषधाश्च रिपुवि टसित धान्यं व्याधि मभ्यक्त तक्रैः पतित ज टिल मुण्डोन्मत्त वार्तैर्न सिद्धः १४९ रजो भस्म तुषांगार गुड तैल खलोपलाः गुर्व्वि-णी तैल स्निग्धाङ्ग नग्न मुण्ड रजस्वलाः १५० मुक्त केशास्थि कर्प्पास मार्ज्जारो रगपन्न गाः रोहनं ह्रदमानस्य वाहनस्य पलायन-म् १५१ द्वार घातो दशास्यो विलम्बः पाणि पादयोः एतानि दुर्न्निमित्तानि वर्ज्जनीया-नि सर्व्वदा १५२॥

तृण तुष सर्प्प चर्म्म अंगार कर्प्पास पंक लवण गुड चर्व्वी अस्थि नपुंसक तैल औषध शत्रु विष्ठा कृष्ण धान्य व्याधि युक्त तक्र पतित जटिल निष्केश मस्तक उन्मत्त रज भस्म भूसे अंगार गुड तैल खल पाषाण गुर्व्विणी तैल द्वारा

स्निग्धाङ्ग नग्न रज स्वला मुक्त केश अस्थि कर्प्पास मर्ज्जार सर्प्प पन्नग रोदन पुरीषोत्सर्ग वाहन का पलायन द्वारघात अर्थात् द्वार मे हिंसादि घात नेत्र हीन पाणिपाद स्तम्भ एतत्समस्त दुर्न्निमित्त को त्याग करके वैद्य वर चिकित्सार्थ गमन करे ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

अथ नक्षत्रे मृत्यु रोग निवृत्योर्लक्ष्म.

स्वाती श्लेषा रौद्र पूर्व्वा सुशाक्रे रोगोत्पत्तिर्ज्जायतेयस्य पुंसः तद्भैषज्यं नैव देयं कदापिज्ञात्वा मृत्युं वैद्यराजेन पुंसा १५३ व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे सभैत्रे प्राणत्यागं जायते तस्य कच्छ्रात् वैश्वे सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्या स्याद्वासराणां मघासु १५४ पक्षाद्धस्ते वासवे सद्विदैवे मूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्येन वाहात् १५५ ॥

स्वाती अश्लेषा आर्द्रा पूर्व्वा ज्येष्ठा एही नक्षत्रों मे जिस मनुष्य को रोगोत्पत्ति होता है सोई मनुष्य को वैद्य त्याज्य करें और रेवती अनुराधा मे व्याधि उत्पत्ति होने से बहु कष्ट द्वारा प्राण त्याग होता है उत्तराषाढ मृगशिरा मे रोग होने से मास पर्य्यन्त द्वारा व्याधि से मुक्ति होता है मघाजनित रोग विंशति २० वासर मे त्याग होता है हस्त धनिष्ठा विशाखा इत्यादि नक्षत्र मे रोगोत्पत्ति होने से पञ्च दश १५

वासर पर्य्यन्त से रोग त्याग होता है एवं मूल अश्विनी कृत्ति-
का मे नव ९ वासर मे रोग त्याग होता है ॥ १५३ । १५४ । १५५

अथ षट् त्रि द्वि मासिक मृत्युलक्ष०

लक्ष्यं लक्ष्म चिकित्सकेन मनसा शुद्धस्य-
भानोश्च तत् क्षीणो दक्षिण पश्चिमोत्तरपुरः
षट्त्रिद्विमासैकक्रम् १५६ छिद्रं मध्यगतं
दिनार्द्धमपि चेदायुःप्रमाणं ध्रुवम् सर्वज्ञैः
परिभाषितं स्फुटतरं दृष्टो महाप्रत्ययः १५७

जिस मनुष्यो को शुद्ध सूर्य्य का दक्षिण पश्चिम उत्तर पूर्व भाग
क्षीण दर्शन एवं मध्यगत छिद्र दर्शन होता है सोई मनुष्य*
का क्रम से षटमास अथवा त्रि द्वि एक मास और अर्द्ध दिन
आयुःप्रमाण चिकित्सक द्वारा स्पष्ट ज्ञातव्य है सो ज्ञानी-
योगियों से भाषित हुआ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥

अथ सप्ताहेन मृत्युलक्षणम् ॥

धाराविन्दुसमं यस्य पतते महीतले स
सप्ताहाज्जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्
१५८ प्रतापेन विनिर्मुक्तः क्रुद्धभाषी निरु
द्यमः षण्मासेन तु सन्देहः सगच्छेद्यम
शासने १५९ ॥

जिस मनुष्य को अग्निकण वर्षा विन्दु सदृश पृथ्वीतल मे
पतन होना दर्शन होता है सोई मनुष्य की मृत्यु सप्त दिवस

मे होतीहै कालज्ञान द्वारा उक्त हुआ और जिस मनुष्य का प्रताप हीन एवं क्रुद्ध भाषण उद्यम हानि होय सोई मनुष्य षरामास मे मृत्यु प्राप्त होतेहैं ॥१५६॥१५७॥

वर्णहीनश्च कामेन स्वादे नैव तथैव च त्रिभिर्मासैश्च सोजीवेत्सगच्छेद्यमशासने । १५८ अशक्तः पाण्डुवर्णश्च बहुनिश्वाससंयुतः मलच्चपतते नित्यं मासमेकं सजीवति। १५९

काम एवं स्वाद तथा वर्ण हीन होनेसे मनुष्य का मृत्यु त्रिमासमे होतीहै पराक्रम हीन एवं पाण्डु वर्ण शरीर बहु श्वास युक्त नित्य बहु मल त्याग होने से एक मास जीवित रहताहै १५८,५९

अथाब्दिकमृत्युलक्षणं

जिह्वा कृष्णा भवेद्यस्य मुखं वा कुंकुमारुणम् ईदृशं लक्षणं यस्य तस्य मृत्युर्नसंशयः १६० कुण्डली पीड्यते यस्य वातेन हनुबंधनं आहारो दह्यते तेन सवर्षेण विनश्यति १६१ मूले वृक्षस्य शाखा वा चस्फुलिङ्गो वह्निसन्निभाः प्रभाति खड्गि र्मासैस्समानवो म्रृयते ध्रुवम् १६२

जिस मनुष्य का जिह्वा कृष्ण वर्ण और मुख कुंकुम सदृश होताहै सोई मनुष्य की मृत्यु ध्रुव होतीहै कुण्डली पीड्यमाना और वात द्वारा हनु बंधन होने से तद्द्वारा आहार का

स्थ पक्कता होके वर्ष पर्य्यन्त मे मनुष्य की मृत्यु होतीहै
वृक्ष के मूल एवं शाखा मे अग्नि कणा सदृश दर्शन हो-
ने से षट् मास पर्य्यन्त मृत्यु होतीहै ॥१६०।१६२ ॥१६३॥

यस्यरेतोमलंमूत्रक्षुतंयुक्तंमलन्तुवा इ
हैकदाभवेद्यस्यअब्दंतस्यायुरिष्यते १६४

जिन्का वीर्य्य विष्ठा मूत्र छींक के सहित मलयुक्त होता
है अर्थात् स्वभाव से अन्यथा होके एक काल मे नानाप्र
कार दर्शन होताहै सोई व्यक्ति एक वत्सर पर्य्यन्त जी-
वित रहताहै ॥१६४॥

यस्यवैभुक्तमात्रस्यहृदयेवर्द्धतेक्षुधा जानी
यादन्तवर्षेचसगतायुर्नसंशयः १६५

जिन्के भुक्त मात्र हृदय मे क्षुधा उत्पत्ति होतीहै तस्य वत्स
रान्त नहोने से मृत्यु होतीहै संशय नहीं ॥१६५

अथ अर्द्धरात्रमृत्यु लक्षणं

शक्रायुधंचार्द्धरात्रेदिवाग्रहणकस्तथा ।
दृष्टमात्रेणसंक्षीणमायुर्जीवितमात्मवित्
१६६॥

अर्द्ध रात्र मे इन्द्र धनुः दर्शन एवं दिवा मे चन्द्र ग्रहण द
र्शन एही प्रकार दृष्ट मात्र से आयुक्षय होताहै॥ १६६

नासिकावक्रतामेतिकर्णयोरपिउन्नतिः
नेत्रेवाष्पसरेतयस्यतयोरेवंसमुन्नतिः ६७

आरक्तमेतिव कृष्ण जिह्वाह्रस्वायतेयदा ।
तदाप्राज्ञोविजानीयान् मृत्युमासिकमाप्नुयात्
१६८ ॥

नासिका का वक्रता कर्ण का उन्नति नेत्र का वाष्प निःसरण एवं नेत्रका उन्नतिरक्त वर्ण मुख जिह्वा का ह्रस्वता एही स-कल चिन्ह जिन्का होय तस्य मृत्यु एक मास के मध्य मे होतीहै ॥१६८

पिधाय कर्णनिर्घोष न शृणोति निरन्तरं ।
नपश्येच्चक्षुषोर्ज्योतिर्यस्य आसन्नजीवि
तं ॥१६९ ॥

कर्ण मे सर्व्वदा शब्द बोध होके निरन्तर श्रवण नहीं क रते एवं नेत्र ज्योति नाश होतीहै एही रूप लक्षण दर्शन करने से मृत्यु होतीहै ॥१६९॥

दीपनिर्व्वाणगन्धस्य सुहृद्वाक्यमरुन्धती
नजिघ्रन्ति नशृणवन्ति नपश्यन्ति गतायु-
षः १७०

दीप निर्व्वाण गन्ध सुहृद्व्यक्ति का वाक्य एवं अरुन्धती न क्षत्र यो व्यक्ति आघ्राण श्रवण एवं दर्शन नहीं पाते तिन्को आयु हीन जानना ॥१७०

अथ सद्योमृत्युलक्षणम्

शक्यावानरयानस्थोयागन्तु दक्षिणांदिशं

स्वप्नेप्रयातितस्यापिमुहूर्त्तेर्मृत्युर्नसंशयः॥ १७१॥

यो व्यक्ति स्व सामर्थ्य पूर्व्वक वानर आरूढ होके दक्षिण दिकमे भ्रमण करै एतादृश रूप स्वप्न मे दर्शन करने सेमुहूर्त्त मध्ये मृत्यु होतीहै॥१७१॥

नग्नंक्षपणकंस्वप्ने दृश्यमानंमहाबलं एकाहाद्वाहिकन्तस्यविद्यान्मृत्युमुपस्थितं १७२

नग्न लज्जाहीन महाबली पुरुष स्वप्न मे दृश्यमान होनेसे एक किम्वा द्वय दिवस मे मृत्यु होतीहै सो जानना॥ १७२

सूर्य्योदयेशिवायस्य क्रोशमायातिसन्मुखं विपरीतंपुरीषम्वासद्योमृत्युंसगच्छति १७३

सूर्य्योदय समय मे शृगाल आक्रोश करके जिन्के सन्मुख आवे अथवा यदि अतिशय विष्ठा निर्गत होय तस्य सद्य मृत्यु होतीहै॥१७३॥

अथ दशाहेमृत्युलक्षणम्॥

यस्यवैस्नानमूर्द्धस्यकूपोपमविशुष्यति पतितस्यजलंपेयंदशाहंसोपिजीवति॥ ॥१७४॥

यो व्यक्ति का अवसाद होके क्रम से कूप के सदृश मुख शुष्क होय एवं पतित का जलपान करै सोई व्यक्ति दश दिवस पर्य्यन्त जीवन धारण करतेहैं॥१७४॥

केशाङ्गारस्तथाभस्म शुष्कगानतथानदी।
दृष्ट्वा स्वप्ने दशाहेतु मृत्वेकादशके दिने १७५
केश अंगार भस्म एवं शुष्क नदी स्वप्न मे दृष्ट होने से दश दिवस अतीत एकादश दिवस मे मृत्यु होतीहै ॥ १७५॥

अथ त्रैवार्षिक मृत्यु लक्षणम् ॥

याम्य नासा पुटे यस्य वायुर्याति दिवा निशि।
तथान्त मेवंतस्यायुः क्षयेदब्दत्रयेण हि ॥
॥१७६॥
दक्षिण नासा पुट मे जिन्का वायु दिवा रात्रि वहमान होता है तिन्का आयुः क्षय होके त्रिवत्सर के मध्य मे मृत्यु होती है ॥१७६॥

॥ अथ द्वैवार्षिक मृत्युलक्षणम्

अकस्मात्वीक्षितंयज्ञे पुरुषं कृष्ण पिङ्गलं
अस्मिन्क्षणे तदरुणात्सजीवेत् वत्सर द्वयं ॥ १७७॥
अकस्मात् यज्ञ समय मे यज्ञ कुण्ड द्वारा कृष्ण वर्ण वा पिङ्गल वर्ण अथवा उभय वर्ण युक्त पुरुष अथवा अर्द्ध नारीश्वर एवं नृसिंहादि मूर्त्ति दर्शन होय तो सोई पुरुष द्वय वत्सर पर्य्यन्त जीवित रह के उपरान्त मृत्यु होती है ॥ १७७ ॥

अथ दश मासिक मृत्युलक्षणम् ।

अरश्मि बिम्बं सूर्य्यस्य वह्नेश्चैवंस मलीनता ।

जातकादशमासास्तु ततोर्द्धं न तु जीवति ॥१७८॥

रश्मि हीन अर्थात् किरण हीन नाना विघ्न युक्त सूर्य्य एवं मलिनता युक्त अग्नि दर्शन करने से दशम मास के ऊर्द्ध मृत्यु प्राप्त होती है ॥१७८॥

॥अथाष्टमासिक मृत्युलक्षणम्।

गन्धपुष्पांशुकैर्मांसैः स्वंतनुं भूषितं नरः। यः पश्येत् स्वप्नसमये सोऽष्टौ मासान्तु जीवति ॥१७९॥

चन्दन पुष्प वस्त्र एवं मांस युक्त निज शरीर भूषित स्वप्न समय मे यो दर्शन करते हैं सो व्यक्ति अष्टम मासावधि जीवित रहके मृत्यु प्राप्त होते हैं ॥१७९॥

अथ षाण्मासिक मृत्युलक्षणम्।

इन्द्रनीलनिभं व्योम्नि नागवृन्दं यदीक्ष्यते दृतस्ततः प्रसरणं षण्मासं स तु जीवति ॥१८०॥

यो व्यक्ति आकाश मे नील आभा विशिष्ट एवं इतस्ततः विस्तृत सर्प समूह को दर्शन करते हैं सोई व्यक्ति षट् मास जीवित रहते हैं ॥१८०॥

सदा चोदर पूर्णास्तु बारीच्छा च दिवानिशि सत्यक्ताश्च चतुः पञ्च पश्चात् षण्मास जीवति

सर्व्वदा जलाहार मे उदर परिपूर्ण रहते हैं अथच दिवारात्रि जल पान मे इच्छा होतीहै सोई व्यक्ति का यदि चतुर्थ किम्वा पञ्चम मास अतीत होय तथापि षरामास मे मृत्यु होतीहै ॥१८१॥

वेत्ति नीलानि वर्णास्य कट्वम्लल्लवणस्यच ॥
अकस्मादन्यथा भावं षाण्मासे न हि मृत्युभाक् ॥१८२॥

यो व्यक्ति का शरीर नील वर्ण होताहै एवं कटु अम्ल लवण इत्यादि द्रव्यके आस्वादन का अन्यथा भाव प्राप्त होता है सोई व्यक्ति का षणमास मे मृत्यु होतीहै ॥१८२॥

द्रुतमारूढशाकटः स्त्रीवन्तोपस्य मस्तकः
प्रयाति याति तस्यायुः षरमासाद्व परिक्षयः
॥१८३॥

अति सत्वर गति से शकट आरोहण स्त्री चिन्ह युक्त मस्तक व्यक्ति जिन्के सन्मुख आवागमन करते हैं तस्य षणमास मे मृत्यु होतीहै ॥१८३॥

निजास्यप्रतिविम्बं हि नीरदाम्बुषु दर्पणे ।
उत्तमाङ्गं यो न पश्येत् षाण्मासेन विनश्यति ॥१८४॥

अपना प्रति मूर्त्ति मुख एवं मस्तक मेघ जल मे अथवा दर्पणादि मे जिस मनुष्यको दर्शन नही होता तस्य षणमा-

स में मृत्यु होतीहै ॥ १८५॥

पांशुराशिञ्च वल्मीकं यूपदण्डमथापिवा ॥
यो ऽवरोहति नौस्वप्ने स षष्टे मासि न पश्यति ।
॥१८६॥

धूलि समूह दीमक कीट कृत मृत्तिका स्तम्भ याग स्तम्भ यष्टि और नौका एही सकलो परि यो व्यक्ति स्वप्न मे आरोहण करते हैं तस्य षष्ठ मास मे मृत्यु होतीहै ॥ १८६॥

गर्द्दभारूढमात्मानं तैलाभ्यङ्गञ्च खण्डितं नियमेन स्वाप्नमे चेत् स्वप्ने पश्येन्स पूर्व्वयान् १८७ श्रमनन्तस्तुतम्वापि यः पश्येत् स्वप्नगोचरे हता ङ्गंशुष्क काष्ठान्नि षष्ठेमासिनतिष्ठति १८८ ॥

आपने आत्मा को गर्द्द भारोहण एवं तैलाभ्यङ्ग और छिन्नाङ्ग एही नियम से स्वालय द्वारा स्वप्न मे साक्षात् दर्शन एवं पूर्व्वोक्त गोधादि आरोहण और श्रमन किम्वा श्रमन पुत्र का साक्षात् दर्शन एवं छिन्नाकृति शुष्क काष्ठ स्वप्न मे दृष्ठ होने से सोई व्यक्ति का षट् मास मे मृत्यु होतीहै ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ * ॥ * ॥

लोहदण्डधरं कृष्णं पुरुषं कृष्णपिन्धनं स्वप्न ग्रस्थितं पश्येत् सोपि मृत्यु प्रजायते ।
॥ ॥१८९ ॥

लोह दण्ड धारी कृष्ण वर्ण पुरुष रूप कृष्ण वस्त्र परिधान क
र्के अग्रस्थित स्वप्न मे दर्शन करै तो षण्मास मे मृत्यु हो-
ती है ॥ १८९ ॥

॥ अथ पञ्च मासिक मृत्यु लक्षणम्

सामर्थे वानिधुवने ध्वान्तान्ते क्षोभितेन्मनः निश्चितंपञ्चमे मासि धर्म्मराजातिथिर्भवेत् ॥ १९० ॥

स्वसामर्थ मे रमणी रमणान्ते यदि अन्धकार दृष्ट हो के क्षोभित होय तो सोई मनुष्य का पञ्चम मास मे धर्मना वास मे अतिथि होता है ॥ १९० ॥

पृथिवी द्विर्भवेद्यस्य पदं खण्ड पदाकृतिः पार्श्वे वा कुंडु मे वापि पञ्च मासं सजीवति ॥ १९१ ॥

अकस्मात् वा स्वप्न मे यो व्यक्ति पृथ्वी को द्वि खण्ड वा चतुर्थांश अथवा पार्श्व देशमे कुण्डा कृति दर्शन होय सोई व्यक्ति पञ्च मास जीवित रहते हैं ॥ १९१ ॥

ग्रसने भक्षने वापि पिशाचखर राक्षसैः । भूतैः प्रेतैः श्वभिः सिंहे र्गोमायु गृध्र सूकरैः १९२ खरभैः शलभैः सेनैरश्वैरश्वतरैर्व्वकैः स्वप्ने संजीवितं त्यक्त्वा वर्षान्ते यममीक्षते ॥ १९३ ॥

वृक्षारोहण श्रौर भक्षण अथवा पिशाच राक्षस गर्धभ भूत प्रेत कुक्कुर गृध्र सिंह शृगाल शूकर ऊँट फणिगण सेन अर्थात् बाज घोटक खच्चर एवं बक इत्यादि द्वारा स्वप्न मे जीव नाश दर्शन होने से मनुष्य वत्सरान्त मेंयम दर्शन करते हैं ॥१९२॥१९३॥

काकविट्सदृशोपस्यपांशुवर्षासमोमलः स्वच्छायामन्यथापश्येत्यःसजीवति पञ्चमम् १९४ ॥

काक के विष्ठा के सदृश एवं धूलि वर्षण के सदृश यो व्यक्ति विष्ठा त्याग करते हैं अथवा स्वच्छाया अन्यथा दृष्ट होनेसे पञ्च मासाधिक जीवित रहता नहीं ॥*॥१९४॥*॥

॥ अथ त्रिमासिक मृत्युलक्षणम्

प्रत्यूषस्यापि यस्याशु हृदयं यस्य शुष्यन्ति चरणौ चकरे वापि त्रिमासं तस्यजीवनं १९५

प्रभात काल मे जिन्का हृदय चरण एवं हस्त शुष्क होताहै सोई व्यक्ति त्रयमास पर्य्यन्त जीवित रहते हैं । ॥१९५॥

अनिद्रो विद्युतं दृष्ट्वा दक्षिणां दिशमाश्रितां तदैकोपि धनुर्वापि जीवितन्त्वत्रिना

सिकं ॥१९६॥

अनिद्रा मे विद्युत् दर्शन दक्षिणांश मे यदि होय तत्कालध नुक दर्शन करने से त्रय मास जीवित रहके मृत्यु होती-है ॥१९६॥

अथ सार्द्धमासिकमृत्युलक्षणम्

अहोरात्रंत्र्यहोरात्रं वायुर्व्वहति सन्ततः।
सार्द्धैकमासात्तस्यापि जीवितं किल हीयते ॥१९७॥

मनुष्य सम्बन्ध मे यस्य नासादि पुट द्वारा द्वय किम्वा त्रय दिवा रात्रि पर्य्यन्त यदि वायु निरन्तर प्रवल रूप से वहमान होय तो सोई व्यक्ति का अर्द्धाधिक एक मास अर्थात्-पञ्चचत्वारिंशदहोरात्र जीवित रहके तदनन्तर मृत्यु होतीहै ॥१९७॥

अथ मासिकमृत्युलक्षणम्

करावरुद्धःश्रवणं न शृणोति न च ध्वनिम्।
स्थूलं कृशं कृशं स्थूलं तदा मासानुवर्त्तते।
॥१९८॥

जिन्का अकस्मात् हस्त अवरोध होताहै एवं श्रवण मे शब्द श्रवण नहीं होताहै एवं स्थूल व्यक्ति कृश और कृश व्यक्ति स्थूल दर्शन होताहै सोई व्यक्ति एक मास के मध्य मे पञ्चत्व प्राप्त होताहै अर्थात् मृत्यु प्राप्त होताहै ॥१९८

कालींकुमारींयःस्वप्ने वन्धीयान्वहुपाशकः
समासेनसमीसेननगरींयमनोषिताम् ।
॥१९८॥

यो व्यक्ति कृष्णाङ्गी कुमारी को वहु रज्जु से वन्धन करके स्वप्न
मे दर्शन करते हैं सोई व्यक्ति एक मास के मध्य मे शमन
नगर को गमन करते हैं ॥१९९॥

घृतेतैलेदर्पणेचतोयेवातनुवानरीम् ॥
यःपश्येदशिरःस्कन्धंमासादूर्द्ध्वंनजीव
ति ॥२००॥

घृत तैल दर्पण एवं जल मे वानरी का शरीर दर्शन अथवा
शिरोहीन स्कन्ध दर्शन करने से एक मास के ऊर्द्ध वचता
नहीं अर्थात् मृत्यु प्राप्त होताहै ॥२००॥

अथ पञ्च दिवसे मृत्युलक्षणम्

योनपश्येन्निजच्छायां दक्षिणाशासमा
श्रिताम् दिनानिपञ्च जीवात्मा पञ्चत्वं
चप्रयातिसः २०१

यो मनुष्य आपना छाया दक्षिण दिग मे अर्थात् दक्षि-
ण भाग में सम्यक् प्रकार से दृष्ट न करे सोई व्यक्ति प-
ञ्चम दिवस जीवित रहके पञ्चत्व प्राप्त होताहै ॥२०१

नरोयोवानरारूढो प्रयातिपश्चिमांदिशं स्व
प्नेसोऽन्हापञ्च मेनपश्येत्संयमनींपुरीं २०२

यां मनुष्य स्वप्न मे यानारूढ पश्चिम दिग मे गमन कर तेहैं सोई व्यक्ति पञ्चदश दिवस मे यमालय गमन करते हैं ॥२०२॥

अथ त्रिदिवस मृत्युलक्षणम् ॥

नरनासापुटयुगलघ्राणादानि निरन्तरं वा
युश्चेत् सहसा कान्ति स जीवे द्दिवस त्र-
यम् २०३

जो मनुष्य सम्वन्ध मे नासिका पुट द्वय द्वारा निरन्तर दश दिवस वायु खरतर अर्थात् अतिवेग से वहमान होय तो सोई व्यक्ति का त्रि दिनान्तर मे मृत्यु होतीहै ॥२०३॥

अथ द्वि दिवस मृत्युलक्षणम्

नासावर्त्तद्वयं हित्वा वायुरुष्णा मुखाद्वहे
त् संप्राप्तिनद्वयादर्व्वाक् जीवितं तस्य नि
श्चितम् २०४

नासा पथ द्वय त्याग करके उष्णा युक्त वायु यदि मुख प्राप्त होके वहमान होय तो द्वय दिवस के मध्य मे प्राण संहार होता है ॥२०४॥

अथ सर्पादि दंशने मृत्यु लक्षणम्

सूर्य्ये सप्तम राशिस्थे जन्म संस्थे निशा-
करे दंष्टारस्तत् पूर्णकालेप्यकाले तस्य
नाशिता: २०५

जो व्यक्ति के जन्मराशि के सप्तम स्थान मे सूर्य्य स्थिति करते हैं एवं जन्मराशि मे चन्द्र रहते हैं सोई पूर्ण काल मे यदि विषवन्त सकल दंशन करे तो तिन्के सोई अकाल मे काल प्राप्त होता है ॥२०५॥

इति कालज्ञानं समाप्तं

तन्त्रादौ वैद्य लक्षणम् ॥

आयुर्वेदकृताभ्यासः सर्वेषाम्प्रियदर्शनः आयुःशीलगुणोपेत एष वैद्योविधीयते १

सम्यक् आयुर्वेद शास्त्र अभ्यास करके निपुण एवं सर्व्व जन समीप प्रियदर्शन युक्त और सम्यक् प्रकार से श्रेष्ठ एवं शील स्वभाव एतादृश गुण विशिष्ट मनुष्यों का वैद्य संज्ञा है ॥१॥

अन्यच्च ॥ गुरोरधीताखिलवैद्यविद्यः। पीयूषपाणिः कुशलः क्रियासु गतस्पृहो धैर्य्यधरः कृपालुः शुद्धोऽधिकारी भिषगीदृशः स्यात् २ ॥

गुरु उपदेश द्वारा सम्पूर्ण वैद्य विद्या अभ्यास होय एवं अमृत तुल्य पाणि युक्त और क्रिया मे प्रवीण तृष्णा करके रहित एवं धैर्य्यवान कृपा विशिष्ट तथा सदा सुचि एवं आयुर्वेदाधिकारी एतादृश दश गुण युक्त वैद्य

प्रसंशित हैं ॥ २॥

अथाखिलवैद्यविद्याकथनं॥सुश्रुते शल्यंशालाक्यंकायचिकित्साभूतविद्याकौमारभृत्यमगदतंत्रंरसायनतंत्रंवाजीकरणतंत्रमिति ॥ ३॥

अनन्तर अखिल वैद्यविद्या कहते हैं यथा शल्य शालाक्य काय चिकित्सा भूत विद्या कौमार भृत्य अगद तंत्र रसायन तंत्र वाजीकरण तंत्र एही अष्टाङ्ग सुश्रुत कृत उक्त हुआ ॥ ३॥

अथास्य प्रत्यङ्ग लक्षण समासः॥

अथ शल्यम्

तत्र शल्यं नाम विविधतृणकाष्ठपाषाणपांशुलोहलोष्टास्थिवालनखपूयास्रावान्तर्गर्भशल्योद्धरणार्थं यंत्रशस्त्रक्षाराग्निप्रणिधानव्रणविनिश्चयार्थंच ॥ ४॥

अनन्तर पृथक् पृथक् अङ्ग लक्षण कहते हैं तत्र शल्य नाम नाना प्रकार तृण एवं काष्ठ पाषाण पांशु अर्थात् रज लोह लोष्ट अर्थात् ढेला अस्थि केश नख पूया स्राव अन्तर्गर्भ अर्थात् जिस व्रण से विकृत रक्त स्राव होता है तत्र अन्तर्गर्भ एवं शल्य अर्थात् वाण इन्के उद्धारणार्थ यो यंत्र अर्थात् एतत्कर्म्म निर्वाहार्थ निर्म्मित पदार्थ और

शस्त्र क्षार अग्नि प्रणिधान एतन्निश्चयार्थ तथा व्रण विनिश्चयार्थ शल्य तंत्र उक्त हुआ ॥ ४ ॥

अथ शालाक्यम् ॥

शालाक्यंनाम ऊर्द्ध्वजत्रुगतानां रोगाणां श्रवणनयनवदनघ्राणादिसंश्रितानां व्याधीनामुपशमनार्थम् ॥ ५॥

अनन्तर शालाक्य तंत्र कहते हैं शालाक्य अर्थात् उर्द्ध्व-जत्रु गत रोग यथा श्रवण नयन मुख नासिका इत्यादि-मे आश्रित जो रोग तस्य प्रशमनार्थ शालाक्य नाम कथित हुआ ॥ ५ ॥

अथ काय चिकित्सानाम

कायचिकित्सानाम सर्व्वाङ्गसंश्रितानां व्याधीनां ज्वरातीसाररक्तपित्तशोषोन्मादापस्मारकुष्टमेहादीनामुपशमनार्थम् ६

सर्व्वाङ्गाश्रित व्याधि यथा ज्वर अतीसार रक्त पित्त वात उन्माद अपस्मार कुष्ठ मेहादि रोगों को उपशमनार्थ कायचिकित्सा कथित हुआ ॥ ६ ॥

अथ भूतविद्या

भूतविद्यानाम देवासुरगन्धर्वयक्षरक्षः पितृपिशाचनागग्रहाद्युपसृष्टचेतसां शान्तिकर्म्मवलिहरणादिग्रहोपशमनार्थ-

म् ॥ ७ ॥

देवता असुर गन्धर्व्व यक्ष रक्ष पितृ पिशाच नाग ग्रह इत्यादि करके उपसृष्ट चित्तवान् मनुष्यों का शांति कर्म्म और वलिदान ग्रह शान्ति इत्यादि के अर्थ भूत विद्या उक्त हुआ ॥ ७ ॥

अथ कौमारभृत्यम्

कौमारभृत्यंनामकुमारभरणधात्रीक्षीर दोषसंशोधनार्थंदुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानांचव्याधीनामुपशमनार्थम् ॥ ८ ॥

कुमारों के पालन पोषणार्थ एवं धात्री क्षीर संशोधनार्थ दुष्ट दुग्ध तथा ग्रह एतज्जनित व्याधियों के उपशमनार्थ कौमार भृत्य अर्थात् वाल चिकित्सा उक्त हुआ ॥ ८ ॥

अथ रसायन तंत्रम्

रसायनतंत्रंनामवयःस्थापनमायुर्मेधावलकरंरोगापहरणसमर्थञ्च ॥ ९ ॥

वय स्थापन तथा आयु धारणावती वुद्धि वल इत्यादि का वर्द्धक एवं रोग उपशमन मे समर्थ रसायन तंत्र कथित हुआ ॥ ९ ॥

अथागदतंत्रम्

अगदतंत्रं नाम सर्प्पकीटलूतावृश्चिक
मूषिकादिदृष्टविषव्यञ्जनार्थं विविध
विषसंयोगविषोपहतोपशमनार्थम् ।
॥ १० ॥ * ॥

सर्प्प कीट अर्थात् कृमि विशेष लूता वृश्चिक मूषद्‌-
त्यादि दंशन से उत्पन्न विष एवं विविध प्रकार विष-
संयोग से उपहत मनुष्यों के रोग को दूरि करणार्थ *
अगद तंत्र उक्त हुआ ॥ १० ॥

अथ वाजीकरणतंत्रम्

वाजीकरणतंत्रं नाम अल्पदुष्टविशुष्क
क्षीणरेतसामाप्यायन प्रसादोपचयजन
ननिमित्तं प्रहर्षजननार्थञ्च ॥ ११ ॥

अल्प एवं दुष्ट तथा विशुष्क और क्षीण कामका वर्द्धन
और प्रसन्नता वृद्धि हेतुक जनन का कारण तथा ह-
र्ष जनन इत्यादि के अर्थ वाजी करण तंत्र उक्त हुआ
॥ ११ ॥ ११ ॥

अथायुर्वेदाधिकारिणः

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्या नामन्यतममन्व व
यव शील शौर्य्य शौचाचार विनय शक्तिव
ल मेधा धृति स्मृति मति प्रतिपत्ति युक्तं त
नुजिह्वौष्ठदंताग्र मृजुवक्त्राक्षिनासं प्रसन्न

चित्तवाक्चेष्टं क्लेशसहन्त्वं भिषक्शिष्य
मुपनयेत्ततो विपरीतगुणं नोपनयेत् १२

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एही त्रय अवयव में कोई एक को शील शौर्य्य अर्थात् शौन्दर्य्य शौच अर्थात् पवित्र आचार विनय शक्ति बल मेधा धृति अर्थात् धारणा वती बुद्धि अस्मरण मति इत्यादि का जो सिद्धि तद्युक्त और शरीर जिह्वा ओष्ठ दंत कोमल वक्ता प्रशस्त नेत्र नासिका चित्र वचन चेष्टा इत्यादि विशिष्ट क्लेश सहन शील एही समस्त गुण युक्त पुरुष को वैद्य आयुर्वेद पठनार्थ उपनयन करैं अतो विपरीत गुण मानको न करैं ॥ १२॥

वेदेभ्यश्च समुत्पन्नस्तस्माद्वैद्योमयोदितः
आयुर्वेदोपनयना द्वैद्योपि द्विज उच्यते ॥ १३॥

वेद से उत्पन्न अर्थ अध्ययन करने में वैद्य कथित हुआ और आयुर्वेद के उपनयन से द्विजनाम हुआ ॥ १३॥

यस्तु केवलशास्त्रज्ञः कर्म्मस्वपरिनिष्ठितः तमुह्यत्यातुरम्प्राप्य प्राप्य भीरुरिवाहवम् १४

जो वैद्य केवल शास्त्रज्ञ अर्थात् वैद्य शास्त्र का ज्ञाता है परन्तु कर्म्म में अपरिनिष्ठित अर्थात् हस्त क्रिया में अज्ञान है सो वैद्य यादृश कादर मनुष्य संग्राम में मा-

त्त होके मोह प्राप्त होतेहैं तादृश आतुर की चिकित्सा क
रने मे मोह को प्राप्त होतेहैं ॥१४॥

यस्तु कर्म्मसु निष्णातो धार्ष्ट्याच्छास्त्रबहि
ष्कृतः ससत्सु पूजां नाप्नोति वधं चार्हति रा
जतः १५ ॥

जो वैद्य कर्म्म मे निष्णात अर्थात् केवल हस्त क्रिया ज्ञाता
है परन्तु धृष्ट होके शास्त्राभ्यास नहीं करते सोई वैद्य श्रे
ष्ठों के मध्य मे पूज्यमान नहीं होते और राज द्वारा वध
योग्य होतेहैं ॥१५॥

एकं शास्त्रमधीयानो न विद्याच्छास्त्र निश्च
यम् तस्माद्बहुश्रुतः शास्त्रं विजानीया-
च्चिकित्सकः ॥ १६ ॥

एक शास्त्र अध्ययन करने से शास्त्र निश्चय नहीं हो
ता अतएव बहु शास्त्राभ्यास से चिकित्सक होते
हैं ॥१६॥

धर्म्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यम्मूलमु
त्तमम् रोगस्तस्यापहंतारं श्रेयसो जीवि
तस्य च १७ ॥

धर्म्म अर्थ काम मोक्ष एतत्सम्पूर्णों का आरोग्य उत्तम
मूलहै धर्मादि कल्याण और जीवित का हनन क-
र्त्ता रोगहै ॥१७॥

क्वचिदर्थः क्वचिद्धर्म्मः क्वचिन्मित्रं क्व-
चिद्यशः कर्म्माभ्यासः क्वचिन्नित्यंचि
कित्सानास्तिनिष्फला ॥१८॥

कदाचित् अर्थ कदाचित् धर्म्म क्वचित् मित्र क्व
चित् यश कदाचिन्नित्य कर्म्माभ्यास एही सर्व्व प्रा
प्ति होताहै अतएव चिकित्सा निष्फल नहीं हो-
ती ॥१८॥

व्याधेस्तत्वपरिज्ञानं वेदनायाश्चनिग्र
हम् एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वंनवैद्यःप्रभुरा
युषः ॥१९॥

उत्पन्न व्याधि एवं व्याधिका आदि कारण परिज्ञान-
एवं पीड़ाका निग्रह करना एही वैद्य का वैद्यत्व है पर
न्तु आयुर्बल का स्वामी वैद्य नहीं होता ॥१९॥

यावत्कण्ठगतप्राणाः यावन्नास्तिनि-
रिंद्रियम् तावच्चिकित्साकर्त्तव्याका
लस्यकुटिलागतिः ॥२०॥

यावत्काल पर्य्यन्त प्राण कण्ठ गत रहै और याव-
त्पर्य्यन्त इन्द्री रहित नहोय तावत्काल पर्य्यन्त-
चिकित्सा करना चाहिये अर्थात् कालका कुटि
ल गति है ॥२०॥

चिकित्सितशरीरस्य निष्कृतिन्नकरो

तिय: सयत्करोतिसुकृतंतत्फलम्भि
षगाश्नुते ॥ २१ ॥

जो मनुष्य चिकित्सित शरीर का निष्क्रय नहीं कर-
ते उनके सुकृत कर्म्म का फल वैद्य को प्राप्त होता-
है ॥ २१ ॥

भिषक्द्रव्यान्युपस्थाता रोगी पादचतुष्ट
यम् चिकित्सितस्य निर्दिष्टंप्रत्येकंत-
च्चतुर्गुणाम् ॥ २२ ॥

सद्वैद्य उत्तम द्रव्य परिचारक धीमान रोगी चिकित्सित
के ए प्रत्येक चतुर्गुण निर्दिष्ट हैं ॥ २२ ॥

श्रुतिपर्य्यावदातत्वंवहुशोदृष्टकर्म्मता
दाक्ष्यंशौचमितिज्ञेयंवैद्येगुणचतुष्टय-
म् ॥ २३ ॥

रोगका लक्षण और औषधी का परिणाम चिकित्सा
मे वहुदर्शी शौच विशिष्ट इत्यादि चतुर्गुण युक्त वैद्य-
होतेहैं ॥ २३ ॥

दृष्टकर्म्माचशास्त्रज्ञ: सवैद्य: सिद्धिभाग
न: एकाङ्गहीनोनश्लाघ्य:पक्षहीनइवद्व
हिज: शास्त्रंगुरुमुखोत्तीर्णं मादायोप
स्यचाऽसकृत् य:कर्म्मकुरुतेवैद्य:सवै
द्योऽन्येतुतस्करा: ॥ २४ ॥ २५ ॥

शास्त्रज्ञ एवं बहुदर्शी जो वैद्य सोई सिद्ध वैद्य परन्तु एतद्देक वर्जित होनेसे श्लाघ्य विहीन यादृश पक्ष-हीन पक्षी तादृश होताहै गुरु के मुखार विंद से उद्गीर्ण अर्थात् कथित शास्त्र का ग्रहण एवं वारम्वार उपाश-ना द्वारा जो कर्म्म कर्त्ता सोई वैद्यहै एतद्भिन्न जो कर्म्मक र्त्ता सो तस्कर हैं ॥२४॥२५॥

औषधंमूढवैद्यानां त्यजंतिज्वर पीडिताः
परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिवसाधवः॥२६
ज्वर पीडित मनुष्य को मूढ अर्थात् मूर्ख वैद्यका औ-षध परित्याग करना चाहिये यादृश पर पुरुष मे आसक्त स्त्री को साधुजन त्याग करते हैं ॥२६॥

आयुर्वेदंचिकित्सान्च ज्योतिषंधर्म्मनि र्णयम् विनाशास्त्रेणयोब्रूयात्तमाहुर्ब्रह्म घातकम् २७
आयुर्वेद और चिकित्सा शास्त्र एवं ज्योतिष तथा ध र्म्म शास्त्र एतत्सकल शास्त्र के विना यो आयुर्वल्ला दि ज्ञान कहैं उन्को ब्रह्म घाती कहना चाहिये ॥२७।

अध्यायनोऽपिशास्त्राणि तंत्रायुक्तोविच क्षणः नाधिगच्छतिसर्व्वार्थानर्थीभा-ग्यक्षयेयथा ॥२८॥
चिकित्सा शास्त्र अध्ययन करके तंत्र शास्त्र अपठन शी-

त वैद्य को चिकित्सा सर्वार्थ प्राप्त नहीं होना यादृश *
भाग्य हीन पुरुष को उपार्जित अर्थ नहीं लब्ध होता
॥२८॥*॥

कुचैलः कर्कशः स्तब्धः कुग्रामः स्वयमा-
गतः पंचवैद्यानपूज्यंते धन्वन्तरिसमा
यदि ॥२९॥

मलिन वस्त्र धारण कर्त्ता अतिशय क्रोधी बुद्धि रहित
नीचग्राम निवासी विना आवाहन स्वयमागामी ए
ही पञ्च गुण युक्त वैद्य कदाचिद्धन्वन्तरि सदृश
होय तथापि पूज्यमान नहीं होता ॥२९॥

उत्सृजत्यात्मनात्मानन्न वैद्यं परि शंक-
ते तस्मात्पुत्रवदेनञ्च पालयेदातुरं भि-
षक् ३०

रोग शरीर संहार कर्त्ता तन्न औषध द्वारा निवारण हो
ने से रोगी वैद्यको शरीर समर्पण करते हैं इस प्रका-
र से चिकित्सक रोगी का पिता सदृश होता है अतए-
व वैद्य रोगी को पुत्र सदृश पालन करे ॥ ३०॥

अथप्रायश्चित्तहीने व्याधिभोगक-
थनम्

प्रायश्चित्तविहीनानाम्महापातकिना-
मपि नरकान्तेभवेज्जन्मचिह्नांकि-

तच्छरीरिणाम् ३१ प्रतिजन्मभवेत्तेषांचि
ह्नंतत्पापसूचितम् प्रायश्चित्तेकृतेया
तिपश्चात्तापवतांपुनः ३२ महापातक
जंचिह्नंजायतेसप्तजन्मनि उपपापोद्भ-
वंपञ्चत्रीणिपापसमुद्भवम् ३३ दुष्क-
र्म्मजानृणांरोगायांतिचोपक्रमैःशमम्

अनन्तर प्रायश्चित्तहीन व्याधि भोग कहते हैं प्रायश्चि
त करके हीन महापातकी जीवों का नरक वास होताहै
पश्चात् नरकान्ते चिह्न विशिष्ट जन्म प्राप्त होके प्रतिज
न्म मे सोई पापका सूचक चिह्न होताहै प्रायश्चित्त क
रण द्वारा सो पाप चिह्न सप्त जन्म पर्य्यन्त होताहै उपपा
प जनित पञ्च जन्म एवं पापजनित चिह्न त्रिजन्म
पर्य्यन्त मनुष्यों का दुष्कर्म्मज रोग अनुष्ठान द्वारा शां
त होताहै ॥ ३१॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४॥

अथ महापातकरोगनिर्णयः।

कुष्टञ्चराजयक्ष्माचप्रमेहोग्रहणीतथा
मूत्रकृच्छ्राश्मरीकासाःअतीसारभगंदरौ
३५ दुष्टव्रणंगण्डमालापक्षाघातोऽक्षिना-
शनम् इत्येवमादयोरोगामहापापोद्भवा-
स्मृताः ॥३६॥

कुष्ट राजयक्ष्मा प्रमेह संग्रहणी कृच्छ्र मूत्र पथरी कास-

श्वास भगन्दर अतीसार दुष्टव्रण गण्डमाला पक्षाघात-अंध इत्यादि रोग महापातक जनित हैं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

॥ अथोपपातकरोगनिर्णयः

जलोदरीयकृत्प्लीहाशूलरोगव्रणानि च ॥
श्वासाजीर्णज्वरच्छर्दीभ्रममोहगलग्रहाः
रक्तार्बुदविसर्पाद्या उपपापोद्भवा गदाः ३७

अनन्तर उपपापोद्भव रोग कहते हैं जलोदरी यकृत्प्लीहा शूलरोग व्रण श्वास जीर्णज्वर वमन रोग भ्रम मोह गलग्रह रक्तार्बुद विसर्प इत्यादि रोग उपपाप जनित हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सामान्य पापज रोगनिर्णयः

दंतापतालक श्वित्र वपुकंप विचर्चिका व
ल्मीक पुण्डरीकाद्या रोगा पापसमुद्भवाः ३८

दंता पतालक अर्थात् दंतरुज चित्र वपु कंप विचर्चिका वल्मीक पुण्डरीक इत्यादि रोग सामान्य पाप जनित हैं ३८

अथातिपापरोगनिर्णयः

अथार्शाद्या नृणां रोगा अतिपापोद्भवं तिहि ॐ

अनन्तर अति पापोद्भव रोग कहते हैं अर्शादि रोग अति पाप जनित हैं। सो जन्म जन्मान्तर भोग होता है विना प्रायश्चित मनुष्य पाप से मुक्त नहीं होते ॥ ३९ ।

इति

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पङ्क्तिः
चिह्ना	चिह्ना	१	३
शान्मली	शाल्मली	४	१
क्षिपेतैलं	क्षिपेत्तैलं	८	६
मेतव्यंनरयोदींषं	मेतव्यन्तरयोर्द्दीषं	१५	१
प्रजपते	प्रजायते	१५	३
वक्ष्येच्छृणु	वक्ष्यम्शृणु	१६	१७
चंद्रात्ये	चंद्रादित्योः	१७	२०
घोषास्वीगंतवस्मृता	घोषास्त्वागन्तवस्स्मृताः	१९	३
जल्लमग्नि	जल्लमग्निं	१९	१२
मृत्युवो	मृत्यवो	१९	१३
जीवी	जीवि	२१	८
कथञ्चनः	कथञ्चन	२२	६
भरण्या	भरण्यां	३१	२
दिक्यो	दिक्सो	३२	१६
भूस्ते	भूस्ती	३६	२१
क्षीणा	क्षीणा	३८	१०
सन्निभाः	सन्निभः	३९	१६
मानवो	मानवो	३९	१७
निर्घोष	निर्घोषं	४१	७
समलीनता	मलीनता	४३	२१
स्वय	स्वयं	४७	१
घम्मनावासमेअतिथिहोताहै	मृत्युहोताहै	४७	९
तन्नादौ	अथातो	५२	६
भृत्युम्	भृत्यम्	५५	५
अस्मरण	स्मरण	५७	५
रोगा	रोगा	६३	१९

इति

नाड़ीज्ञान सटीक ..... ।।ु

अजीर्णमंजरी सटीक ..... ।ू

कालज्ञान सटीक ...... ।।ु

अनूपान मंजरी सटीक, आयुर्वेदसार संग्रह सटीक, वर्णज्ञान-इत्यादि ग्रन्थ यन्त्रस्थ हैं ॥*।

काली सरभाग ३

रसराजसुन्दर

केप्रथमखण्डका

उत्तरभाग

यहग्रंथमाथुरवंशावतंशशास्त्री

सुतकन्हैयालाल पाठकत्सुत

दत्तरामनिर्मित

जिस्कोभार्गवज्ञातीय रामनरायणने

मथुरा

मेंअपनेनिजयंत्रमेंशुद्धतापूर्वक

छापकरप्रकाशकरा

जिन्कोयहविचित्रग्रंथलेनेकी-

अभिलाषाहोयउन्को मथुरामेंद

त्तरामचौवेकेपुस्तकालयमें

मिलेगी

प्रथमावृत्ति ५०० मौल्य १ ३ डांकमासूल १

सूचीपत्र

मुम्बई की पुस्तकोंका

वाल्मीक रामायण	२०)	मनुस्मृती	४॥)	अमरकोष सटीक	२)
श्रीमद्भागवत स	३३)	धरमसिंधु	२॥)	अमरकोश मूल	॥=)
भागवत शिला	७)	निर्णयसिंधु	४)	मेदिन्यादिकोश	
कृष्णजन्म खण्ड	४॥)	व्यवहारराज	४)	चतुष्टय	१॥)
गर्ग संहिता	४)	मिताक्षरा	३)	गीतगोविन्दराधा	
सत्योपाख्यान	३)	अष्टादशस्मृति	२॥)	विनोदसह टैप	५)
जैमिनाऽश्वमेध	२)	धर्मशास्त्र संग्रह	४॥)	रघुवंश सटीक	२॥)
सचूर्णिकाभागवत	१०)	दानचंद्रिका	॥=)	[illegible]	॥=)
चूर्णिकामात्र	४)	शान्तिसार	२)	रामकृष्णकाव्य	।=)
हरिवंश पुराण	७)	प्रतिष्ठामयूख	।=)	सिद्धान्तकौमुदी	५)
कार्तिक महात्म्य	॥)	प्रायश्चित्तेन्दुशेखर	॥=)	लघुकौमुदी	॥=)
वैशाख माहात्म्य	॥=)	शूद्रकमलाकर	२)	चंद्रिका सटीक	४)
माघ माहात्म्य	॥=)	दशकरमपद्धति	॥)	सारस्वतसटीक	२)
मार्गशीर्ष माहात्म्य	॥)	विवाह पद्धति	।)	सारस्वतमूल पूर्वा	।=)
पुरुषोत्तममाहात्म्य	१)	वाषष्टि हवनपद्ध	।=)	हनुमाननाटक	१)
एकादशी माहात्म्य	॥)	व्रतोद्यापनकौमुदी	२=)	सुभाषितरत्नभांड	
पंचदशी सटीक	२॥)	रुद्री, दंडक	॥)	गार	४)
गीता सटीक	१॥)	संध्या, तर्पण	॥)	श्रुतबोधवृत्तरत्ना	॥)
अपरोक्षानुभूती	॥)	श्राद्धविवेक	१)	वृहज्जातक	२।)
सुन्दरविलास सटीक	२।)	नारायणबलि	।=)	मुहूर्तचिंतामणि	२)
विचार सागर	३)	तर्कसंग्रह	=)	ताजकनीलकंठ	१॥)
वृत्तिप्रभाकर	४)	तर्कसंग्रहदीपिका	।॥)	स्तोत्ररत्नाकर	१)

इनके सिवाय और भी बहुत छोटी मोटी पुस्तक हमारे पास विद्यमान है

रसराजसुन्दरकेपूर्वखंडमेंउत्तरभागका

सूची



जाहिरखबर

सब सज्जनोंको विदित होय कि रमलका (रमलनवरत्नग्रन्थ) की कविता छंद शास्त्रकी रीतिके विरुद्ध है तथापि इसका प्रश्नोत्तर वास्तवसे ठीक है और इसके प्रश्न भी रामबाणके समान मिलते हैं - और पट्पंचाशिका· प्रश्नवैष्णव· प्रश्नभैरव· प्रश्नमाणिक्य· प्रश्नकुतूहल· प्रश्नरत्न गर्गमनोरमा· इत्यादि प्राचीन ग्रंथोंकी आजकल थोडी विधि मिलती है· कारण यह कि एकतो उनके प्रश्न में उन कौल ग्नका ही निश्चय होना दूसरें एक लग्न में प्राय एकही मनुष्य प्रश्नकर सक्ता है और बहुत मनुष्य प्रश्न करें तो पंडितजीके होस और हवास जाते रहेंगे· लग्नन बाशक · तथा द्वादशांसक · निकालते २ दिनव्यतीत होजायगा इसीकारण हमने यह (रमलनवरत्न) छापनेका प्रारम्भ करा· परंतु इसदेशमें रमल विद्याके पाठक थोडे हैं इसकारण हमने इसकी भाषाटीकाबनाई प्रथम मूल· औरउसके नीचेउसकी भाषाटीका लिखी औरइसें चक्र· तथा इसके आदि में इसकी बडी सारणीबनायकर धरी कि जिसमें प्रश्नके समय विलंब न होने पावै यहग्रंथ एकमास में छपकरतैय्यार होगा-

श्री

श्रीशम्बन्दे

श्रीनिकुञ्जविहारिणेनमः

अथमंगलाचरणम्

क्षीराब्धि रुस्थितं देवं, पीत वर्णं चतुर्भुजम्
वन्दे धन्वन्तरिं नित्यं, नानागद निषूदनम्॥

अथसमोपधातु प्रकरणम्

तत्रादौसमोपधातुनि·

माक्षिकं तुत्थकाभ्रौच नीलांजन शिलालका रस-
कश्चेति विज्ञेया एते समोपधातवः १ विमलायाऽ
एमंचात्र के चिद्रस विदो विदुः॥

अर्थ– सोना माखी; नीला थोथा; सुरमा; मनसिल; हरताल; खपरिया; ए सात उ
पधातु हैं; कोई रूपा माखी अष्टम उपधातु कहते हैं + यह मत रसार्णवका है

अन्यच्च

सुवर्णमाक्षिकं तद्वत्तारमाक्षिक मेवच तुत्थंकास्यं
चरीतिश्च सिंदूरंच शिलाजतुः२ एतेसप्तसमाख्या-
ताविद्वद्भिरुपधातवः

अर्थ – सुवर्ण माक्षिक; तारमाक्षिक; नीला थोथा; कांस्य; पितल; सिंदूर;
शिलाजीत; ए सात उपधातु पंडितों ने कही है·

तथाचग्रन्थान्तरे

स्वर्णाजं स्वर्णमाक्षीकं तारजंतार माक्षिकं तुत्थंता
म्रभवंज्ञेयं कंकुष्टं वंगसम्भवम् ३ रसकोजसदा-
ज्जातो नागात्सिंदूर संभवः लोहाज्जातं लोहकिट्ट
मेताःसमीपधातवः ४

अर्थ- सुवर्ण सैं सोनामक्खी प्रगटी है· रूपे (चांदी) सैं रूपामक्खी· तांबें सें नीलाथोथा· वंगसैं कंकुष्ट· जस्त सैं खपरिया· सीसे सैं सिंदूर· और लोहसैं लोहकी कीटी प्रगट भई है ४ यह मत हमको मन्तव्य है ॥

सुवर्णादि धातुके अभाव में ग्राह्य पदार्थ

अभावे मुख्य धातूनां प्रयोज्यास्तू पधातवः कुर्वन्ति
तद्गुणा ह्लोके बहुयत्नेनशोधिताः ५

अर्थ – मुख्य सुवर्णादि धातुके न मिलने सैं उपधातुको कार्य में लाना चाहिये वोउपधातु बहुयत्न सैं शोधित धातु केसे गुण करती है ॥ ५ ॥

अन्यच्च

स्वर्णभावे मतं ताप्यं ततोपिस्वर्ण गैरिकम् रूप्या
दीनाममलाभेतु प्रक्षिपेद्विमला दिकम् ६॥

अर्थ – स्वर्ण के अभाव मैं सोनामाखी लेनी चाहिये और सोनामाखी के अभाव में स्वर्ण गेरू लेना और रौप्यादिकके अभाव मैं रूपामक्खी आदि गेरे ॥ ६ ॥

उपधातुनकाशोधन

त्रिकट्वर्के वरार्कैच भावयेद्व विभागना कर्त्तव्याश्चो
पधातूनांपूर्वदोषापनुत्तये ७

अर्थ – संपूर्णउपधातुन्को त्रिकुटा (सोंठ · मिरच · पीपल ·) के अर्क कोऔर त्रिफला (हरड़ · वेहेड़ा · आंवला) केरसकी वारे वारे भावना देने से शुद्धी होय है ॥ ७ ॥

उपधातून्कांशोधनमारण

पादांशसैंधवंदत्वा तूपधातून्विमर्दयेत् दश
धाचाम्लवर्गेण कटाहेलोहसंभवे ८ घर्षयेल्लो
हदंडेन प्रत्येकंच मुहूर्त्तकम् यथा सिन्दूरवर्णा
स्तेधातूनांदशमारणं ९।

अर्थ- उपधातून् का चतुर्थांश सैंधव लवण डारकर मर्दन करै नयालो
हकी कड़ाही में दशभावना अम्लवर्ग की देय और लोह के दंड सैं घोट-
ता जाय प्रत्ये औषध को दोदो घड़ी घोटै ऐसें करने सें दसधातून्का स्व-
रूप सिन्दूर के समान होय ॥ ९॥

अथस्वर्णमाक्षिकप्रकर्णम्

माक्षिकोत्पत्ति

कृष्णस्तु भारतं कृत्वा योगनिद्रा मुपागता तस्य
पादतलं विद्धव्याधेन मृगशंकया १० येतन्नप
तिता भूमौ क्षताद्रुधिर विन्दवः स्तेन निम्बफला
काराजातामाक्षिकगोलका ११॥

अर्थ- कृष्ण भगवान् भारत युद्धके अन्तरमेंयोग निद्रा को प्राप्त भए-
उस समय किसी वधिक ने मृगकी शंकामें प्रभू का चरणार विन्द
वाण सें वेधा- उस समय जो रुधिर चरण के क्षत (घाव) सें पृथ्वीमें गि
रा उसें नींव के फलाकार माक्षिक उपधातु प्रगट भई॥ १० ॥ ११ ॥

तथाच

सुवर्ण शैल प्रभवो विष्णुना काञ्चनोरसः तापी
किरात चीनेसु यवनेषु च निर्मितः १२ ताप्यः
सूर्यांशु संतप्तो माधवे मासिदृश्यते मधुरः का
ञ्चना भासः साम्लोरजत सन्निभः १३ किंचि-
त्कषाय मुभयः शीतपाकी कटुर्लघुः तत्सेवना

जरग्व्याधिविषैर्नपरिभूयते १४॥

अर्थ- सुवर्ण के पर्वत से उत्पत्ति जिस्की ऐसा सुवर्ण का रस वि ष्णु भगवान् ने तापी॰ किरात देश॰ चीन की विलायत॰ और यवनदेशों में निर्माण करा वही तापी देश में होने वाला जो ताप्यमाक्षिक हैं सो सूर्य की किरणों से तप्त होकर वैशाख महीना में दीखे है उसमें सुवर्णकी सीकां ति होती है और सवाद में मीठा होय है ये सुवर्ण माक्षिक के गुण हैं और रूपा माखी चांदी के समान और खट्टी होती है- तथा दोनो कुछ क सैले॰ शीतल॰ कटु॰ और हलके है इन दोनो सोना माखी और रूपा माखी के खाने सें बुढापा॰ रोग और विषसें मनुष्य पीड़ित नहीं होय १४॥

तथाच

स्वर्ण माक्षिक माख्यातं तापिजं मधु माक्षिकं ताप्यमाक्षिक धातुश्च माक्षिकं चैव तन्मत- म् ॥ १५॥ किंचित्सुवर्णमाहित्यात्स्वर्णमाक्षि कमीरितम् ॥ उपधातुः सुवर्णस्य किंचित्स्वर्ण गुणैःसमम्॥१६॥

अर्थ- तापी नदी के किनारे जो स्वर्ण माक्षिक होता है उस्को मधुमा- क्षिक ऐसें कहते हैं वो सुवर्ण के समान दीखै है इसी से उस्कोस्वर्ण माक्षिक कहते हैं और ताप्यमाक्षिकभी कहते हैं- रसवमाक्षिकही कहा ते हैं ये सुवर्ण की उपधातु है- इसी से किंचित् सुवर्णके से गुणहैं १६

नकेवलंस्वर्ण गुणावर्त्तते स्वर्णमाक्षिके ॥ द्र व्यान्तरस्य संसर्गात्संत्यन्येपि गुणायतः॥ १७॥ किन्तुतस्यानुकल्पत्वात्केचिदूनगुणाः स्मृताः॥ तथापि कांचनाभावे दीयते स्वर्णमाक्षिकं ॥१८ तपती तीरतोपिस्या दित्येवं तत् द्वितीयकं ॥ कान्यकुब्जोद्भवं ताप्यं विज्ञेयं स्वर्ण वर्णकं ॥१९

तपती तीर गन्त्तु पंचवर्ण मुदाहृतम् ॥

अर्थ- परन्तु स्वर्णमाक्षिक में केवल सुवर्ण केही समान गुण नहीं है किं तु द्रव्यांतर के संयोग सें और भी अनेक गुण है· परन्तु उससुवर्ण के अनु कल्प होने सें कुछ गुण न्यून है- तथापि सुवर्ण के अभाव में इसको दे ते हैं- यह तपती नदी के तीर होय है- और दूसरा कान्यकुब्ज अर्थात् कन्याकुमारी के पास होय है· वो सुवर्ण वर्ण के सदृश होय है और ना- पीके किनारे पर जो होय है वो पंच वर्ण होय है·॥ १९॥

द्वयोर्माक्षिकयोर्लक्षण

माक्षिको द्विविधोहेम माक्षिकस्तारमाक्षिकः॥२०

तत्राद्यं माक्षिकं कन्यकुब्जोत्थंस्वर्ण संन्निभं॥ त

पतीतीर सम्भूतंपंचवर्णसुवर्णवत्॥२१॥

अर्थ - माक्षिक दो प्रकार का है सुवर्ण माक्षिक और तार माक्षिक तहां सुवर्ण माक्षिक कान्यकुब्ज में होय है· और स्वर्ण के समान होय है· तथा तपती नदी के कनारे पर होने वाला सुवर्ण माक्षिक पांच वर्ण का और सु वर्ण के समान होय है·

तथाच

स्वर्णाभंस्वर्णमाक्षी कं निः कोणं गुरुतायुतम्

कालिमां विकरे तत्तुकरेघृष्टे न संशयः॥ २२॥

अर्थ- सुवर्ण के समान सुवर्णमाक्षिक होय है· और उसें कोने नहीं- होय तथा भारी होय है· उसको हाथपर घिसनें सें कालो चहोयहै॥२२

अथमारणयोग्यल·

स्वर्ण वर्ण गुरुस्निग्ध मीषन्नीलच्छवि च्छटं ॥

कषेकनकवद्घृष्टं तद्धितं हेम माक्षिकम् २३

पाषाण वहुल प्रोक्तस्ताराख्यो सोगुणाऽल्पकः

अर्थ- सुवर्ण कासा वर्ण - भारी · चिकना · किंचित् नीलछवि - कसौटीप

र घिसने में सुवर्णकीसी चमकदेय. उस्को हेममाक्षिक जानना. और जिसमें पत्थर के टुकड़ा वहुत होय वो अल्पगुण वाला रौप्यमाक्षिक-जानना ॥

अन्यच्च

माक्षिको द्विविधस्तत्र पीतः शुक्लो विभागतः
चतुर्द्धाकार संस्थानं विज्ञेयं क्षेत्र भेदतः॥ क
दंव गोल काकारं मुक्तिका पुट सन्निभम्॥२५
तथा गुलीय काकारं भस्मकर्त्तरिका समम्॥
तार्क्षमाक्षीक विमलाःशुपीतश्च सुलोहितः २६
सुवर्णमाक्षिकं तेषु प्रवरं सप्त वर्णकम्॥ तद्रु-
जतवर्णाच हीनाः शुक्ति पुटादयः॥२७॥ गुणा
तश्चसुवर्णानप्रवरः परिकीर्तितः

अर्थ- पीलि और सपेद के भेद में माक्षिक दो प्रकार का है. वो हीआ कर (स्थान) के भेद में और क्षेत्र के भेद में चार प्रकार का है. एक तो कदंव के फूल समान गोल. दूसरी मोती की सीप के समान. तीसरी अंगूठी के आकार। चतुर्थ भस्म और कतरनी के समान. इन्के चार नाम हैं. सुवर्णमाक्षिक. विमल. शुपीत. सुलोहित. इनचारों में सुवर्णमाक्षिक सातवर्ण का श्रेष्ट है- और चांदी के वर्ण समान शुक्ति पुटादि (सीपकेसदृश) अधम हैं. गुण से तथा सुवर्ण से उत्पन्न होने में सुवर्णमाक्षिक उत्तम हैं ॥

अशोधितमाक्षिकंकेअपगुण

अशुद्धं माक्षिकं कुर्य्या दांध्यं कुष्टं क्षयं कृमीन्
शोधनीयं प्रयत्नेनतस्मात्कनकमाक्षिकम्॥

अर्थ- अशोधित माक्षिक. अंधा. कुष्टी. खई. और कृमी इत्यादि रोगों को करे है इसीकारण सुवर्णमाक्षिक को अवश्य शोधन करना चाहिये

तथाच

मंदानलत्वं बलहानि मुग्रां विष्टंभतांनेत्रगदा न्सकुष्टान् ॥ २९ ॥ करोति मालांव्रण पूर्वकंच शुध्यादिहीनं खलुमाक्षिकंच ३०

अर्थ- मंदाग्नि· बलहानि· अफरा· नेत्ररोग· कुष्ट· कण्ठमाला· और व्रण· इतने रोगों को अशोधित माक्षिक करे है· इसी से शुद्धि अवश्य करनी ॥ ३० ॥

अथसुवर्णमाक्षिकशोधन

कांजिके निम्बुगोमूत्रेजयन्त्याः स्वरसेभिषक ॥ सुवर्णमाक्षिकंचैव तारमाक्षिकमेवच वध्वागा ढांबरे सम्यक् दोलायंत्रेत्र्यहं पचेत् ॥ ३१ ॥ शु ध्यतेनात्रसंदेहः सर्वयोगेषुयोजयेत् ॥

अर्थ- सोनामक्खी· अथवा रूपामक्खी को वस्त्र में बांधकर एकहांडी में दोला यंत्र के समान लटकाय देय और उस हंडिया में गौकामूत्र एकसेर नीबू का रस एकसेर- कांजी एकसेर· और अग्निमंथ (अरणी) कारस एकसेर इन चारों रस को मिलायकर भरदेय उस पोटली को उसके बीच अधर लटकाय दे उसके नीचे तीन ३ दिन दीपक अग्नि बालकर स्वेदन करे तो सोना माखी· और रूपा माखी शुद्ध होय ॥ ३१

तैलेनैरंडजेनादौ यामपात्रं विमर्द्दयेत् ॥ ॥ ३२ ॥

सच्छिद्रे संपुटे धृत्वा पचेत्रिंशद्वनोपलैः

अर्थ- तदनंतर बारीक पीसकर थोरासा अंडी का तेल डालकर २ प्रहर घोटै पीछे एक टीकरी बांध सरवा संपुट में धरै ऊपर की परई में थोरासा छिद्र करदे पीछे आरने ऊपला सेर एक की आंच देय-

जब शीतल होजाय तब निकासलेय तदनंतर उसको इन रस में घोटे सोलिखते हैं॰ ३२॥

हंसपदी देवदाली वटार्कं चस्नुहीपयः ॥ ३३ ॥
पुनर्भद्यं पुनः पुन पाच्यं भूधरे चत्रिधा त्रिधा ॥
म्रियंतेनात्रसंदेहः सत्यंगुरुवचोयथा ३४॥

अर्थ - हंसपदी; के रसकी भावना ७ दे कर टीकरी बांध सराव संपुट में धरदो सेर ऊपलान्की आंच देय - अथवा भूधर यंत्र में धरकर आंच देय इसीप्रकार देवदाली (बंदाल) के रसकी सात भावना देय - इसीप्रकार वरकेजटान् कीरस्की सात भावना देवकर आंचदेय - और आक के दूध की सात भावना- देकर आनदेय तो सुवर्णमाक्षिक की भस्महोय इसैं सन्देह नहीं है॰ यद्यपि मूल में तीन २ भावना लिखी हैं परन्तु सातसात भावना देनीचाहिये ये वृद्धवैद्यों की सम्मती है - इस सुवर्णमाक्षिक सैं अपची॰ गंडमाला॰ सूजन॰ मिरगी॰ श्वास॰ खांसी॰ खर्ई इतने रोग नष्ट होय - योगराजयोग में इस प्रकार फुके हुए स्वर्णमाक्षिक को वैद्य डारते है तबवो गुण करे है - भूधर यंत्र के लक्षण आगे यंत्राध्याय मैं लिखेंगे - ३४॥

प्रकारांतरेण शुद्धिः

एरंड तैललुंगाम्बु सिद्धं शुध्यति माक्षिकं ॥ सिद्धंवाकदली कन्द तोयेन घटिकाद्वयं ॥ ३५॥ तप्तं
क्षिप्तंवराक्काथे शुद्धिमायाति माक्षिकं

अर्थ - सुवर्ण माक्षिक को अरंडी के तेल में और मातुलुंग (बिजौरानिंबू) के रस में अथवा केला के कंद के रस में दो घड़ी पाचन करावै तो शुद्ध होय॰ अथवा सुवर्ण माक्षिक को तपायकर त्रिफला के काढ़ेमेंबुझावै तो शुद्ध होय ॥ ३५॥

शोधनकीतीसरीविधि

माक्षिकस्यत्रयोभागाःभागैकंसैंधवस्यच ॥ ३६॥

मातुलुंगद्रवैर्वाथ जंवीरोत्थद्रवैः पचेत् ॥ चाल-
येल्लोहजे पात्रे यावत् पात्रंसलोहितम् ॥ ३७॥ भ
वेत्ततस्तु संशुद्धिं स्वर्ण माक्षिक मृच्छति

अर्थ- सुवर्ण माक्षिक २ पैसाभर सेंधानोन १ पैसाभर दोनो को बारीक पीसकर कड़ाही में डार चुल्हे के ऊपर चढ़ाय देय नीचे तेज आंच देय और उस कड़ाही में बिजौरे नीवू का रस अथवा जंभीरी का रस डारता-जाय और करछी से चलाता जाय जव सुवर्ण माक्षिक का और कड़ाही कालाल रंगहोजाय तव सुवर्ण माक्षिक शुद्ध भया जानना-

शोधनकीचतुर्थविधि

अगस्तिपत्र निर्यासैः शिग्रुमूलं सुपेषितं ॥ तन्म
ध्य पुटितं शुद्धं निम्बु जाम्लेन पाचितं ॥ ३८ ॥

अर्थ- माक्षिक अगस्तिया के पत्ता के रस में और सहजने की जड़ के रस में घोटकर गज पुट की आंच देय तदनंतर नीवू की खटाई में घो टने से सोना माखी शुद्ध होय ॥ ३८॥

अथमारण

पिष्टाकुलित्थस्यकषायकेण तक्रेणवा जस्यहि
मूत्रकेण ॥ संचालयेद्वैद्यपतिःक्रमात्तम्मृतिंव्रजे-
त्सुन्दरिहेममाक्षिकं॥ ३९॥

अर्थ- सुवर्ण माक्षिक को पीस कुलथी के काढ़े में छाछमें बकरी के मूत्र में चुल्हे पर चढ़ायकर कड़छी से क्रम पूर्वक घोंटे तो सोना मक्खी की भस्म होय ॥

तीसरीविधि

मातुलुंगाम्बुगंधाभ्यां पिष्टं मूषोदरे स्थितं ॥ पंच-
क्रोड पुटैर्दग्धं म्रियते माक्षिक खलु ॥ ४० ॥ एरण्ड
तैलहगव्याद्यै मातु लुंगरसेनच खर्परस्थंदृढंपक्वं

जायते धातु सन्निभम् ॥ एवंमृतं रसेयोज्यंरसा-
यनविधावपि ॥४१॥

अर्थ- सोना मक्खी को बिजौरे नींबू और गंधक संयुक्त घोटकर पांच वार वाराह पुट देने से मेरे है इस प्रकार मेरे माक्षिक को बड़े खीपड़ा में चढ़ाय चूल्हेपर अराडी के तेल में घृत में बिजौरे निंबू के रस में घोटने से धातु के समान होजाय इस प्रकार मेरे हुए माक्षिकको रसायन विधि में देना चाहिये ॥

वराहपुटकेलक्षण

अरत्नि मात्रेगर्त्ते यद्दीयते पूर्ववत्पुटं ॥ करीषाग्नौ
तुतत्प्रोक्तंपुटवाराह संज्ञितं ४२

अर्थ- कोहनी से लेकर छोटी अंगुली पर्य्यन्त इतना बड़ा गढेला खोदकर पूर्व रीति (जैसे गजपुटादि कों में कहिआयेहैं) उसकर्म के अनुसार ऊपलान्की अग्नि देने को वाराह पुट कहते हैं-

चतुर्थविधि

माक्षिकस्य चतुर्थांशं गंधंदत्वाविमर्दयेत् ॥ उरुबू
कस्यतैलेन ततः कार्य्या सुचक्रिका ॥ ४३ ॥ सराव
संपुटेकृत्वा पुटेद्गजपुटेनच ॥ धान्यस्यतुषमूर्ध्वा
ऽधोदत्वा शीतसमुद्धरेत् ॥ ४४ ॥ सिन्दूराभंभवेद्ध
स्म माक्षिकस्यन संशयः

अर्थ- सोनामक्खी का चतुर्थांस गंधक डालकर दोनों को खरल करे तदनंतर अराडी का तेल डार उस्की टिकिया वनावै उन्को सराव संपुट में धरकर-गजपुटदेय जब शीतल होजाय तव इस्को निकाललेय तो इस्की सिन्दूर के समान लाल भस्म होय यह भस्म उतम है- (यहटोडरानन्दमें लिखाहै)

पंचमविधि

तैलेतक्रेगवांमूत्रेआरनालेकुलत्थके ॥४५॥ प्रो

घर्षेत्रिफलाक्षारे माक्षिकं वन्हितापितं ॥ ततःपरं पुटंदेयंकुमारीरसमर्द्दितम् ॥४६॥ कृत्वासुचक्रिकां शुष्कां कुक्कुटाख्ये पुटे पचेत् ॥ सप्तविंशतिसंख्याभिस्ततःस्यादमृतोपमम् ४७

अर्थ- तेल· छाछ· गौकामूत्र· कांजी- कुल्थी काकाढ़ा· त्रिफला के खार में अथवा काढा इन्में सोनामक्खी कोतपाय तपाय २ बुझाने से सुवर्ण माक्षिक शुद्धहोय- तदनंतर घीगुवार के रसकी पुट देकर घोटे पीछे इसकी टिकिया बांध उन्को सुखाय कुक्कुट पुटकी सत्ताईस आंचदेय तो इसकी अमृत के समान भस्म होय कुक्कुट पुटकी विधि सुवर्ण के प्रकर्ण में लिखआये हैं- यहराजहंसग्रंथ में लिखा है-

षष्ठविधि

किमत्रचित्रंकन्दलीरसेनसुपाचितं सूरणकंदसंपुटे। वातारितैलेनपुटेनताप्यं पुटेनदग्धंवरपुष्टिमेति ४८॥

अर्थ- जमीकंदकी गांठ को पोलीकर उसें माक्षिक को धरे पीछेकेला केरस की हांडी में भर उसें जमीकंद की गांठ को पचावै तदनंतर अंडी केतेल की पुट देकर गजपुट में फूकैं तो माक्षिक भस्म होय ४८॥

सप्तमविधि

हेममाक्षिकविचूर्णकंन्यसेत्खर्परेवहुलनिम्बुजैर्द्रवैः चालयेत्तदनुलोहदर्विणाखर्परेतुसिनयामकद्वयं॥ सम्भृतेयदिसुरक्तताभवेत् पिप्पलीमधुयुतंत्रिवल्लकं सेवितंतुवलपांडुकामलावातपित्तकहलीमकंजयेत्॥५०॥

अर्थ- सुवर्णमाक्षिक का चूर्णकर खीपरा में डाल और उसें निंबूकारस डालकर नीचे अग्नि जलावै और उसकोलोहकी कडछी से चलाताजाय

ऐसे दो प्रहर के करने से उसका लाल रंग होजाय तब उतार शीतलकर इसमें से तीनवल्ल (वल्लनामतीनरत्तीकाहै) सहत और पीपल के साथ सेवनकरे तो बलबढावै पांडुरोग कामला वातपित्त और हलीमकरोगको दूरकरे।

मृतमाक्षिककेगुण

स्यान्माक्षिकस्तिक्तसुदीपनः कटु दुर्नामकुष्ठामयभूतनाशनः पाण्डु प्रमेहक्षयनाशनोलघुः सत्वंमृतंतस्यसुवर्णवद्गुणैः

अर्थ-सुवर्णमाक्षिक तीखा है अग्नि को दीपनकर कडुआ है बवासीर कोढ भूत पांडुरोग प्रमेह खई इन्को नाशकरै और हलका है इसके मृतसत्वके सुवर्ण के समान गुण है-

तथाच

सुवर्णमाक्षिकंस्वादु तिक्तं वृष्यंरसायनं चक्षुष्यं वातिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् अर्शःशोफविषंकण्डूं त्रिदोषानपिनाशयेत्

अर्थ-सुवर्णमाक्षिक स्वादिष्ट है कडुआ है वृष्य है रसायन है नेत्रके रोग हरणकरे वमन को बंदकरे कंठके रोग पीलिया प्रमेह बवासीर सूजन उदररोग विषरोग खुजली और त्रिदोष के रोग एसबनष्टहोय

सुवर्णमाक्षिककासत्व निकालना

त्रिंशांशनागसंयुक्तं क्षारैरम्लैश्चवर्त्तितं ध्मातंमूषा टमुषायां सत्वंमुंचति माक्षिकं ॥

अर्थ-माक्षिकका तीसवा हिस्सा शीसामिलाय क्षारगण और अम्लवर्ग संयुक्तकर मूषा में धरकर वंकनाल के धोंकने से माक्षिक सत्व छोड़ताहै

सीसासंयुक्तमाक्षिकका

पृथक्करना

सप्तवारं परिद्राव्यं क्षिप्तं निर्गुंडिकारसे। माक्षीक सत्व
संमिश्रं नागं नश्यति निश्चितं

अर्थ- सीसा मिलेहुए सुवर्ण माक्षिक के सत्व को सातवार गलायकर निर्गुंडी (सम्हालू) के रस में बुझाने से माक्षिक के सत्व में मिले हुए सीसे को नष्टकरदे-

दूसरीविधि

क्षौद्रगंधर्वतैलाभ्यां गोमूत्रेण घृतेनच॥ कदलीक
न्दनीरेण भावितं माक्षिकं खलु॥ मूषायां मुंचतिध्मा
तं सत्वं शुल्वनिभं मृदुः

अर्थ- सहत और अंडी के तेल से तथा गोमूत्र और गोघृत तथा कदली कंदके जल में वारंवार भावना देकर माक्षिक को मूषा में धरकर वंकनालमें धौंकने से तांबे के समान सत्व निकले और नरम-

तीसरीविधि

माक्षिकसत्वकास्वरूप

गुंजाबीजसमच्छायं द्रुतंद्रावे च शीशवत्॥ ताप्यसत्वं
विशुद्धं तद्देहलोहकरम्परम्

अर्थ- गुंजा (घुंघची) के समानलाल वर्ण होय - और उसकी द्रुति - तथा द्राव में शीशे के समान नरम होय- वो माक्षिक सत्व शुद्ध जानना यह सत्व देह को लोह के समान कर्ता है-

माक्षिकभक्षणविधि

माक्षीकसत्वेन रसस्यपिष्टी कृत्वाविलीने चवलिंनिधा
य॥ संमिश्र्य सम्मर्द्य चरवल्वमध्ये निक्षिप्य सत्वंद्रुति
मभ्रकस्य॥ विधायगोलंलवणाख्यपन्त्रे पचेद्दिना-
र्धं मृदुवन्हिनाच स्वतःसुशीतं परिचूर्ण्य सम्यक्॥ व

ह्लोन्मितंव्योषविडंगयुक्तं ॥ संसेवितं क्षौद्रयुतंनिह
न्ति जरांसरोगंत्वपमृत्युमेव ॥ दुःसाध्यरोगानपिस
प्तवासरैर्नैतेनतुल्योस्तिसुधारसोपि ॥ ३॥

अर्थ- माक्षिक सत्व में पाराडारकर उस्की पिट्ठीकरे जब पारा उसैं मिलजाय तब गंधक डारे इस्को भी खल्ल में डारकर पीठी के साथ घोंठे तदनंतर इसैं अभ्रक का सत्व डार घोटकर मिलवै पीछे इस्का गोला बनाय एक हाडीलेय उसैं नोन भरकर उसैं उसगोले को धर और ऊपर भी उस्के नोन भरदे पीछे उस्को भट्टी पर चढ़ाय दो प्रहर आंचदेय परंतु मंद आंच देनी चाहिये जब- स्वांग शीतल होजाय तबउतार इस औषध को निकाललेय इस्को पीस इसैं से तीन रत्ती के अंदाज सोंठ· पीपल· मिरच· और वायविडंग· सहतमें मिलायकर भक्षण करने सें बुढ़ापा· औररोग· अल्पमृत्यु· तथा असाध्य- रोगोंको भी सात दिन में दूर करै इस्के समान अमृत भी नहीं है इसें- जो पारा और गंधक डारे वो शुद्धडाले यह प्रयोग हमारा परीक्षाकरा भया है अभ्रकद्रुति के प्रतिनिधि में अभ्रक सत्व कोडार ना चाहिये यह रहस्यबात हमने मनुष्यों के उपकारार्थ लिखी है-

माक्षिकसत्वद्रावण

एरण्डास्थेनतैलेन गुंजाक्षौद्रं चटंकणं ॥ मर्दितं त
स्यवापेन सत्वमाक्षिक जंद्रवेत् ॥

अर्थ- अंडी का तेल· घूंघची अथवा गुड· सहत· सुहागा इन्को पीसक र डालने से माक्षिक का सत्व द्रव रूप होजाय-

स्वर्णमाक्षिकानुपान

अनुपानं वराव्योषं वेल्लं साज्यं हिमाक्षिकम् ॥

अर्थ- त्रिफला· त्रिकुटा (सोंठ·मिरच·पीपल) केवल काली मिरच मक्ख न· और सहत ये सुवर्ण माक्षिक के अनुपान हैं अर्थात इन्के साथ देना- चाहिये·

अपक्वमाक्षिकेदोष·

अपक्व माक्षिके गात्रु देहे संक्रमते रुजा ॥ तद्दोषवि
निवृत्यर्थमनुपानं ब्रवीम्यहम्

अर्थ- कच्चे सुवर्ण माक्षिक के खाने से देह में अनेक रोग प्रगट होते हैं- उन्के शांति के निमित्त अनुपान कहता हूं॥

माक्षिकदोषशांति

कुलत्थस्य कषायेण माक्षिविकृति शांतिकृत् ॥ त
थैव दाडिमं त्वक् वै देयं देहसुखार्थिने ६४॥

अर्थ- कुल्थी के काढ़े से माक्षिक का विकार शांति होय तथा अनारकी छा ल के काढ़े से शांति होय है-

इतिश्री माथुर दत्तराम प्रणीते रसराजसु न्दरे प्रथमखण्डस्योत्तरभागे सुवर्णमाक्षि कप्रकर्णसमाप्तम्॥

अथरौप्य माक्षिक प्रकर्ण प्रा·

तारमाक्षिकोत्पत्ति

तारमाक्षिक मन्यत्तु भवेत्तद्रज तोपमम् ॥ किंचिद्र
जतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितं ॥ १॥ अनुकल्पतया
तस्य ततोहीना गुणाःस्मृताः॥ नकेवलं रौप्यगुणावर्त्त
न्ते तारमाक्षिके॥२॥ द्रव्यांतरस्य संसर्गा संत्यन्येपिगु
णायतः

अर्थ- रौप्य माक्षिक· स्वर्ण माक्षिकका सुसभिद है यह चांदी के समान होय है· इसमें रौप्यका मिलाप होने से इसको तारमाक्षिक कहते हैं· चांदी के अभा व में दीना जाय है इसी से इसमें चांदी की अपेक्षा कुछ न्यून गुण है इसमें रौ- प्य(चांदी) के ही केवल गुण नहीं है किन्तु अन्य द्रव्य के संयोग होने से और

भी वहुत गुण है-

अथास्यशोधनम्

कर्कोटीमेषश्रृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंवीरजैर्दिनं ॥ ३ ॥ भाव
येद्रातपेतीव्रेविमलाशुद्धिनिध्रुवं

अर्थ- रूपा माखी को ककोडा· मेंढा सिंगी· और जंभीरी नीवूके प्रत्येकके रस में सात सात वार धूप में खरल धरकर घोटे तौ रूपामाखी शुद्ध होय-

अथमारण

कुलत्थस्यकषायेण घृष्ट्वा तैलेनवा पुटेत् ॥ ४ ॥ तै-
लेनेवाजमूत्रेण म्रियंतेतारमाक्षिकम् ॥

अर्थ- शुद्ध रौप्य माक्षिक को कुलथी के काढ़े में एक दिन घोटे इसीप्रकार तिलके तेल में और वकरी के मूत्र में एकएक दिन घोटकर सरवा संपुटमें धरकर गजपुट की आंच देय तो रौप्य मासिक भस्म होय ॥

तथाच

स्वर्णमाक्षिकवज्ज्ञेयंतारमाक्षिक मारणं ॥ विम-
लायागुणाः किंचिन्न्यूनाः कनकमाक्षिकात्

अर्थ- रौप्य मासिकका शोधन मारण सत्व पातन इत्यादि कर्म सुवर्णमाक्षिक के समान जानने रौप्य माक्षिक मैं सुवर्णमाक्षिक की अपेक्षा कुछ न्यून गुण है-

रौप्यमाक्षिकके गुण

माक्षिकोरजतहाटकप्रभः शोधितानि गुणादःसुसे
वितः ॥ मेहकुष्टकृमिशोफपाण्डुता पस्मृतिहरति
सोश्मरींजयेत ॥ ६ ॥

अर्थ- रौप्यमाक्षिक रूपेके समान और सोनेके समान तेजस्वि यह शुद्ध-करा हुआ अत्यंत गुण देता है- इसके सेवनसे प्रमेह· कोढ· कृमि· सूजन· पीलिया· अपस्मार· तथा· पथरी इत्यादि रोग दूर होय ॥

इति रौप्यमाक्षिकप्रकरणम्

अथ विमला माक्षिक भेदः

तापीजं द्विरुदाहरन्ति विमला माक्षीक भेदादिह
त्रेधा धातु सुवर्णकांस्य रजतच्छायानुकारादिदम् ७
तिस्रो रौप्यसमयुताश्चतुरस्रिफलिकावृत्तास्वना माक्षिये
मध्ये तु त्रिफलातु शुध्यति दिनं वासकभृंगी रसे ॥८॥
स्विन्नाजंभरसे पितालवलिना वस्त्रे शके नाम्मसा
जम्भस्यैवपरिप्लुताद शपुटे जीर्वेन्न योगानुगाः ९॥

अर्थ - तापि माक्षिक विमला और माक्षिक के भेद से दो प्रकार का है इन दोनों भेदों में प्रथम जो तापिज है उसके तीन भेद हैं अर्थात एक सुवर्ण के सदृश सुवर्ण विमला· दूसरा कांस्य विमला· तीसरा रौप्य विमला· ए तीनों में सुवर्ण और कांसी तथा रूपे की झलक होने सैं उसी उसी धातु के नामसें कहे ए तीनों के लक्षण चिपटे हुए के सदृश· चौकोन· त्रिकोण· और गोल क्रम से होते हैं तथा शब्द रहित होय है- इन तीनों में बीच का कांस्य विमला श्रेष्ठ है· इनकी शुद्धि त्रिफला के काढे में तथा अडूसे· मेढासिंगी· कोई मेढासिंगी के स्थान में भांगरा कहते हैं· इनके रस में· तथा निंबू के रस में· पूर्वोक्त तीनों विमलान्का चूर्ण कर वस्त्र में बांध दोलायंत्र कर लटकाय दे· तदनंतर शुद्ध हरताल और शुद्ध ही गंधक ये विमला सें अष्टमांस डार निंबू के रस से खरल करै पीछे गजपुट की आंच देय इस प्रकार दस पुट देने सैं विमला की भस्म होय है इस प्रकार करी हुई भस्म को उक्त प्रयोगों में देनी चाहिये यह सर्व रोग दूर करै -

तथा विमला के भेद

विमलो द्विविधः प्रोक्तो हेमाद्यस्तार पूर्वकः तृ
तीयः कास्य विमलस्तत्कांत्यामलक्ष्यते ॥८॥

वर्तुलः कोणसंयुक्तः स्निग्धश्चफलकान्वितः॥म
रुत्पित्तहरो वृष्यो विमलोतिरसायनः॥ १०॥पूर्वो
हेमक्रियासुक्तो द्वितीयो रूप्यकर्म्मनः॥तृतीयोभेष
जेतेषुपूर्वपूर्वगुणोत्तरः॥११॥

अर्थ- विमला सुवर्ण और रौप्य के भेद से दो प्रकार का है कांस्य वि
मला तीसरा है ये सुवर्णादि की कांति में जानेजाते हैं- ये गोल कोणयुत
चिकने और भालदार होते हैं - तथावादीपित्त को हरण करे वृष्य है औ
र रसायन है सुवर्ण विमला सुवर्ण के कर्म में कहा है दूसरा अर्थात्
रौप्यमाक्षिक चांदी के कर्म में कहा है तीसरा अर्थात् कांस्य माक्षिक
औषध के कार्य में कहा है इनमें क्रमसे एक से दूसरे में गुण अधिक हैं

तथाच

माक्षीको द्विविधादिमः कनकरुक् दुर्वर्णवर्णोऽप
रं॥ कांस्यश्रीकमुशंतिकेचनपरं सर्वेपि पूर्वत्विषः
निःकोणागुरुवः किरंतिनिभृतंघृष्टाः करेकालिमा

अर्थ- माक्षिक दो प्रकार का है जिनमें प्रथम सुवर्ण माक्षिक दूसरा दुर्वर्ण
अर्थात् रौप्यमाक्षिक और कोई आचारी तीसरा कांस्य माक्षिक कहते हैं
तीनों माक्षिक विमल कांति होते हैं विमल के भेद कहते हैं
धारा रहित भारी तथा हाथ में घिसने से कालोंच करे ऐसे होते हैं

शुद्धीमाह

स्विन्नास्तिरुवुतैललुंगसलिलैर्यामेनशुध्यंति॥१२

अर्थ- इन तीनों को अंडी के तेल में एक प्रहर पचनाने से अथवा बि
जोरा निंबू के रस में घोटै तो शुद्ध होय॥

पक्कावाघटिकाद्वयेन कदली कर्क ॥टिकाकंदयो

अर्थ- अथवाकेलाकी जड़ केरस में तथा ककोड़ा केरस में दो घरी प
र्यंत औटाने से विमला की शुद्धी होय॥

रुध्वाकूर्मपुटे त्रिभिः पटुतरलुंगाम्बु गन्धप्लुताः
स्युभस्मानिजघन्यमध्यसुभगास्तेव्युत्क्रमेणोदि-
ता वृष्याःपाण्डु पटीयसोवलकरायोगोपयोगाःपु
नः ॥२३॥

अर्थ-इस प्रकार शुद्ध हुए विमला का चूर्ण कर इसमें बिजौरा नीबूका रस और गंधक को डालकर घोटे पीछे इसको सराव सम्पुट में धरकर कूर्म (कच्छप) यंत्र में तीन आंच देने से स्वर्ण माक्षिक. कांस्यमाक्षिक. और रौप्यमाक्षिक की भस्म होय कांस्य. रौप्य. और सुवर्ण ये तीनो क्रम से अधम. मध्यम. और उत्तम कहेहैं - एतीनोंकी भस्म वृष्य है-(अर्थात्शुक्रव ढावे) पांडुरोगदूरकरे + वलकरे योग के साथ अनेक गुण करे ॥

कूर्मयंत्रकेलक्षण

खर्परं पृथुकं सम्यक् विस्तारं तस्यमध्यतः आ
लवालं पुटे कृत्वा तन्मध्येपारदंक्षिपेत् ॥२४॥ ऊ
र्ध्वोऽधस्तु विडंदत्वा मल्लेनारुध्ययत्नतः॥उर्ध्वदेयं
पुटंतस्य यंत्रंकच्छपसंज्ञकं ॥२५॥ जारणार्थंरस
स्योक्तंगंधादीनांविशेषतः

अर्थ- मोटा और वड़ा खीपरा लेके उसके बीच में थामरा सावनावीच में पारद (दसजगे पारद का नाउपलक्षणामात्रहै अर्थात् जो वस्तु फूकनी होय उसको) धर और ऊपर नीचे विडदेकर सावधानी सें उसका वंद कर ऊपर सें ढकने सें ढाप ऊपर अग्नि का पुट देय यह पारद की गंधक जारणार्थकच्छप यंत्र कहा है.

विमलाशोधनकीदूसरीवि.

आढ़रूषजलेस्विन्नो विमलो विमलोभवेत्॥२६॥

अर्थ- अडूसे के जलमें औटाने से विमला शुद्ध होय है ॥ २६॥

तीसरीविधि

जम्बीरस्वरसे स्विन्नोमेषश्टंगीरसेथवा आयाति
शुद्धिविमलांधातवश्चतथापरे १०॥

अर्थ- जंभीरी नीबू के रसमें अथवा मेढासिंगीकेरसमें विमलाशुद्ध होय है. तथा और धातु भी शुद्ध होती है.

मारणाकीतीसरीविधि

गन्धाश्मलकुचाम्लैश्च म्रियतेदशभिः पुटैः ॥

अर्थ - गंधक और वडहल केरस की दश पुट देने से तीनों प्रकारकी विमलाभस्म होय.

विमलाकासत्वपातन

सटंकलकुचद्रावैमेषश्टंग्याश्चभस्मना॥१८॥
पिष्टोमूषोदरेलिप्तः संशोष्यचनिरुध्यच षटप्रस्थं
कोकिलैर्ध्मातो विमलः स्वेतसन्निभः॥१९॥सत्वं
मुंचतितद्युक्तोरसस्यात्सरसायनम् ॥

अर्थ - सुहागा. वडहलकारस. मेढासिंगी. और विमला की भस्म इनको घोटकर मूषा के भीतर चारो ओरलेहसदेय पीछें छः प्रस्थपक्के कोला नैं धरकर वंकनाल धौंकनी सैं धौंकने सैं विमला का सत्व सपेद निकले यह रस रसायन में देना चाहिये-

सत्वकीदूसरीविधि

विमलंशीग्रुतोयेन कांक्षीकासीसटंकणा॥२०
वज्रकंदसमायुक्तंभावितंकदलीरसे ॥ मोक्षक
क्षारसंयुक्तंध्मापितम्क मूषगं ॥२१॥ सत्वंचंद्रा
ऽर्कसंकाशंयततेनात्रसंशयः

अर्थ - विमला को सहजनें के रस में. फिटकरी. कसीस. सुहागा. और वज्रकन्दकारस डालकर घोटे तदनंतर केला के रसकीभावना देक

र मोक्षक (मोखावृक्ष) के खार को मिलाय मूषा में धरकर अग्निमें धोंकने सें चंद्र सूर्य के समान प्रकाशवाला सत्व निकले-

सत्वभक्षणविधि

तत्सत्वंसूतसंयुक्तं पिष्टकृत्वा सुमर्दितं ॥ २२॥
विलीनेगन्धके क्षिप्रंजारयेत् त्रिगुणंतालकम्
शिलांपंचगुणांचापि नलिकायंत्रकेखलु ॥ २३॥
तारभस्मदशांशेन तावद्वैक्रांतकंमृतम् ॥ सर्वमे
कत्रसंचूर्ण्य पटेनपरिगाल्यच ॥ २४॥ निक्षिप्यकू
पिकामध्येपरिपूर्ण्णप्रयत्नतः

अर्थ - जब सत्व निकाल चुके तब उस सत्व में शुद्ध पारा मिलायक र उसकी पिष्टी करलेय जब सत्व मिलजाय तबउसमें शुद्धगंधक डाले तदनंतर इसमें त्रिगुण हरताल शुद्ध जारण करे· और मनसिल पंचगुण जारण करे ए सब नलिकायंत्र में जारण करनी चाहिये· जब इस प्रकार विमला की भस्म सिद्ध होजाय तब इसमें दशांश रूपरस और इतनी ही वैक्रांतमणी की भस्म डारे इन सबको मिलायकर चूर्णकर कपरछनकरे· किसी चीने के पात्र में अथवा शीशी में यह भस्म कोयत्न पूर्वक धररावे -

भस्मकेअनुपानऔरगुण

लीढोव्योमवरान्वितो विमलकोयुक्तोघृतैः सेवि
तो ॥ हन्याद्दुर्भगकृज्जरानवपथुकंपाण्डुप्रमेहा
रुचिः मूलाग्निंग्रहणींचशूलमतुलंयक्ष्माभयंका
मलांसर्वान्पित्तमरुद्भवान्किमपरैर्योगैरशेषामयान् ॥

अर्थ - विमला की भस्म अभरक और त्रिफला (हरड· बहेड़ा· आंवला) तथा गौके मक्खन सहित खाने से स्वरूपके बिगाडनेवाली जरा (वृद्धापा) अवस्था· सूजन· पांडुरोग· प्रमेह· अरुची· ववासीर· संग्रहणी

गोमूत्रेदिनंपक्कंविशुध्यति

अर्थ- मोरचूत के समान बिल्ली की विष्टा लेकर इसमें सहतसुहागा डालकर खरल करै पीछे सरवा संपुट में धरकर कपड़मिट्टीदेकर अग्नि में फूंकदेय. इस प्रकार तीन पुटदेने से लीला थोथा वमनऔर भ्रांति रहित शुद्ध होय. अथवा लीला थोथे को अम्लवर्ग में खरलकर स्नेहवर्ग में स्विदन करै. अथवा दोलायंत्र में घोडाके मूत्रमें पकाने से नीलाथोथा शुद्ध होय. अथवा गोमूत्र में औटने से शुद्ध होय.

चतुर्थविधि

विष्ठया मर्दयेत्तुत्थं मार्जारककपोतयोः दशांशं टंकणंदत्त्वा पचेन्मृदुपुटेततः॥ पुटंदद्यात्पुटंक्षौद्रं देयंतुत्थविशुद्धये

अर्थ - बिल्ली और कबूतर की बीट में तुत्थ (लीलाथोथा) को खरल करै तदनंतर तुत्थका दशांश सुहागा डाल सराव संपुट में धर कपड़ मिट्टी देकर आरने कंडेन्की हलकी अग्नि देय पीछे उसको निकाल दही की पुट देकर अग्नि देय. इसी प्रकार सहत की पुट देने से लीला थोथा शुद्ध होय.

अथमारण

लकुचद्रावगंधाश्मटंकणेनसमन्वितं अन्धमूषागतंध्मातंत्रीकुक्कुटैर्मृतिमाप्नुयात्

अर्थ - गंधक. सुहागा. और लीलाथोथा. इनको कटहर के रस में खरलकर अंधमूषा में धरकर फूंके इस प्रकार दोतीन कुक्कुटपुटसे तुत्थ की भस्म होय. कुक्कुट पुट सुवर्ण के प्रकर्ण में लिख आये हैं.

सत्वनिकासन

मयूरकस्यतुचूर्णंतुपादसौभाग्यसंयुतं करंजतैलमध्यस्थं दिनमेकं निधापयेत॥ अंधमूषासुम

ध्यस्थंध्मापयेत्कोकिलात्रयं इंद्रगोपाकृतिंचैव सत्वंपततिशोभनम्

अर्थ- सस्यक (नीलाथोथे) का चूर्ण सुहागे करके संयुक्त करे कञ्जा के तेल में एक दिन भिजोवे पीछे अंध मूषा में धरकर पक्के कोलानमें तीन प्रहर वंकनाल के धोंकने से इंद्रगोप (वीरवहुटी) के समान लाल सत्व निकले -

सत्वकीदूसरीविधि

निम्बुद्रवाल्पटंकाभ्यांमूषामध्येनिरुध्यच ताम्र रूपंपरिध्मातंसत्वंमुचतिसस्यकम्

अर्थ- नींबू के रस में नीलाथोथा और सुहागा मिलाय मूषा में धरक र भट्टी में वंकनाल के धोंकने से ताम्र के समान सत्व निकले ॥

तीसरीविधि

गुग्गुल टंकणं लाक्षा सर्जिसर्जिरसंपटु ऊर्णा गुंजा क्षुद्रमीन मस्थिनी ससकस्यच गुंजामध्वा ज्य संयुक्तं पिशयाकंच्चअजापयेः तुत्थस्यचद शांशेन प्रक्षिप्तंवटिकीकृतम् ध्मातंचअंधमूषा यांसत्वंपतति शोभनम्

अर्थ- गूगल· सुहागा· लाख· राल· सज्जी· नोन· ऊंन· घूघची· छोटी मछली· ससे की हड्डी· सहत· घृत· (तेलनिकलेसैजोवचे) वकरीका दूध एसवतुत्थ की दशांशलेने चाहिये इन सबको तुत्थ में मिलायगो ली वनाय मूषा में धर अग्नि में वंकनाल के धोंकने से श्रेष्ठसत्वनिकले·

तुत्थकासत्वविनाअग्नि केनिकालना

अथवातुत्थकंचूर्णंनिम्बुनीरेविनिक्षिपेत् धार येल्लोहपात्रेचयावत्सप्तदिनानिवै ॥ लोहपात्रा

त्समुद्धृत्यसत्वंग्राह्यंसुशोभनं सिद्धयोगमिदं
स्यात्हुताशनपुटंविना

अर्थ– तुत्थ (लीलाथोथे) को लोह के पात्र में चूर्णकर उस्में-नीबू का रस भरकर सातदिन धरारहने देय- अष्टम दिन तुत्थ का सत्व उस पात्र के पेंदी में बैठजाय उस्को लेलेना चाहिये यहसिद्ध योग विना अग्नि के सत्व निकालना कहा है- भूनाग सत्व के प्रकर्ण में मोरपंख सें तांमें निकाल नेकी विधि कहिआये हैं- यह ताम्र के प्रकर्ण सें मालूम करलेना तथापि यहां मोर के पंख सें ताम्र निकाल ने की विधि स्पष्ट कहते हैं-

मोरपंखसैंताम्रनिकालना

मयूर पिच्छ मादाय ज्वालयेदाज्यसर्पिषा ख
लगुग्गुलमीनोर्णाटंकणासर्जिकामधु॥ गुंजा-
पिप्पललाक्षाचघृतंचैकत्रकारयेत् धमेतद्
धमूषायांनागताम्रंप्रजायते

अर्थ– मोर पंखों की राख घृत मिलाय कर करे उसराख में खल-गूगल- छोटी मछली- ऊन- सुहागा- राल- सहत- गुंजा (घूंघची) पीपल की लाख- और घृत इन सब को मोर पंख की राख में मिलाय अंध मूषा में धरकर बंकनाल के धोंकने से मोरपंखों का ताम्र निकले इसको नागताम्र कहते है-

भूनागसत्वनिकालनेका
प्रकारान्तर

भूभुजंगसमादायचतुःप्रस्थसमन्वितम् प्रक्षाल्य
रजनीतोयैः शीतलैश्चजलैरपितपोषितमयूरंचश्च
रंवा चूर्णमायुधम् क्रमेण चारयित्वाथतद्विष्टांस
मुपाहरेत् क्षाराम्लैः सहसंपेष्य विशोष्यचखरान

पे ततः खर खर के सित्वा भर्जयित्वामपिंचेरे
त् मषिंद्रावणा वर्गेणा संयुक्तां संप्रमर्द्दितं निरु
ध्य कोष्ठिकामध्ये प्रधमेत् घटिकाद्वयम् शीत
लीभूतमूषायां खोटमाहृत्य पेषयेत् प्रक्षाल्य र
वकान् शुद्धान् समादाय प्रयत्नतः

अर्थ- चार प्रस्थ कैंचुआ लेकर उन्को हलदी के पानी सैं धोवै पीछें स्वच्छ शीतलजल सें धोवै तदनंतर भूखे मोर को अथवा मूंके मु रगा को क्रम से थोड़े थोड़े चरावै उन्की बीठ को इकट्ठीकर उस बीठ में खार और खटाई मिलायकर पीस डाले तदनंतर उस्कोनि ज धूप में सुखावै पीछे उस्को कडाही में डालकर भूने जबतक- कोला के समान काला होय पीछे उस काली बीठको द्रावण वर्ग कर्के संयुक्त कर मर्दन करे तदनंतर मूषा में धरकर दोघड़ीपर्यं त बंकनाल धोंकनी सें अग्नि में धोंके जब स्वांग शीतल होजाय तब खंगड को निकालकर पीसे उसको जल से शुद्धकर उसमें से ताम्र के रवान को युक्ति सें निकाल लेय -

विषहर मुद्रिका (अंगूठी)

तुल्यसत्वंनागनाम्रेहेमचैवसमांशके मुद्रिकेयं
विधातव्याशूलघ्नीतत्क्षणाद्ध्रुवं ॥ चराचर
विषभूतडाकिनीचगदंजयेत् कनिष्ठाधार्यमा
णेन विषघ्नीसर्वदाभवेत् रामवत्सोमसेनानीमु
द्रितेपितदाक्षरम् ॥ हिमाचलस्योत्तरेतीरेअश्व
कर्णोमहाद्रुमः । तत्रशूलसमुत्पन्नंतत्रैवनिध
नंगतः ॥ मंत्रेणानेनमुद्रांतुनिपीनंसमभंत्रितः
सद्यः शूलहरं प्रोक्तमिति भालुकिभाषितं ॥ अ
नयामुद्रयातप्तं तैलमग्नौसुनिश्चितं सेचितं

हन्तिवेगेनशूलंयत्नकचिद्द्रवेन् सद्योऽतुकरंन्।
र्याःसद्योनेत्ररुजापहं

अर्थ– नीलाथोथेकासत्व· नागताम्र(केंचुआकानामा) इन्की बराब
र सुवर्ण डालकर मुद्रिका (अंगूठी) बनवानी चाहिये· यहअंगू
ठी तत्काल विष स्थावर जंगमविष-भूतबाधा- डाकिनी काविष-इन
सबको नाशकरै इस्को दक्षिणहाथकी छोटी ऊंगली में धारण नि
त्यकरनी चाहिये (रामवत्ससोमसेनानी) इसमंत्रसेजलको सातवार
अभिमंत्रितकर उसमें अंगूठी को धोयकर पिलाने सैं शीघ्र शूल-
(दर्द) को नाशकरे यह भालुकी महात्माने कहा है· इसअंगूठी
को तेल में डालकर अग्नि में औटावे फिर इसतेल को जिस ठौर
दर्द होता होय उस जगह लगाने सैं शूल तत्काल नष्ट होय कष्टी
स्त्री इस अंगूठी के धुए जल के पीने सें तत्काल प्रसूती होय औ
र नेत्र रोगी के नेत्र अच्छे होय ॥

अथतुत्थसत्वमारण

पाषाणभेदिमत्स्याक्षीद्रवैः द्विगुणगन्धकं स
त्वस्यलेपयेत्पिष्टिंरुध्वागजपुटेपचेत ॥ समांसे
नपुनर्गन्धंदत्वाद्रावैश्चलोलयेत् एवंसप्तपुटैः
पक्कसत्वभस्मभवेध्रुवम्

अर्थ– पखानभेद· और मछेछी इन्के रस में सत्व सें द्विगुणात गं
धक लेकर खरल करे पीछे उस पिट्ठी से सत्व का लेपनकर गज
पुट में फूंक देय तदनंतर फेर सत्व के समान गंधक डाल मछे
छी और पाखानभेद के रस में खरलकर गजपुट में फूंके इसप्र
कार सातवार करने सें सत्वकी भस्म निश्चय होय –

दूसरीविधि

सत्वस्य द्विगुणं सूतं गन्धंदेयंचतुर्गुणं जम्बी

राम्लेनतत्सर्वं मर्दयेत्प्रहरत्रयम् ॥ आदौ मूषा
न्तरे क्षित्वा धत्तुरस्यतु पत्रकं आच्छाद्य धूर्तपत्रै
श्च रुध्वा गजपुटैः पचेत् स्वांगशीतं तु संचूर्ण्य
मृतं भवति निश्चितं एवं सप्तविधं कृत्वा निरु
त्थं च मृतं भवेत्

अर्थ– सत्व सें दुगना पारा और चौगुनी गंधक डालकर जंभीरी
निंबू के रस में तीन प्रहर मर्दन कर पीछे मूषा में धरकर धतूरे
के पत्तो सें आच्छादित कर गजपुट में फूंक देय जब स्वांग शीतल
होजाय तब उसका चूर्ण करे इसप्रकार सात वार करने सें निरु
त्थ भस्म होय –

इसके गुण

निश्शेषदोषविषहृत् गदशूलमूल कुष्ठास्रपि
त्तिकविबंधहरं परंच रासायनं वमनरेचकरं गर
घ्नं चित्रापहं गदितमत्र मयूरतुत्थम्

अर्थ– अखिल दोषों को · विष · शूल · बवासीर · कोढ · रक्तपित्त · अ
फरा · इन्को दूर करै · रसायन है · वमन · रेचन को करै · चित्रकुष्ठ को
हरै ऐसें गुण नीलथोथे के कहे है ·

तुत्थविकारशांति

जम्बीररसमादाय यः पिबेद्दिनत्रयं तस्य तुत्थ
कृशांतिस्यात्तद्वद्धान्यजनवारिणा

अर्थ– जंभीरी का रस पीने सें तुत्थक विकार शांति होय इसी प्रका
धानकी खील के पानी सें तुत्थविकार शांति होय है

इतिश्रीरसराजसुन्दरेतुत्थप्रकरणंसमाप्तम्

चपल

यत्रजातौ नागवंगौ चपलस्तत्र जायते गौरश्वेतो रुणाकृष्णश्चपलस्तु चतुर्विधः॥ हेमाभश्चैवता राभो विशेषाद्रसबन्धकः शेषौतुमध्यौलाक्षाव च्छीघ्रद्रावौतुनिष्फलौ वंगवद्द्रवतेवन्हौचपल स्तेनकीर्त्तितः॥ क्षीयतेनापिवन्हिस्थः सत्वरूपोम हाबलः ईदृशश्चपलोवास्याद्धातोनांवादसिद्धये॥

अर्थ– जिस स्थान में शीशा और रांग प्रगट होय है उसी स्थान में चपल (शीशेकाभेद) प्रगट होय है वो चपल गौर-सपेद-लाल और काले के भेद से चार प्रकार का इनमें भी सुवर्ण के समान और रूपे के समान जो चपल है वो पारद को वंधन कर्त्ता जानना औरबाकी के लाख के समान शीघ्र अग्नि में पतले होजाय वो निस्फलजानने वंग (रांगा) के सदृश अग्निपर पतला होने से इस्को चपल कहते हैं- (अवकार्य्य में ग्रहणयोग्य चपलकेलक्षण कहते हैं-) जो अग्नि में फूकने से नष्ट न होय-सत्वरूप-महाबली ऐसा चपल धातु वादकी सिद्धीके अर्थ लेना चाहिये-

चपलकास्वरूप

चपलस्फटिकच्छायः षडस्त्रस्निग्धकोगुरुः म हारसेषुकेप्युक्तश्चपलः परिकीर्त्तितः॥ अयंत परसःकैश्चित्पठितोन्यैरसेषुच॥

अर्थ– चपल-स्फटिक मणि के समान स्वच्छ-छः कोणवाला-चिकना-और भारी होय है-कोई आचार्य इस्को महारसो में गणनाकरते है-और कोई इस्को उपरसो में कहते हैं-

नागसम्भवचपलकेलक्ष.

त्रिंशत्पलमितंनागंभानुदुग्धेन मर्द्दितम् वि लिप्यपुटयेत्तावद्यावत्कर्षावशेषितम॥ नत्त

त्पुटसहस्रेणक्षयमाप्नोतिसर्वथा ॥ चपलोयंस
मुद्दिष्टोवार्त्तिकैर्नागसम्भवः ॥ नरहस्तसं-
स्पृष्टःकेवलोवध्यतेरसः

अर्थ- शीशा पल २० लेय उसको आकके दूध में खरल कर संपुट में धरकर फूंकदेय ऐसें तबतक करे जबतक १ कर्ष मात्र वाकी रहै यह जो कर्ष भर शीशा बचै है सो हजार पुट देने सें भी नष्ट नही होय. यह नाग संभव चपल कहाता है. इसको हथेलीपर धर पारे के साथ मर्दनकरने सें पारा बद्ध (कायम) होय है-

चपलशोधनम्

विषोप विषधान्याम्लैर्मर्दितश्चपलस्तथा जंबी
रकर्कोटकशृंगवेरैर्विभावनाभिश्चपलस्य
शुद्धिः

अर्थ- विष+उपविष. कांजी. इनमें खरल करने सें तथा जंबीरी. नीबू. ककोड़ा. और अदरकके रस की भावना देने सें चपलकी शुद्धि होय है-

चपलमारण

मारयेत्पुटपाकेनचपलोगिरिमल्लिके ताम्रवन्मा
रणंचापिचपलस्य प्रशस्यते ॥

अर्थ- त्रायमाण अथवा मौलसिरी के पुट पाक सें चपल की भस्म होय- अथवा ताम्र के समान चपल का भी मारण करे-

दूसरीविधि

शैलंतु चूर्णयित्वातुधान्याम्लोपविषैर्विषैः ॥
पिंडंबध्वातुविधिवत्पातयेच्चपलंतथा ॥

अर्थ- शिलाजीतका चूर्णकर उसमें चपल को डार विष और उपविष सै गोलाबांधि संपुट कर फूंके तो चपल मरै-

चपलकासत्वनि.

सत्वमंबरवद्ग्राह्यंसूतबंधकरंपरम् ॥

अर्थ – चपलकासत्व अभ्रक सत्व की विधि से काढना चाहिये चपलका सत्व पारे का बांधने वाला है-

चपलके गुण

गुल्मामशूल शोषेषु प्रमेहेषुज्वरेषुच प्रदरेषुप्र योक्तव्यः चपलस्त्वमृतोपमः ॥ चपलोलेखनः स्निग्धोदेहलोहकरोमतः रसराजसहायस्यात्ति क्तोष्णोमधुरोमतः ॥ त्रिदोषघ्नोतिवृष्यश्चरसबंध विधायकः

अर्थ – गोला· आमवात· शूल· शोष· प्रमेह· ज्वर· प्रदर· इनरोगों में यह अमृतोपम चपल देना चाहिये· चपल लेखन है· चिकना है· देह कोलोह के सदृश कठोर करै· पारेका सहायक है· तिक्त· गरम· मीठा ऐसा है त्रि दोष को दूरकरै· अत्यंत वृष्य (शुक्रपैदाकरनेवाला) है पारे को बांधे ने वाला है

इति चपलप्रकरणम

कंकुष्ठ (मुरदाशंख)

हिमवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते तत्रैकं नालिकाख्यंचतदन्यद्रेणुकामतं ॥

अर्थ – हिमालय पर्वत की शिखरो में मुरदाशंख प्रगट होय है वोदोप्र कार है एक नलिकाख्य· दूसरा रेणुका कहा है-

नलिकाकंकुष्ठलक्षण

पीतप्रभंगुरुस्निग्धंकंकुष्ठंशिलयासमं मृदुती व्रशलाकाभंसच्छिद्रंनलिकाभिधं ॥

अर्थ – पीला· भारी· चिकना· शिलाकेसमान· अत्यंत नम्र· सलाकाकेस मान जिसमें छिद्र होय उस कंकुष्ठ कोनलिका भिध कहते है यह श्रेष्ठ है·

रेणुकाकंकुष्टकेल-

रेणुकाख्यंतुकंकुष्टंश्यामपीतरजोन्वितं ॥
त्यक्तसत्वंलघुप्रायःपूर्वस्माद्धीनसत्वकं

अर्थ- रेणुकनाम कंकुष्ट काला- पीला- धूरेसे लिसा- सत्वरहित- हल-
का- असा होय है यह पहले से हीन गुण वाला है- ॥

कंकुष्टके नाम

कंकुष्टंकाककुष्टंचवरांगंकोलवालुकं ॥ उ
पधातुस्तुवंगस्यइतिभालुकिभाषितम्

अर्थ- कंकुष्ट- काककुष्ट- वरांग- कोलवालुक- ए मुरदासंख के नामहैं
ये वंगकी उपधातु है यह भालुकी ने कहा है -

वाग्भटस्तु

सद्योजातस्यकरिणः शकृत्कंकुष्टमुच्यते ॥ य
द्वासद्यःप्रसूतस्यवाजिबालस्यविट्स्मृतं ॥ नालं
वावाजिवालस्येत्येवंनानाविधमतं आप्तवाक्य
न प्रमाणांतुसर्वेषांवचनंजगुः ॥

अर्थ- वाग्भट ग्रंथ कर्ता कहता है कि सद्यजात हाथी का विष्टा कंकु
ष्ट है अथवा सद्जात हाथी के बच्चेका वमन है- अथवा हाथी के बच्चेका
नाल है इस प्रकार अनेक प्रकार के मत है आप्तवाक्य प्रमाण होने सें स
बों के वचन कहे हैं -

कंकुष्टकी शुद्धि

कंकुष्टं शुद्धतांयाती त्रेधा शुण्ठ्यंबुभावितं ॥

अर्थ- सोंठ के जल में तीन बार भिजोने से कंकुष्ट की शुद्धि होती है ॥

रसेरसायने श्रेष्टं निःसत्वंबहुवैकृतं ॥ सत्वो
त्कर्षोस्यन प्रोक्तोयस्मात्सत्वमयंहितम् ॥

अर्थ- शुद्धकरा मुरदा संख रस और रसायन में श्रेष्ट है और जो सत्व

रहित है सो बहुत विकार कर्त्ता है- इसका सत्व निकालना नहीं कहा क्यों कियह स्वयंहि सत्व रूप है ॥

मुरदाशंखके गुण

कंकुष्टं तिक्त कटुकं वियोष्णं चातिरेचनं ॥ नाशयेदामसूत्तिंश्च विरेचस्सरणमात्रतः ॥ व्रणोदावर्त्तशूलार्तिगुल्म प्लीहगुदार्त्तिनुत् कंकुष्टना शयेच्छीघ्रंकठोदरजलोदरं

अर्थ- कंकुष्ट तीखा और कडुआ है वीर्यकेरोगोको दूरकरे- अत्यंतरेचक है- आमवात को नाशकरे स्मरणमात्र में दस्त लावे- व्रण- उदावर्त्त- शूल- गोला- तापतिल्ली- बवासीर- कठोदर और जलोदर इनको मुरदाशंख शीघ्र नाशकरे-

कंकुष्टपथ्यम्

भजेदेनं विरेकार्थं ग्राहिभिर्यवमात्रया बब्बूलकुलिक्काकाथे जीरसौभाग्यटंकणं ॥ कंकुष्टविष नाशाय भूयोभूयोपिबेन्नरः

अर्थ- विरेचनके निमित्त इसको यवके समान ग्रहण करे- तथा बबूल मे झाखिमी जीरा सिंदूर सुहागा इनके साथ मुरदाशंख को विषनाशनार्थ सेवन बार बार करे-

॥ इतिकंकुष्टप्रकरणंसमाप्तम् ॥

रसक (खपरिया)

रसकोद्विविधः प्रोक्तो दुर्दुरः कारवेल्लकः सदलोदर्दुरः प्रोक्तः निर्दलःकारवेल्लकः ॥ सत्वपाते शुभः पूर्वोद्वितियश्चौषधादिषु ॥

अर्थ- रसक दो प्रकार का है- एक दुर्दर दूसरा कारवेल्लक इनमें जो दलदार है सो दुर्दर और दलरहित कारवेल्लक होता है इनमें भी सत्व पातन

में पहिलो अर्थात् दर्दुर शुभ है. और औषधादिक में कारवेल्लक ॥ ॥

पीतकृष्णस्तथारक्तः क्वचिन्संदृश्यते भुवि: ना
गार्जुनेन संदिष्टौ रसक श्चकलंबुकौ ॥

अर्थ- पीला. काला. और लाल. असी खपरिया किसी पृथ्वी में दीखतीहै
नागार्जुन आचार्य ने रसक और कलंबुक ए दो भेद कहे है-

रसदर्पणेतु

मृत्पाषाणा गुडैस्तुल्य स्त्रिविधो रसकोमतः पीत
स्तुमृत्तिकाकारः श्रेष्ठस्यात्सतु पत्तलः ॥ गुडा
भोमध्यमः स्थूलोः पाषाणाभः कनिष्ठकः ॥

अर्थ- मट्टी. पाषाण. (पत्थर) और गुड़के सदृश होने से खपरिया तीन
प्रकार की है इन्में जो मट्टी के आकार पीलीऔर पत्रवान् होय सो श्रेष्ठ
है. और गुड़ के समान होय वो मध्यम है. तथा पत्थर के समान स्थूल हो
य वो खपरिया अधम है-

रसपद्धतौ

रसकं तुत्थभेदः स्यात्खर्परं चापितत्स्मृतम् ॥ ये
गुणास्तुत्थके प्रोक्तास्ते गुणा रसके स्मृताः

अर्थ- रसक यह तुत्थ का भेद है. इस्को खर्पर भी कहते है- जो गुण
तुत्थ में है वोही रसक (खपरिया) में है-

अथास्यशोधनम्

कटुकालाबुनिर्यास आलोड्य रसकं पचेत् शुद्धं
दोषविनिर्मुक्तं पीतवर्णं तु जायते ॥५॥

अर्थ- कडुई तूंबी के रस में खपरिया को मिलायकर अग्नि पर औटाने
से शुद्ध दोष रहित पीला वर्ण होय है-

द्वितीयप्रकार

पुंसांचमूत्ररसकस्यचूर्णं गोमूत्रके सत्वपचे

दिनानि- रसोहिदोलावरयंत्रशुद्धः संयोज
नीयःसकलेतुकार्यम्

अर्थ- खपरिया के चूर्ण को मनुष्य के मूत्र में अथवा गौ के मूत्र में दोला यन्त्र में पचावै तो यह शुद्ध होय और सर्व कार्य में योजना करे -

शोधनकातीसराप्रका

खर्परःपरिसंतप्तःसप्तवारंनिमज्जितः बीजपू
रसस्यांतर्निर्मलत्वंसमश्नुते॥

अर्थ- खपरिया को तपाय २ बिजौरे के रस में सातबार बुझाने से शुद्ध होय-

चतुर्थविधि

नृमूत्रेवाश्वमूत्रेवातक्रेवाकांजिकेथवा दत्वा
कमूषिकामध्येनिरुध्यगुटिकाकृति॥ध्माता
२ समाकृष्यदालयित्वाशिलातले प्रताप्यमज्जि
तंसम्यकखर्परंपरिशुद्धति

अर्थ- खपरिया मनुष्य के और घोडा के मूत्र में अथवा छाछ में तथा काजी में पीस गोलाकर उसको मूषा में धर कपड़ मिट्टी कर अग्नि में फूंके-पीछे अग्नि में निकाल पत्थर पर पीस और उसको तपाय फेर मूत्रादि में डबोवे और फेर तपावै इस प्रकार बहुत देरतक करने से खपरिया शुद्ध होय॥

रसश्चरसकश्चोभौयेनाग्निसहनौकृतौ।देहलो
हमयीसिद्धिर्दासीतस्यनसंशयः॥

अर्थ- जिस पुरुषने रस(पारा) रसक(खपरिया) इन दोनो अग्निस्थायि करलिए उस पुरुष की देहलोह के समान होजाना यह सिद्धि दासी है निस्सन्देह॥

अस्थिरोऽग्नि गतोत्यर्थंद हतेसरामानतः॥त

स्यस्थैर्यकरंद्रव्यंनान्यदस्तीतिभूतले॥४॥

अर्थ- अग्नि में स्थिर न रहना और क्षण मात्र में फुकजाना यह खपरिया का धर्म है इसको अग्निस्थाई करनेवाली औषध इस पृथ्वी में कोई नही है यह टोडरानंद में लिखा है-

अग्निस्थाईकरनेकीवि.

मृद्धं किं चुलजंसत्वं तद्रसेवापिमर्दितम् स्थैर्यंभजेत्सरसकोनान्यैःकोटिशतैरपि॥

अर्थ- केचुआ के नाम की रेताय कर केचुए के अरकसे ही घोटे इसके साथ खपरिया को अग्नि में धरने से खपरिया अग्निस्थाई होय और करोड़ो उपाय करने से अग्निस्थाई नही होय+ यहभी टोडरानंद में लिखा है

सत्वकीदूसरीवि.

हरिद्रात्रिफलारालसिंधुधूमैःसटंकणैः भल्लातयुक्तैःपादांशःसाम्लैःसमर्द्यखर्परम॥ लिप्तंवृन्ताकमूषायांशोषयित्वानिरुध्यच मूषामुखोपरिन्यस्यखर्परंप्रधमेत्ततः॥ खर्परेभवतेज्वालासानीलाभासितायदि तदासंदंशतोमूषां घृत्वाकृत्वाह्यधोमुखी॥ शनैरास्फालयेद्भूमौ यथानालंनभज्यति वंगाभंपतितंसत्वंसमादायनियोजयेत्॥ एवंद्वित्रीचतुर्वारैःसर्वसत्वंविनिःसरेत्

अर्थ- हलदी· हरड· वहेड़ा· आंवला· राल· सैंधानोंन· मनसिल· सुहागा· मिलाय· येसब औषधि खपरिया के चतुर्थ भाग लेनी चाहिये· पीछे सबको नीबू के रस में घोटकर इस पिट्ठी को वृन्ताक मूषा (बैगन के आकार जो मूषा बनाई जाय उसको वृन्ताक मूषा कहते हैं) उसे धर उस मूषा को सुखाय और उसको बंदकर अग्नि में धर वंकनाल धौकनी से धोंके जब

खपरिया में से ज्वाला सपेद नीली निकले तब सड़ासी से मूषा को धीरे से पकड़ उलटी करदे जैसे सत्वकी नाली नटूटने पावै इसप्रकार सहज में पृथ्वीपर उंड़ेलदे तो वंगके समानसत्व निकले इसप्रकार दो तीनच्या र बारकरके सब सत्व निकाललेय औरउसको कार्य में लावे ॥

सत्वकी तीसरी विधि

यद्वाजलयुतांस्थालीनिखनेत्कोष्ठिकोदरे । स
छिद्रतन्मुखेमल्लंतन्मुखेधोमुखींक्षिपेत ॥ मू
षीपरिशिखित्राग्ध्यप्रक्षिप्यप्रधमेद्दढ पतितं ।
स्थालिकानीरेसत्वमादायेयोजयेत

अर्थ- अथवा जलयुत स्थाली को कोष्ठिकाके भीतर धरे उसमें जो छिद्र होय उसको मल्ल (ईंट) के टुकड़ा से बंदकर मूषा का मुख नीचे की तरफ राखे पीछे उसस्थाली के ऊपर अग्नि कोधर खूब धोंके तो उसमू षा में से सत्व टपक २कर उसस्थाली के जल में गिरै उसको लेकर का र्य में लावे ॥

अथरसकमारणम्

लाक्षागुडासुरीपथ्याहरिद्रासर्जटंकणैः सम्य
कतच्चूर्णयेतत्पक्कंगोदुग्धेनघृतेनच ॥ सत्वं
गोह्वतिग्राह्यंरसकस्यमनोहरम

अर्थ- लाख· गुड़· एंड· हरड़· हरदी· राल· सुहागा· इन सब औषधों को पीस गौके दूध की और घृत की पुटदेकर अग्नि में धरकर फूंके तो वंगके समान सत्व सुंदर निकले ॥

तत्सत्वंतालकोपेतंनिक्षिप्यखलुखर्परे मर्द
येल्लोहदंडेनभस्मीभवतिनिश्चितम्

अर्थ- उस खपरिया के सत्व में हरताल को मिलाय खीपड़ा में मिलाय लोहके दंड (मूसली) से घोटे तो इसकी भस्म होय ॥

मारणकी दूसरी विधि

खर्परं पारदे नैव चूर्णयित्वा दिनं पचेत् वालु
कायंत्रमध्यस्थं शोभनं भस्म जायते

अर्थ - खपरिया को पारे के साथ घोट वालुका यंत्र में १ दिन पचानेसें सुन्दर भस्म होय ॥

मारणकीतीसरीविधि

खर्परं पत्रकं कृत्वा लवणात् गलं पचेत् जाय
ते शोभनं भस्म सर्वरोगापहं स्मृतम् ॥

अर्थ - खपरिया के पत्रकर उसको नोन के बीच धरकर अग्नि देय तो शुद्ध भस्म होय और सब रोग हरण करे -

मारणकीचतुर्थविधि

हंसपदी· बंदाल· बरकादूध· आककादूध· थूहरकादूध· पित्तिकदूध में खपरिया को प्रथक् प्रथक् कर तीन तीन आंच देय तो भस्म होय· परंतु प्रत्येक दूध में घोट टीकरी बांध और उनको सुखाय सराव संपुट में धरकर आंचदेनी -

---

अग्निस्थाईकरनेकीदूसरीविधि टोडरानंदसें

कन्यकादलमादाय तद्दलं कारयेद्द्विधा एक
स्मिन्दले कृत्वा खर्परं माषवत्कृते ॥ द्वितीयमप
रं दत्वोपरिष्टात्कन्यकादलं द्वितीयमपरं चा
लेयद्द्विधाकृतमस्तु तत् निरुध्य तद्दलं तस्याः
स्वरमन्त्रस्य मध्यगं ॥

क्रियते स्वेद्यते तावद्यावन्मूत्रक्षयो भवेत् एवं
दिनत्रयं स्वेदः क्रियते तद्दलस्य च ॥ त्रिवारं क्रि

यंतेप्येवंतद्दलेखर्परस्यच अक्लेशं जायतेन्नन
मग्निस्थायीचखर्प्परः यदिवन्हौविनिक्षिप्तःखर्प
रोधूमवान्भवेत् तदापुनर्द्दलेदेयःखर्प्परोद्द
ढतांव्रजेत् क्षारिकालवणे पश्चात्खर्परःपा
च्यतेपुनः दिनद्वयंभवेदेवपातःखर्परकस्यच
पुनरग्नौ परीक्षेतखर्प्परोद्दढ़मुत्तमः ॥ यदि धू
म्रोद्गमो भूयात्खर्प्परःपाच्यते तदा ॥ पुनरादीय
तेतन्नभूनागतनुजद्रवः भावयेत्पुटयेत्समभा
वनाभिश्चखर्प्परः ॥

अर्थ- ग्वार पाठे को लाय उसके दो पत्तेकरे एक दल में खपरियाके छो
टे २ टुकडे कर उसमें धर दूसरे दल से ढककर दोनो बांधकर गधा-
के मूत्र में डालकर जबतक मूत्र सूखै नही तबतक स्विन्न करै ऐसें ३
दिन उसको स्विन्न करे पीछे उसको निकाल घीगुवार के पठे दूरकर दू
सरे नवीन घी गुवार के पठे में धरकर स्विन्न ऐसें तीन वार अर्थात ६
दिन स्विन्नकरने सें क्लेश रहित और अग्नि में ठेहरनेवाला खपरिया
होय फिर उसको अग्नि में धरकर परीक्षाकरै उसमें धूआं ननिकले तोजा
ने कि सिद्ध होगया) यदिउसमें सें धूआं निकले तो फेर घी गुवार के पत्र
में धरकर स्विन्नकरै तो खपरियादृढ होय तदनंतर खारी नोन में दो
दिन पचाने से खपरिया का पात अर्थात मरणा होय- याप्रकार करकें
फेर अग्निपर धरै यदि धूआ निकले तो फेर पचावै और उसमें केंचुआ
के अर्क की भावना साल देय तो निश्चय खर्प्पर अग्निस्थाई और दृढ़
होय-

या खपरिके गुण

त्रिदोषजित्पित्तकफातिसार क्षयज्वर घोरसको
तिरूक्षः नेत्रामयानांप्रकरोति नाशं स्याद्रुजकः
कामलनाशनश्च ॥

अर्थ- त्रिदोष को जीते· पित्त· कफ· अतिसार· खई· ज्वर· इन्को नाशक
रे· अत्यंत रूक्ष है· नेत्रों के विकार को नाशकरै· देह में रंग पैदा करै
और कामला रोग दूर करै-

खर्परानुपान

तद्भस्ममृतकांतेन समेन सह योजयेत् अष्टगुं
जामितं चूर्णं त्रिफलाक्काथसंयुतं ॥ कांतपात्र २
स्थितं रात्रौ तिलजप्रतिवापकं निषेवितुं निह २
न्याशुमधुमेहमपि ध्रुवम् पित्तक्षयं च पांडुं च श्व
यथुं गुल्ममेव च रक्तगुल्मं च नारीणां प्रदरं सोमरो
गकं॥ योनि रोगानशेषांश्च विषमाश्च ज्वरानपि र
जःशूलं च श्वासं च हिध्मिनां च विशेषतः॥

अर्थ- खपरिया की भस्म के समान कांत लोह की भस्म इारे इनदोनो-
को मिलाय इसमें से ८ गुंजा के अनुमान त्रिफला के काढे में मिलाय ति
ल का तेल मिलाय रात्रिभर कांति लोह के पात्र में धररक्खै इसके सेवन-
करने से मधु प्रमेह को दूर करै· पित्तके रोगोंको· खई· पीलिया· सूजन·
वायगोला· रक्तगुल्म· स्त्रीनके प्रदररोग· और सोमरोग· योनिके सब रोग·
विषमज्वर· रजश्शूल· श्वास· हिचकी· इतने रोगोंको यह खपरियाकी
भस्म दूर करै और इसप्रकार शोधित खपरिया मालतीवसंत रस में डा-
लते हैं-

अशोधितखर्परे दोषाः

अशुद्धः खप्परः कुर्याद्वांतिभ्रांतिविशेषतः ॥ त
स्माच्छोध्यः प्रयत्नेन यावद्वांति विवर्ज्जितः

अर्थ- अशुद्ध खपरिया वांति भ्रांति करै है- इसी से यत्नपूर्वकसोधना
चाहिये जबतक वांति विवर्ज्जित होय-

रसकविकारशांति

रसकनिषेवणात्तोयदिरोगाः प्रादुर्भवंतिमनुजा
नांतेनाशमाप्नुवंतिपीतंगोमूत्रसप्ताहात्

अर्थ—यदि खपरिया के खाने सें मनुष्यों के विकार होय तो वे रोग-सात दिन गोमूत्र के पीने सें नाश को प्राप्त होय है—

इतिरसकप्रकरणंसमाप्तम्

सिन्दूर

अथसिन्दूरोत्पत्ति

महागिरिषुचाल्पीयपाषाणांतस्थितोरसः॥शु
ष्कःशोणःसनिर्दिष्टोगिरिसिंदूरसञ्ज्ञया

अर्थ- हिमालयादि महा पर्वतो के छोटे पत्थर के टुकड़ें रहै जो पाणी मे सो सूर्य्य की किरणों सें सूखकर लाल होय है उस्को गिरि सिंदूर कहते हैं—

सिन्दूरकेनामऔरगुण

सिन्दूरंरक्तरेणुश्चनागगर्भंचसीसकं सीसोप
धातुःसिन्दूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतं॥ संयोगजप्र
भावेणतस्याप्यन्ये गुणाःस्मृता

अर्थ— सिंदूर· रक्तरेणु- नाग गर्भ· तथा सीसक· ए सीसे के नाम है-यह सिंदूर शीशे का उपधातु है- और गुणों मे शीशे के समान है- और संयोग के प्रभाव सें और भी गुण कहे हैं-

औषधयोग्यसिंदूर

सुरंगोग्निसहःसूक्ष्मस्निग्धःस्वच्छोगुरुर्मृदुः॥
सुवर्णाकरजःशुद्धःसिंदूरोमंगलप्रदः॥

अर्थ- उत्तम रंगदार· अग्निकासहन करनेवाला · सूक्ष्म· चिकना· स्वच्छ भारी· नरम· और सुवर्ण र जत खान का शुद्ध तथा मंगल देने वाला है·

सिन्दूरशोधन

दुग्धाम्लयोगतस्तस्य विशुद्धिर्गदिता बुधैः ॥

अर्थ- दूध और खटाई इन्के योग में पंडितो ने सिंदूर की शुद्धि कही है

दूसरीविधि

सिंदूरं निंबुकद्रावैः पिष्ट्वा घर्मे विशोषयेत् त
तस्तंदुलतोयेन यथाभूतं विशुद्ध्यति ॥

अर्थ- सिंदूर को नीबू के रस में घोटकर धूप में सुखावै पीछे चाम लो के पानी में घोटकर धूप में सुखाने से सिंदूर शुद्ध होय है-

सिंदूरकेगुण

सिन्दूरं मुष्णवीसर्पकुष्ठकंडूविषापहं भग्नसं
धानजननं व्रणशोधनरोपणम्

अर्थ- सिंदूर गरम है तथा विसर्पकुष्ठ खुजली विष इन्को नाश करै भग्न (हड्डी) को जोड़ने वाला है व्रण को शुद्ध करे और भरे-

सिन्दूर मारणं तद्वत्सत्वपातं तथैव च भक्षणा
स्य प्रयोगोपि न दृष्टः क्वचिन्मया ॥

अर्थ- सिंदूर का मारण सत्व पातन और खाने की विधि हमने कही लिखी नहीं देखी इसी कारण से लिखी भी नही है-

तथाच

सिन्दूरस्य प्रयोगोहि न दृष्टः क्वचित् पृथक् ॥
तस्माद्युक्तेस्थलेयोज्य मुपदेशो गुरोरिति

अर्थ- सिंदूर का प्रयोग किसी ग्रंथ में लिखा नहीं देखा इसी से जहां योग्य होय उस जगे तथा लेपादि को में योजना करना ऐसा गुरू का उपदेश है-

ग्रंथांतरे

गिरिसिंदूरकंयत्तु गिरौ पाषाणजंभवेत् किं चिद्धिंगुलतुल्यंतद्रसबंधेहितंविदुः॥ धातुवादेपितत्पूज्यंनेत्ररोगघ्नमीरितम्॥ ४॥

अर्थ- गिरि सिंदूर पहाडोके पत्थर से प्रगट होय है -इस में कुछ हिंगुल के समान गुण है- यह रस बंधन में हित है- तथा धातुवाद में भी लेना चाहिये और नेत्र रोग को दूर करे है-

इतिश्रीरसराजसुंदरेसिंदूरप्र॰

लोह की उपधातु जो कीटी है उस्का शोधन- मारण- गुण एसब लोह के पिछाड़ी कीटी के प्रकर्ण में लिख आये है इतिसमोधातुप्रकर्ण॰

अथोपरस प्रकर्ण प्रारंभः

द्विधासूतस्त्रिधागंधोष्टधाभ्रंतालमष्टधा भिन्नंजनंचकासीसंगैरिकं त्रिरसाइमे॥ ५॥ ५॥

अर्थ -दो प्रकार का पारा- तीन प्रकार की गंधक- आठ प्रकार की अभ्रक- और आठही प्रकार की हरताल तथा सुरमा- कसीस- और गेरू ए सब रस है- परंतु ए रस नहीं हैं उपरस है क्योंकि पूर्व पारे के प्रकर्ण में लिख आये हैं-

एक एव रसो ज्ञेयःबहुधोपरसास्मृताः॥

अर्थात् रस जो पारा है सो एकही है और उपरस बहुत से हैं- इसीसे गंधक- अभ्रक- आदि की उपरस संज्ञा है इनमें पारा और गंधकका प्रकर्ण लिख चुके हैं अब क्रम से अभ्रकादि को लिखते हैं-

तत्रादौअभ्रकप्रकर्णं

तस्योत्पत्ति

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुध्धृतं विस्फुलिंगास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पतः॥ तेनिपेतुर्घन ध्वानाच्छिखरेषुमहीभृतां तेभ्यएवसमुत्प

अर्थ- त्रिदोष को जीते. पित्त. कफ. अतिसार. खई. ज्वर. इन्को नाशक रे. अत्यंत रूक्ष है. नेत्रों के विकार को नाशकरै. देह में रंग पैदा करे और कामला रोग दूर करै -

खर्परानुपान

तद्भस्म मृतकांतेन समेनसह योजयेत् अष्टगुंजामितं चूर्णं त्रिफलाक्काथसंयुतं ॥ कांतपात्र स्थितं रात्रौ तिलजप्रतिवापकं निषेवितं निहन्त्याशु मधुमेहमपिध्रुवम् पित्तक्षयं च पांडुं च श्वयथुं गुल्ममेव च रक्तगुल्मं च नारीणां प्रदरं सोमरोगकं ॥ योनिरोगानशेषांश्च विषमाख्यज्वरानपि रजःशूलं च श्वासं च हिध्मिनां च विशेषतः ॥

अर्थ- खपरिया की भस्म के समान कांत लोह की भस्म इन दोनो- को मिलाय इसमें से ८ गुंजा के अनुमान त्रिफला के काढे में मिलाय तिल का तेल मिलाय रात्रिभर कांति लोह के पात्र में धर राखे इसके सेवन- करने से मधु प्रमेह को दूर करे. पित्त के रोगो को- खई- पीलिया. सूजन- वायगोला. रक्तगुल्म. स्त्रीनके प्रदर रोग. और सोमरोग. योनिके सब रोग- विषमज्वर. रजशूल. श्वास. हिचकी. इतने रोगो को यह खपरिया की भस्म दूर करे और इस प्रकार शोधित खपरिया मालतीवसंत रस में डा- लते है-

अशोधितखर्परे दोषाः

अशुद्धः खर्परः कुर्याद्वांतिभ्रांतिविशेषतः ॥ तस्माच्छोध्यः प्रयत्नेन यावद्वांतिविवर्जितः

अर्थ- अशुद्ध खपरिया वांति भ्रांति करे है- इसी से यत्नपूर्वक सोधना चाहिये जबतक वांति विवर्जित होय-

रसकविकारशांति

रसकनिषेवणातोयदिरोगाः प्रादुर्भवंतिमनुजा
नांतेनाशमाप्नुवंतिपीतंगोमूत्रसप्ताहात्

अर्थ- यदि खपरिया के खाने सें मनुष्यों के विकार होय तो वे रोग- सात दिन गोमूत्र के पीने सें नाशको प्राप्त होय हैं-

इतिरसकप्रकरणसमाप्तम्

सिन्दूर

अथसिन्दूरोत्पत्ति

महागिरिषुचाल्पीयपाषाणांतस्थितोरसः॥ शु
ष्कःशोणःसनिर्दिष्टोगिरिसिंदूरसंज्ञया

अर्थ- हिमालयादि महा पर्वतो के छोटे पत्थर के टुकड़ें रहे जोपारा मे सो सूर्य्यकी किरणों सें सूखकर लाल होय है उसको गिरि सिंदूर कहते हैं-

सिन्दूरकेनामऔरगुण

सिन्दूरंरक्तरेणुश्चनागगर्भंचसीसकं सीसोप
धातुःसिन्दूरंगुणैस्तत्सीसवन्मतं॥ संयोगजप्र
भावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृता

अर्थ- सिंदूर· रक्तरेणु· नाग गर्भ· तथा सीसक· ए सीसे के नाम हैं- यह सिंदूर शीशे का उपधातु है- और गुणों में शीशे के समान है- और संयोग के प्रभाव सें और भी गुण कहे हैं-

औषधयोग्यसिंदूर

सुरंगोग्निसहःसूक्ष्मस्निग्धःस्वच्छोगुरुर्मृदुः॥
सुवर्णाकरजःशुद्धःसिंदूरोमंगलप्रदः॥

अर्थ- उत्तम रंगदार· अग्निकासहन करनेवाला· सूक्ष्म· चिकना· स्वच्छ· भारी· नरम· और सुवर्ण र जलखान का शुद्ध तथा मंगल देने वाला है·

सिन्दूरशोधन

दुग्धाम्लयोगतस्तस्य विशुद्धिर्गदिता बुधैः ॥

अर्थ - दूध और खटाई इनके योग सें पंडितो ने सिंदूर की शुद्धि कही है

दूसरीविधि

सिंदूरं निंबुकद्रावैः पिष्टा घर्मे विशोषयेत् त
तस्तंदुलतोयेन यथाभूतं विशुद्ध्यति ॥

अर्थ - सिंदूर को नींबू के रस में घोटकर धूप में सुखावै पीछें चाम लो के पानी में घोटकर धूप में सुखाने सें सिंदूर शुद्ध होय है-

सिंदूरकेगुण

सिन्दूरं मुष्णवीसर्पकुष्ठकंडूविषापहं भग्नसं
धानजननं व्रणशोधनरोपणम्

अर्थ - सिंदूर गरम है- तथा विसर्पकुष्ठ- खुजली विष इन्को नाश करै भग्न (हड्डी) को जोडने वाला है- व्रण को शुद्ध करे और भरे-

सिन्दूरं मारणं तद्वत्सत्वपातं तथैव च भक्षण
स्य प्रयोगोपि न दृष्टः कुत्रचिन्मया ॥

अर्थ - सिंदूर का मारण सत्व पातन और खाने की विधि हमने कही लिखी नहीदेखी इसी कारण नें लिखी भी नही है-

तथाच

सिन्दूरस्य प्रयोगोहि न दृष्टः कुत्रचित् पृथक् ॥
तस्माद्युक्तस्थलेयोज्यमुपदेशा गुरोरितिः

अर्थ - सिंदूर का प्रयोग किसी ग्रंथ में लिखा नहीं देखा इसी से जहां योग्य होय उसजगे तथा लेपादि की में योजना करना ऐसा-गुरू का उपदेश है-

ग्रंथांतरे

गिरि सिंदूरकंयत्तु गिरौ पाषाणजंभवेत् किं चिद्धिंगुलतुल्यंतद्रसबंधेहितंविदुः॥ धातुवादेपितत्पूज्यंनेत्ररोगघ्नमीरितम्॥ ४॥

अर्थ - गिरि सिंदूर पहाडोके पत्थर से प्रगट होय है - इस में कुछ हिंगुल के समान गुण है - यह रस बंधन में हित है - तथा धातुवाद में भी लेना चाहिये और नेत्र रोग को दूर करे है -

इतिश्रीरसराजसुंदरेसिंदूरप्र·

लोह की उपधातु जो कीटी है उसका शोधन· मारण· गुण ए सब लोह के पिछाड़ी कीटीके प्रकरण में लिख आये है इतिसप्तोपधातुप्रकर्ण·

अथोपरस प्रकर्णप्रारंभः

द्विधासूतोत्रिधागंधोष्टधाभ्रंतालमष्टधा भिन्नंजनंचकासीसंगैरिकं त्रिरसाह्वमे॥ ५॥ ५॥

अर्थ - दो प्रकार का पारा· तीन प्रकार की गंधक· आठ प्रकार की अभ्रक· और आठही प्रकार की हरताल तथा सुरमा· कसीस· और गेरू ए सब रस है· परंतु ए रस नहीं हैं उपरस है क्योंकि पूर्व पारे के प्रकर्ण में लिख आये हैं -

एक एव रसो ज्ञेयःबहुधोपरसाःस्मृताः॥

अर्थात् रस जो पारा है सो एकही है और उपरस बहुत से हैं· इसीसे गंधक· अभ्रक· आदि की उपरस संज्ञा है इनमें पारा और गंधकका प्रकर्ण लिख चुके हैं अब क्रम से अभ्रकादि को लिखते हैं·

तत्रादौअभ्रकप्रकर्ण

तस्योत्पत्ति

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतं विस्फुलिंगास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पतः॥ तेनिपेतुर्घन ध्वानाच्छिखरेषुमहीभृतां तेभ्यएवसमुत्प

नंततद्गिरिषुचाभ्रकं तद्भववज्रजातत्वादभ्र
मभ्ररवोद्भवात् गगनात्पतितंयस्माद्गगनंचत
तोमतम्

अर्थ - पहिले वृत्तासुर दैत्य के मारने को इन्द्र ने वज्र उठाया उसवज्र से अग्नि की चिनगारी निकल सब आकाश में फैलगई वे मेघ के समान शब्द करती हुई पर्वतों के शिखरों में पड़ी उसी से अभ्रक पर्वत में उत्पन्न हुई यह वज्र से उत्पन्न हुई इसी से इसको वज्र कहते हैं और अभ्रक से जो प्रगटी इसी से इसकी अभ्र संज्ञा है - और गगन (आकाश) से गिरी इसी से इसको गगन कहते हैं -

तथाउत्पत्ति

कदाचिद्गिरिजादेविहरंदृष्टामनोहरं मुमोचय
तदावीर्यंतज्जातंशुभ्रमभ्रकम् ॥

अर्थ - किसी समय श्री पार्वती महादेवजी का सुंदर स्वरूप देखकर वीर्य स्खलित भया उसी से अभ्रक प्रगट भई -

अथाभ्रकजातयः

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तत्स्याच्चतुर्विधं ॥ क्र
मेणैवसितंरक्तंपीतंकृष्णंचवर्णतः

अर्थ - ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इन्के भेद से अभ्रक चार प्रकार की है - उनचारों के क्रमसे सपेद लाल पीत और काले स्वर्ण हैं

चारोंवर्णोंपरत्वकार्य -

प्रशस्यते सितंतारे रक्तंतत्ररसायने पीतंहेम
निकृष्णंतुगदेशुद्धतयापिच ॥

अर्थ - चांदी के कर्म से सपेद अभ्रकलेनी रसायनकर्म में लाल सुवर्ण के कर्म मे पीली और काली अभ्रक रोग में तथा स्वस्थ देह धारिन्को लेनी चाहिये -

कृष्णाभ्रक के भेद

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम् कृष्णा
भ्रकथितं प्राज्ञैस्तेषां लक्षणमुच्यते

अर्थ- पिनाक, दुर्दर, नाग और वज्र एकृष्ण (काली) अभ्रक के चार भेद पंडितों ने कहे है- उन्के लक्षण कहते है-

पिनाक अभ्रक के ल०

मुंचत्यग्नौ विनिक्षिप्तं पिनाकं दलसंचयं अज्ञा
नाद्भक्षणात्तस्य महाकुष्ठप्रदायकम्

अर्थ-पिनाक नाम की अभ्रक अग्नि में पटकने से दलसंचय अर्थात् पुर्तों को छोडती है इस्को अज्ञान वस होकर खाने से महा कुष्ट को करै है-

दुर्दरकेलक्षण

दुर्दरं त्वग्निनिक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिं गोल
कान्बहुशः कृत्वा तस्यान्मृत्युप्रदायकं

अर्थ- दुर्दर अभ्रक को अग्नि में डालने सें दुर्दर (मेंडका) कीसी ध्वनि करे है तथा गोलाकार होजाय इस्को भक्षण में मृत्यु होय-

नागकेलक्षण

नागं तु नागवद्वन्हौ फूत्कारं परिमुंचति तदसि
तमवश्यं तु विदधाति भगंदरं॥५॥५॥५॥५॥

अर्थ- नाग अभ्रक को अग्नि में डालने से नाग (सर्प) के सदृश फुकार करे इस्को खाय तो अवश्य भगंदर रोग होय-

वज्राभ्रक के लक्षण

वज्रं तु वज्रवत्तिष्ठेन्न चाग्नौ विकृतिं व्रजेत् सर्व
भ्रषु वरं वज्रं व्याधिवार्धक्यमृत्युजित्

अर्थ- वज्राभ्रक अग्नि में डालनेसें वज्रके समान जैसी की तैसीर

है विकार को नही प्राप्त होय यह सब अभ्रको में श्रेष्ठ है और व्याधि बुढ़ापा तथा मृत्यु को दूर करै है-

वज्राभ्रकके दूसरेलक्षण

यदंजननिभंस्निग्धंनवन्हौविकृतिंव्रजेत् वज्र संज्ञं हितंयोग्यंमभ्रंसर्वत्रनेतरम्

अर्थ- जो अभ्रक काला तथा अग्नि में तपाने से विकार को प्राप्त नही होय वो वज्राभ्रक है यह सर्वत्र हितकारक और योग्य है- दूसरे प्रकार का अच्छा नही है-

दिशापरत्व अभ्रक

अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्वंगुणोत्तरं दक्षिणा द्रिभवंस्वल्पसत्वमल्पगुणोत्तरं

अर्थ- उत्तर के पर्वतो से प्रगटी जो अभ्रक उसमें सत्व बहुत होय है और गुण भी बहुत हैं तथा दक्षिण के पर्वतो में जो प्रगट होय है उसमें सत्व और गुण थोड़े होते हैं-

भूमिलक्षण

अभ्रमहेतस्यथलेभिषक्स्वखानयित्वा॥ पुरुष प्रमाणं तद्वारकत्सत्व फल प्रदंस्याद्गुणा धिकंस्वल्पगुणंततोन्यत्

अर्थ- अभ्रकलेनी तो अभ्रक की खान पुरुष के समान ओंडी खोदै जब कीचके समान निकले तव लेय यह बहुत सत्व को देने वाली- तथा अधिक गुणवाली है इससे दूसरी अभ्रक हीन गुण जाननी-

मारणार्थअभ्रकलेने

गजहस्तादधस्ताद्यत्तत्स्थितंभारवत्तरं खनना भ्रंहितंग्राह्यंमारणार्थंगुणाधिकं

अर्थ- आठहाथ के नीचे जो भारवान् अभ्रक है उसको खोदकर यह

मारण के अर्थ लेनी चाहिये यह गुण में श्रेष्ठ है-

तथाभ्रं कृष्णवर्णाभं कोटिकोटिगुणाधिकं ॥
स्निग्धं मृथुदलं वर्णसंयुक्तं भारतोधिकम् सु
खनिर्मोच पत्रंचतदभ्रंशास्त्रमीरितम्

अर्थ- कृष्णाभ्रक में करोडों गुन है (इस्के लक्षण) जो चिकनी हो य और जिस्का दल (पत्र) मोटा होय-सुंदर वर्णयुत-बहुतभारी-और जिस्के सहज में पत्र अलग होजाय-ऐसा अभ्रक श्रेष्ठ कहा है-

अशोधिताभ्रमारणेदोषमाह-
पीडांविधत्ते विविधान्नराणां कुष्टं क्षयं पांडुगदं
चशोकं हृत्पार्श्वपीडांचकरोत्यशुद्धमभ्रंहित
द्गुरुवह्निहृत्स्यात् ॥

अर्थ- मनुष्यों को अनेक प्रकार की पीड़ा करे- कोढ- खई- पीलिया- शोक- हृदय और पसवाडे में पीडाकरे- भारी है- और जठराग्नि को मन्द इतने अपगुण अशोधिअभ्रक करे है-

अथाभ्रकशोधनम्
वज्राभ्रकंवन्हितमनिःक्षिपेत्सप्तसप्तधा गो
दुग्धे त्रिफलाकाथे कांजिके सुरभीजले ॥ शु
द्धिमायातिमलतःअक्षिप्तवात्रिधात्रिधा

अर्थ- वज्राभ्रक को अग्नि में तपाय २ गौके दूध में त्रिफला के काढे में कांजी- गोमूत्र- इनमें सातसातबार बुझाने से शुद्धि होय अथवा तीन २ बार बुझाने से शुद्धि होय-

दूसरा प्रकार
अथवा बदरी काथेध्मातमभ्रंविनिःक्षिपेत् म
र्दितं पाणिना शुष्कं धान्याभ्रादतिरिच्यते ॥

अर्थ- अभ्रक को अग्नि में तपाय २ बेर के काढे में बुझावे पीछे उस्को

न्नंततद्गिरिषुचाभ्रकं तद्वज्रवज्रजातत्वादभ्र मभ्ररवोद्भवात् गगनात्पतितंयस्माद्गगनंचत तोमतम्

अर्थ - पहिले वृत्तासुर दैत्य के मारने को इन्द्र ने वज्र उठाया उसवज्र से अग्नि की चिनगारी निकल सब आकाश में फैलगई वे मेघ के समान शब्द करती हुई पर्वतों के शिखरों में पड़ी उसी सें अभ्रक पर्वत में उत्पन्न हुई. यह वज्र सें उत्पन्न हुई इसी सें इस्को वज्र कहते हैं और अभ्रक सें जो प्रगटी इसी से इस्की अभ्र संज्ञा है- और गगन (आकाश) सें गिरी इसी सें इस्को गगन कहते हैं-

तथाउत्पत्ति

कदाचिद्गिरिजांदेविहरंदृष्टमनोहरं मुमोचय त्तदावीर्यंतज्जातंशुभ्रमभ्रकम् ॥

अर्थ - किसी समय श्री पार्वती महादेवजी का सुंदर स्वरूप देखकर वीर्य्य स्खलित भया उसीसें अभ्रक प्रगट भई-

अथाभ्रकजातयः

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तत्याच्चतुर्विधं ॥ क्र मेणैवसितंरक्तंपीतंकृष्णंचवर्णतः

अर्थ - ब्राह्मण. क्षत्री. वैश्य. शूद्र. इन्के भेद सें अभ्रक चार प्रकार की है- उनचारों के क्रमसें सपेद. लाल. पीत. और काले एवर्ण है.

चारौंवर्णोपरत्वकार्ये-

प्रशस्यते सितंतारे रक्तंतत्ररसायने पीतंहेम निकृष्णंतुगदेशुद्धतयापिच ॥

अर्थ - चांदी के कर्म सें सपेद अभ्रकलेनी. रसायनकर्म में लाल. सुवर्णके कर्म मे पीली. और काली अभ्रक रोग में तथा स्वस्थ देह धारीन्को लेनी चाहिये -

असीर

कृष्णाभ्रकके भेद

पिनाकंदर्दुरं नागंवज्रंचेतिचतुर्विधम् कृष्णा
भ्रंकथितंप्राज्ञैस्तेषांलक्षणमुच्यते

अर्थ- पिनाक· दुर्दर· नाग· और वज्र एकृष्ण (काली) अभ्रक के चार भेद पंडितोंने कहि है- उन्के लक्षण कहते है-

पिनाकअभ्रककेल·

मुंचत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकंदलसंचयं अज्ञा
नाद्भक्षणांतस्यमहाकुष्ठप्रदायकम्

अर्थ-पिनाक नाम की अभ्रक अग्नि में पटकने से दलसंचय अर्थात् पुर्तो को छोडनी है इस्को अज्ञान वस होकर खाने से महा कुष्ट को करे है-

दुर्दरकेलक्षण

दुर्दरंत्वग्निनिक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिं गोल
कान्वहुशःकृत्वातस्यान्मृत्युप्रदायकं

अर्थ- दुर्दर अभ्रक को अग्नि में डालनेसें दुर्दर (मेड़का) कीसी ध्वनि करे है तथा गोलाकार होजाय इस्को भक्षण में मृत्यु होय-

नागकेलक्षण

नागंतुनागवद्वन्हौफूत्कारंपरिमुंचति तद्भक्षि
तमवश्यंतुविदधातिभगंदरं॥४॥ ५॥६॥७॥

अर्थ- नाग अभ्रक को अग्नि में डालने से नाग (सर्प) के सदृश फुकार करे इस्को खाय तो अवश्य भगंदर रोग होय-

वज्राभ्रककेलक्षण

वज्रंतुवज्रवत्तिष्ठेन्नचाग्नौविकृतिंव्रजेत सर्वा
भ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्धिक्यमृत्युजित्

अर्थ- वज्राभ्रक अग्नि में डालनेसें वज्रके समान जैसी की तैसीरः

है विकार को नही प्राप्त होय यह सब अभ्रको में श्रेष्ठ है और व्याधि बुढ़ापा· तथा मृत्यु को दूर करै है-

वज्राभ्रकके गुण.

यदंजननिभंस्निग्धंनवन्हौविकृतिंव्रजेत् वज्र संज्ञंहितंयोग्यंमभ्रंसर्वत्रनेतरम्

अर्थ- जो अभ्रक काला तथा अग्नि में तपाने से विकार को प्राप्त नहीं होय· वोवज्राभ्रक है· यह सर्वत्र हितकारक· और योग्य है- दूसरे प्रकार का अच्छा नहीं है-

दिशापरत्व अभ्रक

अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्वंगुणोत्तरं दक्षिणा द्रिभवंस्वल्पसत्वमल्पगुणोत्तरं

अर्थ- उत्तर के पर्वतो से प्रगटी जो अभ्रक उसमें सत्व बहुत होय है और गुण भी बहुत हैं तथा दक्षिण के पर्वतो में जो प्रगट होय है उसमें सत्व और गुण थोड़े होते हैं-

अभ्रमिलक्षण

अभ्रमहेतस्यथलेभिषग्भिरूद्धखानयित्वा॥ पुरुषप्रमाणातद्वारवत्सत्वफलप्रदंस्याद्गुणा धिकंस्वल्पगुणंततोन्यत्

अर्थ- अभ्रकलेनी तो अभ्रक की खान पुरुष के समान औंड़ी खोदे जब कीचके समान निकले तब लेय यह बहुत सत्व को देने वाली- तथा अधिक गुणवाली है इसमें दूसरी अभ्रक हीन गुण जाननी-

मारणार्थअभ्रकलेने.

गजहस्तादधस्तायत्तत्स्थितंभारवत्तरं खनना भ्रंहितंग्राह्यंमारणार्थंगुणाधिकं

अर्थ- आठहाथ के नीचे जो भारवान् अभ्रक है उसको खोदकर यह

मारण के अर्थ लेनी चाहिये यह गुण में श्रेष्ठ है-

तथाभ्रंकृष्णवर्णाभ्रंकोटिकोटिगुणाधिकं॥
स्निग्धंपृथुदलंवर्णसंयुक्तंभारतोधिकम् सु
खनिर्मोच्यपत्रंचतदभ्रंशस्तमीरितम्

अर्थ- कृष्णाभ्रक में करोड़ों गुन है (इस्के लक्षण) जो चिकनी हो य और जिस्का दल (पत्र) मोटा होय-सुंदर वर्णयुत-बहुत भारी- और जिस्के सहज में पत्र अलग होजाय-ऐसा अभ्रक श्रेष्ठ कहा है-

अथाशोधिताभ्रमारणेदोषमाह-
पीड़ांविधत्ते विविधान्नराणां कुष्टक्षयं पांडुगदं
चशोकं हृत्पार्श्वपीड़ांचकरोत्यशुद्धमभ्रंहित
द्गुरुवह्निहृत्स्यात्॥

अर्थ- मनुष्यों को अनेक प्रकार की पीड़ा करे- कोढ- खई- पीलिया- शोक- हृदय और पसवाडे में पीड़ाकरे- भारी है- और जठराग्नि को मन्द इतने अपगुण अशोधि अभ्रक करे है-

अथाभ्रकशोधनम्
वज्राभ्रकंवह्नितप्तंनिःक्षिपेत्सप्तसप्तधा गो
दुग्धेत्रिफलाक्वाथेकांजिकेसुरभीजले॥ शु
द्धिमायातिमलतःप्रक्षिप्तंवात्रिधात्रिधा

अर्थ- वज्राभ्रक को अग्नि में तपाय २ गौके दूध में त्रिफला के काढ़े में कांजी- गोमूत्र-इन्में सातसातबार बुझाने से शुद्धि होय अथवा तीन २ बार बुझाने से शुद्धि होय-

दूसराप्रकार
अथवाचव्हरीक्वाथेध्मातमभ्रंविनिःक्षिपेत् म
र्दितंपाणिना शुष्कं धान्याभ्रादतिरिच्यते॥

अर्थ- अभ्रक को अग्नि में तपाय २ बेर के काढ़े में बुझावे पीछे इस्को

सुखाय हाथों सें मर्दनकरै तौ धान्याभ्रक सें भी उत्तम होय-

तीसरी विधि

आदौ सुतापितं कृत्वा गगनं संप्रधा क्षिपेत्ति
गुंडीस्वरसे सम्यक् गिरिदोषप्रशांतये

अर्थ- प्रथम अभ्रक को तपाय २ सह्माल्‌ के रस में सातबार बुझाने सें अभ्रकका गिरि (पर्वत) का दोष शांत होय-

धान्याभ्रककरण विधि

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं बध्वा कंबलके श्लथं त्रि
रात्रं कांजिकेस्थाप्यं तत्क्लिन्नं मर्दयेद्दृढं तन्नीरेण
बयत्नेन यावत्सर्वं स्रवेत्ततः कंबलाद्गलितं
श्लक्ष्णं मारणादौ प्रशस्यते

अर्थ- अभ्रकका चूर्ण और धान के तुष दोनों को कंबल में ढीले बांधकर तीन रात्र कांजी में भिजोयदे तदनंतर उस गीले ही को उसजल में खूब मर्दन करै या प्रकार करने सें उस कंबल सें अभ्रक के रवा निकलकर सब पानी में आयजाय यह कंबल सें निकली अभ्रकको धान्याभ्रक कहते हैं यह मारणकर्म में प्रसंसा के योग्य है-

दूसरी विधि

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं वस्त्रबद्धं हि कांजिके नि
यातं मर्दनाद्यत्तद्धान्याभ्रमिति कथ्यते

अर्थ- अभ्रक के टुकडे कर उसमें धानको मिलाय कपडे में बांध कांजी में भिजोयकर मीड़डाले उस मीडने सें जो अभ्रक महीन पानी में निकले उसको धान्याभ्रक कहते है- यह रस वाग्भट्ट के वा र्तिका ध्याय में लिखा है-

अथ मारण

अंगारोपरि विन्यस्तं ध्मातमेकदलीकृतं निक्षि

पेत्कांजिके कृष्णमभ्रकं वन्हि सन्निभं ततोस्य कांजिकस्थस्य चिरंधर्मे विधारयेत् ॥ प्रेषणं चविधातव्यं पीनपुण्येन पंडितैः चाङ्गेरीस्था गनिर्यासैरप्येनविधिमाचरेत् तेराडुलीयक मूलस्यरसेनापिततःपरम् ततोस्मिन्खदिरांगारैर्नीतेनीतमग्निपरीतां क्षिपेत्पुनःपुनःक्षीरेयथानिश्चंद्रिकंभवेत्

अर्थ- काले अभ्रक को अंगारों पर तपाय २ अलग २ पत्र करलेय फिर उन्को कांजी में भिजोय दे औरउस पात्र को धूपमें धरदेय-पीछे उसमें से निकालकर वारंवार बुद्धिमान पीसे पीछे चूकाके रस में भिजोय कर पीसें तदनंतर चौलाई की जड़ के रस में भिजोयकर पीसे (परन्तु यहयाद रहै कि जिसरस में भिजोवै उस्को धूपमें दो तीन दिन धर दिया करे पीछै उस्को पीसै) पीछे इस्की टिकिया बांधकर सुखायले इन्को वारंवार खैर के कौला मे तपाय २ दूध में बुझावे जबतक निश्चंद्र नहोय यह साधारण मारण की विधि कही है-

मारणकीदूसरीविधि

धान्याभ्रंगुडतुल्यंचगोक्षीरेणमर्दितं कुर्यात्सुचक्रिकांशुष्कासम्यग्गजपुटेपचेत् ॥ ततोधत्तूरपत्रर कुमारीसशिवाटिका प्रत्येकं स्वरसेनैवपुटादाशुमृतिंव्रजेत्

अर्थ-धान्याभ्रक के समान गुड़ लेकर गौके दूध में घोटे पीछे उसकी टिकिया बनाय धूप में सुखायले फिर उन्को गजपुट में धरकर फूंकदेय पीछे उन्को निकाल धत्तूर के पत्तानमें घोटकर गजपुट में फूंके और इसी प्रकार ग्वार पाठे और सशिवाटिका (पस्वल) के

रसकी भावना देने से अभ्रक शीघ्र निश्चंद्र भस्म होय-

मारसाकीतीसरीवि.

केनाप्यस्यत्त्वणस्यापिरसेनापिप्रमर्द्दितं पुटि

तंदशधाभस्मनिश्चंद्रंजायतेध्रुवम्॥ ५॥

अर्थ- केना (कुना) तृण के रस में धान्याभ्रक को घोटकर दशपुट देय तो निश्चंद्र (चमकरहित) भस्म होय निश्चै- यहरससिंधु में लिखा है-

चतुर्थविध

धान्याभ्रकस्यभागैकंभागार्द्धंटंकणस्यच पि

ष्टातदंधमूषायांरुध्वातीव्राग्निनापचेत् विचू

र्णयोजयेद्योगेभेषज्ञानामसंशयं॥

अर्थ- धान्याभ्रक का एक भाग और सुहागा आधाभाग दोनो को पीस अंध मूषा में धर और ऊपर वंदकर तीव्र अग्नि देय जब स्वांगशीतल होजाय तव निकाल पीसकर औषधीन् के योग में देय-

पंचमविधि

कृत्वाधान्याभ्रकंतत्त्वशोधयित्वा विमर्दयेत्

वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यक्गजपुटेक्षिपेत्।पुन

र्मद्यपुनःपाच्यंसप्तवारात्पुनःपुनः ततोवटज

टाक्वाथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयं म्रियतेनात्रसंदेहः

प्रयोज्यंसर्वकर्मसु

अर्थ- प्रथम धान्याभ्रक कर उसको ककरोंधा के रस में एक दिन खरल करे पीछे उस्की दो पैसे के समान टिकरी वांध घाम में सुखायले पीछे टिकरीन्के ऊपर नीचे आक के पत्ता धरकर एक ठीकरा में दोसेर ऊपलान्की आंचदेय. इसीप्रकार ककरोंदाके रस में घोटकर और आकके पत्ता लिपेट दोदो सेर ऊपलान्की १४ आंचदेय. इसी प्रकार गा

मूत्र में एक दिन घोटे और आंचदेय- ऐसें ७ आंच गोमूत्रकी देय- इसीप्रकार सात आंच त्रिफलाके रसकी देय. और सातआंच आकके दूधकी देय. और तीन आंच बड़की जटान्केरस में घोटकर देय. और विशेषलाल कयाचाहे तो सात आंचदेय. तदनंतर इसी रस में घोटकर गजपुट में फूंकदेय. तो अभ्रक निश्चंद्र और लाल भस्म होय दोरत्ती इलायची के साथ देय-

एकपुटीविधि

धान्याभ्रकस्यभागौद्वौभागैकं शुद्धगंधकं व
टक्षीरेणसमर्द्यं अंधमूषानिरोधयेत् पचेद्गज
पुटेनैवबारमेकंमृतोभवेत् ॥

अर्थ- धान्याभ्रक के दो भाग और गंधक शुद्धका एकभाग इन दोनों के बड़ के दूध में घोट अंधमूषा पुट में धर गजपुट की आंच देय. तो एकही आंच में अभ्रक की भस्म होय+ यह एक पुटी भस्म है-

सप्तमदशपुटीभस्म

धान्याभ्रकंकासमर्द्दस्यरसेनपरिमर्द्दितं पुटितं
दशवारेणम्रियतेनात्र संशयः तद्वमुस्तारसे-
नापितदुलीयरसेनच

अर्थ- धान्याभ्रक को अथवा कसोंदी के रसमें घोट आंचदेय- या प्रकार १० पुटदेने सें अभ्रक निस्सन्देह मरे इसी प्रकार नागरमोथा के रस की तथा चौलाई केरसकी दसपुटदेनेसेंभीभस्महो यहै-

अष्टम६० पुटीभस्म

पीतामलकसौभाग्यपिष्टंचक्रीकृताभ्रकं पुटि
तंषष्टिवारांश्च सिंदूराभंप्रजायते क्षयाद्यखि
लरोगघ्नंभवेद्योगापनुत्तये

अर्थ- धान्याभ्रक में हरताल· आंवलेकारस· सुहागा· गुग्गिला पकर घोटै पीछें टिकरी बनाय अग्नि देय· इस प्रकार सात आंच देने सें सिंदूरकेसमानलालभस्महोय· यहभस्मसर्व्याधिसकलरोगोंकोनाशकरै

नवमविधि४२पुटीभस्म

धान्याभ्रकंसमादाय मुस्ताक्वाथे दिनत्रयं तद्व
त्पुनर्नवानीरैःकासमर्दरसैस्तथा नागवल्लीद
लरसैः सूर्य्यक्षीरैः पृथक् पृथक् दिनेदिनेम
र्दयित्वाक्वाथैर्वटजटोद्भवैः दत्वापुटत्रयंपश्चा-
त्त्रिपुटैःस्नुकजठजलैः त्रिगोक्षुरकषायेण त्रि
पुटेह्वानरीजलैः मोचाकन्दरसैःपाच्यं त्रिवारंको
किलाक्षकैः रसैःपुटेततो धेनुक्षीरैरष्टपुटे
न्मुहुः दध्नाघृतेन मधुनास्वच्छयासितयातया
एकमेकंपुटंदद्याद भ्रस्यैवंमलिर्भवेत् सर्वरो
गहरंव्योम जायतेयोगवाहकं कामिनीमदद
र्पघ्नंशस्तं मरणनाशनम् वृष्यमायुष्करंभुक्तं
प्रजावृद्धिकरंपरम

अर्थ- धान्याभ्रककों मोथा के काढ़े में ३ दिन मर्दनकरै फिर पुनर्नवा (सांठ) के रस में· कसोंदीके रस में· पानकेरस में· सोराइन प्रत्येक में तीन २ पुटदेय· तदनंतर बरकीजटाकेरसकी तीनपुटदेय और थूहर के दूधकी ३ पुटदेय· गोखुरू केकाढ़े की ३ पुटदेय· कौंचके रसकीतीनपुट· मोचाकंद (कदलीकंद) केरसकी ३ पुट· तालमखाने के रसकी ३ पुट (अथवाकालेगांडेकेरसकी३पुट) देय· पीछें गौके दूधकी आठपुटदेय· तदनंतरदही· मक्खन· सहत· सपेदचीनी· इन्की एक एक पुटदेय· (प्रथमएक दिन जिस औषध में घोटै उसकी रात्रमेंआंचदेय· और प्रातःकालनिकालकर उसीवस्तु में फेरघोटै यदिजि

स औषधि की एक पुटही लिखी है उसको एक दिन घोटकेअग्निमें अ
ग्नि देकर दूसरे दिन दूसरी औषध में घोटै यह पुट देने से प्रणाली
है) ऐसेंइन सर्व औषधो की पुटदेने सें इस अभ्रककी दिव्यभस्म
होय. यह भस्म सर्वरोगों को दूरकरैनेवाली होय है. योगो में गेरनेयो-
ग्य है - स्त्रीन्के मद को हरणकरै- मृत्युकोजीतै- वीर्य्यवढावै - आयुष्यव-
ढावै इसके खाने सें संतानकी वृद्धि होय.

मारणकीदशमविधि

पुनर्नवांकुमारीच चपलांवानरींतथा मुशलीं-
चेक्षुवल्लींचतथाद्यामलकीरसैः॥ प्रत्येकेकेनपु
टयेत्सप्तवारपुनःपुनः अर्कसेहुंडदुग्धेनप्र
देयासप्तभावना एवंसंमृयतेनच्चंसर्वरोगहरं
परम्॥

अर्थ - सांठ के रस. घीगुवारकेरसमें पीपलकेरस. कोंचकेरस की. मु
सली के रसकी. ईखकेरसकी. आंवलेकेरस. इनरसोंकी सात सातपुट
देय. पीछें आक. थूहर. इन्के दूध की सात२ भावना और अग्नि में फू
कताजाय तो अभ्रकभस्म सर्वरोग हरणकर्त्ता वनै-

मारणकीग्यारवींविधि

२० पुटकीभस्म

वटमूलत्वचक्वाथैः तांवूलीपत्रसारतः वासाम-
त्स्याक्षिकाभ्यांवाभीनाक्ष्यासकठिल्लया॥ पयसा-
वटवृक्षस्यमर्दितं पुटितंघनम् भवेद्विंशतिवा
रेणा सिन्दूरसदृशंघनम्

अर्थ - वरकी जड़की छालके काढे में. पानकेरसमें. अडूसा - मछेछी.
सपेदकनेर. लालपुनर्नवा (सांठ) वड़कादूध. इन प्रत्येक औषध में
पुट देकर अग्नि देय या प्रकार २० पुटके देनेसें सिंदूरके समान लाल भ.

स्म होय -

बारवीविधि

दुग्धत्रयंकुमार्य्याबु गंगापुत्रंन्रमूत्रकं वटांकु
रमजारक्तमेभिरभ्रसुमर्दितं ॥ शतधापुटितंभ
स्मजायते पद्मरागवत्

अर्थ- बरकादूध· थूहरकादूध· आकका दूध· घीगुवारकारस· नागर·
मोथा· मनुष्यका मूत्र· बरकी जटाकारस बकरीका रुधिर इनप्रत्येक में
काले धान्याभ्रकको घोटकर सौ १०० पुट देने सैं अभ्रककी पुखराज
मणि के समान कालाभस्म होय-

सपेदअभ्रककीभस्म

अभ्रकं त्रिफलशुद्धं क्षिप्त्वाके चतुर्गुणे चत्वा
रिंसद्दिनान्येवस्थापयेतन्नबुद्धिमान् ॥ पलार्द्धं
पारदंशुद्धंपलंवर्द्धरजंनवम् कुसुमंचसमादा
यमर्द्दयेद्भिषगुत्तमः ॥ उभयोर्गुटिकांमेकांकृ-
त्वातत्रैवनिःक्षिपेत दंडेनचालयेन्नित्यंत्रिदि
नंनाधिकंततः ॥ मर्य्यादादिवसेपूर्णेरवल्वेक्षि
प्त्वाविमर्द्दयेत घनत्वमागतंदृष्ट्वाचक्रिकांका
रयेद्बुधः धर्मसंशोष्यविधिनाततोगजपुटेप-
चेत पुनः शुक्तंतरेणैव मर्द्दयित्वेकवासरे ॥
बन्योपलैः पचेदेवं कुर्य्याद्वार त्रयंततः भस्मी
भूतमिदंरवादेद्गुंजामात्रंनिरंतरं अंधोपिदिव्य
दृष्टिःस्यात्तीव्रोवन्हिश्चजायते वात पित्तकफ
तंकान् तथैवरुधिरामयान् प्रमेहान्नाशये-
त्सर्वा न्नात्रकार्यविचारणात् अतीवपुष्टज-
नकोत्रणात्दृढ नाशनपरं कुष्टप्लीहोदरंमपि
कृमीस्वेद विनाशनम्

अर्थ- सपेद अभ्रक को त्रिफला के काढे में शुद्धकरै ओर दूध में पूर्वोक्त रीति सें सोधिलेय पीछें उसके टुकडा कर छः पैसाभर लेय उन टुकडान्को आधसेर सिरका में ४० दिन भिजोवै ताके अनंतर पारा शुद्ध पैसा १ भर लेय. ओर बबूर के फूल पैसा दो भर लेय. दोनों को मिलायकर घोटै पीछें इसका गोला बनाय ओर इस गोले को भी पूर्वोक्त सिरका में डारदेय. तीन दिन के बाद उस सिरका को खूब घोटै जब गाढा होजाय तब एक टिकरी बांध सरावसंपुट में धर गजपुट की आंच देय. अथवा ४ सेर कू पलान्की आंच देय. जब स्वांग शीतल होजाय तब निकाल एक दिन सिरका में फेर घोटै फिर टिकरी बांध पूर्वक्रम के अनुसार आंच देय. इस प्रकार तीन आंच देय तो इसकी भस्म होय. यह अभ्रक भस्म रत्ती १ खाय तो नेत्र हीन के दिव्य नेत्र होय ओर मंदाग्नि अत्यंत तीव्र होय. वात. पित्त. कफ. जनित सर्व रोग दूर होय रुधिरविकार दूर होय. बीस प्रकार के प्रमेह दूर होय. देह को अत्यंत पुष्ट करै. व्रण. कुष्ट. तापतिल्ली. उदररोग. गांठ. कृमिरोग. स्वेद. आदिकान के सर्व रोग दूर होय. यह क्रिया अत्यंत चमत्कृत है ओर हमारी अनुभव करी है. इसमें सन्देह नहीं है-

अभ्रक मारणकी बारवीं बिधि

बज्रार्कोद्भवदुग्धधेनुसलिलैर्ब्राह्मीरुदंतीव-
ला वासाचित्रकशाल्मलीबलबराकूष्मांडिका
दाडिमी जाती गोक्षुर शंखपुष्पलतिकामेदाम्र
लाबर्बरी द्राक्षा मूलकराक्षसीतुलसिका मु-
डीबिशालामदा गोजिह्वासलिलैर्विदारिल
तिकाघटंम्युग्मगंधाजटा शतपुष्पातपनाद्भवै-
ष्मरसकैः संबघ्येद्धैयराद् गनैासंपरिपाचयेद्ग
जपुटैस्सप्तैवबारान्पृथक न्यग्रोधस्यजटारस

स्यसततं के शेशतोयस्यच भावाश्चैवपुटाश्चविं
शतिमिताघृष्ठाकपित्थस्यवै चिंचिरायाःफल-
कोद्भवैश्चसलिलैश्रीमत्पुटेनाचितैः पश्चानिंवु
रसेनधेनुपयसा संमिश्रगौडस्यच दध्नःखंडघृ
तस्यरम्यमधुना वारांश्चपचादश पश्चाच्चंद्रिक
याभिवर्जितमथा भ्रंवैशुद्धंभवेत् द्रुक्करम्यत
॥ सुसेव्यमवनीशानांगौस्सर्वदा

अर्थ- शुद्धवज्राभ्रक को लेय उसको थूहर का दूध· आकका दूध· गोमू
त्र· ब्राह्मी· रुद्रवंती· खेरेटी· अहूसा· चित्रक· सेमर कारस· नागवेल·
हरड़· बहेडा· आंवला· पेठेकारस· जाली· गोखरू· संखाहूली· मेदा· गि
लोय· वनतुलसी· दारव· मूली· राक्षसी· (राकांगी मुरा· दक्षि·भाषाप्र)
तुलसी· गोरखमुंडी· इंद्रायन· मरो· (घापटी·दक्षि·भाषा·प्र) गोभी-
कारस· विदारीकंद· कांकडासिंगी· वच· जटामासी· सोंफ· इन्के रस
अथवा कांढे में यथा संभव भावना देकर गोला कर उस गोले को सुखा
य उसपर सात कपड़ मिट्टीकर· गजपुट में फूंकदेय पीछे उसको शीतल
होने पर निकाल फेर पूर्वोक्त रसों में घोटे और गजपुट में फूंके या
प्रकार सातआंचदेय- पीछे वड़के जटा के रस में और इश्वरी के रस
में भावना देकर गजपुट में फूंके पीछे चांवलके धुए पानी की भावना
देकर फूंके ऐसें इन तीनों के सात२ पुट देय· पीछें कैथके रसकी-
इमली के रस की तथा कोदो के कांढें की पुटदेकर गजपुट देय त
दनंतर नीवूकेरसकी· गौकेदूधकी· गुड़की· दही· खांड़· घृत· और स
हत· इन सबकी २५ पुटदेय ऐसें करने से अभ्रक की निश्चंद्र शुद्ध
औरलाल तथा सुंदर और राजान्के खाने योग्य भस्म होय (इसें
जो औषध ऊपर लिख आए है उनमें से प्रत्येक की दिन में पुटदेय औ
रात में अग्नि में फूंकना चाहिये-)

तेरवीं अभ्रकभस्मकीवि०

शुद्धधान्याभ्रकं मुस्तं शुंठी षड्भागयोजितं म
र्दयेत्कांजिकेनैव दिनं चित्रकजैरसैः ॥ ततोग
जपुटं दद्यात्तस्मादुत्थत्य मर्दयेत् त्रिफलावा
रिणा तद्वत्पुटं देवं पुटैस्त्रिभिः ॥ वलगोमूत्र मु-
सलीतुलसीस्वरसाद्र्वैः मर्दितं पुटितं वन्हौनि
त्रिवल्लंजेन्मृति

अर्थ- शुद्ध धान्याभ्रक का छठा हिस्सा नागरमोथा तथा सौंठ इनका चू
र्णकर धान्याभ्रक में मिलाय कांजी में एक दिन खरल करै और गज
पुट में संपुट कर फूंक देय पीछे उसमें से निकाल चित्रक के रस में ए
क दिन घोट कपड़मिट्टी कर आरने उपलान्के गजपुट में फूंक देय जब
शीतल होजाय तब निकाल त्रिफला काढे में नित्य खरल करै अग्नि दे
य इस प्रकार तीन गजपुट देय पीछे वलके रस की अथवा काढे की गो
मूत्र· मूसली का काढ़ा· तुलसी के पत्ते का रस· जमीकंद· इन पांच रस अ
भ्रक में पृथक् २ डाले तथा खरल करै एक रस की तीन तीन गजपुट
देय इस प्रकार अग्नि देने से अभ्रक की दिव्य भस्म होय-

अभ्रककी चौधवीं

अरुणाभस्मकीवि०

नागवलाभद्रमुस्तादुग्धं तुवटकस्यच यद्वावट
जटातोयैर्हरिद्रावारिणा पुटेत् मंजिष्ठाक्काथतो
येन सर्वैरभिर्यथाक्रमं पुटितं भावनायोगाद्
रमतत्पुटेन्मुहुः जायते त्वरुणं चाति भस्म वज्रा
भ्रकोद्भवम्

अर्थ - शुद्ध वज्राभ्रक को नागवला· नागरमोथा बड़ का दूध· अथवा
बड़ की जटा का रस· हलदी का पानी· मजीठ का काढ़ा इन सब औष

धों की क्रमसे भावना देय और प्रत्येक भावना का उत्तम पुट देय तो ला
ल वर्ण की भस्म होय -

अभ्रककी १५विधि

ततोधान्याभ्रकं कृत्वापिष्ट्वा मत्स्याक्षिकारसैः।
चक्रीकृत्वा विशोष्याथ पुटंदत्वाभ्रकं पुटे पुटे
देयंहिषड्वारं पुनर्नवरसैःसहः कलांशं टंकणे
नापिसंमर्द्यचक्रिकाकृतं ह्यूर्ध्वभागे पुटैस्तद्व
त्सप्तवारंपुटैः खलु एवंवासारसेनापितंदुली
यरसेनच प्रपुटेत्सप्तवाराणि पूर्वप्रोक्तविधान
तः एतसिद्धंधनंसर्वयोगेषुविनियोजयेत् ॥

अर्थ - धान्याभ्रककी मछेछी के रस में खरल कर टिकिया बनायले
उनको सुखाय सराव संपुट में धर गज पुट में फूंकदेय तदनंतर पुनर्न
वा (सांठ) के रस की छः पुटदेय पीछे अभ्रक का सोलमा हिस्सा
सुहागा डार खरलकर टिकिया बनाय गढेला खोद नीचे टिकिया
धरै ऊपर अग्नि जलावे या प्रकार सात पुट देय इसी प्रकार अडूसे के
रस की और चोलाई के रस की सात २ भावना देय और गज पुट की अग्नि
देय तो यह अभ्रक सिद्ध होय इसको सबयोगों में डाले -

सोलहवीं विधि
(सहस्त्र पुटी)
भस्म

वज्राभ्रकंकुट्टयित्वा सुखल्वेगोदुग्धतप्तेनचसि
चनीयं तल्लोहपात्रेघृतअग्निपक्कं घृतेनकिं
चिद्विलोलयित्वा शालीविमिश्रेणासुवस्त्रम
ध्ये वध्वादृढं पोटलिकांभपात्रे विघृष्यतोया
तरसंस्थितंतं धान्याभ्रकं शुद्धभवेच्चपश्चात

खल्वे सुरम्ये दृढघर्षयित्वा जलं चतुः षष्ठि वन
स्पतीनां सूर्यातपे शोष्य दिनांतकाले वनोत्थ
सानां पुटमाचरेत्तु एवंविधं मारितमभ्रकं च व
नस्पतीनां क्रम एव मुक्तं

अर्थ - वज्राभ्रक को ले खरल में डालकर कूटै पीछे उसको अग्निमें तपाय गौके दूध में वुझावै पीछें लोह के पात्र में घृत डालके उसमें अभ्रक डाल मंद अग्नि पर पकावै पीछे धान सें आधी अभ्रक लेकर दोनों को कंवर अथवा गाढी गजी की थैली में भरकर भिजोयदे पीछें उसको वडे पात्र में (कठोटी आदि) में उस जल युत शीघ्र अभ्रक को डाल उस थैली को खूब मसलै प्रहर दो पीछें उसी पानी में जवसब अभ्रक निकल कर पानी में आय जाय तब उस पानी को नितारकर उसको निकाल डार और अभ्रककी निकास लेय. यह धान्याभ्रक शुद्ध होय पीछें इस धान्याभ्रककी सुंदर खल्व में डालकर ६४ चौंसठ औषधीं-के रसमें दिन में घोट सूर्य की घाम सें सुखाय रात्रि को आरने उपला न की आगिन में फूंक देय- या प्रकार अभ्रककी मारे अब औषधीं का क्रम लिखते है-

औषधीन्केनाम

दुग्धं रवेर्वै वट दुग्ध वज्रि कुमारिका नाममनित्ला
रितिक्ता मुस्ता गुडूची विजया त्रिकंट वत्तीकिनी
परिशिष्टं य च गुल्म सिद्धार्थको वैस्वर मंजरी गांव
ट प्ररोह अजशोणितं च विल्वाग्निमंथो ग्निसति
दुकानां हरीतकी पाटलिका समूह गोमूत्र धा-
त्रीकलिमभकुंभी तालीसपत्र चसताल मूली॥
द पाश्वगंधा मुनिभृंगराज रंभाजलं सार्द्ध सुलस
पूरीम धत्तूरलोधं चसदेवदारु वन्दास दूर्वाद्द

यकासमर्दः मरीचकंदाडिमकाकमाचीसशंख पुष्पीनतनागवल्ली पुनर्नवामंडुकपर्णीकाचक्र च्छावरीभार्गिचदेवदाली कपित्थलिंगीकदु२ किंशुकानांकोषातकी मूषकपर्ण्यनंता मीना क्षिकाकार विलैल्लपर्णी कुंभीतथार्द्रीचश तावरीणां

अर्थ–आक का दूध· बड़ का दूध· थूहर का दूध· घीगुवार का रस· अंडकी जड़ का रस· कुटकी· मोथा· गिलोय· भांग· गोखुरू· कटेरी· शालिपर्णी· पृष्टपर्णी· सरसों· खरमंजरी· बड़की जटा· बकरे का रुधिर· बेल· अरनी· चित्रक· हिंगोट· हरड़· पाढलकी जड़ गोमूत्र· आमले· बहेड़ा· जलकुंभी· तालीसपत्र· ताड़जड़· अड़ूसा· असगंध· अगस्तिया का रस· भांगरा· केला का रस· गरमकरा· धतूरा· लोध· देवदारू· दोनोदूब· कसोरी· मिरच· अनारदाने का रस काकमांची· (मकोय) शंखपुष्पी· नगरमूल· पानका रस· सोंठ· मंडूकपर्णी· (ब्राह्मी) अथवा मजीठ· सूर्य्यफूलवल्ली· इंद्रायण· भारंगी· देवदाली· कैथ· शिवलिंगी· कटुवेल्ली· ढाकका रस· तोरई· मूषकपर्णी· जवासा· मकेकी· कलोंजी· तैलपर्णी· (कोई एक औषधि विशेष कहते हैं· पंचांगुलरस· ढुंटक· गुड· सुहागा· मालती· सप्तपर्णी· नागवल्ला· अतिबला· महाबलावला· सतावर· कौंचकी जड़ का रस· गाजर· गजर· प्याज· लहसन· उटंगरा· अमरबेल· हिलमोचिका· दुद्धी· पातालगरुडी· जटामांसी· दूध· दही· घृत· सहत· खांड· मदना· पालकिका·)

एभिश्चतोयैः स्थितखल्वमध्ये विघर्षयेच्छुद्ध भवंतथैव वनोत्पलानां पुटमाग्निशीतं पुनःपुनः खल्वतलेविघर्षेत एभिः क्रियाशोद्धघवारम कं वह्नीजलानां पुटमारभेच्च निश्चंद्रगोपारुणा रंगतुल्यं भस्मसुधादिव्यरसायनंच नानानुपाने

रजरामरंच शरीरिणांसेव्यमिदंवरिष्ठम् गुणै
सहस्रावधिसेवकानांसमस्तरोगारिरसप्रसि
द्धं॥

अर्थ-अभ्रक को खरल में डाल इन औषधों के रस में घोटै जब सूख जाय तब आरने उपलीन्की अग्नि में फूंकेदेय. फेर आंचमें से निकाल कर घोटै और फेर अग्निदेय या प्रकार प्रत्येक औषधी की १६ पुटदेनी चाहिये जो औषधि रसयोग्य होय उस्का रस डालै और क्वाथ योग्यहोय उस्को क्वाथ की पुट देय. तोयह अभ्रक निश्चन्द्र (चमकरहित) और लाल भस्म होय यह अमृतके तुल्य दिव्य रसायन है. अनेक अनुपान-के संयोग सें देह को अजर अमर करै इसी से मनुष्यों को यह श्रेष्ठ भस्म सेवन करनी चाहिये. जोइस्का सेवन करै उस्को हजारोगुणाकरै यह समस्त रोगों का शत्रु कहाता है-

कार्यपरत्वपुटसंख्या

दशादिस्तुशतांतःस्यापुटोवैव्याधिनाशने।
शतादिस्तुसहस्रांतपुटोदेयोरसायने॥

अर्थ-दश सेंलेकर सौ पर्य्यंत रोगनाशन के अर्थ पुटदेने चाहिये और सौ १०० से लेकर हजार पुट रसायन के निमित्त कहे हैं-

भावनाऔरपुटकानिर्णय

सहस्रपुटपक्षेतुभावनापुटनंभवेत् मर्दनंतु
नधानस्यादितिवैद्यवराविदुः॥

अर्थ-हजार पुटमें तो रसकी भावना मात्रही पुट कहाती है उसमें मर्दन न करे ऐसें श्रेष्ठ वैद्य कहते हैं- परंतु शतपुटी में मर्दन अवश्य करै-

मृतभस्माकीपरीक्षा

निश्चन्द्रंचसुसूक्ष्मंचलोचनांजनसन्निभं॥तदा
मृतमितिप्रोक्तमभ्रकंवान्यथामृतम्

अर्थ- चमक रहित· बहुत बारीक· काजलके समान जो अभ्रक की भस्म है उसको शुद्ध भस्म जाननी अन्यथा कच्ची भस्म जाननी -

तथाच

मृतंनिश्चंद्रतांयातंमरणांचामृतोपमं ॥सचन्द्रं विषवत्ज्ञेयंमृत्युकृत्बहुरोगकृत् ॥

अर्थ - जो अभ्रककी भस्म निश्चन्द्र होय वह मृत भस्म अमृत के तुल्य है· और वह भस्म सचंद्र अर्थात् चमकती होय तो विषके समान प्राण हर्ता और अनेक रोग कर्ता जाननी

अथअमृतीकरण

त्रिफलात्वक्कषायस्यपलान्यादायषोडशः गो घृतस्यपलान्यष्टौमृताभ्रस्यपलान्दशः ॥ ए कीकृत्लोहपात्रेविपचेन्मृदुवन्हिना द्रवजी र्णेसमादाययोगवाहे प्रयोजयेत् ॥ अन्येषामपि धातूनाममृतीकरणंह्ययं ॥

अर्थ- त्रिफला का काढा सोलह १६ पललेय· गौ का घृत आठ पल और मृत अभ्रक १० पल इन सबको एकत्रकर लोहकी कढाई में मंदाग्नि सें पचावै जब जल और घृत जल जाय केवल अभ्रक मात्र बाकी रहै तब उतार शीतल कर धर राखै और योगोंमें इसको देय यह अभ्रक का अमृती करण कहा है इसी प्रकार और भी धातून्का येही अमृती कर ण जानना कोई आचार्य केवल घृत सें ही अमृती करण लिखते है-

यथा

तुल्यंघृतंमृताभ्रेणलोहपात्रेविपाचयेत् घृते जीर्णेततश्चूर्णंसर्वकार्येषुयोजयेत् ॥५॥५॥

अर्थ -अभ्रककी भस्मके समान गौका घृतलेकर लोहकी कडाही में चढाय घृतको उस अभ्रक में पचावै जब घृत जलजाय के वल घृतमात्र रहिजाय

तबउतार सबकामोंमेंदेय-

मृताभ्रककेगुण

रोगान्हत्वाहढबलचयंवीर्यवृद्धिंविधत्ते ता
रुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितांनित्यमेव ॥दी
र्घायुस्मानूजनयतिसुतांसिंहतुल्यप्रभावान्॥
मृत्योभीतिंहरनिसततंसेव्यमानम्मृताभ्रम्

अर्थ- रोगोंको जीत दृढ बल के समूह को और वीर्य्य की वृद्धि करे- तरुणाता होय- शत १०० स्त्रीन से नित्य भोग करने की शक्ति होय- दीर्घ आयु और सिंह के समान पराक्रमी ऐसे पुत्रों को प्रगटकरै नि रंतर मृत अभ्रक सेवन करना मौतकेभी भय को दूर करै है-

अन्यच्च

गौरीतेजपरममम्रतंवातपित्तक्षयघ्नं प्रज्ञावि
धिप्रशमितजरांवृष्यमायुष्यमग्र्यं बल्यंस्निग्धं
रुचिदमकफदीपनंशीतवीर्य्यं॥तत्तद्योगैःस
कलगदहृद्व्योमसूतेन्द्रबीजम् ॥

अर्थ- श्री पार्वतीजी का तेज अर्थात अभ्रक अत्यंत अमृत है- वात- पित- खई- इनका नाशकरै बुद्धिको बढावै बुढापेको दूरकरै- वृष्य- (वीर्य्य कर्ता है) आयु को बढावै- बलकर्त्ता- चिकना है- रुचिकर्त्ता कफघ्न- दिपन- शीतवीर्य्य- ऐसा है- यह पृथक् पृथक् योगो के साथ सकल रोगो को दूरकरै- और पारदको बाधने वाला है-

वयस्तंभकारीजरामृत्युहारीबलारोग्यधारी
महाकुष्टहारी मृतत्वभ्रकंसर्वरोगेषुयोज्यं-
सदाम्रुतराजस्यवीर्य्येणतुल्यम् देहदार्ढ्यो
र्थसिध्यर्थेत्रिगुंजंभक्षयेत्घनं नातःपरतरं
किंचिज्जरामृत्युविनाशनम्

अर्थ- आयुष्य का स्तंभन करै· बुढ़ापा और मृत्यु हरै· बल आरोग्य को करै· महाकुष्टको दूरकरै· मरी अभ्रक सबरोगों में देनी चाहिये क्योंकि इस्में सदैव पारे के समान गुण है देह की दृढ़ता के अर्थ तीन रत्ती अभ्रक खानी चाहिये· इसके सिवाय बुढ़ापा· और मृत्यु हर्ता दूसरी कोई औषध नहीं है-

अन्यच्च

मृताभ्रकं कामबलप्रदंच विषं मरुच्छ्वासभगंदराख्यं मेहभ्रमपित्तकफंचकासं क्षयेनिहंत्येवयथानुपानात्

अर्थ- मृताभ्रक कामदेव· बलकोबढ़ावै· विष· वादी· श्वास· भगंदर· प्रमेह· भ्रम· पित्त· कफ· खांसी· खई· इनरोगों को अनुपान के संग सेवनकरने से दूर करै है·

अभ्रकभस्मकेअनुपान

शुद्धाभ्रंननुवल्लकद्वयमितंकृष्णामधुभ्यांयुतं मेहश्वासविषंचकुष्टमतुलंवातंचपित्तंकफम् कासक्षीणक्षतक्षयंग्रहणिकापांडुभ्रमंकामलां गुल्माद्यंचतथानुपानविधिनामृत्युंचजेजीयते

अर्थ- शुद्ध अभ्रक की भस्म (१ रत्तीसेलेकर) दोवल (६ रत्ती) पर्य्यंत पीपल· और सहत के संग भक्षण करने सें· प्रमेह· श्वास· विष· कुष्ट· वात· पित्त· कफ· खांसी· क्षीणता· खई· व्रण· संग्रहणी· पांडुरोग· भ्रम· कमला· गोला· इतने रोगों को नाशकरै और अनुपान के साथखाने सें मृत्यु को भी जीतै है-

दूसरा प्रकार

अभ्रकंचनिशाव्यक्तपिप्पलीमधुनासह विं

शांतिच प्रमेहानांनाशयेन्नात्रसंशयः अभ्रकंहे मसंयुक्तंक्षयरोगविनाशनं॥ रौप्यहेमाभ्रकं चैवधातुवृद्धिकरंपरं गोक्षीरशर्करायुक्तंपि त्तरोगविनाशनं शैलजंपिप्पलीचूर्णमाक्षिके सर्वमेहहृत् अभयागुडसंयुक्तंवातरक्तंनिय च्छति स्वर्णयुक्तंक्षयंहंतिधातुवृद्धिंकरोति च रक्तपित्तंनिहंत्याशुएलाशर्करयासह

अर्थ–अभ्रकभस्म प्रातःकाल पीपल सहत के साथ, बीस प्रकार के प्रमेह दूरकरे· और सोने के वर्क सहित खाने सें खई दूर होय· चांदी की भस्म· सुवर्ण· कीभस्म· अभ्रकभस्म· इन सब को मिलायकर भक्ष णकरने से धातु को वढावे· गौकेदूध में मिश्री मिलायकर इस्कें सा थ अभ्रक भस्म खाने से पित्त के रोगदूरहोय· शिलाजीत· पीपल·और सुवर्णमाक्षिक की भस्म इन्के साथ अभ्रक भस्म खाने सें सर्व प्रमेह दू रहोय - हरड़ और गुड़के साथ खाने से वातरक्त दूर होय· सोने वर्कसं युक्त खाने से खई दूर होय· और धातु को वढावै· छोटी इलायची और मिश्री के साथरक्तपित्त दूरहोय-

सिताऽमृतासत्वयुतंमेहंनाशयतेध्रुवं वराम धुघृतैःसाकंशुक्रकृच्चक्षुरोगहृत् एलागोक्षु रभूधात्रीशर्करासहितंतथा गोदुग्धेनयुतंहं तिमूत्रकृच्छ्रंप्रमेहकं त्रिपुगंधवराव्योषश- र्करानागकेशरं माक्षिकेणनिहंत्याशुपांडुरो गक्षयज्वरम्

अर्थ– मिश्री और गिलोयसत्व के संग प्रमेह को नाशकरे· त्रिफला सहत·और घृत·के संगशुक्र वढावै·और नेत्रों के रोग दूरकरै· इलाय ची· गोखरू· भू आंवला मिश्री और गौके दूधसंग अभ्रक मूत्रकृच्छ्र

और प्रमेह को दूर करे. तज. पत्रज. इलायची. हरड़. बहेड़ा. आंवला. सोंठ. मिरच. पीपल. मिश्री. और नागकेसर. इनका चूर्ण और सहत इनके साथ खाने से पांडुरोग. खई. और ज्वर को दूर करै है.

वेल्लंव्योषसमन्वितं घृतयुतं वल्लोन्मितं सेवितं हिव्याभ्रंक्षयपांडुसंग्रहणिकाशूलंचकुष्टामयम् ॥ सर्वश्वासगदंप्रमेहमरुचिंकासामयं दुर्द्धरं मन्दाग्निंजठरव्यथां परिहरेच्छोषामयान्निश्चितं

अर्थ - वायविडंग. सोंठ. मिरच. पीपल. और गौकाघृत इनमें अभ्रककी भस्म तीनरत्ती खायतो. खई. पांडुरोग. संग्रहणी. शूल. कोढ. सब प्रकार के श्वासरोग. प्रमेह. अरुचि. खांसी. मंदाग्नि. उदररोग. शोषरोग. एसबरोग निश्चै दूर होय-

अभ्रक सत्व विधि

ऊर्णासर्जरसंचैवक्षुद्रमीनसमन्वितं सतत्सर्वं तुसंचूर्णं छागदुग्धेनपिंडिका ॥ कृताध्माता खरांगारैः सर्वसत्वान्निपातयेत्

अर्थ - ऊन. राल. छोटीमछली. इनसबको पीस और इसमें अभ्रककी भस्म मिलायबकरी के दूध में छोटे २ गोलाबनाय भट्टी में धर बंकनालके धोकने से सत्व निकले इसी प्रकार सब सत्वोंको निकाले -

सत्वनिकालनेकीदूसरीविधि.

चूर्णीकृतंगगनपत्रमथारनाले घृत्वादिनैकमवरस्थितसूरणांच भाव्यरसैस्तदनुमूलरसैः कदल्याः पादांशटंकणयुतंसफरीसमिश्रं पिंडीकृतंतुबहुधामाहिषीमलेन संशो-

घ्यकोष्टगतमाशुधमेन्महाग्नौ सत्वंपतत्यतिरसायनजारणार्थं योग्यंभवेत्सकलरोगचयंनिहंति॥

अर्थ - अभ्रकका चूर्ण एकदिनकांजी तथा एकदिन जमीकंदकेरस में भिजोयदे· तदनंतर केलाकंदकेरस में भावना देकर इसमें चतुर्थांस सुहागा और छोटी मछली मिलाय भैंसकागोवर मिलाय छोटे २ गोला वनाय धूप में सुखाय कोष्टिका में धर वंकनाल सें महा अग्निदेय तो सत्व निकले· अत्यंतरसायन है· और जारणाके योग्य होय तथा सव रोग समूह को दूरकरै

वैद्यनाथस्तु

गुडःपुरस्तथालाक्षापिण्याकंटंकणंतथा ऊर्णासर्जरसश्चैवक्षुद्रमीनसमन्वितं एतत्सर्वंतुसंचूर्ण्यछागदुग्धेनपिंडिकाः कृत्वाध्माताःखरांगारैःसत्वंमुंचतिनिश्चितं पाषाणमृत्तिकादीनां व्योमसत्वस्यकाकथा

अर्थ - गुड़· गुग्गुल· लाख· खल· सुहागा· ऊन· राल· छोटीमछली· इनसव कोपीस अभ्रक मिलाय वकरी के दूध में पिंडी वांध धूपमें सुखाय सवको घरिया में धर वंकनाल धोंकनी सें धोंकने सें सत्व निकलकर नीचें वैठ जाय· ये औषध पत्थर और मट्टीतकका सत्व निकालदेती है· अभ्रकका सत्व निकलनातो कितनी वड़ी वात है -

सत्वका एकत्र करना

कणाश्चोयद्भवेत्सत्वंमूषायांप्रणिधापयेत् मित्रपंचकयुक्ध्मातमेकीभवतिघोषवत्

अर्थ - अभ्रकसत्वके कणकान्को एकत्रकर और इसमें पंचमित्र मिलाय मूषा में धर तीव्र अग्नि देने सें सवसत्वके रवा मिलकर कांसेके समान हो

जाय-

अभ्रक सत्वकी भाषाविः

मृताभ्रक सेर १० उस्को सातदिन केलाके रस में घोटै और सात दिन जिमीकंद के रस में घोटै तथा सात दिन मोथा के क्वाथ की भावना देय पीछे धूप में सुखाय तब ढाई सेर सुहागा फुलायकर डारे और सब औषध औरडारे सो लिखता हूं चिरमिटी गूगल लाख ऊन सज्जी राल छोटीमछली जवाखार खल जमीकंद कैंचुआ हरड बहेड़ा आंवला चित्रक क्षीरकंद धतूरा के बीज कलहारी पाढ़ वलबीन गंधक मोम गोखरू सेंधानोन संचरनोन विड़नोन सामरनोन सहत सावला ससेकीहड्डी कबूतरकीबीट सोंठ पीपल मिरच गेरू सरसों तेलजीवन भैंसकादूध दही घृत मूत्र ए सब एकभाग मरी अभ्रक २ भाग इनसबको कूट पीस कर टिकरी बांधे तीन २ टंककी फेरि इन्को सुखाय कोटियंत्र में टिकरी को धर ऊपर नीचे पक्के कोला धर अग्नि देय और वंकनाल धोंकनी के धोंकने सें सत्व पतला होकर नीचे बैठजाय उस्को निकाल खंगड़ को तोड चुंबक से सत्व को निकाल लेय फेर पूर्वोक्त मसालाडालकर धोंकै ऐसें तीनवार करने सें सबसत्व निकल आवै यह सत्व सुवर्ण के समान लाल निकले कदाचित्मरी अभ्रक नमिलै तो धान्याभ्रक काही सत्व निकाले यह सत्व कांसे के समान निकले-

कोटियंत्र

अथाभ्रकसत्वशोधनं

अथसत्वकणास्तास्तु मुस्ताक्काथाम्ल
कांजिकैः शोधनीयंगुणोपेतंमूषामध्य
निरुध्यच सम्यक् पक्कंसमाहृत्यद्विवारं प्रधमेत्ततः
इति शुद्धंभवेत्सत्वंयोग्यंरसरसायने ॥

अर्थ- अभ्रकसत्वके कणोको मोथाके काढे में अम्लवर्ग में औरकांजीमें

शोधकर शोधनीय करणके साथ मूषा में धर ऊपर कपड़मिट्टीदेक
र अग्निदेय पीछें निकालकर पूर्वोक्त औषधीन्मैं धरकर फिर अग्निदेय
तो अभ्रक सत्व शुद्धहोय और पारे का बंधन करे॰ रसायन केयोग्यहोय

अथाभ्रकसत्वमारण

सूततुल्यंव्योमसत्वंतयोस्तुल्यंचगंधकम् कुमा
रीस्वरसैर्मर्द्यंजत्रेसैकतकेपचेत् ॥ दिनद्वयांतेसं
ग्राह्यंभस्मयेन्मासमात्रकं क्षयंशोषंतथाकासंप्र
मेहंचापिदुष्करम् पांडुरोगंचकार्श्यंचजयेत्शीघ्रं
नसंशयः

अर्थ - एक भाग पारा और एकही भाग अभ्रक का सत्व इन दोनों के स
मान गंधक लेय इन सबको घीगुवार के रसमें घोट बालुका यंत्र में दो॰
दिन अग्नि देय तो अभ्रक सत्व मरे॰ पीछे शीतलकर धर राखै इसको ए
क महीना सेवनकरे तो खई॰ शोष॰ खांसी॰ असाध्यप्रमेह॰ पांडुरोग॰
कृशता॰ इनको शीघ्रनाशकरै + यह काकचंडेश्वर ग्रंथ में लिखा है॰

सत्व मारण कीदूसरीवि॰

सत्वस्य गोलकंध्मातंमस्यसंयुक्तकांजिकैः निर्वा
प्यतन्क्षणेनैवकुट्टयेल्लोहपारया ॥ संप्रताप्यघ
नेस्थूलकणान्क्षिप्त्वाथकांजिके तत्क्षणेनसम्मा
हृत्यकुट्टयित्वारजश्चरेत् ॥ गोघृतेनचतच्चूर्णंभ
र्जयेत्पूर्ववत्त्रिधा धात्रीफलरसैस्तद्वद्वात्रीपत्ररं
सेनवा भर्जने भर्जनेकार्य्यंशिलापट्टेनपेषणं ॥
ततः पुनर्नवावासा रसैःकांजिकमिश्रितैः प्रपुटे
द्दशवाराणिदशवाराणिगंधकैः एवंसंशोधितं
व्योमसत्वंसर्वगुणोत्तरम् यथेष्टंविनियोक्तव्यंजा
रणेचरसायने

अर्थ - अभ्रक सत्व के पिंड को अग्नि में तपाय २ धान युक्त कांजी में बुझावे पीछे उसी में से निकाल लोह की खरल में लोह के भारी मूसल से कूटे उसी बड़े २ टुकडा होय उन्को अग्नि में तपाय उसी धान युक्त-कांजी में बुझावे और उस कांजी में से जल्दी निकाल उन टुकड़ों को कूटकर रेत के समान बारीक करै पीछे गौ के घृत से उस चूर्ण को पूर्वरीति से (घृत में भून और कांजी में बुझावे) तीनवार भूने. इसी प्रकार आवलो के रस में ३ वार भूने और आम्ले के पत्तानके रस में भूने परंतु जब भूने तबही तब बडी शिलापर पीसना जाय. तदनंतर पुनर्नवा-(सांठ) और अडूसा तथा कांजी इन सबको मिलाय दश पुट देय इसी प्रकार २० पुट गंधक की देय. इस प्रकार शोधित अभ्रकसत्व सर्वगुण युक्त होय. इस्को स्वेच्छा पूर्वक पारे के जारण में और रसायन में योजना करै -

अथ सत्वस्य मृदुकरणं

मधुतैलवसाऽऽज्येषु द्रावितं परिभावितं मृदु स्याद्दशवारेण सत्वलोहादिकं खरं॥

अर्थ - सहत, तेल. चर्बी. घृत. इन्में सत्व गलाय २ कर दशवार बुझाने सें सत्व और लोहादि कठोर धातु मृदु (नरम) होय-

पटचूर्णं विधायाथ गोघृतेन परिप्लुतम् भर्जयेत्स सवारारिण चुल्लीसंस्थितखर्परे॥ अग्निवर्णं भवेद्यावद्वारंवारं विचूर्णयेत् लग्नाक्षिप्रादहेद्याव तावद्धावाभजेनं चरेत॥ ततः सगंधकं पिष्टाव १ मूलकषायतः पुटे द्विंशतिवाराणि वाराहेण पुटेन च पुनर्विंशतिवाराणि त्रिफलात्य-कषायतः॥ त्रिफलामुंडिकाभृंगपत्रपथ्याक्ष भृंगकैः भावयित्वा प्रयोक्तव्यं सर्वरोगेषु मात्रया

१ वासकसमूलमूलकैः

सत्वाभ्रान्किंचदपरं निर्विकारं गुणाधिकं शवंचे च्छतवाराणि पुटपाकेन साधितं ॥ गुणावज्जाय तेत्यर्थं परं पाचन दीपनं क्षुधाकरोति चात्यर्थं गुंजार्धमितिसेवया ॥ तत्द्रोगहरैर्योगैः सर्व- रोगहरंपरं

अर्थ- पूर्वोक्त मृदुसत्व को शिलापर पीस चूर्णकर कडाही में डाल गौके घृत में मिलाय सात वार भूने. जव अग्नि के समान लाल वर्ण होजाय तव निकालकर पीसै और फिर घृत मिलाय फेर भूने जवतक लचरी होजाय और तिनका उसमें लगाने से भस्म होजाय तवतक भूने या प्रकार सात वार भूने पीछे इसमें शुद्ध गंधक मिलाय वरकी जडके काढे सें घोटै फेर इस्को वाराह पुटमें धरकर फूंकदेय. या प्रकारवीस वाराह पुटदेय इसी प्रकार वीस पुट त्रिफलाकेकाढे के देय तदनंतर त्रिफला. गोरखमुंडी. भांगरेके पत्र. अडूसा. मूली. इन्के रसों की भावना देय तो इस्की दिव्य भस्म होय. यह अभ्रकसत्व सें श्रेष्ट निर्विकार गुणो में अधिक है. इसी को सो १०० वार पुटपाककी विधि सें साधन करै तो अत्यत गुणवान् होय अत्यंत पाचन और दीपन है अत्यंत क्षुधाकरै इस्से से आधरती सेवन करनी चाहिये. यह अनेक रोग हर्त्ती योगो के साथ खाने सें सर्व रोग दूर होय. + सत्वकी भस्मके अनुपान अभ्रकके तुल्य जानने =

द्रुति (पारेके समान) करना

द्रुतयोनैवनिर्दिष्टाशास्त्रेदृष्टाअपिध्रुवं विनाशंभोप्रसादेननसिध्यंतिकदाचन

अर्थ- यद्यपि द्रुति शास्त्र में लिखी है परन्तु हमने किसीको करते नहीं देखा क्योंकि द्रुति विना श्रीशिव प्रसन्नताके कदाचित् सिद्ध नहीं होती यह वात इसी प्रकार है. तोभी शास्त्र में लिखी है और

कदाचित् किसी की प्रारब्ध वस सैं तथा श्री सदाशिव की भक्ति सैं सिद्ध होजाती है इसी सें हम इस जगे लिखते है.

अभ्रक द्रुतिका प्रथम प्रका

अगस्त्यपत्रनिर्यासेर्मर्दितंधान्यकाभ्रकं सूरणोदरमध्येतुनिक्षिप्तंलेपितंमृदा ॥ गोष्टभूमौखनित्वातुहस्तमात्रेहिपूरितं मासान्निसारितंतत्तुजायतेपारदोपमम्

अर्थ - अगस्तियाके पत्तेकेरस में धान्याभ्रक घोटकर जमीकंद को भीतर सें पोलाकर उसमें उस धान्याभ्रकको भर उसीके टुकड़ा सें उस्के छेद को वंदकर ऊपर कपड़ मिट्टी कर घोड़े के वंधने की पृथ्वी हाथ भर ओंड़ी खोद उसमें गाड़देय एक महीना के वाद निकालै तो उस अभ्रककी पारेके समान पतली द्रुति होय -

द्रुतिकीदूसरीवि.

स्वरसेनवज्रवल्याःपिष्टंसौवर्चलान्वितं गगनंपक्वंशरावसंपुटेवहुवारंभवतिरसरूपं

अर्थ - धान्याभ्रक को वज्रवल्ली में संचर नोन मिलायकर पीसे पीछै सराव संपुट में धरकर अग्नि में पचावै इस प्रकार वहुवार करने सैं पारेके समान द्रुति होय -

द्रुतिकरनेकीतीसरीरीति.

निजरसपरिभावितेनकंचुकिकेत्थचूर्णा परिवापात् द्रुतिमास्तेऽभ्रकसत्वंतथैवसर्वाणिलोहानि॥

अर्थ - कंचुकी शाक (नाडीकाशाक) इस्के चूर्णको इसीके रस की भावना देकर अभ्रक सत्व में इस्को डारने सैं उस्की द्रुति होय. तथा सर्व लोह की द्रुति होय -

चतुर्थविधि

शुद्धकृष्णाऽभ्रपत्राणि पीलूतैलेनलेपयेत् घर्मे शोष्याणि सप्ताहं लिप्त्वा लिप्त्वा पुनः पुनःमर्दितं चाम्लवर्गेणानद्धत् शोष्याणि चाथवै स्नुह्यर्कार्जुन वन्हीनां कटुतुंव्याः समाहरेत् क्षारक्षारत्रयं चैतदष्टकं चूर्णितं समं वज्रकंदक्षीरकंदबृहतीकंटकारिका वनवृंताकमेतेषां द्रवैर्भाव्यं दिनत्रयं अनेन क्षारकल्केन पूर्वपत्राणि लेपयेत् आतपे कांसपात्रेच स्थालीलिप्यं पुनः पुनः एवं दिनत्रयंकुर्यात् द्युतिर्भवतिनिर्मला ॥

अर्थ - शुद्ध काले अभ्रक के पत्र लेकर उनपर पीलू के तेल का लेप कर धूप में सुखाय ले इस प्रकार वारंवार पीलू का तेल लगाय कर धूप में सात दिन सुखावे पीछे उन पत्रों को अम्लवर्ग में (अम्लवर्ग पारद के प्रकरण में लिख आये हैं) उस में धोवै और इसी प्रकार सुखावे. तदनन्तर थूहर. आक. अर्जुना. चित्रक. कडुईतूंवी. इन सब का खार. तथा सज्जीखार. जवाखार. सुहागा. इन आठों का चूर्णकर पीछे वज्रकंद. क्षीरकंद. वडी कटेरी. वनकावेंगन. इनके रस को पूर्वोक्त क्षार मिलायकर घोटै पीछे इस रस को अभ्रक के पत्रों पर लेप कर कांसे की थाली में उन पत्रों को धर देय. जब लेप सूख जाय तब फिर लेप करदे. इस प्रकार तीन दिन करने से पारे के समान अभ्रक की निर्मल द्युति होय. जब सूख जाय तब अग्नि देय-

द्युतिका पञ्चम प्रकार

ककोडीफलचूर्णं तु मित्रपंचक संयुतं मलं तत्रच धान्याभ्रमग्निर्मर्द्यं दिनावधिः अंधमूषागतं ध्मातं तत् द्युतिर्भवतिध्रुवं

अर्थ - ककोड़ीफल के चूर्ण को मित्रपंचक (घृत·सहत·गुग्गुल· गुंजा· सुहागा·) संयुक्तकरै· इनदोनोंको समान धान्याभ्रकलेय सबको नीवू केरस में एकदिन मर्दनकरै पीछे अंधमूषा में धरकर अग्निकेदे ने सें पारेके समानद्रुति निश्चय होय-

छटवीं बिधि

धान्याभ्रकंचगोमासंअभ्रपादंचसैंधवंसुधा
कंपयसाद्रावैर्मुनिजैर्मर्दयेत्र्यहम् तद्गोलंक
दलीकंदेक्षिप्त्वावाह्येमृदालिपेत् करीषाग्नौ
त्र्यहंपाच्यंद्रुतिर्भवतिनिर्मला

अर्थ - धान्याभ्रक· गौकामांस · अभ्रपाद· सैंधवलवण· इनसबको थूहर· शाक· इन्केदूधमें तथा अगस्तियाकेरस में तीनदिन घोटै पीछैं इस्कागोलावनाय केलाके कंद में धर ऊपरकपड़ मिट्टी देकर आरने कंडेकी आंच तीनदिन देय तो निर्मल द्रुति होय-

सप्तम प्रकार

अभ्रकंनरतैलेन भावितंचसुचूर्णितं गोपेन्द्र
लेपितामूषाधमनाद्द्रुतिमाप्नुयात्

अर्थ - अभ्रकको रामकपूर के तेल की भावना देकर चूर्ण करैउसको मूषा में धर उस मूषाको गोपेन्द्र (उपलसिरीति·महा माषाप्र·) सैंलेप कर अग्नि में धमन करने सें अभ्रककी द्रुति होय-

अष्टम प्रकार

श्वेताभ्रकंचसंचूर्ण्यगोमूत्रेणातुभावयेत् क
दलीफलसंयुक्तंभावयेत्तद्विचक्षणः धमेत्तदं
धमूषायांनिवारंचपुनःपुनःद्रुतिर्भवतितद्यत्र
नात्रकार्यबिचारणात् अनेनैवप्रकारेणाकु
र्य्याद्द्रुतिसुशोभना ॥

अर्थ - स्वेत अभ्रक का चूर्ण कर गोमूत्र की भावना देय फेर केला के कंद की भावना देय. अनंतर अंधमूषा में धर दो तीनवार खूब धोंके तौ तह अभ्रक की द्रुति होय इसी प्रकार उत्तम द्रुति करनी चाहिये -

अथ अनेकद्रुतिमेलापनं.

कृष्णागरुनाभिसिलैरसोन सितरामठैरिमाद्रुत
यः सोक्षेमिलंतिमर्द्यौः श्रीकुसुमपलासवीजरसैः

अर्थ - कालीअगर. कस्तूरी. मनसिल. सपेदलहसन. हींग. ए सब औषध लेकर सब धातुन्की द्रुतीन को एकत्रकर उन्में डालकर घोटै पीछे उन्को धूप में अथवा अग्निकी गरमी में धर लेंग. और ढाक के बीजोंके रस में घोटने से सब द्रुति मिलकर एक होजाय -

भाग्यंविनाभ्रद्रुतयो जायंतेनकदापिहि विनाशं
भोप्रसादेननसिध्यंतिकदाचन ॥ तथापिशास्त्ररू
ढत्वात्कदाचिद्भाग्ययोगतः

अर्थ - अभ्रक का द्रावण भाग्योदय विना और सदाशिव की प्रसन्नता के कभी ही सिद्ध नहीं होय. परंतु शास्त्र में कहा है और कदाचित् भाग्य योग से सिद्ध होय इसी से कही है -

अथाभ्रकवेधीक्रिया

श्वेताभ्रंश्वेतकाचं च विषसैंधवटंकणं स्नुही
क्षीरैर्दिनंमर्द्यं तेनवंगस्यपत्रकं ॥ लेप्यंपादांश
कल्केनचांधमूषागतंधमेत् यावद्द्रावयतेवंगप्
वैतैलेनढालयेत ॥ वाराद्विलेपमेकंचसप्तवारा
णिकारयेत् पुनर्जीवोत्थतैलेनढालयेत्सप्तवा
रकं ॥ तद्वंगंजायतेतारं शंखकुन्देन्दुसन्निभं ॥

अर्थ - सपेद अभ्रक. सपेद काच. सिंगिया विष. सैंधा नोन. सुहागा. इन सबको थूहर के दूध में एकदिन घोटै पीछे इसको रांगा के पत्रोंपर

लेपकर अंध मूषा में धरकर धोंकनी से धोंके जबजाने कि वंगगल
नेलगा उस्के पहिले तेल में ढालदेय. फेर पूर्वोक्त लेपकर आंच मेंतपा
य पुत्रजीव (जीयापोता) के तेलमें ढालदेय इसप्रकार सातवार कर
ने से वह वंग. शंख. कुंद. और चन्द्रमाकेतुल्य सपेद चांदी होय.

दूसरा प्रकार

पीताभ्रं गंधकं सूतं रक्तपुष्पं चतुर्थकं वज्रीक्षीरे
रासंयुक्तं वंगं तारायते क्षणात्

अर्थ - पीली अभ्रक. पीली गंधक. पारा. तथा रक्तपुष्प. इन्का चूर्णकर
थूहर के दूध सें घोटे पीछे वंग (रांग) को गलाय उस्मे डाले तो रांग-
की चांदी होय-

अभ्रकमें पुटदेनेकेगु.

अभ्रस्त्वष्टादशपुटाद्वातहा द्विगुणेनच पित्तघ्न:
द्विगुणेनैवकफहा मेहशोफहा ॥ अम्लपित्ताम
वातादी रोगेस्याद्गजकेशरी अभ्रंशतपुटादूर्द्ध:
वीजसंज्ञां ध्रुवंलभेत् ॥ वीर्यौज: कान्तिमूलंस्यात्
वीजोदेहधारक:

अर्थ - अठारे पुटकी अभ्रक वात नाशक है- छत्तीस पुटकी पित्तनाश
क और ५४ चौअन पुटकी अभ्रक कफ प्रमेह और सूजनको नाश करै.
तथा अम्ल पित्त. आमवातादि रोग जो हाथी उन के हटाने को सिंहके स
मान है. १०० सौ पुट सें उपरांत अभ्रक वीज संज्ञाको प्राप्त होती है.
सवीज अभ्रक वीर्य्य. पराक्रम. कांति. इन्का कारण है तथा देह को धा
रण कर्ता है + यह क्षीर स्वामी का मत है-

अभ्रककल्प

निश्चंद्रमभ्रकं भस्म धात्री व्योष विडंगकं निष्कै
कं भक्षयेत्प्राज्ञो वर्षमेकं निरंतरं द्वितीयेतुपुन

वर्षैभक्षयेद्गुटिकाद्वयं एवंसंवत्सरेरेकैकगुटिके कांप्रवर्धयेत त्रिवर्षस्य प्रयोगोयमभ्रकस्य प्रकीर्तितः अनेनक्रमयोगेनव्योमः शतपलंनरः अद्याद्देवेन्नसन्देहोवज्रकायोमहाबलः मासत्रये णारक्ताक्षं क्षयकाशं सुदारुणं पंचकासांश्च हृद्रुग्मग्रहण्यायांशोभगंदरं आमवातंतथाशोषं पाण्डुरोगंसुदारुणं मृत्युकल्पमहाव्याधिवातपित्तकफोद्भवं हंत्यष्टादशकुष्ठानि नराणां पथ्याशिनां ध्रुवं अत्र गुटिकायाप्रमाणं नोक्तं नदर्थसंशयोनकर्तव्यः किन्तुचिकित्सकवरैः स्वबुध्याकल्पनीयं सूपशाकादिषुलवणप्रक्षेपवत् इतिवृद्धाः

अर्थ - निश्चन्द्र अर्थात् चमकरहित अभ्रक की भस्म आंवले सोंठ मिरच पीपल वायविडंग एसवपदार्थ समान भागलेकर पीसे सवचूर्ण कर एकनिष्क (चारमासे) की गोली बनावे एकगोली नित्य १ वर्षपर्यंत खाय दूसरेवर्ष दोगोलीखाय इसी प्रकार प्रत्येकवर्ष में एक २ गोली वढावे यह अभ्रकका तीन वर्षका प्रयोग है इसीक्रमसे अभ्रक सौ १०० पल खाय तो वज्र के समान दृढ देह होजाय महाबलवान् तीन महीना के प्रयोग सें लाल नेत्र होजाय और खई पांच प्रकारकी उग्र खांसी हृदयरोग गोला संग्रहणी ववासीर भगंदर आमवात शोष (सूखना) पांडुरोग मृत्युके समान महाव्याधि वात पित्त कफसे होनेवाली अठारे प्रकारके कोढ एसवप थ्य सें रहनेवालेमनुष्य के रोग निश्चय दूर होय + इसमें गुटिकाका प्रमाण नहीं लिखा उस्का संशयनहीं करनो किन्तु बुद्धिमान् वैद्य अपनी बुद्धिसें कल्पनाकरैजैसैंरसोई शाकादिकों में नोनकीकल्पनाकरते है- यह वृद्धोंकामत है-

अभ्रकसेवनमेंअपथ्य

क्षाराम्लं द्विदलं चैव कर्कटी कारवेल्लकम् वृन्ताकं च करीरं च तैलं चाभ्रे विवर्ज्जयेत्

अर्थ - खट्टा· खारा· दोदल का अन्न (मूंग· चना· मसूर· आदि) ककड़ी· करेला· बैंगन· करीलकासाक (ककाराष्टक) तैल इन्को अभ्रक के खानेवालात्यागदेय-

अपक्वभक्षणेदोषा

चन्द्रिकाभियुक्तमभ्रकं जीवितं झटिति प्रणाशयेत् व्याघ्ररोमवच्चोदरस्थितं वातनोवितनुतेगदानवहून्

अर्थ - यदि अभ्रक सचंद्र अर्थात् चमकली होय तो तत्काल प्राणहरण करै जैसे व्याघ्र (बघेरे) का रोम पेट में रहने से अनेकरोगदेह में करै-

अथतच्छांति

उमाफलं वने पिष्टा सेवयेच्चो दिनत्रयम् अशुद्धाऽभ्रकदोषेणाविमुक्तः सुखमेधते

अर्थ - आमले को जल में पीस तीन दिन पिये तो अशुद्ध अभ्रक के दोष से रहित हो सुखभोगै-

इति श्री माथुरवंशोद्भव दत्तराम पाठकनिर्मित रसराजसुन्दरग्रंथे अभ्रक प्रकरणं समाप्तम्

अथ हरिताल प्रकरणम्

संध्यायां नरसिंहेन हिरण्यकशिपुर्हतः नखच्छिन्नमभूत्तालं स्वक्षालस्वर्नाम्नितः

अर्थ - पहिले नरसिंह भगवान ने सायंकाल में हिरण्यकशिपु नाम दैत्य

को मारा उसकी छर्दि सें हरताल प्रगट हुई कोई कहता है नृसिंहदेव की कांख खुजानें सें हरिताल प्रगटी –

हरिताल के भेद

हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिंडसंज्ञितं तयोराद्यं
गुणैः श्रेष्ठं ततो हीनगुणंपरम्

अर्थ – हरिताल दो प्रकार की है पत्राख्य और पिंड संज्ञक इन्में पत्राख्य अर्थात् तवकिया हरताल उत्तम गुणवाली है – और पिंडसंज्ञक दूसरी हरताल हीनगुण है –

मतान्तरम्

हरितालं चतुर्धोक्तं पिंडाख्यपत्रसंज्ञिकम् गोदं
तंवकदालं चक्रमाद्गुणाकरंपरम्

अर्थ – हरिताल चार प्रकार की है· पिंडाख्य· पत्रसंज्ञक· गोदंती· व कदाल· क्रम पूर्वक एक सें दूसरी में अधिक गुण हैं –

पिंडतालकेलक्षण

निःपत्रं पिंडसदृशंस्वल्पसत्वंतथालघु: स्त्रीपु-
ष्पहारकंस्वल्पगुणंतत्पिंडतालकं

अर्थ – पत्ररहित· गोलाके समान· थोडा सत्व जिस्में· हल्की· स्त्रीन के पुष्पकी नाशक· थोड़े गुणवाली पिंडसंज्ञक हरताल कहाती है –

पत्रतालकेलक्षण

स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् पत्रा-
ख्यंतालकंविद्यागुणाढ्यंतद्रसायनं

अर्थ – सुवर्ण के समान जिस्का वर्ण· भारी· चिकनी· अभ्रककेसे जिसें परत होय· यह पत्राख्य (तवकिया) हरताल है गुणकर्के युक्त और रसायन है –

गोदंतीहरितालकेल·

दीर्घखंडमतिस्निग्धं गोदंताकृतिकं गुरु नीलरे
खान्वितंमध्येपीतंगोदंततालकं

अर्थ - जिसके लंबे टुकड़ा होय · अत्यंत चिकनी गौ दांत के समान होय और भारी · तथा जिसके बीच में नीली रेखा होय · और पीली होय इसको गोदंती हरताल कहते है + आजकल पसारी लोग सफेद सेलखड़ीके समान छोटे २ टुकडेन्को गोदंती हरताल बताते है और मूर्ख वैद्य उसीको गोदंती के एवज ले जाते है -

बकदालीहरतालकेल·

अतिस्निग्धहिमप्रख्यंसपत्रगुरुतायुतं तालं
बकदालं स्याद्दद्रुकुष्ट
हरंत्विदम् ॥

अर्थ - अत्यंत चिकनी · बर्फके समान · पत्रयुत · भारी · ऐसी हरताल बकदाल संज्ञक जाननी यह दद्रुलुस · और कुष्ट को हरण कर्ती है

अथमारणयोग्यहरता·

पिंडतालं मृतौत्याज्यंपत्रालंमृत्येवेहितं गोदं
ततुगलत्कुष्टेश्वेतंकुष्टे ं तिमंविदुः ॥

अर्थ - पिंडताल मारण कर्म में त्याज्य कही है · और तबकिया हरताल मारण कर्म में ग्राह्य है · गोदंती हरताल गलकुष्ट में · और सफेदकुष्ट में बकदाल हरताल ग्रहण करनी चाहिये -

हरतालकेगुण

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषं कंडुकुष्ट
शीरोगास्रकफपित्तमरुद्व्रणान् ॥

अर्थ - हरिताल कडुई · चिकनी · कसेली · गरम · ऐसीहै विष को दूरकरै खुजली · कोढ़ · बवासीर · रुधिरके बिकार · कफ · पित्त · बादी · इन्सें होनेवाले विकार तथा फोड़ा ए सब दूर होय - सगुणासुधीहुई कची हरताल

के हैं -

नाम भेद कथन

हरितालीति विख्याता त्रिषुलोकेषु विश्रुता प्रशु
तस्यापरं नाम हंसराजइतिश्रुतम् ॥ तयासंभक्षि
तस्तालः सुधारूपः प्रजायते

अर्थ - हरिताली इस नाम सें त्रिलोकी में विख्यात है इस्का दूसरा नाम हंसराजनाम सें विख्यात है· इसहरताल के खाने सें चंद्रमा के समान रूपहोयहै

अशुद्ध हरिताल के दोष

अशुद्धतालमायुघ्नं कफमारुत मेहकृत् तापस्फो
टांगसंकोचान्कुरुतेऽतः प्रशोधयेत् ॥

अर्थ - अशुद्ध हरताल आयु का नाशकरे· कफ· वात· और प्रमेह को प्रगट करे· तथा ज्वर· हडकल· अंगसंकोच· इतनेरोग करे इसीसें हरतालको अवश्य शोधे -

अथहरिताल शोधनं

कुष्माण्ड त्रितये खिन्नंतालंशुध्यतिनान्यथा॥

अर्थ - पेठे (कुह्मडे) के ऊपर चार अंगुल टांकी देकर कतरलेय· उस्में हरताल को कपडे में बांधकर धरदेय और उसी पेठे के टुकडेसें उस्का छेद बंद करदेय पीछे उस पेठे के नीचे भाग की तरफ सें एक खीपड़ा में धरै उस ठीकरा के नीचे चारि प्रहरकी आंचदेय जिस्से व पेठा गलजाय जब चार अंगुलबाकी रहे तब हरिताल की पोटरी को निकाललेय इसी प्रकार दूसरे और तीसरे पेठे में पचावे पीछे उसपोटली को निकालकर शुद्ध पानी सें धोय डाले तो हरिताल शुद्ध होय -

हरितालशोधनकीदूसरी·

तालंककराशः कृत्वाबध्वापोटलिकांततः दोला
यंत्रेणयामैकं सचूर्णेकांजिकेपचेत् ॥ यामैकं

दोलयातद्वत्कूष्माण्डकरसेततः तिलतैलेपचेद्या
मंयामंचत्रैफलेजले दोलायंत्रे चतुर्यामंपक्वंशु-
ध्यतितालकं॥

अर्थ - हरताल के छोटे २ टुकडाकर पोटली में बांध दोला यंत्र में विधि सें कांजी में एक प्रहर पचावै. इसी प्रकार एक प्रहर पेठे के रस में पचावै. और एक प्रहर तिलके तेलमें. एक प्रहर त्रिफला के काढे में. पकावै. ऐसें चारोवस्तुन में चार प्रहर पचाने सें हरितालकी शुद्धीहोय

शोधनकीतीसरीविधि

स्विन्नंकूष्माण्डतोये वातिलक्षारजलेपिवा तोये
वाचूर्णसंयुक्तो दोलायंत्रेणशुध्यति॥

अर्थ - हरताल पेठे के पानी में अथवा तेल. तथा क्षारगण के पानी में तथा चूनेके जल मे. दोलायंत्र करके औटाने सें हरिताल शुद्ध होय-

चतुर्थविधि

शोधयेत्परयायुक्त्यासतत्पत्रीकृतंशुभम् वस्त्रेण
पोटलींवध्वाकांजिके शोधयेत्त्र्यहम्॥कूष्माण्ड
रसमध्येनुत्र्यहंदुग्धेनशोधयेत् वटदुग्धेत्र्यहं
शोध्यंतालकंशुद्धिमाप्नुयात्

अर्थ - हरताल के पत्र न्यारे न्यारे कर उनकी पोटली बांधकांजी में तीन दिन पचावै पीछे पेठे केरस मे. दूधमे. तथावड़के दूध में तीन २ दिन- औटाने सें हरताल शुद्ध होय है-

शो. पंचमविधि

तालकंकणशःकृत्वा दशांशेनचटंकणं जंवी
रोत्थद्रवैःक्षाल्यंकांजिकैःक्षालयेत्पुनः॥स्वेद्यं
वाशाल्मलीतोयेनालकं शुद्धिमाप्नुयात्

अर्थ - हरताल के टुकड़ा करपीछे हरताल का दशमा हिस्सा सुहागा

मिलाय जंभीरी के रस में औटावै-तदनंतर कांजी में औटावै-और सेंम र के रस में औटावै तौ हरताल शुद्ध होय-

शुद्ध हरताल के गुण

शोधितं हरितालं तु कान्तिवीर्य्यविवर्धनं कुष्टादि पापरोगघ्नं जरामृत्युहरं परं ॥

अर्थ-शुद्ध हरिताल कांति और वीर्य्य को बढ़ावै कुष्टादि पाप रोगोंको दूर करै बुढ़ापे को और मृत्यु को हरण करै-

अथ हरिताल मारण

पत्रास्यं तालकं शुद्धं पौनर्नवरसेन तु खल्वे वि-मर्दयेदेकदिनं पश्चाद्विशोषयेत् ॥ संशोष्य गोलकं कृत्वा चक्राकारमथापि वा ततः पुनर्नवा-क्षारै स्थाल्यामर्द्धं प्रपूरयेत् ॥ तत्र तद्गोलकं ध-त्वा पुनस्तेनैव पूरयेत् आकंठं पिठरं तस्या पिधारं धारयेन्मुखे ॥ स्थालीं चूल्ल्यां समारोप्य क्रमाद्व न्हि विवर्द्धयेत् एवं तु म्रियते तालं मात्रा तस्यैव रक्तिका ॥ अनुपानान्यनेकानि यथा योग्यं प्रयो-जयेत्

अर्थ-शुद्ध तवकिया हरिताल को सांठके रस में घोटे एक दिन पीछे उसको सुखाय उसका गोला अथवा चंदिया बनावै-पीछे पुनर्नवा(सांठ) के खार सैं आधी हंडिया को भर उसके बीच में हरिताल की चंदियान्कोधर फेर उसी खार सैं हंडिया को दाबकर भरदेय-पीछे उसके मुखपर ढकना देकर ऊपर कपड़ मिट्टीदेय उस पात्र को चूल्हे पर चढाय क्रम सैं मंद-मध्य-तेज अग्निदेय-या प्रकार करने सैं (हरितालकी (सफेद) भस्म होय इसकी १ रत्तीकी मात्रा है-इस भस्म को अनेक अनुपानों के संग यथायोग्य रोगों

में देय -

मारणाकीदूसरीवि.

स्वर्णपत्रं शुद्धतालं पलानां दशसंज्ञकं कौमारीद्रव प्रस्थेन मर्दयेत्तालकं शुभं ॥ निंबुप्रस्थरसे चैववाराा पुंखरसैः पुनः प्रस्थवज्रीरसे नैव मर्कपिंडापतिं पृथक् ॥ मर्दयेच्च दृढं खल्वे यावद्भवति गोलकं ॥ गोलकं शोषयेत्पश्चात् घर्मे सप्तदिनानि वै ॥ पलाशभस्म मृद्भांडे क्षिप्तोपरि च गोलकं दत्वोपरि पुनर्भस्म भांडवक्त्रं निरुंधयेत् ॥ चूल्यामारोपयेद्यत्नात्पावकं ज्वालयेत्क्रमात् मंदमध्यहठाग्नी नायामानां च द्विषष्टिकं ॥ स्वांगशीतलमादाय शुभ्रं तालं मृतं ध्रुवम् तंदुलं तदुलार्द्धं वा नागवल्ली दलैलिहेत्

अर्थ - सोनेके पत्र और शुद्ध हरताल १० दशपल लेय - इनको १ प्रस्थघी गुवारके रस में घोटै और १ प्रस्थ नीबू के रस में वाराा पुंख (सरफोंका) के रस में १ प्रस्थ थूहर के दूध में आक के दूध इनमें जबतक गोला न होय तबतक खरल करै पीछे उस गोला को सातदिन धूप में धरकर सुखावै. तदनंतर बड़ा पात्र लेकर उसमें ढाककी भस्म भरकर बीचमें उस हरताल के गोले को धर ऊपर उसके ढाककी भस्म भर उस पात्रके मुख को ढकदेय. पीछे उसको बड़े यत्न से चूल्हे पर चढ़ाय नीचे आंचवाले क्रम से मंद. मध्य. तेज. अग्नि ६२ बासठ प्रहर देय. जब शीतल होजाय तब उसको उतारलेय तो यह हरताल की सुंदर भस्म होय. इसमें से चावल अथवा आधा चावलभर नागरपान के साथ खायतो उक्त रोग दूर होय-

अष्टादशानि कुष्ठानि ज्वरमष्टविधं हरेत् पथ्यं

मकुष्ठं चराकंलवणास्नेहवर्जितम्

अर्थ - अष्टादशकुष्ठ आठ प्रकार के ज्वर को दूर करे - इसपर मठ र चना बिना तेल और नोन के खाय -

हरतालकी तीसरी वि.

तालं विचूर्णयेत्सूक्ष्मं मर्दयेनागार्जुनीद्रवैः सह देव्यावलायाथ मर्द्दयेद्दिवसद्वयम् ॥ तत्तालरोटकं कृत्वा ततः छायां विशोषयेत् हंडिकायं त्रमध्यस्थं पलासभस्मकोपरि ॥ पाच्यंचवालुकायंत्रे विहितं च ऽवन्हिना स्वांगशीतंसमुद्धृत्यसर्वरोगेषुयोजयेत ॥

अर्थ - हरिताल का सूक्ष्म चूर्ण करके दूधीके रस में सहदेई और बला (कगई) इनके रस में दो दिन खरल करे पीछे उस हरताल की रोटी सी कर छाया में सुखाय ले तदनंतर एक हांडीलेय उसमें ढाक की राख भर बीच में उस हरताल की रोटी को धर वालुकायंत्र में पचावै तीव्र अग्नि देय जब स्वांग शीतल होजाय तब उतारकर सर्वरोगोंमेंदेय

मारणचतुर्थविधि.

पलमेकं शुद्धतालं कौमारी रस मर्द्दितं सरावसंपुटेसिद्धायामान्द्वादशकंपचेत् ॥ स्वांगशीतं समादाय तालकंचमृतंभवेत् गलत्कुष्टहरे चैवतालकंचनसंशयः॥

अर्थ - शुद्ध हरताल १ पललेय उसमें घीगुवार का रस डालकर खूब घोटै पीछे उसकी टिकरी बनाय धूप में सुखाय सरवा संपुट में धर कर १२ प्रहर की अग्नि देय. जब स्वांग शीतल होजायतब उसमें से निकाले तो हरताल की भस्म होय. यह गलत्कुष्ट को दूर करै निसंदेह -

पांचवी विधि.

वंदालीताल मादायनिर्मलंखल्वमध्यगं दिन सप्तक पर्य्यंतं कुमारीद्रव मर्द्दितम् ॥ काचाकुप्यां विनिक्षिप्य मुखमुद्धारयेत्ततः विरच्यवालुकायंत्रं वन्हिंदद्याच्छनैः शनैः निर्गच्छन्धूमोस्पनीलाभः पीतवर्णस्तु सर्वथा मुखमार्गेततःप्राज्ञो न्यसेल्लोह शलाकिकां तस्यतालस्यमध्येशाभ्राम्यते चक्षणांक्षणं आकृष्यनीयते साद्रीसा सलाकाविलोक्यते नीलंपीतंयदाकिंचित्स्वेद रूपंजलंभवेत् दिनैकमपरंस्वेद्यं दद्याद्वापि दिनद्वयं जलरूपंयदास्वेदोदृश्यते तालकस्यवै शीतलं क्रियतेतत्र स्वांगशीतंयथाभवेत् खर्जूरखोटिकाकारं तालसत्वं महोज्वलं गुरुरूपंदृढंप्राप्य करस्पर्शेच सौख्यदम्

अर्थ - शुद्ध वकदाली हरताल को खरल में डार सातदिन पर्य्यन्त ग्वारपट्ठे के रस में घोटै· पीछे इस्को सुखाय काचकी आतसी सीसी में भर मुख को खुला रहने दे· पीछे उस सीसी को वालुकायंत्र में धरकर धीरे धीरे अग्नि देय· जव सीसी के मुख से नीले· अथवा पीले· रंगका धूंआ निकले तव चतुर वैद्य लोहे की सलाईको सीसी में डार उसमें चारों ओर फिराय कुछ हरत्ताल को लेकर वाहर निकाले यदि वह सलाई गीली होय और उस्का वर्ण नीला अथवा पीला निकले तो एक दिन अथवा दोदिन और भी स्वेदन· परंतु वारंवार परीक्षा करतारहै· जवउस्का स्वेद जलके समान होजाय तवशीतल करके उतार लेय- यह छुहारे की गुठली के समान उज्वलसत्व होय है- भारी· और दृढ· तथा स्पर्श (छूने) से सुखदेनेवाला होय-

टंकमात्रं विचूर्ण्याथ प्रदद्यात्कुष्टिनोपरं शुद्धो

धोजायतेत्यर्थमत्यर्थं शुभगंवपुः अत्यर्थं पच्यते
भुक्तमत्यर्थं सुखमाप्नुयात् अरुणोदुम्बरं कुष्ट
मृक्षजिह्वं कपालकं काकनं पुण्डरीकं चदद्रु
कुष्टं सुदुस्तरं तथाचर्मदलं हन्याद्विसर्पंचापि
कर्कसं सिध्मं विचर्चिकां पामां श्वेतकुष्टंचना
शयेत गरं दूषी विषं हन्यान्मासमात्रोपसेवनात्

अर्थ - इसमें से चार मासा पीसकर कोढ़ी मनुष्य को देय. इसके खाने सें भूख बहुत लगे अत्यंत सुन्दर देह होय- अत्यंत खाने की शक्ति होय. अत्यंत सुखहोय. अरुण कोढ़ उदुंबर. ऋक्षजिह्व. कापाल. काकन. पुंडरीक. दाद. चर्मदल. कठोर विसर्प. सिध्म. विचर्चिका. खाज संपेदकोढ़. दूषी विष इन सबको एक महीना के सेवन करने सें नाश होय- परंतु यह भी याद रहे कि चारमासे को ही एकमहीना यथा क्रमसें खाय. इकहीनखाय + यह विधि राजराजेश्वर चिंतामणी में लिखी है-

छटवीविधि

सम्यं विचूर्ण्यं शुचितालकस्य संभावयेद्विंशति
वासरांश्च अश्वत्थतोयैः शुचिरवल्वमध्ये दृष्ट्वा
विदध्यात् दृढगोलकोपि अश्वत्थमत्यार्द्धरसे
चभांडेन्यसेत्ततोगोलकएवमंदं संपूर्णभस्या-
थशरावकाग्र निरुध्यमुंचेद्गजाग्न्यैन्ते स
हस्वन्योत्पलसंयुतेवै प्रतिप्रजेग्यामचतुष्टयेन
निर्धूममेनंयदितप्तलोहे मुंचेत्सुशुद्धंशुभमुक्त
वर्णं

अर्थ - शुद्ध हरताल को इक्कीस २१ दिन पीपल के रसमें खरल करै पीछे गोला बनाय धूप में सुखायले फेर एक वडी हंडियालेय उसमें पीपल की रस आधे में भर बीच में गोला धर आधे को फेर पीपल की

राख में भरदेय उस्कामुख परिया सें बंदकर सात कपड़ मिट्टी कर ग
जपुट में हजार ऊपलान्की अग्नि देय तो चार प्रहर में इस्की भस्म शुद्ध
होय- (इस्की परीक्षा इस प्रकार करे) एकलोहकी वडी सलांगपर डाले
धूमरहित होय और सपेद होय तो शुद्ध जाने+

सातवींविधि

एकोविभागोशुचितालचूर्णं भागद्वयंसुन्दर
धूमसारं मध्येविमुत्यशुभतालकचूर्णमेतत्त
स्योपरिः पुनर्ददेच्चसुधूमसारः प्रपूरयेद्भमिक
याथभाण्डे शरावकेणावततोनिरुध्यात् विमु
च्यचूल्ह्यां चहिररायेरतां दहेतुयोयामचतुष्टयं
च एनैः प्रकारैर्मृतितालंनिर्धूममेव किलशु
क्लवर्णम् ॥

अर्थ - शुद्ध हरताल १ भाग और धूमसर २ भाग लेय फेर एक मटका
में इमली की अथवा पीपल की राख भरे उसके बीच में उस धूमसा
र मिलीं हरताल को धरे ऊपर उस्के फेर धूमसार बिछाय उसकेऊ
पर फेरउसी राख को भरदेय कंठतक- मुखपर पारी सें ढककर
कपड़ मिट्टीकर चुल्हेपर चढाय उस्के नीचे चार प्रहर अग्निदेय या
प्रकार हरताल की निर्धूम और सपेद भस्म होय-

आठवींविधि

शुद्धंतालं चूर्णयित्वाकन्याकूष्माण्डजैर्द्रवैः
दध्नाविभावितंशुष्कं गोलंकृत्वानिधापयेत् ॥
हंडिकायांपलुक्षारे पूर्णयेच्च षडंगुलं क्षारेण
चक्षाद्यचपुनःर्लोह पात्रेनिधापयेत पुनःक्षा
रेणाचाकंठ पूरयित्वाक्रमाग्निना द्वात्रिंशत्प्र
हरं पाच्यभस्मस्याच्चूर्णसंनिभं ससितंतंदुलो

स्मानंवातरक्तज्वरप्रगुत्

अर्थ-शुद्धहरताल लेकर खारपेठे और पेठे के रस में खरल करे पीछे तीन भावना दही की देकर सुखाय ले तदनन्तर एकबड़ी हांडी लेय उसमें नोन और खार छः छः अंगुल बिछाय उसकेबीचमें हरताल के गोला को धरे उसगोलो के ऊपर फेर खार भरकर बंद करे उसको चूल्हे पर चढाय क्रम से मंद मध्य तेज अग्नि देय ३२ बत्तीस प्रहर तो हरताल की चूनेके समान सपेद भस्महोयइसमें सें १ चामल की बराबर देय तो वातरक्त दूरहोय-

नवमबिधि

जंबीरद्रवमध्येतुप्रक्षाल्यं नटमडनं दशांशंट कणादत्वा खंडशःपरिमेलयेत् चतुर्गुणेगा ढपटेनिबध्यप्रहरद्वयंदोलायंत्रेणासुस्वेद्य प्रदीप् प्रमितेनले ॥ चूर्णतोयंकांजिकेचकूष्मांडनि वतैलके निफलाम्बुततः पश्चात्क्षालयित्वा- म्लवारिणा ततःपलाशमूलत्वक् परिपिष्ट प्र शोषयेत् महिषीमूत्रसंपिष्टं पुनस्तंपरिशोष- येत्तद्गोलकंसराबाभ्यांसंपुटीकृत्ययत्नतःख तेगजपुटंकृत्वास्वांगशीतंसमुद्धरेत् अजादुग्धे पुनःपिष्ठ्वाशोषयेद्गोलकीकृतं आकंठभस्मपा लासंहंडिकायांविनिःक्षिपेत् सम्यक् चूर्णस्य कुडवंदत्वातत्र विचक्षणैः स्थापयेद्गोलकं- तत्र पुनःचूर्णस्यभस्मच यथाधूमोवहिर्याति तथातांचविमुद्रयेत्द्वात्रिंशत्प्रहराग्निंचचूल्हा भक्त्वदर्पयेत् स्वांगशीतंसमुधृत्य सचूर्ण- नटमंडनं हिमकुन्देंदुशंकाशंनिधूमंकृष्मव

र्मना ॥

अर्थ- हरताल अथवा मनसिल को जंभीरी के रस में प्रक्षालन करै (धोवै) पीछे छोटे २ टुकडा करे हरताल का दशांश सुहागा डार चारनेके कपडा में पोटली बांध दोलायंत्र से चूनेके पानीमें कांजी में पेठे केरसमें. नीमके तेलमें. (नीमके रसमें) तथा त्रिफलाकेका ढे. इन प्रत्येक में दोदो प्रहर औंटावै तदनंतर नीबूकेरस में घुटावै. ढाककीजड़की छाल मिलायकर घोटै. पीछे भैंस के मूत्र में घोटै. फेर इस्का गोलाकर सराव संपुट में धर ऊपर कपड़ मिट्टी कर गजपुट में धरकर फूंकदेय. जब स्वतः सीतल होजाय. तब निकाल इस्को बकरी के दूध में घोटकर सुखावै. फेर ढाककी राख लेकर एक मटका में भर बीच में हरताल का गोला धर बाकी जो खाली रहे उस्को ढाककी राख सें खूब बंदकरदेय. उस्के मुखपर ढकना देकर चूने सें और गुड़ सें उस्की संधी बंद कर देय. अथवा ढाककी भस्म और चूना के बीच में उस गोले को धरकर मुखबन्दकरदेय. जैसें उस्का धूंआ बाहर न निकले ऐसा यत्न करै. फेर बत्तीस प्रहरकी अग्नि देय जहां सें धूंआ निकले उसी जगे चूने और ढाककी राख सें बन्द कर देय. जब स्वांग शीतल होजाय तब सावधानीसें हरताल को निकासलेय. यह भस्म बर्फ चन्द्रमा. कुन्दके फूल समान सफेद होय और निर्धूम होय-

अथ गुणाः

रक्तिकास्य प्रदातव्याः पुराणगुडयोगतः प
थ्यंचचणकस्याक्तंरोटिकाघृष्टकोदकं नि
र्लोणाकंचनिष्पन्नंखादयेदेकविंशतिः दिना
निनिर्वातगतःसर्वव्यापारवर्ज्जितः कलत्कु
र पुराडरीकश्विन्नंकापालिकंतथौदुम्ब

रंरक्तजिव्हंकाकणंस्फोटमेवच नातस्तुपाण्डु रोगंचदद्रुपामाविचर्चिका विसर्पमर्धगशीर्शिच विपादिंचभगंदरम् सर्वंयथाक्रमंहंतिसेवितंह रितालकं अन्यानपित्रणान्सर्वानंधकारमिवां शुमान्

अर्थ- इस हरताल में सें २ रत्ती पुराने गुड़के साथ खाय और चना की रोटी सांठी चामल- और सब पदार्थ विना नोन के खाय इक्कीस दिन प र्य्यंत सब कार्य्य को छोड़ देय और पथ्य सें रहे तो सर्व रोग रहित होय. गलत्कुष्ठ- पुंडरीक- सपेदकोढ़- कापालिक- औदुम्बर- रक्तजिव्ह- काकणा फोडा- पांडुरोग- दाद- छाजन- खाज- विसर्परोग- अर्धंगवात- तथा अ स्सीप्रकारकीवात- विपादिका- भगंदर- इन सब रोगों को यह हरताल यथाक्रम सेवन करने सें नाशकरै और भी व्रण आदि रोगो को नाशक रे जैसें सूर्योदय सें अंधकारकानाश होय है-

हरतालमारणकीदशमवि-

सत्त्वतालकंशुद्धंकर्षैकम्मृतलोहकं किंचि च्छेमंतथारूप्यंसर्वमेकत्ररोधयेत् कांचकूप्यां मृद्धालिप्तासप्तवारान्मुहुर्मुहुः तालककाचकु प्यांतः प्रदद्यात्तःप्रयत्नतः वज्रमुद्रांमुखेकृत्वा किंवामधुरवन्हिना संस्थाप्यवालुकायंत्रेपचे द्यामचतुष्टयं स्वांगशीतलमुध्धृत्यपूजयेच्चेष्टदेव तां खल्वे विचूर्णयेत्पूतंरसभांडेनिधापयेत्॥

अर्थ- शुद्धहरताल १ तोला- लोहकी भस्म १ तोला- थोडा सोना तथा थोडी चांदी- इन सबको एकत्रकर कांचकी सीसी में धरकर उस पर सात कपडमिट्टी देकर वालुका यंत्र में धरै उस सीसीपर वज्रमुद्राक रे पीछें मधुर अग्नि सें चार प्रहर पचावै जब स्वांग शीतल होजायतब

उतार उस हरताल को खरल में डारकर घोटै पीछे उस्को किसीउत-
म सीसी में धरदेय· तदनंतर इष्टदेवका पूजन करे इसमें सें रोगीको
देय +

वास्वीवि·

विमलपत्रकतालसुखंडशः कृततदोलस्वस्त्र
विदिघ्ययेत् घृतमथोत्तरपात्रघटोदरे जलरसे
स्थिरदोलकयाशुभे प्रहरयुग्मकृशानुक्रमादि
भिः स्वतनुशीतलस्वेद्यपुनस्ततः महिषिमूत्र
क्रमेणकुमारिका सघनचूर्णरसे ण्रपुस्विका
सजलनिंबुसुपक्करसेपुनः सुहढकोकिलपक्क
द्रवैततः इदमिहकृतस्वेद्यप्रयत्नतो भवतिशु
द्धमिदंनटमंडनम् ॥

अर्थ- तबकिया हरताल लेकर उस्के पत्र न्यारे न्यारे करै तदनंतर अ
च्छे वस्त्र में उसकी पोटली बांध वह पोटली· घृत· जलबेतस· इन्केरस
में दोलायंत्र में दो प्रहर पचावे· शीतल होनेके अनंतर उस्को काढ
फेर भेंस के मूत्र में· घीगुवारकेरस में· नागर मोथा के काढे में· सरफों
काके रस में· नीबूकारस· ईखकारस· इनप्रत्येक में दोलायंत्रकर औटा
वै तो हरताल शुद्ध होय-

अथ मारण

कूष्माण्डतोयेनदिनं विमर्द्य निंबूरसेगोभिरसे
तथैव सनागक्किकादिकुलित्थतोयैर्धत्तूरजं·
चार्द्रकभृंगराजं नागार्जुनीवासहदेविकांच
सुब्रह्मदण्डीद्रवकिंशुका·एरंडमूलंलशुनंप
लांडुसुवर्णवल्लीरसकाकमाची गोपालिका
वज्रिपयोर्कदुग्धं स्वल्वेविमर्द्यदिनमेकविंघ्य

निः पृथक् पृथक् मासचतुर्दशानेच क्वाक्कृति
र्वर्तुलरोटिकाभं अश्वत्थभूत्या मृद्धुहंडिकायां
मधोर्ध्वमध्यस्थितनालकंच सुपूर्णा पाकंदृढ
भस्मसंस्था मुखेसरावं मृतकर्पटंच दद्याच्च चू
ल्योपरिरक्षणीयमग्निंक्रमेणापिदिना निचाष्टौ
शिवस्य पूजां द्विजभोजनंच निष्कासयेद्युक्ति
मतालसतालः कुन्देंदु शंखादिप्रभासमानंता
लंभवेद्वामृततुल्य सिद्धंसुवर्णरौप्यादिकरं
डमध्येरक्षेत्तंतालकभस्मयुक्त्या ॥

अर्थ- शुद्ध हरताल को १ दिन पेठेके रस में घोटै. नीबू. गोमी. नक छिकनी. कुलथी. धतूरा. अदरक. भांगरी. हुल्ही. सहदेई. ब्रह्मदंडी हाक. भंडकी जड़. ल्हेसन. प्याज. मालकागनी. मकोय. मकोयकारस गोपालककड़ी. थूहरकादूध. आककादूध. इन सबकेयथासंभवरस और दूध में २१ दिन घोटै. या प्रकार चौदह महीनाजववीतजायत व इस्की रोटी के समान गोल और चिपटी चंदिया बनावै तदनंतर एक वडे मट्टी के पात्र में पीपल की राख भर बीचमें हरताल की टिकिया धर फेर उन्के ऊपर राख को दवायकर भरदेय मुखपर ढकनांदे कर उस्के ऊपर कपड़ मिट्टी कर चूल्हेपर चढावै उस्के नीचे अग्निक्रम सें मंद. मध्य. तेज आठ दिन देय. नवमदिन श्री सदाशिव का पूजनकर ब्राह्मण भोजन कराय उस हरताल को वड़ी सावधानीसें निकासलेय. तो यह हरताल कुंद के फूल और चन्द्रमा तथा शंख के समान स्वेत अमृत के तुल्य सिद्ध होय. इस्को सोंने के अथवाचांदी के पात्र में धरै और युक्ति सें राखै-

अथगुणाः

मात्रानतस्तंदुलक प्रमाणां रोगानुसारैरनुपा

मध्येद्विकालपथ्यंलवणाम्लतीक्ष्णं वर्ज्यंत
तोवानलतैलपक्वं निःसप्तवारंत्वथमंडलंवा गु
णैर्मनोतालकधूम्रहीनम् कुष्ठा निचाष्टादश
वातरक्तं ससन्निपातंचभगंदराणि अपस्मृति
र्वातव्रणांश्चसर्वे फिरंगरोगादिकश्लीपदानि
सर्वोपदंशप्रभृतीश्चशोफासूतेर्गदोश्वासमने-
कवातंकासादिदुष्टामपिपीनसानामर्शादयोग्रा
ग्रहणीविकारं मेदोर्बुदंग्रध्रसिगंडमाला क
ट्यामवातादिकमग्निमांद्यं मूत्रादिकृच्छ्रादिक
मेहजालं शोषश्चसर्वःक्षयराजयक्ष्मा सर्वंक
फाश्चापिचपित्तरोगेवाततथाव्याधिजरादिका
ना सवालसूर्योदयमंधकारं नाशंयथासेवित
तालभस्म सुवर्णवत्कांतिकरोतिकामं रामाश
तानांविलसेन्मनुष्यः

अर्थ - इस हरिताल में सें १ चावल के अनुमान यथायोग्यअनुपा
नसाथ दोनों समय (प्रातःकाल और सायंकाल) देय · और इसका खा
नेवाला नोनका · खट्टा चिरपरा · वादीकर्त्ता · तेलकापका · इत्यादि
पदार्थों को त्यागदेय · इसधूम्र (धूआं) रहित हरतालको २१ दिन
अथवा ४० दिन सेवनकरे तो इतने रोग दूर होय · अठारे प्रकारकेको
ढ़ वातरक्त · सन्निपात · भगंदर · विस्मरी · (भूलकारोग) अथवा मृगी
संपूर्णव्रणरोग · फिरंगरोग · आदिरोग · श्लीपद · उपदंश · प्रभृतीरोग · सू
जन · प्रसूत · श्वास · अनेक वादी के रोग · खांसी · पीनस · ववासीर · संग्रह
णी · मेदरोग · अर्बुद · ग्रध्रसी · प्रमेह · गंडमाला · कमरके रोग · आमवात · मं
दाग्नि · मूत्रकृच्छ्र · शोषरोग · सर्व्व · राजयक्ष्मा · सबकफके रोग वातकेरोग
पित्तकेरोग · वुढ़ापे से आदिले रोग सब नष्ट होय जैसें सूर्य्यके उद

य से अंधकार जातारहे है॰ इसी प्रकार हरताल के सेवन से ऐसवेरो गजाय॰ देहकी सुवर्ण के समान कांति होय॰ और २०० स्त्रीन से रमण करने की शक्ति होय-

हरि॰मार॰की तेरवीं विधि

शुद्धंतालंसमादाय द्रोणपुष्पीरसै भिषक् दि
नानिसप्तकंमर्द्यं यंत्रे विद्याधरेक्षिपेत् यामान्
ष्टौपचेदग्नौस्वांगशीतलमुद्धरेत् उर्द्धपात्रगतं
सत्वंग्रहीत्वामर्दयेत्पुनः त्रिदिनंतद्रसैरेवक्ता
यंत्रेपुनःपचेत् तदधोज्वालयेदग्निमष्टयाम॰
पुनः मतंद्रितः एवंपुनःकुर्याद्यावत्सत्वंस्थिरंभवेत
स्थैर्य्यंसत्वस्यनियतंजायतेसप्तमेहनि अष्टमे
र्केस्यदुग्धेन मर्दयेत्वेकवासरं यामानष्टौपचे
दग्नौकुर्य्याद्देवंनिवारकं गलत्कुष्टं तथारोगे॰
वातरक्तसमुद्भवे वातरक्तेषुसर्वेषुभोज्यंगुंजा
द्वयोन्मितं चोवचीनीभवंचूर्णंग्रहीत्वाटंकमा
त्रकं गुंजामात्रेणतालेन मिश्रितै मधुनालिहे
त् तस्यनश्यति मूलेन फिरंगाख्योमहागदः व्र
णाश्शुध्यंनि सर्वेवै फिरंगोत्थानसंशयः शीघ्रं
श्लेष्मामयंहन्यादलनंच विवर्द्धयेत् ॥५॥

अर्थ- शुद्ध हरताल को खरल में डालकर सातदिन गोमा के रस में घोटै ज
व गाढा होय तव पैसादोभर की टीकरी बांधे घाम में सुखाय डमरूयंत्र में
आठ प्रहर की आंच देय जव शीतल होजाय तव ऊपर की हांडी से सत्व कुरी
से खुरचलेय तदनंतर उस सत्व को तीन दिन गोमा के रस में घोटि टीकरी वांधे
घाम में सुखाय डमरू यंत्र में डार आठ प्रहर की आंच देयकर उडायले इस प्रका
र सात आंचदेय तव हरिताल अग्निस्थाई होय॰ आठवे दिन आक के दूध में

घोट टिकरी बांध धूप में सुखाय डमरूयंत्र में आठ प्रहर खूब तेज आंचदेय इस प्रकार तीन आंच देय तब यह हरताल सिद्ध होय इस हरताल की मात्रा दोरत्ती की है वातरक्त से जिसकी उगली गिरपड़ै सो इसहरिताल सें थमि जाय· वातरक्त की सूजन और चकना दूर होय· गांठ दूर होय· वातरक्त की वात दूर होय· नाक की पपरी दूर होय· चारमासे चोवचीनी का चूर्ण लेय· एकरत्ती हरताल लेकर सहत में खाय· तो फिरंगवात (गरमी) दूर हो और फिरंग रोग के जो लिंग में घाव होजाते हैं सो इससे सूखजाते हैं कफ रोग दूर होय· भूख दूनी होय·

हरतालकी चौथवींविधि
भाषा

शुद्ध हरताल को कागदी नीबू के रस में सात दिन घोटै· ग्वारपट्ठे केरस में सातदिन घोटै· गोमाकेरस में दिन ७ घोटै· गंगातिरियाके रसमें दिन सात घोटै· पीछे पैसा पैसा भर की टिकरी बनावें उन्को घाम में सुखाय डमरूयंत्र में डार आठ प्रहर की आंच देय· जब शीतल हो जाय तब हरताल का सत्व जोऊपर की हांडी में लगरहा है उस्को छुरी सें खुरचलेय पीछे उस्को आक के दूध में घोट टिकरी बांध धूपमें सुखाय डमरूयंत्र मेंडार आठ प्रहर की आंच देकर उडायले या प्रकार आक के दूध सें घोटकर बाईस २२ आंच देय· जब अग्निस्थाई होजाय तब इस्की भस्म करै सो लिखते है पूर्वोक्त टिकरी को एक हांडी में ढाककी राख के बीच में धर उस्के ऊपर और ढाक की राख में दाव कर भरदेय· पीछे उसहांडी का मुख बंदकर चौबीस प्रहर आंचदेय· यदि इतनी आंचदेने सें भी उस टिकरी का कालारंग निकले तो फिर एक दिन आकके दूधमें घोट टिकरी बांध घाम में सुखाय के उसी राख में धर हांडी का मुख बंदकर १२ प्रहर की तेज आंचदेय तदनंतर उस टिकरी को सरवा संपुट में धर दो सेर उआरने उपला

न्की आंचदेय. जब सीतल होय तब निकासलेय. दोरत्ती खाय रुधिर विकार दूर होय. धातुपुष्ट होय. ए दोनों क्रिया श्री पूज्यपादकल्याराम हकी अनुभूत है. इसमें कुछ दोषनहीं हैं इसके खाने सें कुछ फिसाद नहीं होय +

पन्द्रवींविधि

हरतालनवकिया १ पैसाभर लेकर उसको जल पीपलकेरस में घोटै टिकरी बांधे धूप में सुखाय डमरू यंत्र में डार बारह प्रहर की तेज अग्नि देय. तो हरताल सिद्ध होय. इसमें सें १ हरताल दो मासे चोबची नी के संग खाय तो फिरंगवात दूर होय. तथा फिरंगवात के घाव और गांठतत्काल दूर होय. और इसके खाने सें वातरक्त की गांठ और सजन. दूर होय. कफदूर होय. परंतु इसक्रिया में एक दोष है कि इसके खाने सें अंगुली न्की संधी का कफ सूख जाय है- कफके सूखने सें अंगलीन वाई नहींजाय किसी २ जगे ऐसा भया है सर्वत्र ऐसा नहींहोय

हरतालकीसोल्हवींवि.

गोमूत्रे भावयेत्तालं दिनैकं सेरमात्रकं स्फोटयित्वा प्रमाणेन तंदुलस्य न चाधिकं चुल्हिकायां निवेश्याथ कांजिकं तत्र दीयते वस्त्रेणाच्छाद्य यत्नेन परी चूर्णेन लिप्यते तस्योर्द्ध दीयते तालं चूर्णात्तालोपरि २ क्षिपेत् उपरिष्टात्पुनर्लिख्याते न चूर्णेन तालकं पालिकान्परिप्राज्ञः पुनर्दत्वा मृदापितां रुध्वायाममधो वन्हिं कुर्याच्चुल्यां समंततः पुनस्तेन प्रकारेणाद्दिवेलां तालकं तथा कदली फल द्रवस्य द्रवेन परिमर्दयेत् याममेकं पुनस्तालं शोषयित्वा च तत्तथा पुनर्यामं पुनर्याममेवं वेलात्रयं बुधः कुरुते मर्दनं शोषं तंदुलीयरसेन तं गंडदूर्वारसैस्तद्वत्तथा पु.

घ्यफलद्रवैः सर्वतिक्ताकाकमाचीरसैस्तद्वप्रमर्दये
त् सेहुंडपयसादद्याद्गुडसौभाग्यपीतिका पादक्ष्ठ
त्वाकाचकुंभेक्षिपेजंत्रे थसैकते यामद्वादशपर्य्यं
तमग्निंकुर्यात् दहन्निशं कदलीफलादिकंकर्म
यत्कृतं विद्यते पुरा तथैवचपुनः कुर्य्यात्षड यामं
वन्हिदीपकं पुनस्तदेवतत्कर्मद्वियामंवन्हिदीप
न एवंतालकसत्वस्यादध स्तिष्ठतिनिश्चितं स्फो
टिकामंगुरुतरंसोज्वलं तारसन्निभं वन्हिसंयोगतो
नैवसमुड्डीयप्रयातिनत्

अर्थ - तवकिया हरताल सेर एक ऽ१ लेय उस्को गौके मूत्र में एकदि
न भिजोय दे. दूसरे दिन निकाल उस्को कूटकर चामल के वरावर टुकडाक
रै. तदनंतर एकवडा और चौड़ा कपडा लेय. उसपर चूने कालेपकर हर.
तालको धरै उस हरताल को ऊपर चूना विछाय उस कपडे की पोटली वांधे
पीछे एक हांडो लेकर उसमें कांजी भर कर उस पोटली को दोला यंत्रकी वि
धि सें लटकायदेय पीछे उस हंडिया के मुखपै परिया ढाककर कपड मिट्टी
करे पीछे इस हंडिया को चूल्हे पर चढाय एक प्रहर पर्यंत नीचे अग्निजला
वै जववोकांजी सूखजाय तव उतार उसी प्रकार दोवार कांजी में स्वेदनक
रै. तदनंतर केलाकीजडकेरस में घोटै एक प्रहर फेर उस्को सुखाय फेर
उसीरसमें घोटै या प्रकार तीनवार करे. और चौलाई केरस में. गंडदूवी
केरसमें. पुष्पफलकेरस में उसी प्रकार तीन २ वार घोटै और सुखावै.
कुटकी. मकोय. इन्केरस में घोटै और सुखावै. थूहरके दूध में. गुडके
जलमें. सुहागे में. हलदी. इनसव में इस हरताल को खरल करे पीछे ए
क कांचकी आतसी सीसी मगावै उसमें इस हरताल को भरकर वालुका
यंत्र में १२ प्रहर वरावर अग्नि देय. पीछे केलाकी जड आदि केरस में पू
र्व रीति के अनुसार मर्दनकरै और छः प्रहर मंदअग्नि सें पचावै. फेर पू-

वोंकरीति सें रसों में मर्दनकर दोप्रहर अग्नि देय. इसप्रकार करने सें हरताल का सत्व अग्निस्थाई निश्चय होय. खंगड़के समान. भारी.उज्वल. चांदी के समान. यह अग्नि के संयोग होने सें नहीं उडे है-

मासाकीसत्त्वविधि.

भाषा

शुद्ध हरताल सेर ११ लेय उसको प्रथम घीगुवार के रस में चार प्रहर खरलकर जब गाढा होजाय तब चंदिया बनाय धूप में सुखावे फेर एक बडी हंडिया में ढाक की राखभर बीच में अभ्रक के पत्र बिछाय उसपर उन हरताल की चंदियान्को धर ऊपर भोडल के पत्रों सें ढक के ऊपर फेर ढाककी राख मुख पर्यंत भरदेय पीछे उस हंडिया- को मुख ढकने सें बंदकर कपड़ मिट्टीकर और उसको सुखायकर १२ प्रहर की आंचदेय. जब स्वांग शीतल होजाय तब उसको खोल ऊपर- की हंडिया में लगे सत्व को खुरचलेय इसी प्रकार गोमा. संखाहूली. थूहरकादूध. आककादूध. बड़कादूध. भैंसकादूध. गेंदाकीपत्ती. आमलिकीपत्ती. नागदोनाकारस. कुकर भांगरेकारस. मोरसिखाका रस. विषखपरेकारस. जलपीपलकारस. कालेधतूरेकारस. अमर बेलकारस. ओंगाकारस. सहजनेकारस. विरमिथाकारस. नकछिं- कनीकारस. सहदेईकारस. सिंगियाविषके कांडा. राईकारस. पथर संगाकारस. गोभीकारस. पियाजकारस. नीबूकारस. कुम्हड़ेकारस. हुलहुलकारस. सरफोंकाकारस. दुद्धीकारस. अदककारस. सोंनजु हीकारस. लहसनकारस. कगही कार.बलाकारस. चीनेकारस. सपे द आककारस. इनप्रत्येक औषधीन्केरसमें एक २ दिन घोट टिकियाबांध डमरूयंत्र में डालकर उडायलेयतो यह हरतालकासत्व अमृतकेसमान बने इसकी मात्रा १ रत्ती के समान है इससे महाकुष्ट आदि असाध्यरोग ४२ दिन में निश्चै दूर होय. भूख अत्यंतबढे. बहुतस्त्रीन्सें गमनकरने

की शक्ति होय. जिस्के वीर्य्य के रोग होय उस्के ७ दिन में सब नष्ट हो य. स्त्रीन्के प्रदर सैमादि रोग नष्ट होय. भगंदर. ववासीर. राजरोग. खई उपदंश. फिरंगवात. इत्यादि सकल दुष्ट रोग ऐसे नष्ट होय जैसें प वनके वेग सैं बद्दलों के समूह. परंतु यह भी याद रहे कि प्रथम वमन आदि पंच संस्कार करलके तब इस हरताल को खाय इस्के खा ने सैं कुछ फिसाद नहीं होय यह प्रयोग अनुभूत है. इस्की विद्यरसाकौ

अठारवीं धातुवेधी भस्म कीविधि

रुदंतीहरितालेनरसेनसममर्दयेत् ॥ ताम्रपत्र प्रलेपन दिव्यंभवतिकांचनं

अर्थ - शुद्ध हरताल और पारा इन दोनों को खरलकर रुदंति (रुद्रवं ती) के रस में खरलकर तांबें के पत्रों पर लेपकर अग्नि में फूंके तो सुवर्ण होय.

उन्नीसवीं विधि

तालंताप्यंदरदकुनटीसूतकःसार्धभागंखल्वे कृत्वात्रिदिनमथितंकाकमाचीद्रवेण ॥ तेना लेप्यंरविशशिदलंखर्परेवन्हितुल्यं मुल्वाती लभवतिकनकंसत्कलंपार्थिकानाम्

अर्थ - हरताल. हिंगुल. मनसिल. और पारा ये सब आधे आधे भाग लेकर मकोय के रसमें तीन दिन खरलकरे पीछे उनका १भाग तांबा अथवा रांगा लेकर उनके पत्र कराय उन पत्रों पर इसका लेपकर खीपरा में आंच देय. तो उत्तम सोना होजाय. परंतु यह मार्गस्थ (पर देशीन्के) उपयोगी होय है -

हरतालकीवीसवीं विधि

समतालंशिलांपिष्ट्वादेवदाल्याद्रवैर्दिनम् द्वा

वैरीश्वरलिंग्याश्च दिनमेकं विमर्दयेत् नागवं
गंरसंतुल्यं चूर्णितं पलपंचकम् पूर्वकल्केनसं
युक्तं समालोड्य घटंपुटे एवंपुनःपुनःपाच्यंपूर्व
कल्केनसंयुतं भवेत्षष्टिपुटेश्री ध्रुवंगस्तंभकरं
परं शतभागेनदातव्यवेधतारंकरोत्ययं ॥५॥

अर्थ - हरताल शुद्ध. मनसिल. इनदोनोको देवदाली के रस में ए
क दिन खरल करे तदनंतर शिवलिंगी के रस में १ दिन खरल करे पी
छे सीसा. वंग. तथा पारा. ए लेकर एकत्र खरल करे चूर्णकरै फेर
इस चूर्ण को २० तोले लेकर पूर्वकल्कके साथ घोट अग्नि में फूंकदेय
इसप्रकार ६० पुटदेय तो यह भस्म उत्कृष्ट रीति से वंगका स्तंभनक
रे यह रूपेकेरस में मिलाने से सतांशवेधकरे.

भस्मपरीक्षा

तालं मृतंतथाज्ञेयंवन्हिस्थंधूमवर्जितं सधूमंन
मृतंप्राहुर्वृद्धवैद्याइतिस्थितः
इयंपरीक्षावृद्धानामुखेभ्यः श्रुतामहतांप
द्येननिबद्धापरंरसशास्त्रे कुत्रापिनहष्टा भवतु
सत्येयंन ह्यमूलाप्रसिद्धिरिति न्यायात

अर्थ - हरताल की भस्म अग्नि में डालने से धूआ न देय तो शुद्ध.
जाननी और यदि धूआं देय तो कच्ची रही जाननी यह वृद्धवैद्यकह
ते हैं + यह परीक्षा हमने वृद्ध वैद्यों के मुख से सुनी है परंतु प्राची
न बडे वैद्यो के पद्यबंध श्लोक किसीरस शास्त्र में नहीं देखे होउ
तथापि यह बात सत्य है क्योंकि(नह्यमूलाप्रसिद्धि) अर्थात् विनामू
ल के प्रसिद्धी नही होय इसी से यह वार्त्ता सत्य ही है-

हरतालभस्मकेगुण

अर्शोनवातान्कफपित्तरोगान् कुष्टंचमेहंचगु

दामयांश्च निहंति गुंजार्धमितंतुतालं मद्य
त्स्खंडनसमंचयुक्तं

अर्थ - हरताल भस्म आधरत्ती वा वल्ल मिश्री के संग खाय तो ८० अस्सी प्रकार की वायु कफ· पित· कुष्ट· प्रमेह· और ववासीर· इनका नाश करै -

हरितालकेअनुपान

एववरश्चि यतेतालमात्रातस्यैवरक्तिका अनुपा
नान्यनेकानियथायोगंप्रयोजयेत् गुडच्यादिक
षायेणागदान्येतान्व्यपोहति सोपद्रवंवातरक्तं
कुष्टान्यष्टादशापिवा

अर्थ - हरताल भस्म १ रत्ती यथायोग अनुपान के संगदेय· गिलोयके काढे के संगदेय· तो उपद्रव सहित वातरक्त दूर होय अठारे प्रकारके कोढ़ नाश होय -

सर्वरक्तविकारेषुदेयमाम्रहरिद्रया सुहालाह
लजीराभ्यांमपस्मारहरंपरं समुद्रफलयोगेनज
लोदरविनाशनः देवदालीरसैर्युक्तं भगंदर हरंप
रं फिरंगदोषजंरोगं जातंहंतिसुदुस्तरं मंजिष्ठा
दिकषायेणकुष्टमष्टादशंजयेत् त्रिफला शर्करा
युक्तं पांडुरोगंजयत्यसौ शुंठीचूर्णयुतंहन्यादाम
वातंसुदुर्जयं सौवर्णभस्मयोगेन रक्तपित्तविका
रनुत् तंदुलीयरसैःसाकज्वरमष्टविधंजयेत् ए
वंसर्वेषुरोगेषुस्वबुध्याकल्पयेद्भिषक ॥

अर्थ - सब रुधिरके विकारों में आमियाहलदी के साथदेय· विषओ रजीरे के साथ अपस्मार (मृगी) को हरणकरै· समुद्रफल के साथ जलंधर के विकार में देय· भगंदर में देवदाली के रस में देय· औरफि

रंगवाल में भी देय· मंजिष्ठादि काढ़े के साथ सेवनकरने सें १८ प्रकार के कोढ़ दूर होय· त्रिफला और मिश्री के साथ पांडुरोग में देय- आमवाल में सोंठ के चूर्ण संयुक्त देय· सुवर्ण की भस्म संयुक्त रक्तपित्त विकार दूर होय चौलाई के रस संयुक्त देय तो आठ प्रकार के ज्वर दूर होय इसी प्रकार वैद्य अपनी बुद्धि सें सर्वरोगों में अनुपान कल्पना करे-

हरतालसत्वकीवि·

जयपालसत्ववाना रिवीज मिश्रं चतालकं कपि
स्थंवालुकायंने सत्वंमुंचतियामलः

अर्थ- हरताल की भस्म ८॥ आधसेर अथवा शुद्धहरताललेय· जमाल गोटा के बीज ८= आधपाव· अंडी के बीज ८= आधपाव· इन सबको मिला यकर १ प्रहर घोटे पीछे सीसी में भरकर वालुकायंत्र में एक प्रहर तेज आंच देय तो हरताल का सत्व सीसी ऊपर मुख मेलगे उसको निकास लेय·

सत्वकीदूसरीवि·

शुद्धचूर्णस्यपादांसंमर्दयेन्नवसादरं चूर्णाद्वि
गुणतोयेनततोयंनिर्मलंपचेत् शनैर्लवणाप
केनयावत्तुल्यवर्णाभवेत् अथततालकंशुद्धंपा
रदंटंकणोयुतं टंकणाद्विनतचूर्णमर्दयेत्कन्य
काद्रवैः शरफुंका द्रवैरेवमुद्धंतत्कपिकोदरे
पचेद्यामाष्टकंयावत्सत्वरूपेणतिष्ठति ॥ ४॥

अर्थ- विनाबुझाचूना सेर ८१ एक नोसादर पाव ८। भर इनदोनोंको दोसेर पानी में पकावै जब गाढ़ा होकर खार के समान होजाय तब निकाललेय पीछे आध ८॥ सेर हरताल और आधपाव सुहागा तथा पैसाभर वह खार लेय तीनोंको घीगुवार और सरफोंका के रस में दो दो प्रहर खरलकरे पीछे सीसी में भरकर वालुकायंत्र में आठ प्र

हर आंचदेय· तो सत्व निःसन्देह निकरे–

तीसरीविधि

लाक्षाराजितिला: शिग्रुटंकणांलवणांगुडः तालका
र्धेनसंमिश्रं छिद्रमूषांनिरोधयेत् ॥ पुटेत्पातालयं
त्रेणासत्वंपततिनिश्चितं

अर्थ – लाख· राई· तिल· सहजने की छाल· सुहागा· नोन· गुड़ यसवप
दार्थ हरताल के आधे भाग और हरताल १ भाग लेकर खरल में डारकर
घोटै पीछे सछिद्र मूषा में डाल और उसको बंदकर पाताल यंत्र में पुट
देय तो निश्चय सत्व निकले –

चतुर्थविधि

पलैकंतालकंशुद्धंतत्समंटंकणांभवेत् मर्दयेन्मे
षिकाक्षीरैः कूष्मांडद्रवतेः पुनः ॥ कन्यानिंबुकनी
रेणावज्राकेपयसातथा वातारितैलसंयुक्तं मर्दये
त्सकृदेवतु ॥ वटकान्कारयेत्पश्चान्मध्वाज्येनसम
न्वितान् काचकूप्यांविनिक्षिप्यःलेपयेन्मृत्स्नकर्प
टैः वालुकायंत्रगंकुर्य्यात्पचेद्दिनचतुष्टयम् स
त्वंकुलिशसंकाशमुर्ध्वंतिष्ठतिनान्यना

अर्थ – शुद्ध हरताल १ पल· सुहागा १ पल· इनदोनों को बकरीके दू
ध में· और पेठे के रस में· ग्वारपाठेकेरस में· नीबूकारस· थूहरकादूध·
आककादूध· अंडीकातेल· इनप्रत्येक में एक २ दिन घोटै· पीछे सहत·
और घृत डालकर गोला बनावै· उनको कांचकीसीसी में डारउसपरकपड़
मिट्टीकर वालुकायंत्र में चार दिन आंचदेय तो सीसे के मुखपर हीराके
समानसत्वलगे उसको निकाललेय –

पंचमविधि

कुलत्थक्काथटंकणामाहिषघृतमधुयुक्तं हरिः

तालं शुद्धं दद्यादाज्येन भावितं ॥ हंडिकायांक्षि-
प्तोदरि संलग्नं सछिद्रं दत्वा संधिलेपं कृत्वाक्रमे-
णावन्हियामचतुष्टयं दद्यात यावन्नलितोवाधूमो
गच्छति ततः पांडुर धूमे दृष्टे अग्नि पूर्णा कुर्यात ॥ प
श्चात्स्थितस्थाली मुत्तार्य सत्वमाहरेम ॥ ५ ॥

अर्थ - हरताल को सुहागा. भैंसका घृत. सहत. कुल्थी का काढ़ा इनमें भावना देकर उस्को हांडी में डार उस्के ऊपर सछिद्र ढकना ढांक उस्की संधीन्को लेपसें वंदकरदेय. और उस छेद में एक लंबी नलील गावै पीछे उस्को चूल्हे पर धरकर चार प्रहर अग्निदेय. जवनली के मार्ग हो कर पीला धूंआ निकले तव अग्निकादेना वंदकर उस्को उतार शीतल कर ऊपर की थाली में जो सत्व है उस्को निकाल लेय-

सत्वगुणऔरअनुपान

वातरक्तेनिद्रुःसाध्येसत्ततंतंदुलोन्मितं दद्याच्चणा
कवन्नंसंपथ्यार्थेघृतसंयुतं ॥ द्विःसप्तदिवसैःकां
तिर्जायतेरोगवर्जितः

अर्थ - हरतालकासत्व दुस्साध्य वातरक्त में १ चावल भर देय और पथ्य चना तथा घृत देय. तो १४ दिन में रोगवर्जित कांति युक्त होय-

हरताल योजना

श्वासेकासेक्षयेकुष्टे पित्ते च वात शोणिते दद्रुपा
मास्त्ररोगवातेतालकंच प्रदापयेत्

अर्थ - श्वास. खांसी. खर्दी. कुष्ट. पित्त. वातरक्त. दाद. खाज. व्रणादी इन रोगों में हरताल देनी चाहिये-

अशुद्धहरतालकेदोष

अशुद्धतालंखलुप्राणहारी सधूमकंवातचयंचपित्तं
पंगुत्वकुष्ठंतनुतेचतेन देहस्यनाशंप्रकरो

तिसद्यः॥

अर्थ - जो हरताल कच्ची होती है उसका पीलावर्ण और अग्निपर धरने सें धूआं देय है इसके खाने से वात पित्त के रोग पांगुरापना कोढ़ इनकोउ तपन्न करे तथा तत्कालदेहका नाशकरे *

इसकी शांति

अजाजी शर्करायुक्तं सेवयेद्योदिनत्रयं विकृतिर्ता लजंहन्याद्यथादालिद्रमुद्यमे

अर्थ - जो मनुष्य जीरा और मिश्री मिलायकर तीन दिन सेवन करे उस्क हरताल का विकार नाश होय जैसें उद्योग सें दरिद्र +

तथाच

यवासकरसंचैव कूष्मांडस्वरसंतथा राजहंसरसे णापि विकृतिंतालकंजयेत्

अर्थ - जवासे का रस अथवा पेठे का रस इनके पीने से हरताल का विकार शांति होय और हंसराज रूखड़ी के रस सें भी हरताल का विकार दूर होय -

तालकपथ्याऽपथ्य

सतंद्देपजसेविनालवणाम्लौविवर्जयेत् तथाक टुरसोवन्हिमातपंदुस्तरंत्यजेत् ॥ लवणायःपरित्य क्तुंनशक्नोति कथंचनः सतुसैंधवमश्नीयान्मधु रोपरसोहितः ॥

अर्थ - हरताल सेवन करने वाले को नोन के पदार्थ और खटे वर्जित है तथा कटुरस अग्नि सें तापना धूप में रहना इनको त्यागदेय यदि नोन को न छोड़ सके तो वह सेंधव नोन मंद खाय और मीठा रस खाय

इति श्रीमाणुरदत्तराम पाठक प्रणीते रस

राजसुन्दरे हरिताल प्रकरणं समाप्तम्

अथांजन प्रकरणम्

अंजनकेनाम

अंजनंयामुनंवापिकपोतांजनमित्यपि ॥ ५ ॥ ५ ॥

अर्थ - अंजन (सुरमा) दो प्रकार का है · एक यामुन · दूसरा कपोतांजन है -

अंजनके भेद

स्रोतोंजनंतुद्विविधंश्वेतकृष्णविभेदतः तत्र स्रोतोञ्जनंरूक्षंसौवीरंश्वेतमीरितं

अर्थ - सुरमा सपेद और काले के भेद से दो प्रकारका है · तिन में काला स्रोतोंजन यह रूक्ष होय है · और जो सपेद है सो सौवीरांजन कहाता है -

मतान्तरं

सौवीरमंजनंप्रोक्तंरसांजनमतःपरम् ॥ स्रोतोञ्जनंतदन्यच्चपुष्पांजनमतःपरं नीलांजनंतथाप्रोक्तंस्वरूपमिहवर्ण्यते

अर्थ - सौवीर अंजन · रसांजन · स्रोतोंजन · पुष्पांजन · नीलांजन · ए अंजन · (सुरमा) के पांच भेद हैं + यहरसदर्पण में लिखा है + अब इन्के स्वरूपकहतेहैं

सौवीरांजन के लक्षण

सौवीरमंजनंधूम्रंरक्तपित्तहरंहिमं विषनेत्रामयहरंव्रणशोधनरोपणम्

अर्थ - सौवीरांजन · धूआं के रंग का होय है · और रक्तपित्त को दूर करे शीतल है · विषरोग · नेत्ररोग · इन्को दूरकरे · व्रणको सुद्धकरे · और रोपण करे ·

रसांजनकेल.

पीतचन्दननिर्यासंरसांजनमितीरितं तत्क्वाथजं वामवतिपीताभंवक्त्ररोगनुत् श्वासहिक्काहरंवर्ण्यं वातपित्तास्रनाशनम् नेत्र्यंसिध्माविषच्छर्दिकफापि नास्रकोपनुत्

अर्थ - पीले चंदनकी गोदके समान रसांजन होय है अथवा पीले चंदन के काढे के समान पीला होय है. यह मुखके रोग. श्वास. हिचकी. इन्को दूरकरै देहकावर्णस्वच्छकरै. वात. पित्त. और रुधिरके विकार. नेत्ररोग. सिध्मा. विष. वमन. कफ. पित्त. इतने रोगों को हरण करै -

स्रोतांजनकेल.

वल्मीकशिखराकारंभिन्नमंजनसंनिभं घृष्टंतुगैरिकाकारंमेतत्स्रोतोजनंस्मृतं ॥ रसांजनंतरुभवंस्रोतोंजननदीभवम्

अर्थ - जो सर्प की बांबी के शिखरके समान तथा काजल के समान काला होय. घिसने से गेरूके समान दीखे. ये स्रोतांजन के लक्षण है. रसांजनवृक्षसे प्रगट होय है. और स्रोतोंजन नदी से प्रगट होता है

पुष्पांजनकेलक्ष.

पुष्पांजनंसितंस्निग्धंहिमंनेत्रामयापहं ॥ ५ ॥ ५ ॥

अर्थ - पुष्पांजन सपेद. चिकना. और शीतल होय है. और नेत्र के सब रोग दूर करै.

नीलांजनकेलक्ष.

नीलांजनंपरंनेत्र्यंछर्दिहिक्कानिवारणं रसायनं सुवर्णघ्नंलोहमार्दवकारकं

अर्थ - नीलांजन नेत्रों को परम हित है. वमन. हिचकी को नाशकरै. रसायन है. सुवर्ण को भस्म कर्त्ता और लोह को नम्रकरै.

तथाच

नीलांजनं नीलवर्णं स्निग्धं गुरुतरं स्मृतं ॥ ५॥ ५॥

अर्थ - नीलांजन का नेल वर्ण होय है और चिकना तथा भारी होय है.

अंजन की शुद्धि

अंजनान्याशु शुद्ध्यंति भृंगराजनिजद्रवैः ॥ + ॥

अर्थ - सर्व अंजनों की शुद्धि भागरे के रस में खरल करने सें होय है ॥

अथदूसरा प्रकार

त्रिफला वारिणा शोध्यं तत्द्वयं शुद्धिमृच्छति भृंग
राजरसे वापि स्रोतः सौवीरकं शुचिः

अर्थ - स्रोतोंञ्जन और सौवीराञ्जन. त्रिफला के काढे में अथवा भांगरे के रस में औटाने सें शुद्धि होय है.

तीसरा प्रकार

गोसकृद्रसमूत्रेषु घृतक्षौद्रैः बसासुतत् ॥ भावितं
वहुशः तत्वशुद्धिमायाति ह्यंजनं

अर्थ - गोवर के रस में. गोमूत्र में. घृत में. सहत में. वसा (चर्बी) इन्की बहुतवार भावना देने सें अंजन. अर्थात् सुरमा शुद्ध होय +

सर्वांजनान् चूर्णयित्वा जंवीरद्रवभावितं ॥ दिनैक
मातपे शुद्धं भवेत्कार्य्येषु योजयेत्

अर्थ - सब अंजनों का चूर्ण कर जंभीरी के रस में एक दिन भावना देकर धूप में सुखायले तो शुद्ध होय इसको सब कार्य्यों में योजना करे -

सूर्यावर्त्तादियोगेषु शुद्धिमायाति सांजनं सर्वंच
अंजनादेवित्ऱ्णंवध्नाति सूतकं

अर्थ - सूर्यावर्त (कालाभांगरा) अथवा (सूर्यफूलबल्ली) के रस में अंजन को खरल करने सें अंजन शुद्ध होय है. हे देवि. सर्व अंजन पारे के वद्धक है.

रसांजनोत्पत्ति

दार्वीक्काथमजाक्षीरे पादपक्वंयथाघनं तदारसां
जनंख्यातंनेत्रयोपरमंहितं ॥

अर्थ - दारुहल्दी का काढ़ा कर बकरी के दूध में मिलाय कर औटावै जब गाढ़ा होजाय तब उतारले इसीको रसांजन कहते हैं. यह नेत्रों को परम हित कारक है

कुलत्थांजनकेगुण

कुलित्थिकातुचक्षुष्याकषायाकटुकाहिमा विष
विस्फोटककण्डूव्रणार्त्तिघ्नीनिर्बर्हणाः

अर्थ - कुलित्थांजन. नेत्रोंको हितकर्त्ता. कषैला. कड़ुआ. शीतल. ऐसा है. और विष. विस्फोटक. खुजली. और व्रण. इन्को नाशकरै.

कुलित्थादृक् प्रसादघ्न चक्षुष्याश्चकुलत्थकः।
कंकुणालिविहंताचकुंभकारिमलापहः ॥

अर्थ - कुलित्थांजन. दृष्टिको उत्तम करे नेत्रों को हितकर्त्ता तथा कुकुणा रोग (बालकों के जो होयहै) उन्को नाशकर कुंभकारिमलकानाशक है

नीलांजनकीशुद्धि

नीलांजनंचूर्णयित्वाजंबीरद्रवभावितम् दिनै-
कमातपेशुद्धंभवेत्कार्येषुयोजयेत् एवंगैरिकका
शीसटंकणानिवराटिका शंखस्तारीचकंकुष्ठ
शुद्धिमायातिनिश्चितं

अर्थ - सुरमाका चूर्णकर जंभीरीके रस में १ दिन खरलकर धूप में धरदेय. तो सुरमा शुद्ध होय. पीछें उसको रोगादिकों में योजना करै. इसी प्रकार. गेरू. कशीस. सुहागा. कौड़ी. शंख. मनसिल. मुरदासिंग इन्को सुरमाके समान शुद्धिकरै-

अथअंजनकासन्वति.

मनोह्वासत्ववत्सत्वंमंजनानांसमाहरेत् राजाव
र्त्तकवत्सत्वंग्राह्यंस्रोतोंजनादिकं

अर्थ - सब अंजनों कासत्व मनसिल के सत्व समान निकाले अथवा राजावर्त्तमणि के समान सत्व निकाले· मनसिल और राजावर्त्त सत्व की विधि इन्के प्रकर्ण में कहें गे·

इतिअंजनप्रकर्णम्

हीराकसीस

काशीसंत्रिविधंप्रोक्तंशितंश्यामंचपीतकं पीतं
चपुष्पकाशीसंनगरीयोभवेन्मृदु तैजिकंकाल
मेघाभंनीलंस्यान्मुक्तकालिकं श्यामंपीतंभवेद्धा
न्यदुत्तमाऽधममध्यमम्

अर्थ - हीराकसीस सपेद काला और पीले के भेद से तीन प्रकारका है पीत·पुष्प·काशीस·कहता है यह श्रेष्ठ नही हैं· और यह नरम होय है और काल मेघ के समान एक तैजिक कहाता है· और नीला मुक्तिका लिक कहाता है· और एक काला·पीला· मिला होय है· एक्रमसे उत्तम· अधम· और मध्यम होता है·

मतान्तरम्

काशीसंवालुकंत्वेकंपुष्पपूर्वमथापरं क्षारा-
म्लंगुरुधूमंचसोष्णंवीर्यविषापहम् ॥ वालुकापु
ष्पकाशीसंश्वित्रघ्नंकेशरञ्जनम्

अर्थ - हीराकसीस· एक वालुक· और पुष्पवालुक· ऐसें दो प्रकार का है· वह खारी· खट्टा· भारी· धूम· गरम· वीर्यऔर विषकानाशकहै और श्वित्रकुष्ट को दूर करै और वालों कोरंगे है -

अथशोधन

सकृद्भृंगाम्बुनास्विन्नंकाशीसंनिर्मलंभवेत् ॥
अथवाभावयेद्धर्मेदिनंजंवीरवारिणा ॥

अर्थ - हीराकसीस को एकवार भांगरे के रस में पचावै तौ शुद्ध होय. अथवा एक दिन जंभीरी के रस में भावना देकर धूप में धरे तो शुद्धी होय.

काशीसशोधनकीदूसरी

कासीसंचूर्णयित्वाथजंवीरद्रवभावितं दिनैकं
मातपेसिद्धंसर्वकार्येषुयोजयेत्

अर्थ - कसीसका चूर्णकर जंभीरी के रसकी १ दिन भावना देयकर धूप में सुखावै तौ शुद्धी होय. इसको सर्व कार्य्य में देय.

तीसरीविधि

कासीसंशुद्धिमाप्नोतिपित्तैश्चरजसास्त्रियः अ
थवानिम्बुनीरेणशुद्धिर्भवतिनिश्चितं ॥

अर्थ - हीराकसीस पित्त सें. अथवा स्त्रीकेरज के रुधिर सें शुद्धि होय. अथवा नीबू के रस की भावना दे ने सें शुद्ध होय.

हीराकसीसकासेवन

वलिनाहतकासीसंकांतकासीसमारितं उभयं
समभागंहित्रिफलावेल्लसंयुतं ॥ निष्कमाशाद्य
तेस्रौद्रेप्लुतंशाणमितंददेत् सेवितंहंतिवेगेन
श्वित्रपाण्डुक्षयामयान् ॥ गुल्मप्लीहगदंशूलंमूत्र
रोगमशेषतः नाशयेन्नात्रसन्देहोयोगोयंपरि
कीर्तितं ॥ रसायनविधानेनसेवितंवत्सरावधि
आमसंशोषणोशीघ्रंमन्दाग्निपरिदीपनं ॥वलितं
पलिभिःसार्द्धंविनाशयतिनिश्चितं जयतेसर्व
रोगांश्चत्वरांवन्हिहुतंयथा ॥ ५॥

अर्थ - गंधक से मरा कसीस ओर मारित कांत कासीस दोनो के बराबर त्रिफला ओर काली मिरच लेय इसमें तीन मासे घृत ओर तीन मासे सहत मिलायकर ४ मासे नित्य खाय तो चित्रकुष्ट पांडुरोग खई गोला प्लीह शूल सब मूत्र के रोग रसायन विधि सें १ वर्ष पर्यंत सेवन करे तो आमवात को शोषण करे मन्दाग्नि को दीपन करे गुंजलट ओर सपेद वाल होजाय ऐसा बुढापा नाश होय ओर सर्व रोग को दूर करै जैसें तृण को अग्नि भस्म करे है

कसीस के गुण

पुष्पादिकासीसमति प्रशस्तं सोष्णं कषायाम्ल म
तीव नेत्र्यं विषानिलश्लेष्म नित्व्रणघ्नं श्वित्र
स्वध्नं कचरंजनंच पित्तापस्मारशमनं रसवद्गु
णकारकं वातश्लेष्महरं केश नेत्र कंडु विषप्र
णुत मूत्रकृच्छ्रास्मरीश्वित्र नाशनं परिकीर्तितम्

अर्थ - हीराकसीस अति प्रशस्त गरम कशेला खट्टा नेत्र को हितकर्ता ऐसा है ओर विष वादी कफ व्रण चित्रकुष्ट खई इन्को दूरकरे ओर वालों को रंगदेय पित्त मृगी इन्को दूर करे पारे के समान गुण करे खुजली को मूत्रकृच्छ्र पथरी इन्को दूर करे

अथास्य सत्वपातन

तुवरीसत्ववत्सत्व कासीसस्य समाहरेत् ॥ ५ ॥ ५ ॥

अर्थ - हीराकसीस का सत्व फिटकरी के समान निकालना चाहिये सो आगे लिखेंगे

इति

अथ गैरिक (गेरू)

गैरिकं द्विविधं प्रोक्तं पाषाणं स्वर्णगैरिकं पाषा

गगैरिकं गौकंकठिनंताम्रवर्णकं अत्यंतशोणि
तंस्निग्धमसृणंस्वर्णगैरिकं परैस्त्रितयमप्युक्तं
पाषाणाख्यंतुगैरिकं

अर्थ - गेरू दो प्रकार का है, एक पाषाणगैरिक, दूसरा स्वर्णगैरिक, (इ-न्केलसण) कठिन और तामे के रंगसमान पाषाणगैरिक कहाता है, और जो अत्यंतलाल और चिकना, स्वच्छ, होय उस्को स्वर्णगैरिक कहते हैं, कोई तीन प्रकार का गेरू कहते हैं स्वर्णगैरिक, रक्तगैरिक, पाषाणगैरिक

अथगैरिकशोधन

गैरिकंतुगवांदुग्धेघर्षितंशुद्धिमृच्छति अथवा
किंचिदाज्येनभ्रष्टंशुद्धंप्रजायते ॥ गैरिकंसत्व
रूपंहिनंदिनापरिकीर्त्तितं

अर्थ - गेरूको गौकेदूध में खरल करने से शुद्धि होय है अथवा थोडा घृत मिलायकर भूंजने से शुद्ध होय है + गेरू का सत्व इसकारणनहीं कहा + यह स्वयंसत्व रूप है - यह नंदि आचार्य ने कहा है +

गेरूकेगुण

स्वादुस्निग्धंहिमंनेत्र्यंकषायंरक्तपित्तनुत् हिध्मा
वमिविषघ्नंचरक्तघ्नंस्वर्णगैरिकम् ॥पाषाणगैरि
कंचान्यत्पूर्वस्मादल्पकंगुणैः

अर्थ - स्वादिष्ट है, चिकना है, शीतल है, नेत्रों को परमहित है, कषेला है रक्तपित्त, हिचकी, वमन, विष, और रुधिर के सम्पूर्ण रोग दूर करै, यह स्वर्णगैरिक के गुण हैं, और पाषाणगैरिक में स्वर्णगैरिकसे थोडेगुण हैं,

केरप्युक्तंपचेत्पंचक्षाराम्लैःस्निग्धगैरिकं उपविष
तिस्तेन्द्रंसकत्वंगुणावत्तरम्

अर्थ - कोई कहता है, स्वर्णगैरिकको पंचक्षार, औरअम्लवर्ग में पचा

ने से पीछे पारे में मिलावे तो पारे में मिलजाय. किसी आचार्य के मत से पारद. गंधक. और हरताल. अभ्रक आदि महारस है

अथउपरसोंकोलिखते.

पारदाद्दरदोजातोटंकणंगंधकात्तथा स्फटिका भ्रकतोजातोहरितालान्मनःशिला ॥ अंजनाच्छुक्तिशंखाद्याः काशीसः शंखमर्दरः गैरिकान्मृत्तिकाजातातस्मादुपरसाइमे ॥

अर्थ - पारे से हिंगुल प्रगट भया. गंधक से सुहागा. अभ्रक से स्फटिकमणि. हरताल से मनसिल. सुरमा. सीप. शंख. कसीस. समुद्रफेन. गेरू से मृत्तिका प्रगटी इसी से एसब उपरस हैं

उपरसोंकाशोधन

त्रिक्षारेलवणोदेयमम्लवर्गेत्रिधापचेत् पचेदुपरसाशुद्धाजायंतेदोषवर्जिता: ॥ रसाभावे प्रदातव्या तस्यैवोपरसाइमे सेविताबहुकालंचसर्वतः कुर्वतेगुणान् ॥

अर्थ - सब उपरस. जवाखार. सज्जीखार. और सुहागा. नोन. और अम्लवर्ग. इन प्रत्येक में तीन २ वार पचावे तो शुद्धि होय. एउपरस रसके अभाव में देनी. ये बहुत दिन सेवन करने से गुणकारक होय है.

हिंगुलबनानेकीवि.

अशुद्धंपारदंभागंचतुर्भागंतुगंधकं उभौक्षिस्वा लोहपात्रेक्षणंमृद्वग्निनापचेत् ॥ कृत्वाथखंडशः कृत्वा कांचकूप्यां निरुध्यच वस्त्रमृत्तिकया सम्यक्काचकूपाप्रलेपयेत् सर्वतोंगुलमानेन छायाशुष्कंतुकारयेत् वालुकायंत्रगर्भेतु दिनं मृद्वग्निनापचेत् क्रमवृद्ध्याग्निनापश्चात्पचे-

दिवसपंचकं समाहंतुसमुध्दृत्यहिंगुलःस्यान्म
नोहरः॥

अर्थ- विनासुधापारा २ भाग. गंधक ४ भाग. इन दोनो को लोहके पात्र में धरकर मंदअग्नि देय. जब दोनो एक होजाय तब उस्को शीतलकर गंधक. पारोको जोडेला होगया है उस्को दुकडेकर कांचकी सीसी में भर उस्के ऊपर एक २ अंगुल मोटी कपड़ मिट्टी करे पीछें उस्को सुखाय बालुकायंत्र में धरकर एक दिन मंदअग्नि सें पचावे. तदनंतर क्रमसें मंद.मध्य.तेज अग्नि कर पांच दिन पचावै. तदनंतर सातवे दिन उसमें सें निकाले तो सुंदर हिंगुल (सिंद्रफ) बने -

हिंगुलके भेद

दरदस्त्रिविधः प्रोक्तोचमारः शुकतुंडकः हंसपाद
स्तृतीयःस्याद्गुणवानुत्तरोत्तरं

अर्थ- हिंगुल. चमार. शुकतुंड. और हंसपाद के भेद सें तीन प्रकारका है. इनमें क्रम सें एकसें दूसरे में अधिक गुण हैं-

तीनोंकेन्यारेन्यारेलक्षण

चर्मारः शुकवर्णःस्यात्सपीतः शुकतुंडकः जपाकु
सुमसंकाशोहंसपादोमहोत्तम॥ श्वेतरेखाप्रवा-
लाभोहंसपाकइतिस्मृतः

अर्थ- चर्मारनामक हिंगुल शुक (लोध) के वर्ण का होय है. और पीले रंगका शुकतुंड होय है. तथा जपा (दुपहरिया) के पुष्पसमान लाल अति उत्तम हंसपाद. हींगलू होय है. कोई सपेद रेखा युक्त मूंगा के समान रंगवाले को हंसपाक कहते है.

हिंगुलकाशोधन

सप्तकृत्वार्द्रकद्रावैः लकुचस्यांवुनापिवा॥ शोषि
तोभावयित्वाचनिर्दोषोजायतेखलु

अर्थ - हिंगल् में अदरक के रसकी और वड़हल के रसकी सात२ भावना देकर सुखावै तो सिंदरफ निश्चै दोषरहित होय-

शोधनकीदूसरीवि-

मेषीक्षीरेणादरदमम्लवर्गैश्चभावितं सप्तवारं प्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितं

अर्थ - हींगल् को भेड़के दूध की भावना और अम्लवर्ग की सात २ भावना देने से शुद्ध होय है-

अथहिंगुलमारणम्

चणकाभानिखंडानिदरदस्यतुकारयेत् शशिजेचायसेपात्रेस्थाप्यंतच्चधमेतदृढं ॥जातायामुष्मतायांवैततोद्रव्याणिसेचयेत् द्रवतुल्यद्रवद्रव्यमेषास्याद्वन्हिभावना ॥ मेषीक्षीरेणादशधादशधाक्षीरिजार्कजे दीप्तवर्गेणादशधाविरकार्कैश्चपंचधा ॥ पंचधादुग्धवर्गेणाअंतरास्तस्यभावनाः अयंशूके नादरदोनानारोगविनाशकः सुद्धोधस्यकरोनित्यंयोगवाहीनिगद्यते

अर्थ - हींगलू कीडली के चनाके वरावर छोटे छोटे टुकड़े कर ... को चन्द्रकांत अथवा लोहे के पात्र में धरकर अग्नि में गरम करे जव पात्र लाल होजाय तव भेड़ कादूध हिंगलू के समान लेकर उसपर जरावै इस प्रकार उतना २ दूध दशवार जारणा करे. आकका दूध पूर्वोक्तरीतिसें दशवार जारणाकरे. दीप्तिवर्ग दशवार. पीलूकेरस का पांचवार. और दुग्धवर्ग पांचवार. ऐसें भांड में भावना देय तौ तैयार होय. यह शताकि हिंगुल अनेक रोगों को नाशकरे. और क्षुधाको वढावे. यह योगवाही होय. ऐसें कहा है-

मारणकीदूसरीवि-

वल्लमात्रंतालपिष्टं शरावेस्थापयेत्ततः तस्मिन्क
र्षसमंदेयसकलंदरदस्यच ॥ पूरयेदार्द्रकरसै
र्हिंगुलंतत्रबुद्धिमान् पुष्पाणिशाणिमात्राणि
परितःस्थापयेत्ततः ॥ शरावसंपुटेदत्वाचुल्ल्याम
ध्याग्निनापचेत् घटिकात्रयपर्यंतंततःउत्तार्य
पेषयेत् ॥ तांबूलेगुंजमात्रंतुदेयंपुष्टिकरंपरं
पांडौक्षयेच शूलेच सर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ - हरताल २ वल्ल (तीनरत्ती) लेकर पीस सराव में डाल उसमें-एक तोला हिंगुलके टुकड़ा डाल पीछे अदरककारस दो तोला डालकर सुखावै-तदनंतर मदनपुष्प ४ मासे डाले अथवा पुष्प (लौंग) को ४ मासे डाले पीछे इसको सराव संपुट में डाल चुल्हेपर चढाय मंदाग्नि से तीन घड़ी पचावै पीछे उसको उतार कर पीसै- पीछे इसको नागरबेलपान के साथ १ रत्ती खाय तो पुष्टता बहुत करै- पांडुरोग- खई-शूल-और सबरोगों में देय-

मतान्तरसैंशोधनवि-

जयंत्याःस्वरसेमूत्रेकांजिकेनिंबुनीरके दोलायं
त्र्यहंपाच्यंदरदादिविशुध्यति

अर्थ - हीगलू आदि शब्द सें- हरताल- खपरिया- सुवर्णमासिक- रूपामाक्षिक- मैनसिल- अभ्रक- लीलाथोथा- सुहागा- सुरमा- विष- शिलाजीत- शंख- गूगल- कंकुष्ट- इन में से जिसको शुद्ध करना होय उस्को एक कपड़ा में बांध दोलायंत्र की रीति सें तीन दिन स्वेदन करे तो हीगलू और पूर्वोक्तरसकादि शुद्ध होय- इसरीति सें डलीका सिंदरफ शुद्ध होय है- भेड़के दूध में शोधा सिंदरफ पीसा जाय है बहुत सीठा र पीसा सिंगरफ काम में नहीं आवै डेलेका डेलाही काम में आताहै इसी से यह शोधन उत्तम है-

हिंगुल पाक विधि

हिंगुलं द्विपलं शुद्धं बध्वा वस्त्रे चतुर्गुणे षट्पलं कंदरी मूले सम्यक संकुट्य बुद्धिमान् ॥ तस्य तस्मिन्परिक्षिप्य गोलमेकं प्रकल्पयेत् एरंडप त्रैराच्छाद्य मृदा संलेपयेद्दृढं ॥ पचेत्तौलकं बि- द्धानुपलैर्दशभिस्ततः एवं सम्यक् प्रकारेणापु टमेकोत्तरशतं ॥ दत्वा प्रतिदिनं खादेल्लवंगस्या नुपानातः गुंजामात्रं गुणैस्तुल्यं प्रागुक्तस्य रस- स्य च ॥

अर्थ- तदनंतर इसी प्रकार शुद्ध सिंगरफकी १२ डली पैसा दो दो भ रलेय चार लडके कपड़े की एक थैली बनाय उसमें भर एक डोरा सें बां धे· पीछे कंदरी पाव ०। भर मगावै उस्को महीन पीस उस लुगदी के- बीच में उस थैली को धर उस कंदरी का गोला बनावे· उस गोला को अ ड्के पत्तान्सें लपेट ऊपर माटी लगावै· पीछे उसको धूप में सुखाय· पांच ऊपर पांच नीचे असें दस ऊपरान्की आंचदेय· बीच में गोलाको न धरे ऊपर एक अंगारा धरे जब सीतल होजाय तब थैली सें गोला निकासिलेय· या प्रकार एकसौ आठ आंचदेय· हर वार पावपाव सेर कंदरी थैली सें गो^लेकर^ और हरदफे अंडके पत्तालपेटे और हरद फै दो अंगुल मोटी माटी लपेटे और हरदफै दश ऊपरान्की आंचदे य· परंतु ऊपरानतो बहुत मोटे होय नबहुत पतले होय· इसप्र कार जो परिपक्व सिंगरफ हैं सो चंद्रोदयसें अधिक है· कामिकेहे सुधाके वढानेवाला है- यह सिंगरफ १ तोला· लौंग १ तोला· इन दोनो को मिला और पीसकर दो रत्ती की मात्रा करे प्रातःकाल खाय तो पूर्वोक्त गुण करे-

हिंगुल मारणकी चतुर्थवि·

(भाषा)

पैसा ४ भरि सिंदरफकी डलीलेय उस्को हंसपदी के रस में सात दिन घोटे. बंबूलकेरस में सातदिन घोटे. कर्कोजयन्के रस में सात दिन घोटै. आकके दूध में सातदिन घोटै. थूहरके दूध में सात दिन घोटे. पीछें उस्की पैसापैसा भरकी ठिकरी बनावे घाम में सुखाय सरवा संपुट में धरकर एकसेर कपला नें धरकर फूंकदेय तो यह हींगलू १ एकही आंच सें भस्म होय रती २ लोंग के चूर्ण संगखाय तो भूक बहुत होय. देहपुष्ट होय.

हिंगुलके अनुपान और गुण

तंहिंगुलंस्वतनुखंडपटेदृढेन कंचूकमध्यगत युक्तिमतानिवेश्य पश्चात्पलांडुदृढकंदगतांत रस्य मत्स्नाविलिप्यरविशोष्यदिनानयामे ॥ दत्वावनोत्पलदशाक्रममग्निदग्धं तंशीतलंक्षिती यचैवदिनतथैव एवंविधैः शतपुटैश्चपुटंतका ले वृत्ताकमेकफलमध्यगततथाच देयानिता निसदृशं शालधाक्रमेण वृन्दावनीफलभवांत रमध्यभागे देयंचतच्छतपुटं क्रमशश्चक्र: पक्काम्रवेतसफलोदरवैक्रमेण गुंजामितार्धमि तंयवहिपर्णखंडे भक्ष्यंनरोश्वसितकासज्वरा- दिकानाम् हन्याद्यथामृगपतिः करिणोबकाम रामासुवश्यतदनुदिव्यशरीरकारि देयानुपाने नसुगंधिसमेन वापियुक्त्याविचार्यबलमग्निवि वर्धनाय

अर्थ - हिंगुल को पतले और दृढ़ ऐसे उत्तम वस्त्र के टुकडे में बांध

नेऽप

पीछे उस पोटली को चूका की लुगदी में धर गोला बनाय उसगोले को कांदे के बीच में धरै उसके ऊपर कपड मिट्टी कर धूप में सुखा य सायंकाल को दशआरनेंकी आंच देय. या प्रकार २०० पुट कांदेके दे य. इसीरीति सें सौ २०० पुट बैंगन में धरकर देय. तदनंतर सौ पुट २०० इन्द्रफल के फल में देय. और उसी प्रकार पक्के आमकी और अम्लवेत की सौं सौं पुटदेय. तो यह हिंगुल दिव्य होय. इसें सें नागरवेल पान के साथ आधरती खाय तो मनुष्य के श्वास. खासी. ज्वर. आदिरोग सबनष्ट होय. जैसें सिंह. हाथीन्को नाश करे इसी प्रकार यहरोगीकानाशकरे है. स्त्रीन्को परम प्रिय होय. दिव्यदेह होय. त्रिसुगंध के साथ सेवन करने सें बल. अग्नि. कोवढावै. और बाकी अनुपान वैद्य अपनी बुद्धि सें कल्पनाकरै-

अथदरदकेगुण

निक्तंकषायंकटुहिंगुलःस्यान्नेत्रामयघ्नंकफपि
त्तहारी हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाच प्लीहामवा
तौचगदंनिहंति ॥

अर्थ - हिंगुल. कडुआ. कषैला. और तीखा ऐसा है और नेत्ररोगको दूरकरे कफ. पित. हृल्लास (सूखीरद्द) कोढ. ज्वर. कामला. तापति ल्ली. और आमवात इन्को नाशकरै-

दूसरेगुण

तिक्तोष्णंहिंगुलंदिव्यंरसगंधसमुद्भवं मेहकु
ष्ठहरंरुच्यंवल्यंमेधाग्निवर्द्धनं ॥ हिंगुलःस
र्वदोषघ्नोदीपनोतिरसायनः सर्वरोगहरोवृ
ष्योजारणोलोहमारणो रतस्मादाहृतःसूतो
जीर्णगंधःसमोगुणैः

अर्थ - पारा और गंधक सें उत्पन्न हिंगुल दिव्य कडुआ और हिंगुल

सर्व दोषों को नाशकरै अग्नि को दीपन करै रसायन है. सर्व रोगों को हरणकरै. वीर्यको वढावै. जारण और लोह के मारण मेंशुभ है. इसमें से निकाले भये पारे के गुण जो षट् गुण गंधक जारण करे हुए पारे में होय है उस्के समान है + हिंगुल से पारे निकालने की विधि पारे के प्रकर्ण में २० के पन्ने में लिख आये हैं -

अशुद्ध हिंगुलके अपगुण

अशुद्धो दरदः कुर्यात्कुष्ठं क्लैव्यं क्लमं भ्रमं मोहंच
शोधयेत्तस्मात्सिद्धवैद्यस्तुहिंगुलं ॥

अर्थ - अशोधित हिंगुल कोढ. नपुंकता. क्लम. भ्रम. और मोहको करै है इसी से सिद्ध वैद्य हिंगुल का यथा योग्य शोधन करै -

अस्य शांति

उत्पद्यते यदा व्याधिर्दरदस्यानिषेवणात् ॥ तदा स्
तकवत्सर्वं कुर्यात्सर्वं प्रतिक्रिया

अर्थ - यदि अशुद्ध हिंगुल के भक्षण करने से रोग प्रगट होय तो पारे के समान सब शांति विधि करनी चाहिये -

इति हिंगुल प्रकर्ण

टंकण (सुहागा)

टंकनस्त्रिविधः प्रोक्तः स्फटिकाभो गुडप्रभः ॥ तृती
यः पांडुरः प्रोक्तः स्वगुणस्य गुणागुणं ॥ पर्यायोपां
डुरस्यापि नीलकंठेति विश्रुतः श्रेष्ठो नीलकंठ
श्च स्फटिकाख्यश्च मध्यमः गुडाभश्चाधमः प्रो
क्तो रसशास्त्र विशारदैः ॥

अर्थ - सुहागा तीन प्रकार का है. एक फिटकरी के समान. दूसरा गुड़ के समान. तीसरा पीले रंग का होय है. इन्के गुणागुण कहते है. पीले

रंग के सुहागे को नीलकंठ भी कहते हैं. उत्तम नीलकंठ भी कहते हैं. फटकरी के समान जो हो सो मध्यम हैं. और जो गुड़ के तुल्य होय है वह सुहागा अधम है. ऐसें रस के ज्ञाता वैद्य कहते हैं.

सुहागे की शुद्धि

जंबीरजरसेनैव अहोरात्रं विभावयेत् टंकनः शु
द्धिमायाति नान्नकार्यविचारणात्

अर्थ - सुहागे को जंभीरी के रस में एक दिनरात्र भावना देने से सुहागा शुद्धि होय -

दूसरी विधि

टंकनो शुध्यते ह्यशुगोमयेनावृतोप्रिये ॥ ५ ॥ ५ ॥

अर्थ - सुहागा गोबर में धरने सें शुद्ध होय है -

सुहागे के गुण

टंकनो द्रावनो भेदी विषहारी ज्वरापहः गुल्माम
शूलशमनो वातश्लेष्मा हरः परः ॥ तथैव वन्हिकृ
त्स्वर्णरूप्ययोः शोधनः परः

अर्थ - सुहागा द्रव अर्थात् जलरूपकर्त्ता है. भेदी है. विषके रोग और ज्वरका नाशक है. गोला. आमवात. शूल. वात. कफ. इन्का नाशक है. इसी प्रकार जठराग्नि को बढावे. सुवर्ण. और चांदी इन्को शुद्ध करे है.

अशुद्ध सुहागे के दोष

अशुद्ध टंकणो वांतिभ्रांतिकारी प्रयोजितः अतस्तं
शोधयेद्वन्हौ भवेदुत्फुल्लतः शुचिः

अर्थ - अशुद्ध सुहागा वांति (वमन) और भ्रांति (भौंर) कर्त्ता है. इसी से इस्को अग्नि में धरकर फुलाने से शुद्ध होय है.

तुरटी (फिटकरी)

सौराष्ट्रभूमिसंभूतामृत्स्नासातुवरीमता वस्त्र

पुलिप्यतेयासौमंजिष्ठारसवंधनी फिटिकाझि
ल्लिकाचेनिद्विविधापरिकीर्त्तिता ईषत्पीलागुरु
स्निग्धापैत्तिका विषनाशिनी निर्भराशुभ्रवर्णा
चस्निग्धाःसाम्लापरामता साफुल्लतुवरीप्रोक्ता
लेपात्ताम्रंचवेदयः सौराष्ट्रीचाम्लताकांक्षीस्फटि
कामृत्तिकामता आढकीतुवरीधन्या मृत्स्नाम्र
त्स्न मृत्तिका व्रणाकुष्टहरासर्वकुष्टघ्नीचविशेष
तः दुकूलेषुचसर्वेषुलेपाचरंजनीभवेत् उत्तमा
लिप्यतेयासौमंजिष्टारंगवंधिनी

अर्थ - सौराष्ट्र देशकी पृथ्वी सें जो एक प्रकार की मट्टी प्रगट हो
यहै उस्को तुवरी (फिटकरी) कहते हैं इस्को कपडे परलेपक
रने सें मजीठ के रंग समान लाल धवा होय है यहपारेके बांधनेवा
ली है इस्के दो भेद हैं फिटिका और झिल्लिका इसें फिटिकाअ
र्थात् फिटिकिरी किंचित् पीली भारी चिकनी पित्तके और विषके
विकार दूरकरे है + और दूसरी भारी तथा रंगमें सपेद चिकनीखो
रखट्टी झिल्लिका होय है और उसीको फुल्लतुवरी कहते हैं लेपक
रने सें ताम्रके समान होय है इस्के नाम सौराष्ट्री अम्लता कांक्षी
स्फटिका आढकी तुवरी मृत्स्न और मृत्तिका एहै एसब फिटकरी
व्रण कुष्ट को हरणकरे परतु विशेषकरके कुष्टको दूरकरे है औ
र सब प्रकारके वस्त्रोंपरलेपकरने में अपना रंगउत्पन्नकरदेती है इसी
कारण उत्तम फिटकरी वोही कहाती है जो सपेद वस्त्रपर मजीठके स
मान रंग करदेय

फिटकरीका शोधन

तुवरीकांजिकेक्षिप्त्वात्रिदिनाच्छुद्धिमृच्छति ॥

अर्थ - फिटकरी तीन दिन कांजी में भिजोने से शुद्ध होय है ॥५॥

स्फटिका निर्मला श्वेता श्रेष्ठस्याच्छोधनं क्वचित्
नदृष्टं शास्त्रेनो लोके वन्हावुत्फुल्लयंतिहि

अर्थ - फिटकरी निर्मल तथा श्वेत· होय सो उत्तम है उसका शोधन· किसी शास्त्र में तो लिखा नहीं है· परंतु लोक में मनुष्य इसको आग में· फुलाय कर शुद्ध करते हैं·

फिटकरी का सत्वपातन

क्षाराम्लमर्दिता ध्माता सत्वं मुंचति निश्चितं ॥५॥

अर्थ - फिटकरी को क्षार वर्ग· और अम्लवर्ग में घोटकर भट्टी में ध रकर वंकनाल· धोंकनी कि धोंकने सें सत्व निकले है· कोई के मत सें फिटकरी के दो भेद हैं· तुवरी और सौराष्ट्रि इसमें तुवरी के तो भेद क हि चुके· अब सौराष्ट्रि के गुण कहते हैं-

सुसैंधवसमा नाच्छकषाया स्फटिकामला व्रणी
रक्तग्धूलघ्नी स्फटिको सूतघातिनी सुराष्ट्रिका
वत्सोधनं च कारयेद्रसविंदकैः

अर्थ - सैंधवे नोन के समान और कषैली फिटकरी कहाती है यह· व्रण· उरक्त शूल· इनको तत्काल दूर करे· पारेको मारण करे है· इ सको शोधन पूर्वोक्त रीति सैं करै·

फिटकरी के गुण

कांक्षी कषाया कटुकाम्लकंठ्या केश्या व्रणघ्नी
विषनाशनी च श्वित्रापहा नेत्रहिता त्रिदोषप्रशांति
प्रदा पारदरंजनी च

अर्थ - फिटकरी· कषैली· तीखी· खट्टी· कंठको और केशोको हित है· व्रण को अच्छा करै· विषको हरण करै· श्वित्र कोढ़ को दूर करै· नेत्रोको हित है· सन्निपात को शांति करै पारे को रंगै है-

फिटकरी के सत्व की दूसरी विधि·

गोपित्तेनशतंवारान् सौराष्ट्रीभावयेत्ततः धमि
त्वापातयेत्सत्वं कामदंचातिगुह्यकं

अर्थ - फटकरी को गौ के पित्ते की १०० भावना देकर पीछे उसको मुला
य भट्टी में धर बंकनाल धोंकनी से धोंके तो सत्व निकले यह बात गु
ह्य (छिपानेयोग्य) है.

इतिसौराष्ट्रीफटकरी

मनशिल

तालकस्यैवभेदोसिमनोल्हादिनदंतरं तालक
स्त्वतिपीतःस्याद्रक्तामनःशिला

अर्थ - मनसिल हरताल का भेद है. और मन को आनंददायक है. हरता
ल बहुत पीली होय है. और मनसिल कालाल वर्ण होय है.

मनशिलकी निरु.

मदायतनसम्भूतामनोह्लादिनकीर्तिता काणवि
रौहिमवर्णामनोल्हाविविधामता

अर्थ - श्रीमहादेव पार्वती से कहते हैं कि यह मनसिल हमारे घर से
उत्पन्न भई. इसी से इसको मनोह्ला कहते हैं. और जो सुवर्ण सदृश हो
य उसको काणविरी कहते हैं. यह अनेक प्रकार की है. इसको भाषा में (पे
वरी) कहते हैं.

मनशिलकेभेद

मनःशिला त्रिधाप्रोक्ता श्यामांगीकणवीरिका
द्विखंडाख्याभूतासांतुलक्षणानि निबोधमे ॥
श्यामारक्ता चगौराचभाराल्या श्यामिकामता:
तेजस्विनीचनिर्गौरातास्रभाःकणवीरिका:॥
चूर्णीभूतातुरक्तांगीसभाराखंड पूर्विका त्रिवि

धासुवंगघ्यास्यात्करवीरामनःशिला

अर्थ - मनशिल तीन प्रकार की है· १ स्यामांगी २ करवीरिका और ३ द्विखंडा· इनतीनों के लक्षण मोंसे सुनो· जोवर्ण में ष्याम-लाल गौर गौर होय भारी होय उसको प्र्यामिका कहते हैं· और जो तेजयुक्त का-लीनाम्रके समान होय उसको करवीरिका कहते है· और चूर्णकेसमान बारीक लालवर्ण वाली और भारी होय उसको द्विखंडा कहते हैं· इनमें करवीरिका मनशिल उत्तम हैं·

अशुद्धमनशिलकेदोष

अश्मरीमूत्रकृच्छ्राणिअशुद्धाकुरुतेशिला म
न्दाग्निमलबंधंचकुरुतेतेनशोधयेत्

अर्थ - अशुद्ध मनसिल- पथरी· मूत्रकृच्छ्र· मंदाग्नि· मलबंध· इतनेरोग करै है· इसीसें इसको शोधन करना चाहिये·

मनशिलकीशुद्धि

जयंतिकाद्रवेदोलायंत्रे शुद्धामनःशिला॥५

अर्थ - मनशिल को हरदी के काढे में दोलायंत्रकी विधि सें १दिन पचावे तो शुद्धहोय·

दूसरी विधि

अगस्तिपत्रतोयेनभावितंसप्तवारकं शृंगवेर
रसैर्वापिविशुद्धातिमनःशिला॥

अर्थ - मनशिल को अगस्तिया के पत्तों केरस में सात भावनादेय अथवा अदरक के रस की सात भावना देने सें शुद्ध होय·

तीसरी विधि

भृंगागस्तिजयंतीनामार्द्रकस्यरसेषुच दोलायं
त्रेणसंस्विन्नाविशुद्ध्यतिमनःशिला

अर्थ - मनशिल को भागरा· अगस्तिया· हलदी· और अदरक इनके

रस में दोलायंत्र में पचन कराने सें सुद्ध होय.

चतुर्थविधि

पचेत् त्र्यहमजामूत्रे दोलायंत्रे मनःशिलां भावयेत्स
प्तधापित्तैरजाया शुद्धिमृच्छति

अर्थ - दोलायंत्र में मनसिल डालकर वकरीके मूत्र में तीन दिन औटावे. नं
तर उसमें सें निकाल खरल में डार वकरीयाके पित्ते की सात भावना देने सें
मनसिल सुद्ध होय.

मैनसिलके मारनेकीविधि

भाषा

हंसपदी. वंदाल. वर. आकका दूध. थूहरका दूध. प्रत्येकके दूध में मैन
सिलको एक एक दिन घोटै. और हरदके अगिनदेय. या प्रकार सात आंच दि-
कियाबांधके डमरूयंत्र में चार २ प्रहरकी देयतो मैनसिल मरै.

सत्वपातन

तालवच्च शिलासत्वं ग्राह्यं तैरेव चौषधैः॥५॥

अर्थ - जिसप्रकार हरताल का सत्व निकालाजाता है. उसीप्रकार और उ-
न्ही औषधों से मनसिल का सत्व निकालना चाहिये.

मनशिलकेगु.

मनःशिला गुरुर्वर्ण्या सरोष्णा लेखनी कटुः तिक्ता
स्निग्धा विषश्वास कासभूतविषास्रनुत्

अर्थ - मनसिल. भारी. वर्णकारक. सर. उष्ण. लेखनी. तीखी. कडुई. चि
कनी. ऐसी है. विषके विकार. श्वास. खांसी. भूतबाधा. और रुधिरके बि
कारको नाशकरै.

तथाच

ना मनःशिला सर्वरसायनाख्या तिक्ता कटूष्णा कफवा
तहंत्री सत्वात्मिका भूतविषाग्निमांद्यं कंडूचका

सक्षयहारिणीच ॥

अर्थ - मनशिलको सर्वरसा कहते हैं· कडुई· तीखी· गरम· ऐसी है· कफ वातको दूरकरै है· सत्ववाली है· भूतऔरविषदोष· मंदाग्नि· खुजली· खांसी· खई· इनरोगोंका नाशकरै है·

सत्वनिकालनेकोद्रूम·

नागांशं गुग्गुलंप्राज्यंलोहकिट्टंचसर्पिषा मर्द
यित्वांधमूषायां ध्मानात्सत्वं विमुंचति ॥

अर्थ - मनशिल का अष्टम भाग गूगललेय उसमें लोह की कीटी और घृतमिलायकर घोटै पीछे उसको अंधमूषा में धरकर आग में वंकनाल धोंकनी सें धोंके तो मनशिल सत्व छोड़े·

अशोधितशिलाकेदो·

मनःशिलामंदबलंकरोतिजंतून्ध्रुवंशोधनमंतरेण
मलस्यवंधंकिलमूत्ररोगंसशर्करंकृच्छ्रगदंचकुर्यात्

अर्थ - अशुद्ध मनसिल वलनाशकरै· मलवंधकर्त्ता· मूत्ररोग· शर्करा· कृच्छ्ररोग· कृमिरोग· इनको उत्पन्न करै है·

मनशिलदोषकीशांतिः

गोक्षीरं माक्षिकयुतं पिवतेयोदिनत्रयं कुनटीत
स्यदेहेचविकारंनकरोतिहि

अर्थ - गौके दूध में सहत मिलायकर तीनदिन पीने सें मैनसिल उसकेदेहमें विकार नहीं करै है·

इतिमनसिलप्रकरणम्

शंख

द्विधासदक्षिणावर्तिवामावर्तिः शुभेतरः दक्षिणा
वर्तिशंखस्तु पुण्ययोगादवाप्यते ॥ यद्गृहेतिष्ठते-

सोवै सलक्ष्म्या भाजनं भवेत् दक्षिणावर्त्त शंखस्तु
त्रिदोषघ्नः शुचिर्निधिः महालक्ष्मि क्षयः स्वेडक्षा
मनाक्षिक्षयसमी ॥

अर्थ - शंख-दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्तके भेदसें दो प्रकारका है इनमें दक्षिणावर्त्त शंख पुण्ययोगसें मिले हैं · जिस्के घरमें दक्षिणावर्त्त शंख रहेहै · उस्के अष्ट लक्ष्मीवासकरै · औरवो त्रिदोषनाशक · पवित्र तथा नवनिधिन्में एकनिधि हैं और ग्रह · तथा अलक्ष्मी - इन्की पीडा · खर्ई · विष · कृशता · तथा नेत्ररोग · इन्के नाशकरने कोसमर्थ है -

शंखश्च विमलश्रेष्ठश्चन्द्रकांतिसमप्रभः अशुद्धो
गुणदोनैव शुद्धश्च सगुणप्रदः ॥

अर्थ - जोशंख · सफेद · चन्द्रकांतिके समान होय है उत्तम है · औरजो अशुद्ध है वो गुणकारक नहीं है · शुद्धकराहुआ गुण करे है -

अथशोधन

अम्लैः सकांजिका मिश्रदोलास्विन्नः सशुद्ध्यति ।

अर्थ - शंखको अम्लवर्ग और कांजी इनमें दोलायंत्रमें पचाने सें शुद्धहोय - ॥

शंखकेगुण

शंखः क्षारो हिमो ग्राही ग्रहणी रेचनाशनः नेत्रपुष्प
हरो वर्ण्यस्तारुण्यपिटकाप्रणुत्

अर्थ - शंख · खारी · शीतल · ग्राहक · तथा वर्णको सुधारने वाला ऐसा है · और संग्रहणी · और दस्तो को नाशकरै · नेत्रके फूले को और जवानिकि मुहासेन्को दूरकरे है -

खडिया

खटी गौरखटी चेति द्विधा प्रोक्ता मलिनास्मृता मृदु
पाषाणसदृशी खटीशुभ्राधिका गुरुः

अर्थ - खटी - और गौरखटी के भेदसें खडिया दो प्रकारकी है · इनमें ख

डिया कुछ काली होय है और गौर खडिया नरम पत्थरके समान· बहुतसपे द· और भारी होय है· यह उत्तम है·

खडियाके गुण

खटीदाहास्रनुच्छीतामधुराविषशोषजित् क
फघ्नीनेत्रयोः पथ्या लेखनाबालकोचिता ॥ तद्व
त्पाषाणखटिकाव्रणपित्तास्रजिद्धिमा लेपादि
तद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा

अर्थ - खडिया- दाह· रुधिरके विकार को दूरकरे· शीतल है· मधुर है विष और शोषको दूरकर कफका नाशकरै· नेत्रों को पथ्य है· लेखन है· बालको को हितकर्त्ता है· और पाषाण खडियाव्रण· पित्त· तथा रुधिर विकार को नाशकरे· शीतल है· यगुणलेपकेकरनेसें करे है· और खाने में मट्टीके समान लगे है·

कौंडी

वराटिकात्रिधाप्रोक्ताश्वेताशोणात्रिधापरा पी
ताचतीक्ष्णाचक्षुष्याश्वेताशोणाहिमाव्रणा ॥ अ
निबिंदुभिरेश्वेतैर्लांछितारेखयाथवा बालग्रह
हरा नानाकौतुकेषुचपूजिता पीतागुल्मयितापृष्ठे
रसयोगेषुयोजयेत् सार्धनिष्कप्रमाणासाश्रेष्ठा
योगेषुयोजयेन् निष्कप्रमाणामध्यासाहीनापा
दोननिष्कका

अर्थ - कौंडीतीनप्रकारकी है· सपेद· लाल· और पीली· इनमे पीलेरंग की कौंडी तीक्ष्ण है· नेत्रो को हितकर्त्ता है· और लाल कौडी शीतल· तथा व्रणो को हितकारक है· और जिसपर सपेदी लिये बिंदु और रेखा होय वोबालग्रह नाशक और अनेक प्रकार के कौतुक के उपयोगी है· और जो पीली· पीठ पर गांठ के समान होय वोरसयोग में देनी चाहिये जो डेढतोले वजन मेंहोय

सोउत्तम है· तोलेभरकी मध्यम· ओंर पौनतोलेकी कौडी अधम है·

दूसराप्रकार

पीताभाग्रंथिलापृष्टे दीर्घवृत्तावराटिका रसवैद्यै विनिर्द्दिष्टासावरावरसंज्ञका ॥ सार्धनिष्कभराश्रेष्ठा त्रिदंतद्वादशभिर्युता रसेरसायनेयोज्यानिष्कभारा चमध्यमा पादोननिष्कभाराचकनिष्टापरिकीर्त्तिता॥

अर्थ- जो कौडी पीली ओंर पिछाडीके भागमें गांठदार लंबी गोल होय सोरसके ज्ञाता वैद्योने श्रेष्ट कही है· इन्के दो भेद हैं वर ओंर अवर जो कौडीछःमासेकी ओंर वारह दांतयुक्त होय वो श्रेष्ट है उस्कोरस ओंर रसायन में योजनाकरना चाहिये ओंर जो चारमासेकी है वोमध्यम है· ओंर तीनमासेकी कौंडी कनिष्टजाननी

शोधन

वराटाकांजिकेस्विन्नायामाच्छुद्धिमवाप्नुयात् ॥

अर्थ- कौडीन्को- कांजीमें एक प्रहर ओंटाने से शुद्धि होती है-

अथमारण

अंगारागनौस्थिताध्मातासम्यक्प्रोत्फुल्लितायदा स्वांगशीतामृतासातुपिष्टासम्यक् प्रयोजयेत्॥

अर्थ- कौडीको अंगारोंपर धरकर धौंके जव अच्छीरीतिसे फूलजायतव उस्को अग्निसें निकाल शीतलकर पीसडाले ओंरकार्योमें नियोजनाकरे

अथगुणाः

कपर्दिकाहिमानेत्रहितास्फोटक्षयापहा करी-स्रावाग्निमांद्यघ्नीपित्तास्रकफनाशिनी ॥ परिणामादिशूलघ्नीग्रहण्यातीसारनाशिनी नेत्र्यासम्प्रहणीहंतिकटुष्णादीपनीमता पाचनीवातकफहाश्रे

घास्तस्यजारणे तदन्येपुंवराटस्युः गुरवःश्लेष्म पित्तदाः

अर्थ - कौंडी - शीतल - नेत्रोंको हितहै - फोडान् को - खई - कर्णनाव - मंदाग्नि - पित्त - कफ - परिणामशूल इन सबको नाशकरै - वृष्य है - अतिसार - संग्रहणी को शमन करै कटु - गरम और दीपनी है - पाचनी है - वातकफकोनाशकरै पारेकेजारणा में उत्तम है - इतने गुण है - इनतीन प्रकार की कौडीन् सें न्यारे पुरुष संज्ञक (कड्डा) होते हैं - वो भारी औरकफ पित्तकर्त्ता होते हैं -

मोतीकीसीप

मुक्ताशुक्तिःकटुःस्निग्धाश्वासहृद्रोगहारिणी शूलप्रशमनीरुच्यामधुरादीपनीपरा

अर्थ - मोती की सीप कटु - चिकनी - श्वासकोदूर करै - शूलहृदयरोगइन्को नाशकरै - रुचिकारी - मीठी और दीपनी -

जलसीप

जलशुक्तिः कटुस्निग्धादीपनीगुल्मशूलनुत् विषदोषहरारुच्यापाचनीबलदायनी ॥

अर्थ - जलकी सीप - कडुई - चिकनी - दीपन - रुचिकर्त्ता - पाचन और बलदायक ऐसी है - तथा गोला - शूल - और विषदोष इन्को नाशकरै -

दोनोंसीपोंकाशोधन

शोधनं शंखवत्तस्यामृतिः प्रोक्ताकपर्दवत् ॥

अर्थ - दोनों प्रकार की सीपोंका शोधन शंख के समान है - और मारण कौंडी के समान जानना -

गुण

शुक्तिश्चशिशिरापित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥५॥

अर्थ - सीप - शीतलहै - पित्त - रुधिरविकार - तथाज्वर इन्को नाशकरै -

छोटे शंख (घोंघा)

शंबुका शीतला नेत्ररुजास्फोटविनाशनी शीतज्व
रहराती स्नाग्राहिदीपनपाचना ॥

अर्थ - छोटे शंख- शीतल है- फोडेन्को दूरकरे शीतज्वरकोनाशकरे- नी
हरा- ग्राही- दीपन- पाचन और नेत्ररोगके हरण कर्त्ता है-

छोटेशंखो का शोधन

शंखवच्छोधनं कुर्याद्यामं शुध्यति शंबुका- शु
क्तिवद्भस्मकुर्याच्च सर्वयोगेषुयोजयेत् ॥

अर्थ - छोटे शंखों का शोधन वडे शंख के सदृश करे और सीपके समान
भस्म करनी चाहिये- इस भस्म को सर्व योग में देय-

अथ सिकता (वालू)

वालुका सिकता प्रोक्ता शर्करा रेतजापिच वालु
कामधुरा शीता संतापश्रमनाशिनी ॥ सेकप्रयो
गतश्चैव शाखा शैत्यनिलापहा लेखनी प्रो
क्ता व्रणोरःक्षत नाशनी

अर्थ - वालू को - सिकता- वालुका- शर्करा- और रेतजा- भी कहते है- वालू
मधुर- शीतल है- संताप और श्रम को सेकने सें दूर करै तथा हाथ पैरोमें
जो शीतलता और वादी है उसको भी सेकने सें दूरकरै- लेखनी है- व्रणओं
र उरःक्षत को नाशकरे-

वालूसें लोहरज ग्रहणका प्रकार

शर्कराभ्यश्रुवकेनकेचिदुद्धृत्यतयोरजः सुकरं
त्विदमाख्यातं तंचसंशोध्यमारयेत्

अर्थ - कोई मनुष्य चुंवक पत्थर के टुकडे सें वालू में सें लोहे के कणका

(रवा) निकालते हैं = यह बाल सीधी है उनरवान्को शोधनकर मारणाकरै -

शिलाजीतकीउत्पत्ति

महार्णवां भोम्रतमंथनोत्थः स्वेदो गिरेर्बगरेत्ततः यौ प्राक् समंदरस्यामृतमंथनाभिसोमेनसंपर्कमि याथदिव्यम् १ ब्रह्माणमिंद्रंप्रतिपूज्यसम्यक् - हिताय पुंसांप्रददौनगेभ्यः सोमो ऽमृतंकल्पगु णानुभूमौ शिलाजतुस्यादितिनिर्विचिंत्य २ हितं प्रजानांसुखदंनिदाघेनगात्स्रवेभ्दास्करतापनाच्च प्रभावतश्चोत्कटभारभावा संसृज्यतेयेनचधातु नातत् ३ तदात्मकंतंप्रवदंतितज्ज्ञास्तस्मात्परी क्षेत्तदनंतवीर्यं ॥

अर्थ - अमृत निकालने के निमित्त जबदेव और दैत्यौंने मंदराचलप र्वतको समुद्र मे डालकर समुद्रकोमथा उससमय उसपर्वत में स्वेद (पसीना) प्रगट हुआ वह समुद्र में गिरा फिर वही पर्वतका स्वेद समुद्रमंथन सें चंद्रमाके सदृश प्रगटभया - उससमयसवदेवगणोंनेब्र ह्मा और इन्द्रकापूजनकर मनुष्योंकेकल्याणार्थ वही मंदराचलपर्वतका स्वेद अन्यसवपर्वतों को दिया अर्थात् यह सोम (शिलाजीत) अमृत कल्पकेसमानगुणकारकपृथ्वीमें शिलाजीतइसनाम सें विख्यात होऊ इसहेतु सें दीना ॥२॥ यह प्रजान्कोहित और सुखकादेनेवाला शिलाजी त ग्रीष्म(गरमीकी) ऋतु में सूर्यकीघाम सें तप्त होकर पर्वतों सें स्रवे है - धातुन्सें जोस्रवे है इसीकारणइसमें भारी गुण है - ३ और इसको तदात्मककहते है - इसीकारणइसकी परीक्षाकरै क्योंकि यहशि- लाजीत अनंतवीर्य्यवाला है -

सुवर्णरूप्यत्रपुसीसताम्रलोहात्स्वनेनैव मनः

शिलानः समुद्भवंचास्यवदंति वैद्याः सर्वोत्तमं
विंध्यनगोद्भवंच ४॥

अर्थ- सुवर्ण· चांदी· रांग· सीसा· तांबा· लोहा· मनसिल· इन्सें इ
स शिलाजीतकी उत्पत्ति है· असें वैद्यकहते है· सब सें उत्तमविंध्या
चलपर्वत सें प्रगटभया शिलाजीत होय है-

कांचनशिलाजीतकेल·

मधुरंचसतिक्तंचजपापुष्पनिभंचयत् स्निग्धंघ
नंगैरिकाभंसुशीतं कांचनत्सुतं॥ ॥ ॥

अर्थ- मीठा· कडुआ· जपापुष्पके समानलाल· चिकना· गाढा· गेरूके
समान और शीतल ए गुण सुवर्ण सें प्रगट शिलाजीत के हैं-

रौप्यशिलाजीतकेल·

रौप्याकरादिन्दुमृणालवर्ण सक्षारकट्वम्लरसंवि
दाहि मेहामजीर्णज्वरपांडुशोष प्लीहाढ्यवातं
शमयेद्धिसद्यः

अर्थ- चांदी की खान सें जो सिलाजीत प्रगटभयाउस्कावर्ण चन्द्रमाके
और कमल की दंडी के समान स्वच्छ सपेदवर्ण होय है· खारी· तीखा·
खट्टा· दाहकाना शकर्ता· तथा प्रमेह· अजीर्ण· ज्वर· पांडुरोग· शोष· ता
पतिल्ली· और बादी इन्को शीघ्र नाशकरै-

ताम्रशिलाजीतकेलक्ष·

मयूरकंठोपमचाषपक्षवर्णसतिक्तंकटुचापितान्
मात् तिक्तंत्वनुष्णंचसुलेखनंच मेहाम्लपित्त
ज्वरशोषहारी

अर्थ- मोरके कंठ समान अथवा पपैया के पंखौंकासाजिस्कावर्ण
होय· कडुआ· तीखा है लेखनहै प्रमेह· अम्लपित्त· ज्वर· शोष·
इन्का हरणकर्त्ता है-

वंगशिलाजीतकेल०

किंचित्सतिक्तंकटुसांद्रमत्लंत्रपुप्रसूतंत्रपुवर्णा गंधं शोथप्रमेहज्वरशोषहारि शीताम्लपित्तं विनिहंतिसद्यः

अर्थ - कुछ कडुआ० और तीखा० गाढा० मृत्तिकाके समान० रांगकेसमान वर्ण और गंधवाला० सूजन० प्रमेह० ज्वर० शोष० शीत० अम्लपित्त० इन्कोनाशकरै० यह रांग सैं प्रगट शिलाजीतके गुण हैं -

सीसकशिलाजीतकेल०

सिसात्सतिक्तंमृदुचोष्णवीर्यंवर्णादतःस्यात्कुसुमेनतुल्यं रसेनतत्स्यात्कटुकप्रधानं वर्णौजतेजः प्रबलंददाति ॥

अर्थ - सीसे का शिलाजीत तीखा० नम्र० उष्णवीर्यवाला० पुष्पकेसदृश वर्ण इसमें कटुरस प्रधान है - वर्ण- ओज- तेज- इन्कोदेय है -

लोहशिलाजीतकेलक्षण

गोमूत्रगंधिकलुषंगुग्गुल्वाभंविसर्करं मृत्स्नंसिद्धमनम्लकषायंकृष्णायसजंशिलाजतुप्रवरं।

अर्थ - गोमूत्रकी सी जिसमें गंध आवै० गुग्गुलके सदृश० धूलरहित० मट्टीके समान० शुद्ध० थोडा कसेला० काला० ऐसालोहका शिलाजीत होय है -

शिलाजीत

शिलाजतुद्विधाप्रोक्तंगोमूत्राद्यंरसायनः कर्पूरपूर्वकश्चान्यत्तत्राद्यंद्विविधंपुनः सासत्वश्चापिनिसत्वस्तयोःपूर्वोगुणाधिकः ॥ ॥ ॥

अर्थ - गोमूत्र शिलाजीत० और कपूर शिलाजीत के भेद सैं शिलाजीत दो प्रकार का है० उन्मैं गोमूत्रसंज्ञक शिलाजीत रसायन है० और इस्के

भी दो भेद हैं· एकसत्वसहित· दूसरासत्वरहित· इन्मेंसत्वसहित में अ
धिकगुण हैं -

मतान्तर

शिलाजतुद्विधज्ञेयंतत्राद्यंगिरिसंभवं द्वितीयं
स्याद्रूखरायांमृत्तिकाजलयोगतः

अर्थ - शिलाजीत· दो प्रकारका है· एकपर्वत सैंप्रगट· दूसराऊखरभू
मी में माटी और पानी केयोग सैं बनता है -

उत्पत्ति

ती ग्रीष्मेंव्वार्कतप्तेभ्यो माधवेभ्यो हि भूभृतां स्वर्णरू
प्यार्कगर्भेभ्यो शिलाधातुःविनिसरेत्

अर्थ - ग्रीष्मऋतु में सूर्य्य की किरणों सें तप्तहुए ऐसैं जो सुवर्ण·
चांदी· और तांबे की खानवाले पर्वतों सें शिलाधातु (शिलाजीत)
निकले है -

निदाघेघर्मसंतप्ताधातुसारंधराधराः निर्यास
वत्प्रमुंचतिशिलाजतुप्रकीर्तितं

अर्थ - गरमीन्में सूर्य्यकी किरणों सैं पर्वततप्त होकर उन्मैं धातून्कासा
रूपगोंद के समान पतला पदार्थ निकले उस्को शिलाजीत कहते हैं -

शिलाजीतकेभेद

सौवर्णराजतंताम्रमायसंचचतुर्विधं शिलाजतु
हिविज्ञेयंतत्तल्लक्षणलक्षितं

अर्थ - शिलाजीत सौवर्ण· राजत· ताम्र· और आयस इन भेदो सैं चा
र प्रकार का है· और वो सपेद· तथा पीले इत्यादि भेद सैं जानाजाय-
है· इस्का स्पष्टार्थ यह है कि एकतो सुवर्ण की खानवाले पर्वत सें शि
लाजीत प्रगट होय है· दूसराचांदीकी खानवाले पर्वत सें· तीसरातांबे
की और चौथालोहकी खानवालेपर्वत सें शिलाजीत प्रगटे है· इन्में नि

स जिस धातु के लक्षण मिले उस्को उसी उसी धातु का सार शिलाजीत जानना-

अथ परीक्षा

स्वर्णगर्भगिरेर्जातोजपापुष्पनिभोगुरुः मधुरं कटुतिक्तंच शीतलंच रसायनं॥

अर्थ- सोने की खानवाले पर्वत में जो प्रगट शिलाजीत सो जपापुष्प के समान लाल. और भारी होय है. यह मधुर है- तीखा और कडुआ है शीतल तथा रसायन है-

रूप्यगर्भगिरेर्जातंमधुरंपांडुरंगुरुः शिलाजंकफवातघ्नंतिक्तोस्मक्षयरोग जित्॥

अर्थ- चांदी की खानवाले पर्वत में जो प्रगट शिलाजीत उस्का वर्ण पीला होय है. मीठा. और भारी तथा कफ. वात का नाशक कडु. गरम. खई रोग को जीतनेवाला है-

ताम्रगर्भगिरेर्जातंनीलवर्णंघनंगुरुः मयूरकंठसद्दशंतीक्ष्णमुष्णंचजायते

अर्थ- ताम्र की खानवाले पर्वत में जो शिलाजीत प्रगट होय है उस्का नीलावर्ण गाढा. और भारी तथा मोर के कंठ समान नील वर्ण होय यह तीखा है. और गरम है-

लोहजंदायुपक्षाभंतिक्तंकलवणंभवेत् विपाकेकटुकंशीतंसर्वश्रेष्ठमुदाहृतं

अर्थ- लोह का शिलाजीत गीध के पंख के समान वर्णवाला होय है कडुआ है. नोनका सा स्वाद देय है. पकने के समय तीखा. और शीतल है. यह सर्वोत्तम है - इस्का शेष प्रकर्ण दूसरे खण्ड में वर्णन करा जायगा-

समाप्तोयं प्रथम खण्डः

सूचीपत्र

वैद्यककी छपीहुई संस्कृत और भाषा पुस्तकोंका

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
चरकमूल कलकत्तेका	२०)	माधवमधुकोशटीकाकलक	४)
चरकसटीकसूत्रस्थानकल०	६)	माधवनिदानभाषाटीकाम	
सुश्रुतमूल कलकत्ता	४)	थुराका	२।)
वाग्भट्टमूलसूत्रस्थानमात्र	१)	माधवनिदानमाथुरीभाषाटी	
वाग्भटसटीकदोजिल्दोमें	२३)	काहमारीवनाई दिल्लीकीछपी	२)
भावप्रकाश कलकत्ता	२०)	माधवमहाराष्ट्रीटीकासहित	
भावप्रकाश लखनौ	५)	मुम्बई	३।)
भैषज्यरत्नावली	५)	हंसराजनिदानमथुराकेछ	
शारङ्गधर मूल कलकत्ता	२)	पेकाभाषाटीकामोटेकागद	
शारङ्गधरसटीक लाहौर	२।)	का	२)
शारङ्गधरसटीकमराठीटीका		हंसराजनिदानमथुराकाछा-	॥)
मुंबई	३॥)	हंसराजनखलौकाछापाभा	
शारङ्गधरभाषाटीकासहित	॥।)	षाटीका	१)
शारङ्गधरभाषामात्र	॥)	हंसराजदिल्लीकेछापेकाभा	
निघंटरत्नाकरसटीक तीन		षाटीकाऔरतसवीरसहित	॥)
जिल्दो में	२५)	अंजननिदानभाषाटीकासहि	।)
माधवनिदानआतंकदर्पणा-		वीरसिंहावलोकनमूलवम्बई	२)
टीकासहित काशी	४)	योगचिंतामणि मथुराकी	१॥।)

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
लोलिंबराज संस्कृत और भाषा		तिब्बप्रबोध अर्थात् तिब्बअहसा	
टीकासहित मथुरा	।=)	नीकाउल्याहिन्दीमें	=)
योगचिंतामणी मुंबई की	१।=)	तिब्बरत्न	=)
नाडीदर्पणछपरहाहै		लघुतिब्ब निघंट	-)।
मदनपाल निघंट मूलमात्र	२)	औषधसार	-)॥
मदनपाल भाषा	।=)	बालचिकित्सा	=)
नाडीज्ञानतरंगिणी अनुपानत	१)	जर्राही प्रकाश प्रथम भाग	≡)
पाकावली	।)	जर्राही प्रकाश दूसरा भाग	।)
अजीर्णमंजरी	-)॥	वैद्यरत्न	=)
नाड़ी प्रकाश	-)॥	अमर विनोद	≡)
पथ्यापथ्य सटीक	।=)	अमृतसागर मथुराका	।।।)
रसरत्नाकर रसेन्द्र चिंतामणा	६)	वैद्य मनोत्सव	-)
रसराजसुन्दरके प्रथम खंराड		दिल्लगन	-)॥
का प्रथम भाग	।-)	इल्लाजुल् गुरबा मथराका	॥=)
रसराजसुन्दरके प्रथम भागका		औषधसंग्रहकल्पवल्ली	
उत्तरभाग	।=)	इन्जल प्रकाश	≡)
केशव विनोद निघंट	॥=)	आतम प्रकाश	५)
वैद्यामृत भाषाटीकासहित	≡)	सर्वज्वरचिकित्सा	≡)
वैद्यकसार	=)	शरीररत्न	=)
तिब्बप्रभाकर अर्थात् तिब्बयूस-		इलाज जिस्मानी	।)
फीकाउल्याहिन्दीमें	॥)	अमृतसागर सटीक और नि	
तिब्बरत्नाकर अर्थात् करावादी		घंट सहित मुंबई	३॥)
नअहसानीकाउल्याहिन्दीमें	॥=)	तथा मुंबई	२॥)

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
वालवोध पाकावली मुंवई	६	वृत्तरत्नावलीचंद्रिकासटीक	॥)

(पुस्तकोंकाभाड़ाखरीदारसैंलियाजाएगा)

इनपुस्तकोंके सिवाय और कुछवस्तु मथरा-वृन्दावन की मगाना मंजूर हो वो हमको लिखें परंतुकृपादृष्टि सैं जवावी कार्ड अथवा आधआनेका टिकट समेत लिफापा भेजे जिस्से जवावभेजने में विलंब नहोय वैरंगएनहमनहीं लिवैंगे-

सूचना

इसरसराजसुन्दरके पूर्वभाग की सूचना में रसशास्त्र की प्रशंसा लिख आए हैं. अब इस्के वनानेका प्रयोजन कहते हैं-

इस हिन्दुस्तान में वहुधारसके ग्रंथ शिव प्रोक्त पूर्व काल से ही चले आते हैं परंतु उनका मिलनाकठिन है. कारण यह है कि हमारे-मतके विरोधी यवन पामरो ने जहांतक हमारे शास्त्र मिले उन्को नाश करा उन्में वो प्राचीनग्रंथ नष्टहोगए. परंतुउन्हीं ग्रंथों में जो अर्वाचीन और प्राचीनग्रंथ मिलते है. उन्को यहां के पुस्तकपिशाचपंडितोंने सत्यानाशकररक्खा है. परन्तु हम अंग्रेजों को धन्यवाददेते हैं कि इन्होंने हमारेग्रंथों की तन मन धन से खोजनाकर पुनः प्रकटकरे इन्ही महानुभावों की कृपादृष्टि से अनेक प्राचीनग्रंथोंकाउद्धारभया-और दिनपरदिन होताहीजाय है दूसरे इन्हींकी इस हिन्दुस्तान में अनेक शिला- और टैपू के यंत्र ऐसे होगए मानों सवग्रंथों की जड़

जमगई· इन्ही यंत्रों ने दुस्साध्यग्रंथ को अव सुलभकरदिया-इनयंत्रो में रूपे रस के ग्रंथ हमारे दृष्टि गोचर इतने हुए हैं- रसरत्नाकर· रसेंद्रचिंतामणि· अनुपानतरंगिणी· इत्यादि और चिकित्साके ग्रंथ शारङ्गधर· भाव प्रकाश· निघंटरत्नाकर· इनमें भीरसकी कियालिखी है- परंतु एक क्रम सें नही कहे रोगरोगप्रतिन्यारेन्यारे कहे· दूसरे ए ग्रंथ संस्कृत में हैं उन्को पंडित ही समझसकते हैं· अल्पज्ञ नहीसमझसकै इसवात को विचार हमने इस विषय में हाथडाला और यह रसराज सुन्दर ग्रंथको निर्माणकरा- इसग्रंथवनानेके पूर्व हमारा यह विचारथा किकोई छोटा साग्रंथ ४ या ५ जुजका केवल भाषा में वैद्यकसार के सदृश वनावे परंतुजवग्रंथ के आरंभ में मंगलाचरणकेश्लोक धरे तो स्वबुद्धि ने प्रेरणाकरी कि इसी प्रकार मूलश्लोक और भाषा टीका वनाय- तवहमने इस्को उसीरीतिपर वनाना आरम्भकरा इसमें भी संकोचकर जहांतहां भाषाही लिखी जैसे पारेके वद्ध प्रकर्णमें २५ प्रकार से पारेका वंधन होय है उसजगे हमने श्लोकोकी भाषाही लिखदीनी है· श्लोक नही लिखे और धातुन्के शोधन में एकविधि श्लोक वद्ध लिखकर वाकी विधि भाषा में ही लिखी या प्रकार एसरीति सें पारा- गंधक- सप्तधातु आदिको लिखा तो इस्के एकसौं चालीस पत्र होगये· तो इतने कोही समाप्तकर इसग्रंथके तीनखंडकरनेपड़े· पूर्वखंड· मध्यखंड· और उत्तरखंड· इन्में पूर्वोक्तको पूर्वखंडका पूर्वभाग से विख्यातकरा· और यह पूर्वखंडका उत्तर भागकरा इसमें उपरस· उपधातु· महारस· आदिका वर्णनकरा है· दूसरेखंड में साधारणरस· रत्न· उपरत्न· महारत्न· विष· उपविष· इन्का वर्णन होयगा· और तीसरे खंड में ज्वरादिरोगो के ऊपर अनेक प्रकार के सुपरीक्षित दिव्यरस लिखेजायगे· यह एकहीग्रंथ ऐसा है कि इसमे इतनेग्रंथों का मत देखकर वनाया है· रसरत्नाकर· रसेन्द्रचिंतामणि·

रसरत्न समुच्चय· रसमंजरी· रसार्णव· रससिंधु· रसदर्पण· वैद्य दर्पण· रसचंद्रिका· रसदीपक· रसचिन्तामणी· रसराजशंकर· रसेन्द्र पद्मकोश· रससिद्धप्रकाश· क्षीरसिंधु· नंदिकाचार्यतंत्र· पुरंदररहस्य· काकचंडेश्वर· डोडरानंद· रसमंगल· रसकौमुदी· गोरख संहिता· इत्यादि·

इसवात को हम प्रतिज्ञा पूर्वक कहते हैं कि जो उक्त ग्रंथों में रस है वो सब इसमें विद्यमान है और इसमें जो रस हैं वो दूसरे ग्रंथ में कदापि नहीं मिलेंगे परंतु जब इसके तीनों खंड छपकर तैयार होजाय तब इसके गुण दोषोंको देखै परंतु प्रथम ही न देखै – अवहम इस ग्रंथ के ग्राहक जनों से यह सविनय पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि इस ग्रंथ को लेकर अपने मित्रवर्ग जो इसके योग्य है उन्के दृष्टि गोचर करावै कि जिसैं इसकी शीघ्र विक्री होकर और भी इसके दूसरे तीसरे खण्ड· जल्दी छपकर आपलोगों के निवेदन होय· इसग्रंथ के छपने में जो सत्पुरुष सहायक होयेंगे उन्को हम धन्य वाद देवें गे और भगवत् उनका भी मनोरथ पूर्ण करेगा – प्रत्येक वर्ष में हम वैद्यक की दो चार पुस्तक नवीनछापकरतैयार करते हैं जिन्को हमसें आर्डर करना हो सो नीचे लिखे ठिकाने सैं पत्र लिखे जोन जौन ग्रंथ छपैगा वो उन्को तुरंत भेज दियाजायगा ॥

पं॰ दत्तराम चौवे
नई सड़क
(मथुरा)

हस्तलिपि गोपालदास शर्म्मा

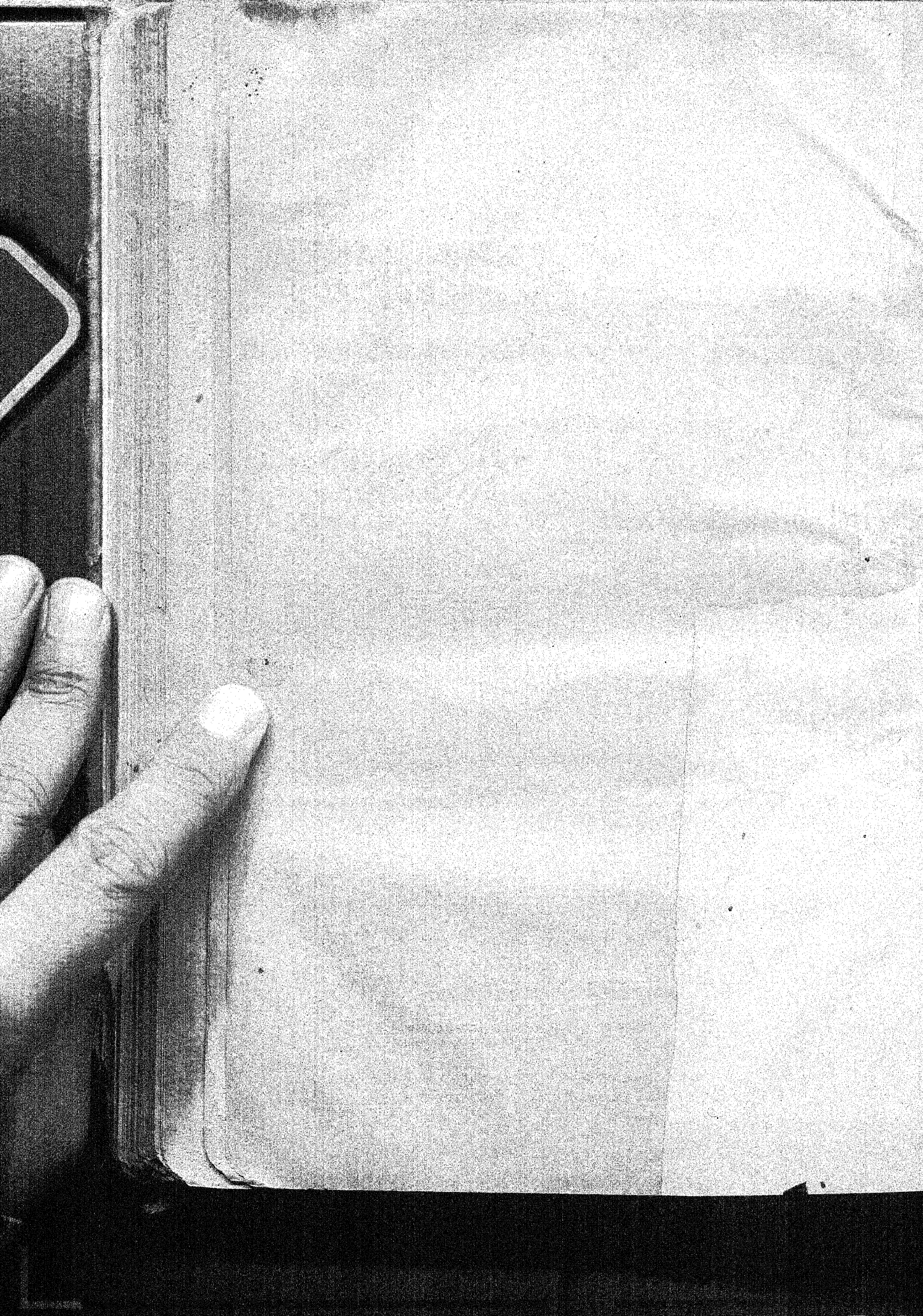
नाम पुस्तक	मौ·	नाम पुस्तक	मौ·	नाम पुस्तक·	मौ·
रामायणतु·कृ·भा·	३)	सत्यनारायणरास	७)	मानलीला	४पा
ब्रजविलासदेसी	२॥)	हीररांझा झूलने	७)	आरसीझगडा	२पा
ब्रजविलास हाल	३)	कविहृदयविनोद	२॥)	गोवर्द्धनलीला	२पा
अमृतसागर	॥=)	गोपीपचीसी	।॥	नागलीला	२पा
गणितकामधेनु	३॥)	अष्टाध्याईदेशी	॥)	कौतुकरत्नमंजूस	॥)
मुहूर्त्तचिन्तामणि	१ु	प्रल्हादसांगीत	७)	सुन्दरीतिलक	॥)
मथुरामाहात्म्य	३)	बैतालपचीसी	ु	विदुरप्रजागर	।)
वनयात्रा	ु	करुणाबत्तीसी	।॥	भ्रमरगीत	।॥
चौरासीवार्त्ता	२॥)	जमुनाजीकेपद	।॥	बांसुरीलीला	।।
वचनामृत	॥)	वा· खैराशाह	४पा	मालिनलीला	।।
वल्लभाख्यान	ु	वा·रामचंद्रकी	४पा	गन्धिनलीला	।॥
सिक्षापत्र	।)	तथाछोटी	२पा	दधिलीला	।।
प्रागट्य	१ु	वा· चौमासा	४पा	चुरहारीलीला	।।
दामोदरलीला	।॥	वा· द्रौपदीजी	४पा	रासपंचाध्याईनं	।)
ज्ञानमाला	७)	वा·जाहरमल	४पा	दशसकन्त	।॥
सनेहलीलासनेही		कन्हैयाकाबालप	४पा	कौतुकनासचाली	ु
रामकृत	ु	शास्त्राचारप्रभाव·	४पा	कृष्णजन्मखंडभा	३)
ढोलामारू सु·	३)	श्यामसगाई	४पा	रामाश्वमेधभाषा	३)
आरसीलीला	।॥	लैलैमजनू	४पा	रघुरसकलिका	॥)
दानलीलाटी·कृ·	।॥	संकटमोचन	२पा	रामायणकेजुदेश	
कालीलीला	७)	कुब्जागृहप्रवेश	२पा	खराड	
कृपाचरित्र झूलने	।॥	जोगलीला	।॥	सारस्वतमूलपद	
हरदिलअजीज	३॥)	रसिकफाग	।॥	छेदसहशुद्ध	७)

प्रथम खंड का ४ पाहिला भाग २



...ालय में रामनरायनके प्रबंध सेछपा॥

...नों को इस ग्रंथ के लेनेकी इ-
...को पण्डित दत्तराम की दूकान
...ी शहर मथुरा में पहलीवार १...



रसराजसुन्दरकेप्रथमखण्डमें पूर्वभागकासूचीप

इस खंडके पूर्वार्धकी समाप्ति १५०

प्रसिद्धपत्र

सब अमीर गरीब पंचालय वाले और ताजर कु
त्रुवोंको मेरी यथायोग्य प्रणाम और सलाम
...हैं वे आगे यह मेरी प्रार्थना को आप लोग प्र
...कार करें तो मैं बहुत प्रसन्नता पूर्वक आप
...वाद दूंगा आगे यह पुस्तक सुंदर
...पाके विना न छापै और जिन
...ी पुस्तक लेने की इच्छा हो मुझ
...कि पापत्र नीचे ठिकाने के भेज
...वैं उनकी आशा घर बैठे पूर्ण होगी

दत्तराम चौबे ॥

ठिकाना

नई सड़क (मथुरा)

इष्टव्यप्रस्तावना

आत्मानं सततं रक्षेत्

अर्थ- इसमनुष्यको चाहिये कि अपने आपेकी निरंतर रक्षा करे और ऐसी लिखा है

अतोऽन्यप्रयत्नतु रक्षेन्नरः कर्मविपाकवित्
धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं यत:

अर्थ- बुद्धिमान मनुष्य इसी कारण रोगोंसे देहकी रक्षा करे क्यों· कि धर्म· अर्थ· काम· मोक्ष· का साधन केवल देहसे ही है और भा· षामें भी किसीने कहा है (सौं निपामत न एक तंदुरुस्ती) इसीसे दे हरक्षा करनेके यत्न अनेक हैं परंतु ईश्वरने वैद्यविद्या इसके निमित्त अद्वितीय और अनोखी प्रगट करी है यह विद्या प्रत्येक देशोंमें भी (विलायतोंमें पृथक् २ रीतिसे प्रचलित है परंतु हिन्दुस्तानमें मु ख्य यह तीन भेदसे प्रवृत्त है १ वैद्यक २ यूनानी ३ डाक्टरी परंतु इ नमें मुख्य विद्या संस्कृत वैद्यक ही है क्योंकि सब विद्याकी माता य ही कहाती है और सब विद्या इसीकी अनुगामी हैं कुछ २ देशभेद होनेसे फरक पड़ता है परंतु थोड़े कालसे यमनलोगोंने इस विद्या· को कुछ २ भ्रष्ट करा क्योंकि इसमें कादेआदिक दुःऔषध सुकुमा र मनुष्योंको अहित होनेसे परंतु वाह वाह रे हमारे हिन्दुस्तानके· गुरु व शास्त्र देवोंको कि उन्होंने तुरंत शिवप्रोक्त अतिचमत्कारी रसविद्या गुप्तको फेर प्रगट कर दिखाया कि जो औरोंकी मे काम करै सो इसकी चामत्कार और रत्ती तुसी काम करोक सी से हमारे शास्त्रमें रसके ज्ञाताको ही वैद्य लिखा है

रसवैद्यो भवेद्वैद्यो मानुषो मूलक
प्रथम: शास्त्रदाहाभ्यां सिद्ध वैद्य

परंतु आज तक ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं था जिस और भाषाटीका हो इस कारण मैंने (यह रसरा जाना कि यह इसके तीन खंड हैं उसमें भी प्रथम खंड में पारसंधक और रसस्थानका शोधन मारण द्रावण

श्री

श्रीराधावृन्दे

श्रीनिकुञ्जविहारिणेन·

ॐनमः

अनेकविघ्नवृन्दविघातार्थ - और ग्रन्थकी निर्विघ्नसमाप्तिके निमि त्त ग्रन्थकर्त्ता अपनेनिजेष्टदेवश्रीराधाकृष्णकों नमस्कारपूर्व्वकम· ङ्गलाचरणकरैहैं प्रणम्येति ॥

प्रणम्यराधापतिपादपंकजं गुरोःप्र
सादाद्रसराजसुन्दरम् मथोर्व्वनेमाथु
रनन्दनोहम् कुर्वेमुदेवैद्यविदांमनी
षिणाम्

अर्थ- श्रीनिकुञ्जविहारीराधाकृष्णके चरणकमलकोप्रणामकर-श्री मधुपुरीमें माथुरनन्दनजो दत्तराम मैंहों सोगुरुकेप्रतापते और श्रेष्ठ वैद्यविद्याकेजाननेवारे वैद्य तिनकेप्रसन्नताकेअर्थ रसराजसुंद र ग्रन्थकोंरचौंहों ॥१॥ याग्रन्थमें रस (पारद) कोंमुख्यहोनेते पुनः एकश्लोकते पारदकों प्रणामकरैहैं यंज्ञात्वेति ॥

यंज्ञात्वादितिनंदनाह्यमरतामापुर्वने
नन्दने मोदन्तेपवनानियस्यपतनान्न
ष्टेंतिरोगामृगाः यंहष्ट्वाविरतेशशीरश
रणोमुंचंतिप्राणान्वरम् नेशैवंशिव
देशशोकधवलंवन्देपरंपारदम् ॥२॥

अर्थ- जापारेकों देवगणभक्षणकरके अमरत्वकों प्राप्तहै नंदनवनमें क्रीडाकरैहैं- औरजाकेपतननतें पापनकी पोटलोटपोट होयहै- औ जाकेदर्शनमात्रतेंही रोगरूपभुग देहरूपअपनेस्थानकोंत्यागकरके रगादशाकोंप्राप्तहों ऐसोचंद्रमाकेसमानस्वच्छ शिव परात्पर पारदको हमारोनमस्कारहै ॥२॥

पारदप्रशंसा

केदारादीनिलिंगानिपृथिव्यांयानिकानिच
तानिदृष्ट्वातुयत्पुण्यंतत्पुण्यंरसदर्शनात् ३

अर्थ- श्रीकेदारतेंआदिलेपृथ्वीमेंजितने शिवलिंगहैं तिनकेदर्शननतें जोपुण्यहोयसोपुण्यपारदकेदर्शनमात्रतें होयहै ॥३॥

तथाच

शताश्वमेधेनकृतेनपुण्यंगोकोटिभिःस्वर्ण
सहस्रदानात् नृणांभवेत्सूतकदर्शनेन
यत्सर्वतीर्थस्यकृताऽभिषेकात् ॥४॥

अर्थ- जो सौ अश्वमेधयज्ञकरनेतें पुण्यहोय औरजो किरोड़गोदानतेपुण्यहोय औरहजारतोलेसुवर्णदानदेनेतें जोपुण्यहोय औरजोसर्वतीर्थकेस्नाननतें पुण्यहोय सोपुण्य मनुष्यनकों पारदकेदर्शन मात्रतेंहोयहै ॥४॥

सुरगुरुगोद्विजहिंसापापकलापोद्भवंकि
लासाध्यम् चित्रंतदपिचशमयतियस्त
स्मात्कःपवित्रतरः ॥५॥

अर्थ- देवकेअपराधतें गुरु गौ ब्राम्हण केमारनेतें तथा अनेकपाप केकरनेतें प्रगटजेकुष्ट छर्दि भगंदर आदि असाध्यरोग तिनकोंभी यहपारद शांतकरैहै यातेंपरे औरकौन ऐसो पवित्रतरहै ॥५॥

प्रत्यक्षेणप्रमाणेनयोनजानातिसूतकम्
अदृष्टविग्रहंदेवंकथंज्ञास्यतिचिन्मयम्

अर्थ- जोमनुष्य प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर पारदस्वरूपदेवकोही नहींजाने सो अदृश्य देहरहित ब्रम्ह चिन्मयको कैसेजानेंगे अर्थात्नहींजानेंगे-

रससंख्या-

एकएवरसोज्ञेयोबहुधोपरसास्मृता ॥ ॥

अर्थ- रसजोहैपारा सोएककहीहै औरउपरसघनेकहैं ॥ + ॥

पारदनिंदादूषण

यश्चनिंदतिसूतेन्द्रंशंभोस्तेजपरात्परम् ॥
सयातिनरकेघोरे यावत्कल्पविकल्पना ७

अर्थ- जोमनुष्यशंभुको परात्परतेजस्वरूपपारेकीनिंदाकरैहै सोमनुष्य यावत्कल्पकी विकल्पनारहैगी तिसनेवर्षपरियंतघोरनर्कमेंपड़ैहै

पारेकीजाति-

श्वेतपारा ब्राह्मणहै यहकल्पविषयमेंलेनोचाहिये- लालरंगकोपारा क्षत्रीजातहै यहगुटकाबनानेमें ग्रहणकरणाउचितहै- पीले रंगकोपारो वैश्यजातहै औरयह धातुकियाअर्थात्रसादिकबनानेमें लेनायोग्यहै- कालेरंगकापारा शूद्रजातहै यह औररद्दतकर्म करनेमें योजनाकरै ऐसें पारदकेचारभेदहैं ॥

सदोषपाराजारणनिषेध

सदोषोभस्मितोयेनदोषस्ताद्योगकर्मणि ॥
सभिषक्पततेनर्केयावच्चंद्रोदिवाकरः ८

अर्थ- जोवैद्यने शोधनकरेबिना पारेकीभस्मकरी औरसदोषभस्म योगमेंडारै- अथवा रोगीकोदेइ सोवैद्य जवतलकसूर्य्यचन्द्रहैं तवतलकघोरनर्कमें वासकरैं + यहपारेको तो उपलक्षणमात्रदिखायदीनो है ऐसेंही औरसवधातु उपधातु रत्न उपरत्नकोभीजानना अर्थात् कोईरसधातुआदिविनाशोधेकार्य्यमेंनहींलानी

पारदेदोष-

नागोवंगोमलोवन्हिश्चांचल्यंचगिरोविषम ॥

पारदे कंचुकाः सप्त संति नैसर्गिका पुनः ॥
एते तु सप्त दोषाश्च कुर्वंति प्राणसंकटम्

अर्थ- पारदमें- सीसा- वंग- अग्नि- चंचलता- गिरिदोष- विष- और सात कांचली- ए सात दोष उत्पत्तिके संगही प्रगट होइहैं- और येही सातदोषसंयुक्त पारदके खानेसें प्राणकों संकटदायकहै

सातदोषोंके पृथक् २ औगुन

सीसेसें गंडरोग- वंगसें कोढ- विषदोषतें मृत्यु- गिरिदोषतें जडत्व- कांचलीसें वीर्यकानाश- अग्निदोषतें संताप- चंचलतादोषते मूर्च्छा ये अशुद्ध पारेके अपगुणहैं याते पारदकों अवश्यशोधनकरै सोशोधनप्रकार क्रमसें हमलिखतेहैं सोजानना

पारदके अष्टादशसंस्कार-

स्यात्स्वेदनं तदनु मर्दनमूर्च्छनंच स्यादुत्थितिः पतनबोधनियामनानि संदीपनं गगनभक्षणमानमत्र संचारणा तदनु गर्भगतिर्द्रुतिश्च बाह्यद्रुतिः सूतक- जारणा स्याद्ग्रासस्तथा सारणकर्म पश्चात् संक्रामणं वेधविधिः शरीरयोगस्त्वथाष्टादशधा च कर्मः

अर्थ- स्वेदन- मर्दन- मूर्च्छन- उत्थापन- पातन- बोधन- नियमन- संदीपन- गगनभक्षण- संचारण- गर्भगति- गर्भद्रुति- बाह्यद्रुति- जारण- ग्रास- सारण- संक्रामण- वेधविधि- शरीरयोग येअठारह संस्कार और कोई आचारी उन्नीसमों शरीरयोगको कहतेहैं- और कोऊ आचारी आठही संस्कार मुख्य मानते हैं- वे कछु नहीं उन्नीस संस्कारके अंतर्गतहैं उनपरहमने अंककरदीन्हें

पारदके भेद-

पारद चारप्रकारकाहै- आरोटक- मूर्च्छित- बद्ध- मृत- येचारहीअव-

स्याहै-आरोटक-उसेकहतेहैं जोपारादीपनान्तसंस्कारसेशुद्धहोई और चंचलहोइ-अथवा-दीपनान्तसंस्कारनहोइ-केवलसिंगरफसेंही निकालागयाहोइ-सोभी आरोटककहावे येदोनोंकिया नीचेलिखेहैं-पहिलेघोटनेकेलिये खरल जरूर चहिये सो लिखेहैं ॥

खल्वलक्षण

खल्वोलोहमयःश्रेष्ठःतस्माच्छुभ्राश्मजः
कान्तलोहभवस्तस्मान्मर्दकश्चतथाविधः
अभावेलोहखल्वस्यस्निग्धपाषाणजःशुभः
तादृशःस्वच्छमसृणमर्द्दकेनसमन्वितः

अर्थ-खरललोहेकाउत्तमहै-तातेउत्तमसारको-औरसबते श्रेष्ठकान्तिलोहेको-कह्योहै-जैसोखल्वहोय तैसेंहीघोटनेकी मूसलीहोइ-औरलोहखल्वकेअभावमें चिकनेपत्थरका-स्याम्सा औरसिंगमरमरतथाचीनीका लेनाठीकहै-परंतुभीतरतेस्वच्छऔरचिकनाहोय जातेऔषधघोटनेसेकमतीवढतीनहोइ और घोटनेकी मूसली संयुक्तहोय

प्रसंगवसतेतप्तखल्वके लक्षण

अजाशकृतुषाग्निंचखातनिखाभुविक्षिपेत्
तस्योपरिस्थितंखल्वंतप्तखल्वमितिस्मृतम्

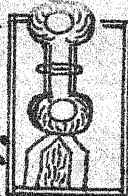
अर्थ-धरतीमेंगढेलाखोद औरउसमें बकरीकीमेंगनीभरे औरतुष में अग्निजलाय ताकेऊपरखल्वकोधरकरऔषधीघोटे ताकोतप्तखल्वकहतेहैं येविशेषकरके बहुतरसपडजाताहै अथवा बहुत रसजिसहममें छुटानाहोइ तब इसीतप्तखल्वकेद्वारा छुटाते हैं ॥

पारदशोधनं

राजवृक्षोमलंहंतिपावकोहंतिपावकम्
अंकोलश्चविषंहंतिकुमारीसप्तकंचुकान्

* खर्लकाविस्तार * खल्वपोध्याशिलानीलाप्यमास्निग्धादृढागुरुः षोडशांगुल चौडाईमेंहो-तथा-चौवीसअंगुललंबाईमेंहो-और-घोटनेकी-मूसली१२अंगुलकीहो। ... चतुर्विंशांगुलादीर्घाघर्षणीद्वादशांगुला अर्थ-सोलहअंगुलकं चावमेंहोइ-औरनौअंगुल- ... लंबाइ ... है ॥

अर्थ- अब पूर्वोक्त आखोट संस्कार अर्थात् पारेकी शुद्धी लिखैहैं पारेको अमलतासके काढेसें दोदिनघोटै तौ मलदोषदूरहोइ- औ चीतेकेरसतें अथवा काढेतें दोदिनघोटै तौ पारेमें जोअग्निदोष रहैहै सोदूरहोय- अंकोलकेकाढेतें पारेको दोदिनघोटै तौ विषदोषदूरहोइ- औरग्वारपट्ठेके रससें दोदिनघोटनेतें मानकाचलीनकादोष दूरहोइ ❖ यहपारदको मर्दनाख्यसंस्कारहै ❖ फेरइसकोसुखायकर डमरूयंत्रमें भरै पीछे दोपहरकी अग्निदेकर पारेकोउडाले तबयहपारा मर्दनसंस्कारकरके शुद्धहोई-



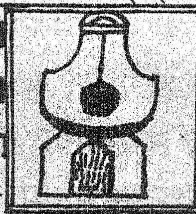
डमरूयन्त्र

निंबूरसैर्निंबपत्रैः रसैर्वायाममात्रकम् पिष्ट्वादरद मूर्ध्वंचपातयेत्सतयुक्तिवत् ततःशुद्धरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् ॥

अर्थ- अथवा यह दूसरो संस्कारकरै- सिंगरफकी डलीको नींबूकेरसमें अथवा नीमकेपत्तानकेरसमें घोटपहरएक फेरडमरूयंत्रमें भर दोपहरकी आंचदेकर पारेको उडायलेइ तौयहपारा सप्तकंचुकी और सर्वदोषरहित होय- याकों सबयोगमेंडारनाचाहिये

स्वेदनसंस्कार

तदनंतर पारेके खण्डत्वदूरकरनेके निमित्त स्वेदनसंस्कार याप्रकारकरै- पारेको दोलरकपडेमेंबांधै और एकहांडीमें- जलभांगरो नोनियां- गोमा- जलपीपल- इनचारोंका रस भरै और उसमेंपारेकी पोटली लटकाय देइ औरउसहांडीके नीचे चारपहरकी दीपकअग्निदेइ यहदोलायंत्रहै- तदनंतर पारदकेमुख करनेके निमित्त औरपारदके पददूरकरनेकेअर्थ तथा पारेके सुखकरवेकेनिमित्तयहउपाय करैसोलिखताहूं ॥



दोलायंत्र

विषोपविषकेमध्ये: प्रत्येकंदिनसप्तकम्

तेनास्यजायतेवन्हिः पक्षछेदोमुखंतथा

अर्थ- शुद्ध पारेको- कालकूट- वत्सनाभ- सिंगिया- प्रदीपन- हालाहल- ब्रम्हपुत्र- हैरीदूक- सक्तुक- सौराष्ट्रिक- यनोविषहै प्रत्येकविषमें सातसातदिनघोटै औरडमरूयंत्रमें उडायलेइ- तथा- आक- थूहर- धतूरा- घोंघची- करिहारी- कनैर- येसातउपविषहैं इनमेंसातसातदिनघोटकर पूर्वोक्तरीतिसेउड़ाइलेइ- परंतु- जो विषकामिलना कठिनहै यातें केवल सिंगिआदिविषमें सातोंउपविष पूर्वोक्त केरस सें सातसात दिनघोट डमरूयंत्रमेंडारके दोपहरकी आंचदेकर उड़ाइलेइ परंतु यहभीयादजरूर रखना चाहियेकि यदि दोपहरमें सबपारा नउड़े तो फेरअग्निदेकर बाकी- उडाइलेइ और यहबातभी यादरखनेयोग्यहै कि जासमेंडमरूयंत्र अग्निपै चढावै उससमय डमरूकी ऊपरली हांडी पर पानीकाभीजाकपड़ा कापोता फेरताजाय किजासें ऊपरकीहंडियाशीतलरहे- फेर मर्द्दनसंस्कारकरै॥

मर्द्दनसंस्कार

ककुंदेलोशिकाद्रोणीजलपिप्पलिकातथा
एषांरसैस्तेपश्चात्मर्दयेद्दिनसप्तकम् ॥

अर्थ- पूर्वोक्तविष- उपविषमें घोटके उड़ायाभयापारा सेरभरकाजवआधसेररहिजाय- ताको- जलभांगरा- लोनिया- गोमा- जलपिप्पली- जिसको पूरबके वैद्य गंगतिरियाकहतेहैं- इनचारोंकारस आध आधसेरलेइ- सबको येकत्रकर- इसमें पारेको सातदिनघोटै

उत्थापनसंस्कार

घर्मेसंशोध्यगृह्णीयात्पारदंवस्त्रमध्यतः

अर्थ- आठमेंदिन- इसघुटेभयेपारेको घाममें सुखायके- खालसेनिकासलेइ इसकानामउत्थापनसंस्कारहै

उक्तौषधिरसैर्घस्तेदोलायंत्रेणपाचयेत्

अवशिष्टरसैः पश्चान्मर्दयेत्पातयेदपि ॥
मर्दनाख्यं हि पक्षं तत्संस्कृते गुणाकृद्भवेत्
पुनर्विमर्दयेत्तस्माच्चतुर्दशदिनान्यमुम् १
द्रुतं पातनया नपुंसकममुं पत्नेनरुद्वांवरे
सिंधुत्र्यूषणमूलकार्द्रहुतभुक्राज्यादिकैरन्
कान्विते भांडकांजिकपूरिते दृढतरे मध्ये
शुभेवासरे दोलायंत्रविधानविच्चित्रिदिवसं
मंदाग्निना स्वेदयेत् २ स्वेदनदीपनतो:
सौ ग्रासार्थी जायते सूत: दीपितमनेसूतं
जंबीराम्लेन धारयेत्पश्चात् ३ दिनमनुवा
सनमेवं नवमं संस्कारमिच्छंति ॥ ॥

अर्थ- पारद को पूर्वोक्त औषधीन् के रसमें फिर मर्दनाख्यसंस्कारक
रै- यापकार उनचारों औषधीन के रसमें चौदह दिन घोटै- क्योंकि-
बहुत मर्दन करनेसे पारद में बहुतगुण उत्पन्नहोइ हैं- तदनंतर-
चौदह दिन के उपरान्त पूर्वोक्त उत्थापन संस्कार करै- पीछे पारद के
खंडत्व दूरिकरवे के निमित्त दूसरे पातिति ते स्वेदन संस्कार करै-
सैंधोनोन- सोंठ- पीपर- कालीमिर्च- मूरीकेबीज- अदरख- राई- ये
सब औषध छदाम छदाम भरलेइ सबकोकांजी के पानी में पीसकर
कपराम्में चार पहर तक खूबलेपकरै- फिर उसकपराकी चार तहक
र- औरतामें पारोबांध हांडी में डोलायंत्र कर के लटकायदेइ- और
उस हड़ियामें कांजी को पंद्रहसेर पानी भरदेइ- तीन दिन धीमी-
आंचदेइ- स्वेदन संस्कारते पारे में दीपन संस्कार उत्पन्न होय है
औरदीपन संस्कारते मास भूखा और धातुखायवेको समर्थ होइहै
और पारे को खंडत्व कहे निरबलता दूरहोय और बली होइहै-
याप्रकार स्वेदन करिके वस्त्रते निकासि लेइ- फेर यामें अनुवास
नसंस्कार- करै- सोअनुवासन संस्कारकरिवेकी विधी यह है- एकहां

डीमेंपारा३हरि निसें कागदीनीवूकोरस डारै एकदिनधूपमेंपारदेयभी
देनिकासलेइ "।" यहअनुवासनसंस्कारहै ॥

सहस्त्रनिंवूफलतोयघृष्टोरसोभवेद्वह्निसमः

प्रभावः

अर्थ- अथवा हजार नीवूकेरसमें पारेकोघोटनेसें पारासुद्ध औरअग्नि
होयहै अथवा पारेको क्षार वर्ग में और अम्ल वर्ग में घोटनेसें पारेकें
मुख और क्षुधा प्रगट होयहै सो ग्रन्थान्तर में लिखाभी है - यथा -

ततःखल्वेनतप्तेनअम्लेनोत्थापयेद्रसम् ॥

क्षारामुखकराःसर्वे सर्वेअम्लाप्रवोधका ॥

अर्थ- अर्थात् पारेको तप्तखल्व में अम्लवर्ग को डारकरउत्थापनसं
स्कार करै क्योंकि सबक्षार मुखके कर्ता हैं और सब अम्ल बोधक हैं

अथअम्लवर्ग

अमलवेंत- जमीरी- नीवू- बिजोरा- चनाखार- इमली- बेर- अनारदाना-
तंतिड़ीक- नारंगी- सन्- करोंदा- चूका- इनसे आदिले औरभी जोखट्टी
औषधें हैं इनको अम्लवर्ग कहते हैं- और जिनपर अंक हैं उनको
अम्लपञ्चक कहते हैं परंतु सबखटाईन में चनाखार की और अमल
वेतकी खटाई श्रेष्ठहै- यहअम्लवर्ग है ॥

क्षारवर्ग

पलासकाक्षार- पादरकाक्षार- जवाखार- सज्जीखार- तिलकाखार- सुहा
गो- यह क्षार वर्ग है- इनमें सें सुहागे को छोड़कर क्षार पंचक कहावैहै
और जवाखार- सज्जीखार- सुहागो- ये क्षारत्रय कहावैं हैं ॥

तथाच

क्षाराम्लैर्लवणैर्मूत्रैर्विषैरुपविषैस्तथा द्विधो
पधिसमद्देनमर्द्दयेद्दिवसत्रयम् पारदस्यक
लोशेनभेषजंनप्रमर्द्दयेत् ॥

अर्थ- क्षारवर्ग- अम्लवर्ग- लवणवर्ग- मूत्रवर्ग- विषवर्ग- उपविषवर्ग-

१८ दिव्यऔषध इनप्रत्येकमें तीन३दिनघोटै तोपारासुद्धहो
य॥ औरवहुतसे वैद्योंने पारदको दुग्धवर्ग मूत्रवर्ग तैलवर्ग
वसावर्ग क्षारवर्ग शुक्रवर्ग रक्तवर्ग कामवर्ग नीलवर्ग मृत्तिका
वर्ग इनमें घोटनालिखाहै सोहमनेग्रंथविस्तारकेभयसे और पार
दकेसिद्धकरनेवालोंके अतिपरिश्रम बचानेकेलिये नहींलिखे
अवपारेकामूर्च्छाप्रकारलिखेहैं हमनेऊर्ध्वपातन और तीर्यक्पात
नभीग्रन्थवढनेकेभयसेनहींलिखे येसवग्रन्थान्तरसेंबुद्धिमानजा
नलेहुगें यादरहोकि मूर्च्छाप्रकार दोप्रकारकाहै एकगंधककेयोगसें
दूसरागंधकरहित अर्थात् औषधीनसें अववकहतेहैंकिऔषधकेद्वा
राजोमूर्च्छाहैसोपहिलेकहिचुकेहैंजैसें (विषोपविषकेभेद) इत्यादि
औरगंधककेसंयोगसेंहोय सो चंद्रोदयआदिजानना॥

चंद्रोदयकीप्रथमविधि

ततस्तस्माद्विनिस्कास्यपारदंतोलयेद्विध
क तत्तुल्यंगंधकंदत्वाकुर्यात्कज्जलिकांद्व
योः द्रोणावुकणाद्यानीरैर्मर्दयेच्चदिनद्वयं
संशोष्यवालुकायंत्रेधामानष्टौततःपचेत्
मंदमग्निततःकुर्याद्याममचतुष्टये ततो
द्वितीयपत्रेनतीव्रमग्निंप्रयोजयेत् ततःकृ
प्यासमुद्धृत्यपारदस्यास्यचक्रिका तत्तुल्य
गंगंधचद्दत्वाद्विचक्षणः पुनस्तयोर
सेनमर्दयेदेकवासरं चतुर्यामंपचेदग्नौ
येनजीर्यतिगंधकः ॥

अर्थ- पूर्वोक्तप्रकारसें पारेकोशुद्धकरचुके तवपाकोतोलेय
दिपारो१६ पैसाभरहोयतो आमलासारगंधकपैसा१६भरशोधीभई
लेयगंधकशुद्धकरनेकीक्रिया आगेगंधककेप्रकरणमेंलिखेंगे
पीछेइनदोनोंको खरलमेंडारकजलीकरैरसमेंजलपीपलजिस्कोपरवकेवैं

तिरिया कहते हैं और गूमा इन दोनों के रसमें इस कजलीको दोदिनघोटै जबसखजाय तब एकसेरकी बड़ी आतसी सीसीलेय उसपै प्रथमकपरौटीकर घाममें सुखायलेय पीछेइससीसीमेंक जलीभर १ एकसुंदरहांडीमेंधरेहांडीकेनीचेकेउ पैसाभरकाछेद करेछेदके चौगिर्द गीलीमाटीलगावैजासे हांडीकोबालूननिकसै औरछेदकेनीचे एकलम्बीटीकरीधरै टिकरीकेदोनोंबगलकेछेदखुलेरहैं ताकेऊपरसीसीधरै औरहांडीको बालूरेतसे मुखपर्यंत भरदेय सीसीकीगर्दनबालूसेबाहररहै पीछेचूल्हेपरचढाके दो लकड़ीकीआंच चारप्रहरमंद और चार प्रहरतेजदेय जबआंगसी तलहोयतब सीसीकोफोरके पारेकीचांदी निकासलेय उसचांदी मेंजोगंधककीराख लगीहोय ताकोछुरीसेछुड़ायडालै फेरउसचां दीकोखरलमेंडारपीसै फेरगूमाऔरजलपिप्पलीकेरसमें एक दिनघोटै जबसखजायतब पूर्वोक्तप्रकारसे सीसीमेंभरकरवालु कायंत्रमें चारप्रहरकीमंद अग्निदेयजासे अवसिष्टगंधकज रिजाय· तदनंतर गंधककेजरिवेकी रिछाकरै -

अथ गंधकजीर्णकीपरीक्षा

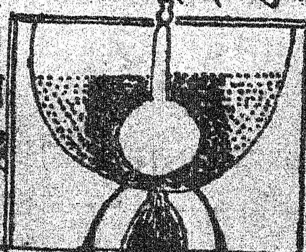
याममेकंपरित्यज्ययामेषु त्रिषुबुद्धिमान्
पुनर्यामार्द्धकंकूप्यांक्षिप्त्वादीर्घत्रिणाहृदे
गंधस्यतेनकलेनाजीर्णाज्जीर्णत्वनिर्णयः
जीर्णेगंधेविदग्धंस्याद्जीर्णेगंधकान्वितं

अर्थ- जबअग्निदेयतबपहिलेप्रहर परीक्षानकरै दूसरेप्रहर सेलेकरतीसरेप्रहरतक परीक्षाकरै दूसरेप्रहरकीजबचारघड़ीबी तिजाय तबएकसींकलम्बीऔरकरीसीसीमेंगेरै जोसींकजरीनि कसैतोजानै किगंधकजरगई तबउससीसीकोअग्निसेउता रलेपनहींतोसब गंधकजरिजाय गंधककेजरनेसेपाराउड़िजायहै गंधककेहीआश्रयसे पाराअग्निपरठहरैहै और जोपिघलागंधक

संपुट सींकनिकसै- तौजानै कि गंधक जीर्णनहीं भया- तवफेर निडर होयकें आंचदेय जवतक गंधक जीर्णहोय- ऐसें तीसरे- प्रहरकी चारघरीउपरांत फेरपरीक्षाकरै- तथा चौथे प्रहरकी- चार घरी उपरांत परीक्षा करै जव गंधक जरिजाय तवआंचतें उतार सीसी फोर के पारेकी चांदी निकास लेय और चांदी के पास- जो गंधक की राख लगीहोय उसे छुरीसे छुडायकर साफकरलेय

जीर्णे गंधे रसं ज्ञात्वा तोलयेत्कुशलो भिषक्
ततो गंधचतुर्थांशं दत्वा सूतं विमर्दयेत् ।
पूर्वोक्त पोरसैर्मर्दैचतुर्थांमं चणाचयेत् ।
स्वांगशीतलमुत्तार्य विषं कर्षमितं क्षिपेत्
दृढं विमर्दयेत्सूतं तं पोरवरसैर्दिनम् - ॥
मंदाग्निना पचेत्पश्चात् चतुर्याममतंद्रितः
निर्मुक्तगंधकस्तर्हि जायते सौरसेश्वरः ॥
अंते तुलितसूतेन तुल्यमानो यदा भवेत् ।
तदा सिद्धः परिज्ञेयो रसश्चंद्रोदयो बुधैः १।

अर्थ- फेर पाचांदी को तोलै कि यह पहिली चांदी की वरावरहै कि कम- यह विचारकर के यामें पारे कीचतुर्थांश अर्थात् चारपैसाभर शुद्ध गंधकडारै- चांदीकी चतुर्थांश नडारै- फिरदोनों की कज्जलीकर- गोमा- और जलपिप्पली के रस सें एकदिनघोटै फेरइसको सुखाय- आतसी सीस में भरकर वालुका यंत्र में चार प्रहरकी- मंदआंच देयजामें दोपैसेभर गंधकजरै *एकपहर तेजआंच देनेसें पैसाभर गंधक जरैहै- और एकपह र मंदआंच देनेसैं धे- लेभर गंधकजरैहै- यहसिद्धांतहै *इसी हिसाबसैं चारपहरमें मंदआंचसे दोपैसेभर गंधकजाती है जव गंधकदोपैसेभरजरजाय तवसीसीकोफोरकर-


वालुकायंत्र

चांदीनिकासलेय गंधककीराख छुरीसेदूरकरै- फेरखरल में डार-
औरइसमें धेलाभर शुद्धसिंगियाविषडारै * सिंगियाविषकाशो-
धनविषकेप्रकरण में लिखेंगे * और इसमें गंधकनडारै एकदि
नगोमा औरजलपिप्पलीके रसमें दोनोंको घोटकर पूर्वोक्तप्रका
रसें बालुकायंत्रमें चारपहरकी मंदआंचदेय * आंचदेनेकेनिमि
त्त बबूरकी लकड़ी चारअथवा पांच अंगुल मोटी और पेंकड़ा
यकीलम्बीलेनीउचितहै * ऐसेंआंचदेनेसेंअवशिष्टगंधकज-
रजाय औरविषके डारनेसें चांदी गंधक कीराखछोडकें बैठतीहै
छुरीसें खुरचनेकीअपेक्षा नहींरहै- पीछें चांदीको तोलै जो पहि
लीचांदीकीबराबर वजनमें होय तोजानैकि चंद्रोदय सिद्ध
होगयो- औरतोलमें पहिली चांदीसें अधिकहोय तो फेर-ग-
मा औरगंगातिरियाके रसमें एकदिनघोटकर चारपहरकीदीप
कआंचदेय जोअधिकआंचदेय तो पाराउड़िजाय- ऐसाकें
ईवेरभयाहै- यासें मंद अग्निदेय * अथवा- सोधासीसा पैसा-
चारभर पिघलाय औरयामें पारा २६ पैसाभरमिलायकर शीतल
करलेय तबसोलह पैसाभर गंधकमिलाय पूर्वोक्तप्रकारसें इ
सका आरंभकरै तो तेजआंचसेंभी नहींउड़ै- याबातको कोईवैद्य
नहींजानैं- केस्याराम ह्रकहतेहै- यह मैंनेकियाहैसो सबवै
द्योंकेवास्तें लिखदीनाहै- इसचंद्रोदयको पीसकर अंगरेजी
सीसीमेंधरराखै * इतिचंद्रोदयकीपहिलीविधिसमाप्त * ॥-

अथगुणाः

सद्योजीर्णविपाचनोऽग्निजननो विद्रवं
धद्द्रवांतिद्रुतं मनश्चावमपाकरोति
मदनप्रोद्बोधकर्तारसो मूर्छांहंति स
हिक्कषुमधुयुतो वल्लः प्रमादाद्धक्तन्
शैत्यंस्वेदहरः प्रमेहशमनश्चंद्रोदयाख्यो

रसः कासेश्वासेफिरंगाख्येरोगेचपरमोहितः
अपिवेदशतैस्तस्यकामर्हंचिंचनियच्छति ॥४॥

अर्थ- चंद्रोदयतोला१ लोंगतोला२ दोनोंकोमिलायकेखरलमें एकघटीघोटे फिरइसमेंसेदो२रत्तीकीपुरियाबांधे रोगीकोएकपुरिया खानेकोदेयतोअजीर्णकोशीघ्रनाशकरै औरमलबंधकेदर्दको दूरकरै तृषाऔरवमनकोदूरकरै तथामूत्रस्रावकोशमनकरै कामदेवकोबढावै मूर्छाहिचकोदूरहोयबलऔरकांतीबढावै प्रसूतसे अथवा सन्निपातसेदेहशीतलभईहोयऔरपसीना चलतेहोयसोदूरहोय प्रमेहको खासीको श्वासको औरफिरंगबा तकोदूरकरै औरज्वरकोदूरभयेउपरांतजोअरुचिबहुतदिनरहे है औरउसअरुचिकेरहनेसेरोगीअगरदिनमेंमरैहै सोअरुचि याचंद्रोदयकेखानेसेदूरहोयहै॥

चंद्रोदयकीदूसरीवि०

पलद्वयंसुवर्णस्यसूतस्याष्टौचमर्दयेत्
एकीभूतेचगंधस्यपलषोडशकंक्षिपेत्
शोणकार्पासकुसुमैःकन्याभिर्मर्दयेत्पृथक्
काचकूप्यांचसंरुध्यवालुकायंत्रगंत्र्यहम्
पचेत्सिद्धोरसःसस्यात्कृष्णचंद्रोदयाभिधः

अर्थ- सोनेकेवर्क४पैसाभर पाराशुद्ध१६पैसाभर दोनोंकोघोटै जबमिलिजायतबसोधागंधक३२पैसाभरडारकरकजलीकरैफिर लालकपासकेफूलकारसडारकरएकदिनघोटै एकदिनग्वारपाठेके रसमेंघोटैफिरयाकोसुखायकेसीसीमेंभरै औरसीसीकेऊपरलातक पोटीकरै पूर्वोक्तप्रकारवालुकायंत्रमेंधरकरचारअंगुलमोटी बबूरकीदोलकडीकीअगारहपहरआंचदेय जबचारपहरबाकी रहैं तबसीसी का मुख गुड़ औरचूनेसे बंदकरदेय जबसीत लहोयतब उतारलेइ- सीसीको तोरि ऊपर - - - -

कीलालरंगकी कटोरी निकाललेई यह चंद्रोदयसवीत्तमहै॥

अथ खानेकीविधि

जातीफलंसकर्पूरंलवंगंमरिचानिच ३
पृथक्रससमानिस्युः कस्तूरीरसदिग्लवाः
मासोस्यभक्षः पलीनजरारोगविनाशनः ४
प्रभातेनतदाभ्यासाद्वृद्धिंचविषवारिच।
सर्वंप्रशममायांतिशीघ्रेणैवनसंशयः ५।
केचित्चतुर्गुणान्याहुः कर्पूरादीनितद्रसात्

अर्थ- चंद्रोदयरत्ती१जायफलरत्ती१भीमसेनीकपूररत्ती१लौंग रत्ती१कालीमिर्चरत्ती१कस्तूरीपौनेतीनचावलभर इन्मेंमिलाय करखानेसें बहुतगुणकरै वालोंकीसपेदीतथा देहमेंजोबुढा पेसैंगुलजरयजातीहै तस्कोदूरकरै अजीर्णकोशीघ्रनाशकरै भूखबढावै और विषमात्रके रोगकोशांतिकरै तथाविषैलपानी केपीनेसें जोरोगहोय तिनकोभीदूरकरै है॥

चंद्रोदयकीतीसरीवि०

रसंसुद्धतरंबहुस्यापयेत्खल्वशोभने
आनयेत्गंधकंपीतंमहाद्युतिमनोहरम
गोदुग्धेनतुसंसुद्धंसमभागंप्रकल्पयेत्।
गाधार्धंतुसिलाक्षौतालकंचैवतत्समम
सर्पावतीरसेदिव्येमर्दयेच्चदिनत्रयं छाया
शुष्कंनसंयातेतीक्ष्णातैलेनभावयेत् ३ त
त्भावेनसंदतेशोषयेधत्नपूर्वकम् काच
कुप्यांकृतेतच्चवालुकेनहठाग्निना ४॥
एकादशदिनान्येवंपाचयेत्परमंरसं स्वां
गशीतलसुत्तार्यलोहखल्वेचनिःक्षिपेत्
पुनःगंधत्रयंप्रोक्तोभावेनभावितंमतम्॥

मर्दयेत्पूर्ववत्सम्यक् पुनः शीशीं निधापयेत् ६
पुनर्विपाचयेत्सम्यक् सकादशदिनान्यमुं ।
पाचितं रसराजं तु स्वांगशीतलमुद्धरेत ७
पुनर्विमर्दयेदेनं पूर्वोक्तेन रसेन हि अव
शिष्टस्य गंधस्य पाकार्थं तु पुनः पचेत् ॥८॥
संसिद्धे रसराजे तु जापने सिद्धसाधनम् ॥

अर्थ- पारा पूर्वोक्त रीतसें सुद्ध करा- और पारावर्ह लेइ- पोरकीवरा वरगौके दूधमें- सुद्ध करी आमलासार- गंधक लेइ- और गंधकसें आधामे नासिलकासत्व- अग्निस्थाई लेइ- और इतनाही- हरतालका सत्व- अग्निस्थाई लेई- प्रथम पारे गंधक की कज्जलीकरे फिर इसकजरीमें दोनों सत्व डार- हरड़ के रसमें तीनदिनघोटै जवसखजायतव- वड़ी आतसी- सीसी- में- भरकर- सीसीकोवालुकायंत्रमें धरे- हांडीकेनीचे छेदनही करे- सोलह दिनतेज आंचदेय- जवसीतलहोयतव- सीसीको- फोरिकरि चांदी निकासि लेइ- चांदीकी राखछुरीसें दूरकरे- फेर गंधक औरनडारे- पीछेहरड़ के रससें दोदिनघोटे- दूसरी सीसी- में भरकर- वालुकायंत्रमें चारपहरकी आंचदेइ- हांडीकेनीचे छेदकरके परंतु मंदअग्नि देय- जासे अवसिष्टगंधकजरिजाय- पीछे सीसीकोफोरकर- चांदी निकासलेइ पीवकी राखछुरीसें- दूरकरै फिरचांदीको खरलमें डार पैसाढ़ः भरि सोधी गंधकडारि- हरड़ के रसमें तीनदिनघोटके सीसीमें डारि वालुकायंत्रमें हांडीकेनीचे छेदकर- चारपहरकी मंद आंचदेकर उड़ायलेय- फेर सीसी कोफोर चांदी निकासलेइ पीवकी राखदूरकर धेलाभरविष डारिके- हरड़ के रसमें तीनदिनघोटे- एकदिनएईके तेलसें घोटे- फिर हरड़ के रससें तीनदिनघोटे- सीसीमें डार हांड़ीकेनीचे छेदकर- वालुकायंत्रमें चारपहरकीमंद आंचदेइ- जासें अवसिष्टगंधकजरिजाय- फेर चांदी को निका-

सिकेछुरीसें खुरचडारके- फेर- गंधक छःमैसाभरडारि-हुलहुलकेरसमेंतीन दिनघोटै- और एकदिनराईके तेलमें घोटे- पीछे हुलहुलके रसमेंती नदिनघोट सीसी में भरकर वालुकायंत्र में चार पहर की मंद आंच देय- फेर सीसी में से चांदीनिकालकर पीठपरजोराख लगीहोय-उ सकोदूरकरै- फिर इसमें धेलाभर विषकोचूर्णडारि हुलहुल केरस में तीनदिनघोटै और एकदिनराई केतेलमें घोटै फिरहुलहुल केरसमें तीनदिनघोटै- फेरसीसीमें भरको चारपेहरकी मंदआंचदे य- जामें अवशिष्टगंधकजरिजाय- तदनंतरशीशीकोफोर चांदीनिका सलेय- चांदी की राखछुरीसे दूरकर चांदीको खरल में पीस पूर्वोक्तप्रका रसें दोबेर गंधक पैसा छः छः भरिडारि और हरबेर हुलहुलके रसमें घोटै- और हरदफे धेलाधेलाभरि विषडारिकर जलावे- और हरदफे पूर्वरीतिसें अवशिष्टगंधक जारणकरै- तौ यह चंद्रोदय- परमदुर्लभरत्न कर तैयार होय सर्वकामनापूर्णकरै ॥

शुद्धसुल्वेप्रदानव्यंसहस्रांशेनवेधयेन ॥१९॥
सुवर्णजायतेशुद्धंयथाजंबूनदोद्भवम् ति
लमात्रप्रयोगेणतांबूलेनमहेश्वरी ॥२०॥
जायतेप्रबलाबुद्धिर्बलेभीमसमंभवेत् स
प्ताहीप्रयोगेणजायतेनात्रसंशयः ॥२१॥
अनेनैवप्रकारेणभस्मपेच्छुभंनरः ॥

अर्थ- शुद्ध तांबे में इसको डारैतौ दिव्यसुवर्ण होजाय- एकरत्तीलौं गके संग- तिलमात्रयह चंद्रोदयखाय दिनसातलौं बुद्धीको तीव्रक रै- भीमसेनके समानबलकरै- भूखबढावै- रुधिरके विकारको- और सर्व रोगमात्रको यथा योग्यअनुपान केसंगदेनेसें दूर करे है-

इतिचंद्रोदयकी तीसरी विधि समाप्तम् शुभम्

अथरसेंद्रीकरणम्

प्रथमंमारयेद्धंशात्तोक्तंसुपरिक्षितम् ॥

पश्चात्तं योजयेद्देहे सेवकं तदनंतरम् ॥१॥
अक्षेत्रीकरणात्सूतोऽप्यमृतोऽपि विषं भवेत् ।
तस्मादूर्ध्वरसादादौ क्षेत्रीकरणमिष्यते ॥२॥
सेवनीयं त्र्यपलेन मासद्वयं निरंतरम् गुंजा-
द्वयं समारभ्य पावमाषद्वयं भवेत् ॥३॥
क्षेत्रमेवं भवेद्देहः सूतवीर्यप्रसाधकम् अ
क्षेत्रे योजितः सूतो न प्ररोहेत्कदाचन ॥४॥
निद्रालस्यशिरोदाहाः अंगभंगोह विभ्रमः
नासांघ्राणापते मूलं त्वन्यथा योजितो रसः ५

अर्थ- जो मनुष्य चंद्रोदय अथवा मरे पारे को खाया चाहे- सोप-
हिले शाखोहारी तिसें- मृत अभरक को खाय पीछे पारे को खाय -
क्योंकि बिनाक्षेत्री करण के पारा अमृत के तुल्य गुणदायक भी विषस-
मान गुण करै है याते प्रथम अभ्रक खाय कर क्षेत्र करलेय- या
प्रकार- अभ्रक २ रत्ती इलायची के संग दो महीना पर्यंत खा-
य तव क्षेत्र कहिये देह पारे के खाने योग्य होय- बिना क्षेत्रीक-
रण के पारा कदाचित फलदायक नहो- उलटा निद्रा- आल-
कस- मस्तक में जलन- हडफूटन- अरुचि- नेत्रों के आगे अंधे-
रा आना- नाक के भीतर- पीड़ा- इतने रोग प्रगट करै है ॥५॥
अब कहते हैं कि रससिंदूर भी मूर्छित पारे का भेद है याते चंद्रो-
दय कहने के अनंतर रससिंदूर बनाने की विधि लिखते हैं ❖

अथ रससिंदूर की पहिली वि०

सूतं पंचपलं त्वदोषरहितं तत्तुल्य भागो
बलि हैंटंकोनवसादरस्य तुवरीकर्षे
भ्रसंमर्दितः कूप्यां काचभुवि स्थितं असि
कतायंत्रे त्रिभिर्वासरैः पक्वो वन्हिभि-
रुद्भवत्यरुणाभः सिंदूरनामा रसः ॥१॥

अर्थ - पाराशुद्ध ५ पल - गंधकशुद्ध ५ पल - नौसादर २ तोले - फिटकरी १ तोले - इनसबको तीनदिनघोटे - पीछे आतसी सीसीमें कपडमिट्टीदे - औरउसमें - कज्जलीभरकर तीनदिनमंद - मध्य तेज - अग्नि वालुकायंत्रमें देयतो - लालरंगका रससिंदूरतैयार होय ॥

रससिंदूरकीदूसरीविधि
द्विगुणगंधक

रसभागोभवेदेकोगंधकोद्विगुणोमतः ॥ खल्वेकज्जलंकृत्वातेनकाचकूप्यांक्षिपेत्सुधिः ॥१॥ खर्परेवालुकापूर्णेस्थापयेत्तत्रकूपिकां दृष्टिकांचमुखेदत्वाकृत्वाकर्पटमृत्तिकां ॥२॥ सप्तविंशतियामेषुसितंकुर्याद्विपाचयेत् पश्चादूर्ध्वंसमायाति रसंज्ञात्वाविचक्षणः ॥३॥ हंसपाकसमंवर्णनिष्पन्नंरसमादिशेत् गुंजायुग्मंप्रदातव्यंसिताढुग्धानुपानयुक् ॥४॥ प्रमेहेश्वासकासेचषंढेक्षीणेऽल्पवीर्यके हरगौरीरसोदेयः सर्वरोगप्रशांतये ॥५॥ ॥

अर्थ - शुद्धपारा १ भाग - शुद्धगंधक २ भाग - इनदोनोंकीखरलमें कज्जलीकरके - कांचकीआतसी - सीसीमेंभरे - और उससीसीपर सातकपरौटीकरै - फिरउससीसी को सुकाय - वालुकायंत्रमेंधरकर - मुखकोईटके टुकडेसें मूंददे - इसकेनीचे अग्नि सत्ताईस पेहरकीदेय - तदनंतर पारेको ऊपरआयाजानकर - उतारलेय - इसकारंगलालहोय - इसकोनिकालकर अच्छेपात्रमें धररखे - पीछेइसमेंसें - दूधमिश्रीकेसंयोगसें - दोरत्तीकी मात्रादेयतो इतनेरोग दूरकरै - प्रमेह - श्वास - खांसी - नपुंसकपना - क्षीणवीर्य - औरपेह

रंगोंरस सर्वरोगमात्र को दूरकरै है ॥

रससिंदूरकीतीसरीविधि विधिषड्गुण गंधके

हिंगुलोत्थरसे भागं षड्भागं शुद्धगंधकम्
खल्वमध्ये विनिक्षिप्य कुमारीरसमर्द्दितम्
॥१॥ काचकूप्यां विनिक्षिप्य वालुकायंत्रगोप
चेत् पाचयेत्सप्तरात्राणि सिंदूरं भवति
ध्रुवम् ॥२॥ वल्लमात्रं प्रयुंजीत मधुनालेह
पेत्परम् स्तंभनं दृढहिंचवीर्यवृद्धिव-
लान्वितम् ॥३॥ तेजस्त्वं पुष्टिकारित्वं महा-
मत्तगजेंद्रवत् ॥ षंढत्वं वंध्यरोगत्वं सन्या-
दीन्सर्वरोगजित् ॥४॥ दिनमेकं शतस्त्री
णां मरमेतु त्रिवीर्यवान् निरंतरमनोत्सा
संरतिप्रमाणसनातनः ॥५॥ शतानि पंच
षट्केन रोगाणां नाशको भवेत् सद्गुणो गं
धकोनाम विश्वामित्रेण निर्मितः ॥६॥ ॥

अर्थ- हिंगुलसें निकाला पारा १ भागले- गंधक ६ भागले- इनदोनो-
को खरल में डार कजली करै- फिर यामें ग्वारपाठेका रसडारमर्द्दन-
करै- पीछे सुखायकर- कांचकी सीसी में भर बालुकायंत्रमें प-
चावे सातदिनरात्रअग्निदेय- जबसीतलहोजायतब- सीसीको
फोरकर- लालरंगके सिंदूर को निकाललेय- यहरससिंदूर- तीनरत्ती
सहतकेसंगखायतो- स्तंभनकरै- लिंगकोबढावे- वीर्यकोबढावै- ब-
लकोबढावे- तेज- पुष्टता- इनको- बढावे- तथा- महामत-
वाला हाथीके समानबलकरै- नपुंसकपनादूरहोय- वंध्यापना-
संन्यास- इत्यादिरोगोंकोदूरकरै- यारसकाखानेवाला एकदिनमें सो स्त्री-

त्रतें भोगकरै-स्त्रीनकेमनकोआनंददेय-और-पांचसौरोगोंका-नाशक-
है-यह बहुगुणगंधक-ना मरससिंदूर-विश्वामित्रऋषिने-लोक के
कल्याणार्थ-निर्माणकियाहै- ॥६॥

रससिंदूरानुपानम् ॥

वातेक्षौद्रंसपिप्पल्यं पित्तकफजित्रूषणं
साग्निचूर्णं पित्तेसैलासीतीस्यात्वृणाद
हनिगदेवृहतीनागचार्द्रां मूतांवुपुष्टे
सात्यत्रिप्यामाहरनयनफलोसाल्मलीपुष्पवृ
न्तं किंवाकांतालसाटाभरणारसपतेःस्याद
नुपानमेतत् ॥१॥

अर्थ- रससिंदूर-पीपल-और सहतसैं-वातरोगमें देय-और-सोंठ-
मिरच-पीपल--चित्रक-इनकेसंग-कफरोगमें देय-छोटी-इलायची-
और-खांडके संग पित्त रोग में देय-व्रण बहताहोय-जुसमें कटेली-
सोंठ-और-गरुडवेल केरस के संगदेय-पुष्टता को किंचित्-हलद-
सेमर के फूलकी डंडी-अथवा-केसर बराबर-की-मिलाकरके देय-

रसकपूर

जो वैद्यचंद्रोदयरसनहींजानें-सो-पारसको-संग्रहकरै हैं-सहैंयया
रस का संग्रह-नहीं करेंहैं-कुवैद्यों के लिये-याकी-बराबर-दूसरा
रसनहींदे-लोगों के-ठगने के निमित्त-याको पारदकी भस्मबता-
तेहैं-रसकपूरनहीं-कहते-क्योंकिभरमतुन का खुलजाय-और-
कुवैद्य यह किमा-काहू को नहीं बताते-कोण्यह-और-जल-
धा-तथा-जुलाबमें चमत्कार दिखानेको-याको-देतेहैं-बहुत-
करके गुजराती वैद्य-याको-राखते हैं-चेटक दिखानेकेलिये॥

गंधक योगकेबिना पारेकी मूर्च्छा दोप्रकार से होती है-एक रसकपूर-
और-एक यासैं अलग-तहां पैहले-रसकपूर की विधिलिखते है-

रसकपूरकीपहिलीविधि

शुद्धसूतंसमंकुर्य्यात्प्रत्येकंगैरिकंसुधी इष्टि
कांखटिकांतद्वत्स्फटिकांसिंधुजन्मच व
ल्मीकक्षारलवणंभांडुरंजनमृत्तिका सर्वा
एयेतानिसंचूर्णवाससाचापिशोधयेत् ग्रभि
श्चैतैर्युतंसूतंस्थालीमध्येपरिक्षिपेत् तस्यां
स्थाल्यामुखेस्थालीमपरांधारयेत्समं सर्वा
न्यकुंब्लिनमृदामुद्रयेदुभयोर्मुखं संशोष्य
मुद्रयेद्द्वयोः भूयः संशोष्यमुद्रयेत् सम्यक्
विशोष्यमुद्रांतेस्थालीचुल्यांविधारयेत् ॥
अग्निंनिरंतरंदद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् अं
गारोपरितद्यंत्रंस्थाप्यत्वादहन्निशम् शनैरुद्धा
रयेद्यंत्रमूर्द्ध स्थालीगतंरसम् कर्पूरवत्सुवि
मलंगृह्णीयाद्गुणवत्तरम् ॥ ॥१॥ ॥

अर्थ- सिंगरफ-का निकालापारा २ पैसाभर- गेरू २ पैसाभर- पुरानी ईटकोचूर्ण २ पैसाभर- खरियासुपेद २ पैसाभर- फटकरी सपेदचि- नासुजी २ पैसाभर- सेंधानोन २ पैसाभर- बंवईकीमाटी २ पैसाभर- खारीनोन २ पैसाभर- काचिस - अर्थात्- जासेंकुम्हारवरतनरंगैहैं सो २ पैसाभर- इनसवको कपडेमें छानिकर- अलगअलगपारेमें मिलायकर दोदो- पहरघोंटै- पीछेनीचेकीहांडीमें- चारिकपरोटी करे पेंदीताईं- यामें पारोडारि फेरिदूसरी हांडीसों पहिलीहांडी की मुखबंदकर डमरूयंत्रकरै- फेरसातकपरोटी दोनोंहांडीकेमु खपरकर तीनदिनसुखावै पीछे चार लकडी की वर्त्तीसप्रहर पचं डआंच देय- फेरचार प्रहर अंगारोंपर रक्खे- जवआगसीतल होजाय- तवउतारकरटेढाधरै- और टेढाईखोलै- ऊपरकी- हांडीमें जो कपूरके समान पारालगाहै सो निकासलेय- इति-

तदेवकुसुमचंदनंतदेवकस्तूरिकुंकुमैर्यु

क्रम् खादन् हरति फिरंगव्याधिं सोपद्
वं घोरम् विदधातिवन्हेर्दीप्तिं पुष्टिं वीर्यबलं
विपुलं रमयति रमणीश्च लक्षं रसकर्पूर-
स्य सेवकः सततम् ॥

अर्थ-लोंगमासे २ चंदनसुपेदमासे २ कस्तूरी रत्ती २ केसररत्ती ४ इनमें मिलायकर-खावतो-गरमीकी बीमारी उपद्रव समेतदूर होय-अग्नि प्रबलहोय-देह पुष्टहोय-अपार वीर्यहोय-अनेक स्त्रीनसें रमणाकरने की सामर्थ्यहोय-येगुणरसकपूरकेहैं-
मैंब्रजभाषामयाहै

तथारसकपूरकेगुण ॥

इसरसकपूरकी मात्रा बलवान्को १ रत्तीदेइ-औरनिर्बलहो-यतो आधरत्तीदेइ-एकरत्तीमें आठवाररद्द औरदस्तहोय-पेटसें आंउकाली पीली लाल रंगकी निकले-रद्द और दस्त-केहोनेसें बलनहीं घटे परंतु थोड़ी गरमी करेहै-यासेंइस-का सरदरितुमें खानाठीकहै-बातरोग इसके खानेसें सात दिन में दूरहोय-परंतु इसको रोगदूरहोनेपरभी एकमहीना-खाय-और रुधिरकेविकार कोदूर करै-परंतु यहभी यादरहेकि-जोमनुष्य इसको महीना भरखाय सो दही-भातखाय-घीन खाय-और बातवाला सेंधा नोन थोड़ा खाय-

रसकपूरकीदूसरीविधि

पिष्टंपांशुपटुप्रगाढममलंवज्राम्बुनाचैक
सः सप्तंधातुयुतंखटीकवलितंतत्संपुटे
रोधयेत् अंतस्थंलवणस्यतस्यचुल्लते प्र-
ज्वाल्यवन्हिंहठात् घस्त्रंप्रात्समयेन्दुकुंद
धवलंभस्मोपरिस्थंशनैः ॥

अर्थ-पारेको खारीनोनकेसाथ पहर के दूधके साथघोटै-पीछे-

गेरू औार खड़ियाकी वनीहुई घरियामें नोनभरिकर बीचमें इसपारे को धर कर नीचे आंच वरावै एकदिन ऊपरकी घड़िया में जो सुपेदभस्म रसकपूर है इस को युक्तिसें निकाललेय ॥१॥

तद्वल्लहितयल्लवंगसहितंप्रातः प्रभुक्तं
नृणां मूहूर्तैश्चयनिहितयामममक्रस्येपंक्त
लंशीतलं गतहूंनिचवत्सरावधिविषंय
षमासिकंमासिकं शैलोस्यं गरलंमृगेंद्रक्
टिलोद्भूतंचतत्कालिकं २

अर्थ— जो मनुष्य लौंगके संग इसरसकपूर को ६ रत्ती खावतौ चार घड़ीपीछे दस्तहोय इस के ऊपर शीतलजलपीवैतो वर्षदिनके छःमहिना के महिनाके विषरोगो को दूर करै तथा मूलविषको सर्पके विषको सिंहके विषको तत्कालके विषको दूरकरै ॥२॥ इतिरसकर्पूरकरणिमसमाप्तम् ॥

पारदवंधनम्

पारेवंधनके दोयप्रकारहै सवीज और निर्बीज जो अभ्रक सत्व सोना चांदी तांवा लोहा इनके संयोगसे वद्धहोय सो सवीज और जो दिव्यऔषधीनके संबंधसें वद्धहोय सो निर्बीजजानना अवकहते हैं किवंधनखोट जलौकादि भेदसें अनेकप्रकारकाहै तिनमें मुख्यमुख्य वंधनों के नाम और उनके लक्षण लिखते हैं ॥

पंचविंशतिसंख्याकान्रसवंधान्प्रचक्ष्महे
येनयेनहि चांचल्यंदुर्ग्रहत्वंचनश्यति ॥१
प्रोक्तानिरसराजस्यवंधनामानिवार्तिकैः ॥
हठारोटौतदाभासः क्रियाहीनश्चपिष्टिका २
क्षारःखोटश्चपोटश्च कल्कवंधश्चकज्जलिः
सजीवश्चैवनिर्जीवो निर्वीजश्चसवीजकः ३
शृंखलाद्रुतिवंधौचवालकश्चकुमारकः ॥

तरुणश्च तथा वृद्धो मूर्तिबद्धस्तथापरः ॥
जलबद्धोग्निबंधश्च सुसंस्कृतकृताभिधः ।
महाबंधाभिधाश्चेतिपंचविंशतिरीरिताः
केचिद्वदंतिशाड्विंशोजलूकाबंधसंज्ञकः ५

अर्थ- अब कहे हैकि रसबंधन के २५ प्रकार हैं- सो लिखे हैं १ हठ-२ आरोठ-३ आभास४- क्रियाहीन५- पिष्टिका६- क्षारबद्ध७- खोटक८- पोट९- कल्कबंध१०- कज्जलि११- सजीव१२- निर्जीव१३- निर्बीज१४- सबीज१५- श्रृंखलाबद्ध१६- द्रुतिबंध१७- बालक १८- कुमारिक१९- तरुण२०- वृद्ध२१- मूर्तिबद्ध२२- जलबद्ध२३ अग्निबद्ध२४- सुसंस्कृत २५- महाबंध और कोई आचारीजलौकाबद्ध-२६- मा- प्रकार- कहते- हैं ॥

हठरसकेलक्षण

बिनाशुद्धिकेजो रसहो सोहठरसकहावै- यारस के खाने सें अनेकरोग तथा मृत्यूहोय ॥१

आरोटके लक्षण

शुद्धकरे रसको- आरोटकहे हैं- यह क्षेत्रकरण में उत्तम है- और अनेकरोगदूरकरै २

आभासरसके लक्षण

सो आपसेही- गाढा होजाय- और कोई अष्ट अथवा धातु- कासंगनहोय- सो आभास- पाराहै येभी औगुनदायकहै- ३

क्रियाहीनरसकेलक्षण ॥

जोलोहादि धातुसैं शुद्धहोइ वो पारा क्रियाहीन जानना यह- अपथ्य के सेवनकरने सें औगुन दायक है ॥४॥

पिष्टिकाबंधरसकेलक्षण

जो तीव्रअग्निसैं अथवा मर्दन संस्कार सें मक्खन के समान पिट्ठीहोजाय वो रसपिष्टिका बंधजानना यहदीपन और-

पाचनहै॥५॥

क्षारबद्ध॥

जोशंखसीपकौड़ी-आदिक्षार सें बद्ध होइ-सोक्षार बद्धरस-
जानना यह पुष्टी और जठराग्नि कारक तथा शूलनाशकहै ६

खोटबद्ध-॥

जोऐसाबद्ध होजाय कि फोरने सें पारद का पिंड फूटजाय-
और अग्निमें धमानेसें जरजायसो खोट बद्ध पाराजानना-
यहशीघ्रसर्वरोगनाशकहै ॥७॥

पोटबद्ध-

गंधक पारेकी कजली को अग्नि मेंद्रुलिकर केलाके पत्तापर
ढाल दीनी जाय उसको पोटबद्ध तथा पर्पटी कहैहै यह-
बालक के सर्वरोगदूरकर्त्ता है॥८॥

कल्कबद्ध-

जो पारा स्वेदन संस्कार आदिसें कीच के समान होजायसो-
सोकल्कबद्धऔरयोगोक्तफलकोदेइ ९

कज्जलीबद्ध-

गंधक पारे की सुन्दर कजली जिसजिस योगसें काजलके-
समान हो सोउसी उसी योगके नामसें कज्जलीबंध कहावै १०

सजीवबद्ध-॥

जो रस अग्नि के योगसें भस्म हो सो सजीव बद्धरसजानना-
यहखाने सेंरोगकोदूरनहींकरै ११

निर्जीवबद्ध-

जो पारा गंधक जरानेसें अथवा अभरक जरानेसें भस्महोय-
सो लोहों में उत्तमहोइ यह पारेकी भस्म निर्जीवसंज्ञकहै-
औरअखिलरोगनाशक है ॥१२॥

निर्बीजबद्ध-

पारे का चतुर्थांश अभ्रक जीर्णकरै और गंधक के योगसें पिष्टी-
कर तुल्य गंधक का पुटदेय कर भस्मकराजाय सो अनेक-
रोगनाशकनिर्बीजबद्धजानना ॥१३॥

सबीजबद्ध-॥

जो अभ्रक सत्व-सुवर्ण-चांदी-ताम्र-लोह-इन के योगसें
पिष्टी कराजाय और षड्गुणगंधक के योगसें मरे सो स-
बीज बद्ध पारा अति पराक्रमी जानना चाहिये ॥१४॥

शृंखलाबद्ध-

जो हीरा के संयोग सें पारामराहोय और दूसरे पारेके सं-
युक्तजो बद्धकराजाय सो शृंखलाबद्ध पारा देह कोलोह
कर्त्ताजानना॥१५॥

द्रुतिबद्ध-॥

अंतर द्रुति का प्रभाव साक्षात् श्रीमहादेव जानने है और-
जो बाह्य द्रुति के संयोगसें बद्ध होय-यह राई के समान-
सबअसाध्य रोगों का नाशकरै यहद्रुतिबद्धपाराजानना१६

बालबद्ध-

जिस पारे में पारे के समान अभ्रकजारण करी गई होय सो-
पारा बालबद्ध जानना यह खाने सें रसायन है होनहा-
रव्याधिको और उपद्रव तथा अरिष्ट संयुक्तरोगकोदूर-
करै परंतुइसको अनोपानकेसाथखाय१७

कुमारबद्ध-॥

जिस पारे में द्दुगनी अभ्रक जारण करीजाय सो पाराकु-
मारबद्ध जानना चावलके बराबर२१ इक्कीसदिनके खा-
ने सें अखिल रोग समूह को नाशकरै और रसायनहै१८

तरुणबद्ध-

जिस पारे में चतुर्गुणअभ्रक जारकरीजाय-सो रसायनों मे-

श्रेष्ठ नहरण बद्ध जानना सो सातदिन खाने सें सकल रोग दूर करै और बलवीर्य बढावे १९

हठबद्ध ॥

जिस पारे में षड् गुण अभ्रक जारण करीजाय सो अग्निकाभिन्न बद्ध नाम पारा जानना यह देह में और लोह में योजना करना चाहिये इसके गुण श्रीशंकर के सिवाय दूसरा कौन कहि सकेहै ॥२०॥

मूर्तिबद्ध ॥

जो रस (पारा) ६४ दिव्यौषधीन् के संयोगसें बद्ध अर्थात् अग्निस्थाई कराजाय वो बिना अभ्रक जारण केही मूर्तिबद्ध जानना याकी भस्म खाने सें अजरामरत्व हुश को प्राप्त होय २१

प्रसंगवससें ६४ दिव्यौषधीन्केनाम

१ सोमवल्ली २ जलपद्मनी ३ अजगरी ४ गोनसी ५ विजटा ६ ईश्वरी ७ भूतकेशी ८ कुलवल्ली ९ रुद्रवंती १० सर्वरा ११ वाराहीकंद १२ अश्वत्थपत्री १३ अम्लपत्री १४ चकोरनासा १५ अशोकनाम्नि १६ पुन्नागपत्रिका १७ नागनी १८ श्वेती १९ संदरी २० देवीलता २१ वज्रवल्ली २२ चित्रक २३ कालपर्णी २४ नीलोत्पली २५ रजनी २६ पलाशतिलका २७ सिंहिका २८ गोष्टांगी २९ खदिरपत्री ३० नागज्योति ३१ रक्तवल्ली ३२ ब्रह्मदंडी ३३ मधुस्रवा ३४ पद्मकंदा ३५ हेमदंडी ३६ विजया ३७ अजपा ३८ जपा ३९ नली ४० क्षीनाम्नि ४१ कीटमारी ४२ तुंबिका ४३ कटुतुंबी ४४ मयूरशिखा ४५ हेमलता ४६ आसुरी ४७ सप्तपर्णी ४८ गोमारी ४९ मीनक्षीरा ५० व्याघ्रपादलता ५१ धनुर्वल्ली ५२ त्रिशूली ५३ त्रिदंडी ५४ श्रृंगा ५५ वज्रनामवल्ली ५६ महापल्ली ५७ रक्तकंदवती ५८ विल्वदला ५९ रोहिणी ६० विल्वानकोर्द ६१ गोरोचना ६२ कंदपत्रिका ६३ विशल्या ६४ कुंद

क्षीर-इति॥

जलबद्ध-

जो पारा-शिलोदक-घृतोदक-तैलोदक-अमृतोदक-विषोदक-क्षीरी-लक्षोदक-चंद्रोदक-इत्यादि केजल को संयोगसें बद्ध होय सो बुढापा जरा मौत को दूर करै और काल्यो ना फलदेय ॥२२॥

अग्निबद्ध-॥

जो केवल अथवा लोह संयुक्त अग्नि में धमाने सें गुटका के आकार हो जाय-और छीजे नहीं सो अग्निबद्ध पाराजानना ये खेचरी सामर्थ्य को देय ॥२३॥

जलौकाबद्ध-

जो पारा घोटने सें जोख के सदृश हो जाय सो जलौकाबद्ध-जानना यह स्त्रीन् के द्रावण में लेना चाहिये॥२४

अब जानना चाहिये कि बंधके वास्ते पारा शुद्ध लेना उचित है सो शुद्ध पारा सिंगरफ सें जो निकासा भया विनाहीं संस्कार के शुद्ध होय है परंतु कोई आचारी कहते हैं कि सिंगरफ के निकाले-भये पारे को भी पूर्वोक्त स्वेदन-मर्दन-उत्थापनादि संस्कार करना चाहिये

यथोक्तं पुरंदर रहस्ये

रसगंधकसंभूतं हिंगुलं प्रोच्यते बुधैः

तस्मात्तं च यथा शोध्यं सोध्यते मपि सूतवत्

अर्थ- पारा और गंधक मिलाले सें सिंगरफ बने है यासें सिंगरफ सें जो पारा लेय उसको भी पारे के समान शोधन करें ॥१॥ -

पीछे या पारे में औषधांतर सें पहिले मुख उत्पन्न करी मुख होने सें-पारा-सोना-चांदी-अभ्रकसत्व-तामा-लोहा-इत्यादि को खाय जाय है-सुवर्णादिक की-वाह्यद्रुति करना सो कष्टसाध्य-

है - और सुवर्णादिकको पारे में मिलायकर - औषधके बलसे द्रवकरना सो अंतर द्रुतिकहावे - यह होय सके है - प्रथम मुख कर के पारे को भूखाकरे - जासे सुवर्णादिक को खाय - और पचावे - पारा हेमादिकको खायकर - पचावे तब यह पारा भूखाहोय - पारे में मुख करने के - और भूखकर्ने के निमित्त - यद्यपि विस्तार बडाहै - और वहविस्तार होयभीनहीं सके - यासे मुखऔर भूख कर्नेके निमित्तसुगमउपायकहेहैं ॥

विषोपविषकेमर्द्यैः प्रत्येकंदिनसप्तकम्
मुखंचजायतेसूतेबलवन्हिस्त्रवर्द्धते ॥१॥

अर्थ - सेरभर पारे में आधपाव विषका चूर्ण डार कर आक केदूध सेसातदिनघोटकर पूर्वोक्तडमरू यंत्रमें उडायलेय - ऐसेही - धतूरे - कलयारी - कनेर - घुंघचीके काढे में तथा रसमें - अफीम - इन प्रत्येक के रसमें आध २ पाव विषका चूर्णडारकर सातसात दिनघोटकर उडायलेय तो पारे केमुखभीहोय और भूखभीहोय ॥ और बाजेवैद्य पारे के मुख उत्पन्न करनेके निमित्त पारेको बांसके चोंगामें भरकर और एकहांडी में गोमूत्रभरकर उसचोंगाको उसमें लटकायकर २१ दिनतक आंचदेतेहैं जैसे २ गोमूत्र जरै तैसे २ और गोमूत्र डारतेहैं तब पारेका मुख और भूखउत्पन्नहोयहै पारेको भूखाकरनेको षड्गुणगंधकजारण करतेहैं तबपाराभूखाहोयहै

अथषड्गुणगंधकजारणं

इष्टिकायांसुपक्वायांमूषांतेचचतुर्गुणाम्
कृत्वाधांचेनसंलिप्तंतस्यांतपिष्टिकांक्षिपेत्
निंबुद्रावोद्भवागंधोदेयोमर्द्दिष्टिकार्थिकः ।
मुखसंरुध्यमूषांयदद्याद्गावपुटंततः ॥
गौरीपंचमिदंख्यातंमूर्च्छितेगंधजारणे ॥३॥

अर्थ- आठ अंगुल मोटी पक्की ईंटलेय- तामें चार अंगुल - का गडुढाकरै तिसगड्ढे में कांचकिरायलेय तामें पारेकी पीठी भरै पारेके बराबर पैसा१भर गंधक कागदीनीबू केरस मेंघोटकर उसपीठीके ऊपर धरै ईंटका छेद ईंटके टुकड़ेसे बंदकरदेय कपरोटी करकें ईजंगली उपराकी आंचदेइ जबशीतलहोय- तबफेर इसी प्रकार आंचदेय इसीप्रकार गंधकडारै जबतांई षड्गुणगंधक जरेतब तक ऐसेंहीकरै पारेकी पीठी ऐसें बनावै ॥

पीठीकरण

एकहाथका अच्छा कपड़ालेय- उस को सातवार धतूरे के रस में भिजोवै और सुकायलेय- पीछे याकपराभें मक्खन चुपरेता में धेलाभरि मेनसिल- धेलाभरि हरताल- धेलाभर गंधक- धेला- भर रेतामया सीसा सबकोमहीनपीसकर उसकपड़ेमें बिछा- इदेइ फिर उसकपड़ेकी बत्ती करै फेर एकथाली में घीचुपड़ कर पीछे उसबत्तीको जलाय उलटी लटकायदेइ तबबत्तीसें जो तेलटपकै उसमें पारा एकपैसाभरघोटै जब पारा मिलकरपि- ट्ठीहोजाय तबजीरणकरै इति पीठीकरणम्

हांडीयंत्रकीविधि-

एकहांड़ी लेव उसमें पारा पैसा१६ भर डारै उसको आंचपरधरै जब गरमहोयतब एक तोलागंधकडारै हंसपदी के रसमेंपुटी भदे ऐसेही जबतक षड्गुण गंधक तबतकडारै इति ॥

भूधरयंत्रकीविधि-

आरोटकसमगंधकचूर्णंतुल्यंनिकटुमषा
यांसुविगलीयांमयांतांक्षिप्ताग्रंगुलाधस्ता
त् अपूर्ववालुकाभिस्तंगर्तैर्भूसमीकृत्य-
पुज्वाल्योपरिवन्हिंत्रिदिनमयातांसहृत्य

जीर्णेतुगंधकेस्मिन्पुनरन्यःक्षेप्योऽनयारीत्या

अर्थ- पारा शुद्ध ८ पैसाभर लेय उसको लोहेकी घरियामें धरे पीछे गंधक शुद्ध ८ पैसाभर को पीस उसमें डारे और घरियाको मुख लोहेके ढकनासो बंद करि कपरोटीकरे पीछे धरतीमें सोलह अंगुल चौड़ा और आठ अंगुल लंबा इतनाहीं ऊंचा गढ़ेला होय तिसमें उस घरियाको धरकर धरतीको बराबर करे फिर उसके ऊपर तीनदिनतक आंचबरावे चौथेदिन घरियानिकास लेय - तब यह गंधकजीर्ण होय फिर और इतनी गंधकडारकजारणाकरे ऐसे बहुगुण गंधक जरावे अथवा वज्रमूषामें षड्गुणगंधकजारकाकरे ॥

अथवज्रमूषाकीविधि

कुःटंक कोयला-एकटंकमाटीस्याह-टंकएककपड़ा-कीटी एकटंक सबको कूटपीस सानकर मूषा दोवैनावे इस को वज्रमूषा कहतेहैं अबजाननाचाहिये कि कोई वैद्य गंधकजारणाके अनंतर पहिले अभ्रकजारणकरेहै और कोइ पहिले सोनाजारणाकरेहै- दोनोप्रकार अच्छेहैं विनागंधकजराये औरविनाबीजकहिये-सोना-चांदी-अभ्रक- इनकेजराये जोपारेकोमारे सो वह्महत्याकीहै यथा

अजीर्णेत्वबीजंतुसूतकंयस्तुमारयेत्
ब्रह्महासदुराचारीब्रह्मद्रोहीमहेश्वरी १

अर्थ- जोमनुष्य अजीर्ण और अबीज पारे कोजारणाकरे सोहे पारवती वह मनुष्य ब्रह्महत्यारा खोटे आचरणकर्नेवाला-विश्वकाद्रोहीहै॥

तथाचरससिंधौ

देव्यारजोभवेद्गंधोधातुःशुक्रंतथाभ्रकः

आलिंगने समर्थौ हौ प्रियत्वाच्छिवयोस्तयो:
आश्लेषादेतयो: सूतो नवेन्निमृत्युजंभयं
शिवशक्तिसमायोगे प्राप्यते परमं पदम् ॥
यथास्योजारणा वृद्धौ तथास्याद्गुणदो रस:

अर्थ- देवी के रजसें गंधक पगटी और इसीका शुक्रधातु अभ्रक यासें- अभ्रक और गंधक पारे की परमप्रिय है- इनके संयोग सें पारा मौतके डर को नहीं जाने शिवशक्तिके योगमें उत्कृष्ट स्था नमिलेहै- जैसें २ पारे की जारणादिक क्रिया अधिक होय तैसें तैसें अधिक गुणवान् होय ॥१॥ ॥ ॥ ॥

अथ गंधकजीर्णगुणा:

समे गंधे तु रोगघ्नो द्विगुणो राजयक्ष्मजित्
जीर्णे तु त्रिगुणे गंधे कामिनीदर्पनाशन:
चतुर्गुणे तु तेजस्वी सर्वशास्त्रविशारद: ॥
भवेत्पंचगुणा: सिद्ध: षड्गुणे मृत्युजिद्भवेत्

अर्थ- पारे के समभाग गंधक जारण करणे सें रोगदूर करै द्विगु ण गंधक जारण क्षई रोगजीतै- त्रिगुण गंधकजारण स्त्रीनकेअ भिमान दूर करै- चतुर्गुण गंधकजारण तेजदेय और बुद्धिबढ़ावै पंच गुण गंधकजारण करनेसें सिद्ध होय- और षड्गुण गंधकजार ण मृत्युनाशक हो यहै ॥२॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तस्माच्छतगुणोऽभ्रसत्वे जीर्णे तु तत्समे
ताप्यखर्परतालादिसत्वे जीर्णे गुणावह:
हेम्नि जीर्णे सहस्रैकगुणसंघप्रदायक: ॥
वज्रादिजीर्णे सूतस्य गुणान्वेत्ति शिव: स्वयं २

अर्थ- पारे में षड्गुण गंधकजारणसें अभ्रक सत्वसमानजीर्ण करा भया सौगुना अधिक है- और- सोनामक्खी- खपरिया- हरता ल- इत्यादि सत्वजारण- में गुण दायक होयहै- तथा सुवर्णजी

णीकर्नेसें १ एकहजार गुणादायकहोय और हीरकादिजीरणपा
रेकेगुण आंप श्री शिवजी जानेंहैं ॥२॥ ॥ ॥ ॥
अबकहतेहैं कि बीजअर्थात्-सोना-चांदी-अभ्रक-इन्काजा
रणदो प्रकार सें होयहै-एकविडयोगसें-दूसराविनाविडके-
इन दोनों में विडजोगसें जोबीजका जीरण हैसोप्रधानहै-अ-
बबीजकेजारणनिमित्त विडकहेहैं ॥

मूलकार्द्रकचित्राणांक्षारैगोमूत्रगालितैः
गंधकैःशतशोभाव्योविडोयंजारणोमलः १

अर्थ-अनमूरी १ मनअदरक १ मनचीता-इनतीनों को काटकर-
सुखायलेइ पीछेजरायकर इनकी राखको गोमूत्रमें भिजोयदेय·
पीछे पांचदिनके बाद चारतह कपडेमें वहगोमूत्र को छानले·
फिरउसगोमूत्रसें ५। सेरआंमलासार गंधक घोटै १०० सौसेंअ
धिकभावनादेय-जबगाढाहोयतब सुखायकर धररखै इसी
को विडकहतेहैं ∵ इसविडकेयोगसें-पारा-अभ्रक-सत्वआ
दि कोखायजाताहै-यद्यपिविडअनेकहैं परंतुग्रंथविस्तार
केभयसेनहीं लिखने-यहविडपारेकेभीतर-सोना-चांदी-अभ्रक·
का सत्वपराहोय-उसको पानी के समानकरदेताहै-और पारेको·
बहुतभूखाकरै है-जब पाराभूखाभयातब-अभ्रक-सत्वादिकजेद्र
वीभूतहैं-तिनको खायजाताहै-यहसिद्धांतहै-अभ्रकसत्वादिक·
जो पारे सें बाहरहैं-तिनको यहविड द्रवनहीं करै-पारे के बाहरउन
का द्रवीभावईश्वरकेअनुग्रहसें होयहै-यद्यपिउनके द्रवकरने·
को उपायशास्त्रमें लिखाबी है परंतु-वह होयनहीं सक्ता है ॥

अथबीजजारणप्रकार ॥

केवलाभ्रकसत्वंहिनग्रसत्येवपारदः-॥
तस्माल्लोहांतरायेनोयुक्तंवाधातुसत्वकः
अभ्रकंजारयेतसिद्धोकेवलेनतुसिद्ध्यति

अर्थ- प्रथम पारेमें विड़डारै- जो पारा आठ टांक होयतो पारे
का अष्टमांस अर्थात् एक टांकविड़डारै- और इस कोजंभीरी-
के रसमें एकदिनघोटै- पीछे इसी पारे में चौंसठमांहिस्सा अ
र्थात् चाररत्ती अभ्रकसत्वडारै फिरजंभीरीके रसमें एकदिनघो
टै- परंतुयहभीयादरहैकि- पहिले उस अभ्रक सत्व को- मोर-
के पित्तेसें और सरसों के तेलसें अपने हाथमललेय - अथवा
सोनामक्खी का सत्व और सहतदोनों मिलाकर अपनेंहाथमें
मललेय- तबउसपारे को जंभीरी के रसमें घोटै- पीछे सोनाम-
क्खीकासत्व- अभ्रकके सत्व के समानलेय रत्ती ४ एकगोलाकौ
पीछे सेंधानोन धेलेभरि जवाखार धेलेभरि- दोनोंकोनीबूकेर-
समें और गोमूत्रसें खूबघोंटै जबगाढाहोयतब चारतहकपड़े
में लेपकरै सूखेतब इस में पूर्वोक्त गोलाकोधरै- अथवा इस-
काभोजपत्रपर लेपकरै जिसमें गोलाधरै- सूतसें इसकोबांध-
उसगोलाको दोलायंत्रकी भांति एकहांडीमें सेंधानोन-जवा
खार- कांजी-कागदीनीबूकारस- गोमूत्रडारिकर- तीनदिनस्वे
दनकरै ॰ जानना चाहियेकि-अभ्रकसत्वजब- सोनामक्खीके
सत्वमें मिले- तबपारा अभ्रकसत्वको- भलीभांतिग्रसै- औरदो
नोंसत्वनमिलें तो नहींग्रसे- यासें अभ्रकसत्वके बराबरि सोनाम
क्खीकासत्वमिलावे- पीछेजारणाकरै- जबयाप्रकार स्वेदनकर
चुके तब उसगोलाकोनिकासलेय- पीछे इसगोलाको कां
जीके पांनीसें धोयकारइसमें सें पारानिकाललेय- फेरइसपारेको
कपड़ेमें डारिकारखूबमलै- परंतु ऐसे मलैकिपारा घटनेनहीं
पावै-जबमलते २ निर्मलहोजायतब चारलरकपड़ेमेंडारक
र निचोड़डारै पीछे पारे को तोलै जोजानै कि केवलपारारहि
गयाहै- अभ्रकसत्वबाकीनहींरहा- तौजाननाकि पारा अभ्रक-
सत्वको खायगया- और पारातोलमें अधिकहोयतो जानै कि पा-

रेमें अभ्रक सत्वजीर्णनहींभया- जब अभ्रकसत्वपारेमेंजीर्णहोय तबपारा देहधारी अर्थात् जीवधारीहोय और यदिजीर्णनहोय तौ देहधारीनहोय तबउसपारेको भोजपत्रमें बांधके दोलायंत्र कीभांति एक हांडीमें लटकाय हांडीमें कांजीकापानीभरै- और सेंधानोन ऽ। पावभरडारै- तीनदिनस्वेदनकरै तब पारेका- अजीर्णदूरहोय अथवा डमरू यंत्रमें पारेको उडायलेय तब- पारेका अजीर्णदूरहोय ॥

उक्तंहि

अजीर्णेपातयेत्पिंडं स्वेदयेन्मर्दयेत्तथा

रसस्याम्लस्ययोगेनजीर्णंयासंतुदापयेत् ॥

अर्थ- पारे के अजीर्णमें पातन- स्वेदन- और खटाई के योगसें मर्दनसंस्कारकरै- जबजीर्णहोजायतब फेर ग्रासदेय- इसीप्रकार पारेमें अभ्रक के चारग्रास औरदेय- इसीभांत दोलायंत्रमें स्वेदनकरै और इसीप्रकार प्रक्षालनकरै और पिंडनकरै- और इसीप्रकार अजीर्ण जीर्ण की परीक्षाकरै- बाजे वैद्यकच्छपयंत्रसें पारेका दूनाअभ्रक सत्वादिकको थोडा२ डारकर- जरातेहैं- और जोशे घरहैंहैं उसको साक्षात्अग्निमें रखकर भट्टीसेंधोंककरजरातेहैं- और पूर्वोक्त गोला पक्कीघरियामें धर ऊपरनीचेगोलाकेविड दे कर घरियाको जंभीरीनींबूके रससेंभरदेतेहैं पीछेघरियाकोमुख मूंदकें भट्टीसें धोंकतेहैं तबपारेकाद्विगुणसत्वादिक कच्छपयंत्र मेंजरातेहैं- तबपाराउडनेकाभयनहींरहै- इसीसें साक्षात् अग्नि केसंयोगसें याकी द्विगुण सें अधिक सत्वादिकजरावैतौ कुछचिं तानहीं है- अथवा- अभ्रक सत्वादिक कच्छपयंत्रमें नजरै औरही सुगमप्रकार यहहै- पृथ्वी में गोबरधरे तिसगोबरके वीचमें पक्की घरियाधरै- छः अंगुलगहिरी तिसेंगोलाधरै उसके ऊपरनीचेवि डधरकै- जंभीरीके रससें आधीघरियाभर- औरमुखबंदकर इस्को

परन्अंगारभराठीकराधरै- जबतकसत्वनपिगले पीछेपारेकोनिकास-
कर तोले जो पारावजनमें बराबरहोय तोफिरिइसीभांति सत्व-
कोडारिऑचदेय जबपारेका दूनासत्वजरिजायतब साक्षात् अ-
ग्नि संयोगमें- त्रिगुण- चतुर्गुण- पंचगुण- षड्गुण- सत्वादिक-
जारणकरै हरबेर पारेका षोडशांस सत्वादिकडारै औरजरावै-
तिसके उपरांत- बाह्यदुतिके योगसें अभ्रकसत्वको पारे मेंजरा
वै- यद्यपिशास्त्र में बाह्यदुतिका प्रकार औरहै- सो मेंलिखता
हूं- या प्रकारको कोईवैद्य नहींजानै- एकदिनमरीकेरसमेंअ
भ्रकसुपेद भिजोयदेय- पीछे एककंमरकीथैलीमेंभरै- यदिअभ्र
कसेरभर होयतो इसमें ॥ भर धानकीभुसी मिलायकै- एकवडीपरा
तमें तीनदिन भीगनेदेय- फेर चौथेदिनउसीपरातमें हाथसेवह
थैली मसलै ऐसे करनेसे अभ्रकके छोटेछोटे टुकराबहिकरपा
नी में आमें- तबपानीको निकासडारै- परातके भीतरजोधान्या
भ्रकहै उसकोलेय- और उसधान्याभ्रककी- बराबर साबुनले-
य दोनों को एक खरलमेंडार केघोटे- पीछे कराही मेंडारिऔ
र इसमें साबुन को तेजाव दो सेरडारै- तीनों को मंदमंदआंच
देइ- जबसबजरिजाय- आधसेरतेजाबकीरहै- तबउतारलेय-
पीछे इसमेंघी३६टंक- सहत-२७ टांक- छोटीमछली३६टांक- ए-
कखरगोसमारकरडाले- खांड़ ९ टांक- गुड़३६ टांक- गूगल१८टां
क- अंडीका चोवा१८ टांक- इनसबको कूटपीसकर मिलावे -
और इसके गोलातीन३ करकेसुखावै पीछेसबको एकअगीठी
मेंधरकर- नीचे ऊपरकोयलादेकर- बंकनालधोकनीसें धोंके-
अभ्रकका सत्वज्वार कीबराबरनिकास- फेरउसमें पूर्वोक्त मसा-
लाडारि- औरफिर एकखरगोस मारकरडारै- पीछेसबकोघोट
कर तीन३गोलाबनावै- फेरपूर्वोक्तरीतिसें- दूसरेरंगके समान
अभ्रक सत्वनिकासलेय- फेरतीसरेमसालाडारिकर- इसीतरह-

बंकनालसैं धौंककर दहीसा अभरकसत्वनिकासलेइ पीसरीवेरका निकालासत्व सर्वदा पतलारहताहै जमतानहीं है इसकोवाध्यद्रु तिकहतेहैं यहविनापारे के संबंध द्रुतीभूतहै ॥ ॥ ॥

अथलोहस्यद्रुतीकरणं

पहिले सहत सुहागा संखिया सत्वमिलायकै पोलादकोबडी घरियामेंडारिकैं जबतकघोटै जबतक पिघलजाय पीछेशीतल करके लोहनकों रेतिकरके २४ टांकलेय नोनइस्काआठवां हिस्सालेय दोनों को कागदी नीबूकेरसमें घोटै जबसूखजाय तबगरम पानी से तीनकों धोयडारै जबपानीशीतलहोयतब हरदफेनिकारडारै पीछे नोसादर ३तीन टंक डारिकेनीबूकेरसमें घोटै पीछेइस्कागोलाबनाय सीसीकेप्यालेमें धरै दोप्रहरतक सुखावै तदनंतर गोलाको निकासकर पीसे फेर तीनटंकनोसा दरडार कागदी नीबूकेरसमें घोटै गोलाबनायकै उसीप्यालेमें तीनप्रहरधरकरसुखायलेय फेरपीसके ३तीनटंकनोसादरडारै औरतीनटांकसिंगरफडार नीबूकेरस में घोटै जब सूखैतबउसीप्या लेमें धरै और इसमें खट्टेअनारकारसडार प्यालाभरिमुखढकदेइ नित्यखट्टे अनार कारस थोडा२ डालाकरै एकमहींनातकलोह रसमें पडारहै ऐसे एकमहीनाकेरहनेसें लोहा पारे की भांति पतलाहोकररहाआवै इतिलोहस्यवासद्रुति पीछेअभ्रक कासत्वद्रुतीभूत ३तीनटांकऔरलोह द्रुतीभूत ३तीनटांकदोनों को मिलायकै खरलमें घोटै जबभलीभांतिमिलिजायतबएक ---- मैंराखकैं घोंके खूबलो पाराबद्धहोय यहकामभिथ्यानहीं हैं इसीसें पाराबद्धहोयहै और सोना चांदी होयहै इसमेंसं देहनहीं औरजो लोह और अभ्रकदोनो द्रुतीभूतको उसपारे में मिलावैं जिसें अभ्रकसत्वजारणकरागयाहै तो अतिउत्तम है इसको एकसेर रांगमें एक टंकडारै सोएकटंकरांग एकसेरतामें

कुद पीछे शुद्ध ३टांकपारे में इनदोनोंको मिलायके खरलमें घोटे ॥६॥

में डारे तो १ टंक तामा १ सेरकांसे में डारे- सोसक टंक कासा १ सेरसी
से में डारे- तो चांदी होय- और सक तोला तांबमें डारे तो- सुवर्ण-
होय- इसपारे कानाम सिद्धि सत है ॥ ॥ ॥ ॥

वद्धपारदकेलक्षण॥

हेमावारजतेनवासहिपरोध्मातोप्रजत्येक
तो मलीरणोनिश्चितोगुरुस्वघुटिकाकारो
निर्दोषोज्वलः चूर्णत्वंपटुवस्त्रयानिनि-
हितोघृष्टेनमुंचेन्मलम् निर्गंधोद्रवतिक्ष
णात्सहिमतोवद्धाभिधानोरसः ॥ ॥

अर्थ- जो सुवर्ण- चांदी- के संगमिलानेसें सक होजाय- छी-
जेनहीं- निर्मलहो- भारीहो- गुटका के आकार हो- लंबाहो- स-
च्छहो- पीसनेसें नोनकालाचूर्ण होजाय- घिसने सें कालोंचनदेय-
गंधरहित- शीघ्रहीं- द्रवजाय- वहबद्धरसजानना इतिबद्धसलकेल-

बद्धपारेकी परीक्षा- ॥

रसोवंधमापातस्त्रोदृपस्येवृनिश्चितम्-
यन्नांस्लोहमयिस्थूलोस्पर्शमात्रेणलीलया
मृतमुत्थापयेन्मर्मचक्षुसोःक्षेपमात्रतः ॥
निर्हंतिसकलारोगान्घृतःशीघ्रंनसंशयः २

अर्थ- जिसके पैरमें बडीभारीभी लोहेकी बेडीहो- सोइसपारे
के स्पर्शमात्र- होनेसें टूटजाय- और इसको घिसकर मुर्देके-
नेत्रमें लगावैतो जीवैहै- और इसके सूंघनेसें सबरोगदूर-

होय- अवसिद्धरसकागुटिकाप्रकारलिखते

अथखगेश्वरीगुटिका

तुल्यंकंम्पपाकत्वास्थापयेन्मध्यपारदं
अर्कसेहुंडधत्तूरारसोद्रोणेनपूरयेत् १
सप्ताहमौषधीभाव्यंसिद्धनेत्याघनप्रिया

पश्चात्तदम्लयोगेन गोलकं भुक्तसन्निभम् ।
धत्तूरविषतैले तु ज्योतिष्मत्याश्च तैलके ।
गुञ्जाचलाङ्गलीचैव भल्लातकोलकौ तथा ।
एतेषां तैलयोगेन गुटिकां विष्णमध्यगां ।
दोलायंत्रे पचेद्देवि चतुःषष्टिदिनानि च ॥ ४ ॥
प्रत्येकमौषधीतैले राक्षसी गुटिकोत्तमा ।

अर्थ- सिद्ध पारा ।। पाव भर लेवे - नीलाथोथा ।। आध सेर आधा पारे के ऊपर धरे - आधा नीचे धरे - आक - थूहर - धतूरा - इन तीनों का रस चार २ सेर लेय - प्रथम कढाही में पूर्वोक्तरीति से पारे को धर पीछे सब रस को कढाही में डारि तेज आंच देय जब रस गाढा होजाय तब उतार कर पारे को पानी से खूब धोय डारे - पारा गाढा होय तब खल्ल में डारि के ७ दिन सिंहनेत्री के रस में घोटे ७ दिन ~~घन~~ प्रियाके रस में घोटे - पीछे कागदी नीबू के रस में घोटे पीछे एक विषकी बड़ी और मोटी गांठ लेय उसमें एक गढेला इतना बड़ा खोदे - जिसमें पाव ।। भर पारा समाय जावे पीछे इसमें पारे को भरके विषके टुकडे से मुख बंद करै और इस विषकी गांठ को कच्चे सूतसे लपेट कर दोलायंत्र करके विषको धतूरे के तेल में राखे - विषकी गांठ कढाही की पेंदी से दो अंगुर ऊंची रहे ६४ दिन पर्यंत इसके नीचे मंद मंद आंच देय - जैसे २ तेल घटे तैसे २ डारता जाय - इसी प्रकार मालकांगुनी के तेल में - घुंघची के तेल में - करिपारी के तेल में - भिलायेके तेल में - अंकोलके तेल में इन प्रत्येक में ६४ चौंसठ चौंसठ दिन पचावे तौ राक्षसी पारा होय - अर्थात् बहुत भूखा होय इति ॥ ॥

स्वर्णादिदलोहानि भक्षयेन्नात्र संशयः ।
तारमध्ये यदा क्षिप्तः स्वर्णं भवति निश्चितं ।
वंगमध्ये यदा क्षिप्तो रजतं जायते ध्रुवम् ॥ ६ ॥

मुखेस्थिताऽदृश्यं च नानाकौतुककारकं
खेचरीजायते सिद्धिर्मनः पवनवेगकृत् ७
जरामृत्युहरं रोगं विषस्थावरजंगमम् ॥
नानयासदृशंह्यापि त्रिषुलोकेषु विद्यते
नाम्नाखगेश्वरीनाम गुटिकासिद्धिसाधनम्

अर्थ- यह पारा स्वर्णादिकके खाने को समर्थ होय-चांदी-में इसको डार नेसें-सुवर्णहो-और रांगको चांदी करै-मुख में राखनेसें-अदृश्य होय-आकाशमें विचरनेवाला होय-एक क्षणमें हजारकोस पहुंचै जराकोहरै बुढापा और मृत्युको औ र विषको दूरकरै इस गुटिकाकी बराबर दूसरा और गुटिका न-हीं है इति खगेश्वरी समाप्तम्

इति पारदस्य बंधनप्रकरणम्

अथ मारणप्रकरणम् लि०

कृष्णधत्तूरतैलेन सूतो मर्द्यो नियामकैः
दिनैकं तप्तखल्वे च कच्छपाख्ये न संशयः
मृतः सूतो भवेत्सद्यो सर्वरोगेषु योजयेत्

अर्थ- सिद्ध पारा भरि लेइ इस में धतूरे का तेल डारकर एक-दिन घोटै-और एक दिन नियामक औषधीन के रसमें-घोटै पीछें इसका गोला कर-कच्छपयंत्र में धरकर-आंच देय तो पारा निःसंदेह मरै या क्रिया सें पारा सबीज और निर्बीज मरै है

निधामक औषध

चंदाल का रस-सपेद आक का दूध-कबूतर की बीठ-गीली हंसपदी को रस-इन्द्रायन के फलका रस येही नियामक-औषध हैं ॥

पारे मारण की दूसरी विधि

आखस्थगरलेमतंमर्दयेत्सप्तवासरम्
शंभुनालंकृतेयंत्रे तन्मध्येतत्सुतंक्षिपे
त् ॥१॥ वह्निंप्रज्वालयेद्गाढंवारिणा
चोर्ध्वशीतलम् ॥ यावद्द्वादशकंचैव
सुसिद्धंजायतेरसम् ॥२॥ शुल्वेगुंजा
धिकंदेयंगुंजैकंपर्वतानपि ॥ देहलो
हभवेसिद्धिःकामयेत्कामिनीशतं॥३॥
तिलमात्रंप्रदातव्यंसर्वरोगानियच्छति
॥ सेवनाज्जायतेसिद्धिरायुर्वृद्धिश्चिरं
तनी ॥४॥

अर्थ- सर्पकेजहर में पारेको सातदिनघोटै- पीछेश्रीमहा
देवजीने कह्योजोजल यंत्र तामें भरकर बारह प्रहर की अ
ग्निदेय-श्रीर इसयंत्रके ऊपर-शीतल जलभरै जासेऊपर-
शीतलरहै ऐसेंकरनेसे रस "पारा" सिद्धहोइ- येरसतामेमें
आपरती डारनेसे तामेंकोवेधै- और यहरसएकरत्तीपर्वत
कोवेधकर्नेकोसमर्थहै- इसरससेदेहकीश्रौर सुवर्णकीसि
द्धिहोय- पारसका खानेवालापुरुष सौ स्त्री भोगै- येरसति
लमात्रके देनेसें- सर्व रोगका नाशकरै- श्रौरआयुष्यकीवृ
द्धिकरै ॥५॥

पारामारनेकीतीसरीवि-

शुद्धंसूतंसमंसिंधुखमलंचनदंइकम्-
खमलार्द्धंविषंक्षिप्त्वाहिंगुस्फाटिकगै
रिकम् ॥१॥ सामुद्रलवणांचैवसर्वंतु
ल्यंविनिक्षिपेत् ॥ कांजिकेनपुटंदत्वा
त्रुटित्वाचेन्द्रवारुणीम् ॥२॥ स्थाल्यां
तुस्थापनंकृत्वाअग्नियामाष्टकंददेत् ॥

स्वांगशीतंसमुधृत्यभस्मसूतोर्ध्वपातनं
॥३॥ योजयेत्सर्वरोगेषुकुर्य्यात्‌वद्धन
रंक्षुधा ॥ पुष्टिदंवर्द्धनेकामयोजयेद्
तिकाद्वयं ॥४॥
अर्थ- शुद्धपारा- सेंधानोन- समभागले-और-अर्धभागसं-
खिया- चतुर्थांसबच्छनागविष- हींग-फटकरी- गेरू- सामुद्र
नोन- ये समानभागलेकर- इन्में कांजीका पुटदेय- फिरद्रु
मन के रस का पुटदेय- फेरवस्को डमरूयंत्रमेंधरकर- आठप्र
हरकीआंच देय- स्वांगशीतलहोनेपर- ऊपरकी हंडियामेंजो
पारेकीभस्म है- उसको निकासले- याभस्मकी- सर्वरोगनाशमें-
योजनाकरै- यहभस्मक्षुधा- पुष्टि- और कामदेव इनकोवढावै
॥ हैंभात्राधाकीदोरत्तीकीहै ॥४॥

पारामारनेकीचोथी विधि ॥

पंचाग्निवर्वरालिंगीद्रवैर्द्यस्त्र्यंरसम्‌ ।
मर्दितःपुष्टितोभस्मस्वर्णवर्णप्रजायते
अर्थ- पारेको- चित्रक के रसमें पांचदिनखलकरै- तथा वन
तुलसी के रस में तथा शिवलिंगीकेरसमें तीनतीनदिनखर
लकरै- तथाइन्हीरसके पुटदेनेसे सुवर्णकेसमानभस्महोय-

पारामारनेकीपांचमीविधि-

कोरंटकाबुसंयोगादातपेमर्दयेद्रसम्‌
म्रियतेसौलतःसत-सर्वकर्माणिसाधये
॥त॥१॥
अर्थ- पारे को पीयावांसे के रसमें मर्दनकर धूपमें धरैतो मरि
मरै और- सर्वकार्यसिद्धकरै ॥१॥

मदनमुद्रा

औदंवरार्कवटदुग्धपलंपलंचलाक्षा

पलंपलचतुष्टयंचुम्बकस्य ॥ संमर्दसम्यगलसीफलतैलयोगात्सोपारदस्य मरणोमुद्रनाख्यमुद्रा ॥१॥

अर्थ- गूलरका दूध-२ पैसाभर- आकका दूध २ पैसाभर- वडका दूध २ पैसाभर- पीपलकी लाख २ पैसाभर- चुंबकपत्थरका- चूर्ण ८ पैसाभर- इनसबकोअलसीकेतेलमेंघोटेतो यहमैनमुद्रा सिद्धहोय- यासें जो संधिलेपकरैतो- वहलेपदृढहोय- कितनाहीपानीगरमहो- परंतुयमुद्रानहींछुटै- औरइसीमुद्राकेप्रभावसें- जलजंतुकेद्वारा- गंधककातेलनिकलताहै

मृतपारदकेलक्षण

अतेजाश्चगुरुःशुभ्रोप्यद्रावोवह्निमध्यगः ॥ नोर्ध्वंगच्छेत्तदामृतः ॥

अर्थ- मरापारा- तेजरहित- हलका- शुभ्र- अग्निमेंदसरेतमेंनहो- उसकोमृत पारद जानना ॥

पारदभस्मगुणाः ॥

यावन्नहरबीजंतुभक्षयेत्पारदंमृतं ॥ तावत्तस्यकुतोमुक्तिर्भोगाद्रोगाद्भवादपि

अर्थ- जबतकयह मनुष्य शिवकाबीजपारदमरा नहींभक्षणकरै- तबतककहांयाकी भोगरोग- और- संसार- से मुक्ति ॥ होयगी- अर्थात नहींहोयगी

तथाच

मूर्च्छातोगदहन्तथैवखगतिंधत्तेविबद्धोर्थदः ॥ स्याद्भस्मामयबाधकादिहरणंदृक्पुष्टिकांतिप्रदं ॥१॥ वृष्यंमृत्युविनाशनंबलकरंकांताजनानंदनं ॥श॥ दृष्टातुलमत्वबन्धभुक्तिजोगानुसारीस्फुटं

अर्थ - मूर्च्छितपारा - रोगीका रोगदूरकरै - तथा आकाशमार्गमें चलनेवालाकरै - वहपारा धनदेय - और मरापारा तरुणदृष्टि - पुष्टता - कांति - इनकोदेय - और द्रव्यहोय - मृत्युकानाशक है - बलकर्त्ता - स्त्रीन्कोआनंदकर्त्ता - सिंहकेसमानपराक्रमकरै ॥ औरपृथ्वीमेंसबरोगोंकोदूरकरैहै ॥२॥

पारदभस्मके अनुपान

पिप्पलीमरिचैःशुंठीभार्ङ्गीमधुनासह
कासश्वासप्रसमनोघ्रतस्यचविनाश
नः ॥१॥ हरिद्राशर्करासार्धंरुधिरस्य
विकारनुत् ॥ अभयांत्रिफलावासा
कामलापांडुरोगजित् ॥२॥ शिलाज
तुतथैलाचशितोपलसमन्वितः ॥ मू
त्रकृच्छ्रेप्रशस्तोयंसत्यंनागार्जुनोदितं
॥३॥ लवंगंकुसुमंपत्रीहिंगुलंअर्कलं
करा ॥ पिप्पलीविजयाचैवसमानेता
निकारयेत् ॥४॥ कर्पूरादहिफेनानि
नागाद्भागार्धकंक्षिपेत् ॥ सर्वमेकत्र
संमर्द्यधातुवृद्धौप्रदापयेत् ॥५॥ सौव
र्चलंलवंगंचभूनिंबंचहरीतकी ॥ अ
स्यानुपानयोगेनसर्वज्वरविनाशनः ॥
॥६॥ तथारेचकराःप्रोक्ताःसौवर्चलफ
लत्रिकम् ॥ लवंगंकुसुमंचैवदरदेन
चसयुतं ॥७॥ तांबूलनसमंभक्ष्यंधातु
वृद्धिकरंपरं ॥ विदारीचूर्णयोगेनधातु
वृद्धिकरोमतः ॥८॥ विजयादीप्यसंयु
क्तोवमनस्यविकारनुत् ॥ सौवर्चलंहरि

द्राचविजयादीप्यकंतथा ॥९॥ अनेनो
दरपीडांचसद्योऽस्यन्नांविनाशयेत् ॥ चतु
र्वल्लीपलाशस्यबीजंचहिंगुरागुडः ॥
॥१०॥ अस्यानुपानयोगेनकृमिदोष-
विनाशनः ॥ अहिफेनलवंगंचदरद
विजयातथा ॥११॥ अस्यानुपानतः
सद्यः सर्वातीसारनाशनः ॥ सौवर्चले
नदीप्येनअग्निमांद्यहरः परः ॥१२॥
सुद्बोधजनकः श्रेवसिद्धनागेश्वरोदि
तं ॥ गुडूचीसत्वयोगेनसर्वपुष्टिकरः
स्मृतः ॥१३॥

अर्थ- पारेकीभस्म- पीपल- मरिच- सोंठ- भारंगी इनकाचूर्ण
और सहतके संगखानेसें- खांसी- श्वास- और- शूलरोगको-
नाशकरै- हरदी- और- खांडके संगखाने सैं- रुधिरविकारको
दूरकरै- त्रिकुटा- त्रिफला- और- अडूसेके- संगखानेसें- का
मला- औरपांडुरोगको नाशकरै- शिलाजीत- इलायची- औ
रखांड के संगखानेसें- मूत्रकृच्छ्ररोगदूरहोय- लोंग- केसर-
तालीसपत्र- हिंगुल- अकरकरा- पीपल- एसमानले- तथा-
कपूर- अफीम- आधाभागले- नागेश्वर१भागले- सबकोपी
सकर इसकेसाथखायतो- धातुकीवृद्धिहोय- सेंधानोंन- लोंग-
चिरायता- हरड़- इनकेचूर्णकेसाथखानेसें- सर्वज्वरकोदूरक
रै- सेंधानोन- त्रिफला- लोंग- केसर- सिंगरफ- इनकेसंग-
खानेसें- इलावरजानना- पानकेसंगखानेसें- धातुकोवढावै-
विदारीचूर्णके संगखानेसेंभी- धातुकोवढावै- भांग- औरअ
जमायनकेसंगखानेसें- वमन अर्थात् रद्दकाविकारदूरहो
सेंधानोन- हरदी- भांग- अजमायन- इनकेसंगखानेसेंउदर

पीडादूरहोय-चतुर्वल्ली-पलासकेबीज इन्सेंदूनागुड़मिलाकर खायतोकृमीरोगदूरहोय-अफीम-लौंग-सिंगरफ-भांग-इनके साथखानेसें-अतीसाररोगदूरहोय-सेंधानोंन-अजमायन-इनके संगखानेसें-मंदाग्निरोगदूरहोय-औरसुधावढै-गिलोयसत्वके संयोगसें-खायतो-सुष्टिकरै-है- ॥१३॥-॥-॥

तथाच

पित्तेशर्करयामलेनसहसावातेचकृष्णासमं ॥ दद्यात्श्लेष्मणिशृंगवेरसहितंजंबीरनीरेज्वरे ॥ रक्तोस्मेमधुनाप्रवाहरुधिरेस्यान्मेघनादोदके ॥ दद्याच्चाप्यकृतातिसारविकृतौरोगारिसंज्ञारसम् ॥१४॥

अर्थ-पारेकीभस्म पित्तके रोगमें-खांड़और-आमलेके-चूर्णयुक्तदेय-वादीमें-पीपलकेसाथ-कफकेरोगमें-अदरखकेरसमें-ज्वरमें-नीवूकेरसमें-रुधिरकेविकारमेंसहतकेसंग-रुधिरस्राव-प्रवाहिका-तथा-अतीसार-इनमेंचौलाईके-रससें-पारेकीभस्मदेनीचाहिये-॥१४॥-॥-॥

पारदभक्षणकाल

प्रभातेभक्षयेत्सूतंपथ्यंयामद्वयाधिके नोल्लंघयेत्त्रियामंतुमध्यान्हेनैवभोजयेत् ॥१५॥ तांबूलांतगतेसूतेविट्वंधोनैवजायते ॥ सकृणामसृतंभुक्त्वा ॥ मलबंधंहरेन्निशि ॥१६॥

अर्थ-पारेकीभस्म-तथाचंद्रोदय-अथवा-रसकपूर-इनकोप्रातकालभक्षणकरै-और-दोप्रहरकेअनंतरपथ्यलेय-परंतुतीनप्रहरनवीतनेपावैं-यहपारदभस्मपानकेसाथखाने-

सें मलबंधनहींहो· अथवा· गिलोय· और पीपलके संगराज
मेंखायतौमलबंधनहोय२६

पारदेपथ्यानि·

हितंमुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानिसदा·
नन: ॥ शाकंपुनर्नवादेविमेघनादंस
वास्तुकं ॥२७॥ सैंधवंनागरंमुस्तामूल
कानिचभक्षयेत् ॥ कुंकुमंगुरुलेपंच·
तथाकर्पूरभक्षणम् ॥२८॥ गोधूमजी
र्णशाल्यन्नंगव्यंक्षीरंघृतंदधि ॥ हंसो
दकंमुद्गयूषोऽस्त्वंचहितंविदु: ॥२९॥
अभ्यंगमालितौक्षौमैस्तैलैर्नारायणादि
भि: ॥ अबलाशीततोयेन मस्तकेप·
रिषेचयेत् ॥३०॥ तृष्णायांनारिकेलां
बुमुद्गयूषंसशर्करम् ॥ द्राक्षादाडिम
खर्जूरीकदलीनांफलंभजेत् ॥३१॥

अर्थ- हित· मुद्गान्न· दूध· बकरीकादूध· चावर· और शाक·
में· · चौंलाई· बथुआ· सेंधानोन· सोंठ· मोथा· मूरी· के·
शार· अगरकालेप· कपूरभक्षण· गेहूं· पुराने चावल· घी· दूध·
दही· मक्खन· हंसोदक· मूंगकायूष· उबटना· सुगंध· माला·
मालदुसाला· नारायणादितैल· सुंदरस्त्री· मस्तकपरशीतल·
पानीसें सिंचन· प्यासलगैतबखांडमिलायकर· नरियलकापा·
नी· अथवा· मूंगकायूष· दाखबिलायती· अनार· छुहारे· के
लाकी गेहर· इतनीवस्तुपारदभक्षणकरनेवालेकोहितकार·
कहैं ॥ ३१॥

॥ पारदभक्षणमेंवर्ज्यपदार्थ

अतिपानंचासनंचअतिनिद्रातिजागरं

स्त्रीणामतिप्रसंगंचध्यानंचापिविवर्ज्जयेत् ॥२॥ अतिहर्षंचातिकोपंचातिदुःखमतिस्पृहं ॥ शुष्कवादंजलक्रीडामतिचिंताविवर्ज्जयेत् ॥३॥ कुष्मांडंकर्कटीचैवकारवेल्लंकलिंगकं ॥ कुसुंभिकाचकर्कोटीकदलीकाकमाचिका ॥३॥ ककाराष्टकमेतद्धिवर्ज्जयेद्रसभक्षकः कुलत्थानतसीतैलंतिलान्माषान्मसूरिकान् ॥४॥ कपोतान्कांजिकंचैवतक्रभक्तंचवर्ज्जयेत् ॥ कट्वम्लतीक्ष्णलवणपित्तलंपीतलंचयत् ॥५॥ बदरंनालिकेरंचसहकारंसुवर्चलम् ॥ वार्ताकुंराजिकाचैववातलानिविवर्ज्जयेत् ॥६॥ निंदास्त्रीदेवतानांचपापाचरणमेवत्यजेत् ॥ ॥

अर्थ- डोलना- भोजन- निद्रा- जागना- स्त्रीसेंरमण- स्त्रीका स्मरण- हर्ष- क्रोध- दुःख- इच्छा- ये अत्यंतनकरै- थोथाभगडा- जलक्रीडा- अत्यंतचिंता- पेठा- ककडी- करेला- तरबूज- कुसुंभ- ककौडी- कदली- काकमांची- यहककाराष्टक है- कुलथी- अलसीकातेल- तिल- उरद- मसूर- कबूतरकामांस- कांजी- दहीभात- कडुई- खट्टी- तीखी- नोनकीवस्तु- पित्तकारक- पीलेपदार्थ- बेर- नारियल- आम- हुरहुर- बैंगन- राई- औरजोवातकारकवस्तु- स्त्रीकी- औरदेवतानकीनिंदा- तथा- पापका- करना- इतनीबातोंकोपारेकाभक्षणकर्त्तामनुष्यत्यागदेय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जीर्णरसकेहोनेसेज्वरो-चि-

यवंचैवमहानमाधोरसेजीर्णोनुभक्षये
त् ॥ कर्षैकंस्वर्जिकासारंकारवेल्लिरसे
प्लुतं ॥ सौवर्चलसमोपेतंरसेजीर्णोपि
बे हुधः ॥

अर्थ- रसजीर्णहोनेपर- महानरोगउत्पन्नहोयहै- तिसकेदूरक
रनेकेअर्थ- सज्जीखार- कारेले कारस १ तुलहूलकेरससंयु
क्त- भक्षणकरै

रसपाककेलक्षण

अनुलोमगतिर्वायुःस्वस्थतासुमनस्क
ता ॥ क्षुत्तृषेन्द्रियवैमल्यंरसपाकस्य
लक्षणम् ॥

अर्थ- पवनअच्छेप्रकारचलना- चित्तमेंस्वस्थतामनप्रसन्न-
क्षुधाऔर- तृषा- का- यथार्थलगना- सबइन्द्रीअपनेअप-
नेकर्ममें-प्रवर्तहों एरसपाककेअर्थात्- पारेपचनेकेलक्षणहैं-

अशुद्धपारद भक्षणकेदोष

संस्कारहीनःखलुसूतराजःपस्यवलेनस्य
करोतिबाधा ॥ देहस्यनाशंविदधाति
नूनंकुष्टादिरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥ १ ॥

अर्थ- जोअशुद्धपाराकोसेवनकरैहै-तिनके- अनेकरोगउ-
त्पन्नहोयहैं- और- मरणतथाकोढआदि अनेकव्याधिप्रगटें-

विकारायदिजायंतेपारदान्मलसंयुतान्
गंधकंसेवयेद्धीमान्पाचितंविधिपूर्वकम्

अर्थ- अशुद्धपारे खानेसें यदिविकारउत्पन्नहोयतो-विधि-
पूर्वकगंधक- शुद्धकरीहुई- सेवनकरेदोमहीनेपरियंतपान-
केरसमें- अथवादाख- पेठेकेटुकड़े- तुलसी- सोंफ-लौंग-
तज- नागकेसर- इनकेबराबरगंधकमिलायके- इस्कादोषह-

लकदेहमें मर्दनकरायशीतलजलसें स्नानकरै ऐसें तीनदि
नकरनेसें पारदका विकारशांतहोय अथवा करेलेकीजड़
कोनवालकरपीवे अथवा नागरबेलपानकारस भांगरेका
रस तुलसीकारस बकरीकादूध इसव प्रत्येक सेरसेरभर
लेसबको मिलाय सर्वदेहमें मालिस दोप्रहरतककरै पी
छेसीरेपानीसें स्नानकरै ऐसेंतीनदिनकरैतोपारेका अोगुन
॥दूरहोय॥

रसकपूरके अपगुण

सेवितोविधिनाकुष्टसंधिवातकफादिकं ·
रसकपूरकंकुर्यात्तस्माद्यत्नेनसेवयेत॥१॥

अर्थ- जोविधिहीन रसकपूरसेवनकरैतो कुष्ट संधिशो
थ कफ वात प्रगटकरै यासें यत्नपूर्वसेवनकरै ॥ ॥ ॥

अथास्यशांति

महिषीशकृतोनीरंधान्यकंवाशिलायुतं
पिवेन्नीरेणमुक्तस्याद्रसकपूरजंगदैः॥२॥

अर्थ- भैसकेगोवरकापानी अथवा धनिया औरसलाजित
पानीसेंपियेतो रसकपूरका विकारशांतिहोय

॥ रससिंदूरकेअपगुण॥

तथा विकारशांति

रससिंदूरमशुद्धाद्रसाद्धिजातंपारदवदो
गान् ॥ कुर्याद्वेतच्छात्यैघृतमरिचैः
जःपिवेत्सप्तदिनं १

अर्थ- जो अशुद्ध पारेसे रससिंदूर तथा चंद्रोदयवना
होसो पारेकीतरह विकारकरैहै उसकीशांतिनिमित्तकाली
॥मि रच- और घृतमिलायसातदिनपीवै १

इतिश्रीमाथुरदत्तरामनिर्मितरससराजसुंदरेपारदप

करणीमृतसमानम्प्रभं ॥

अथ गंधकप्रकरण

तहांप्रथमगंधककीउत्पत्तिलिं०॥

अर्थ- पहिले समुद्र के निकट सर्वरत्नविभूषित·जोश्वेतद्वीप· तिसमें सखीनकेसंग क्रीडाकरनेवाली- श्रीपार्वतीजीकेर· जोदर्शभया- उसीरजसें श्रीपार्वतीजीकेसबवस्त्रलालरंगके होगये- तबउनवस्त्रोंकोत्यागकर- औरनवीनदिव्यवस्त्रको धारणकर- संगकीसखीन्केसाथ- कैलासमेंआयकर- प्राप्त भई- जिसवस्त्रकोआपने- समुद्रके -किनारेपरत्यागकिया- सोवस्त्रसमुद्रकीलहरोंकेद्वारा- बीचसमुद्रमें पहुंचगया- ऐसे श्रीपार्वतीजीका- रजोदर्शका रुधिर- क्षीरसागरमेंप्रवेशक रतीभया- जबदेव- और दैत्योंने- समुद्रमंथनकरातब- अमृतकेसंग- यहप्रगटभयी- औरअपनी- गंधकेप्रभावसें सबदेव· दानवोंको- प्रसन्नकरताभया- तबसबदेवताबोले- कियहपारेके- बंधन -और- जारणनिमित्त- गंधकप्रगटीहै जोगुणपारेमेंहै- सोईगुणयागंधकमेंस्थितहै- ऐसेंदेवतान्केकहनेसें- यहगंधकनामसें पृथ्वीमेंविख्यातभई॥·॥

सचापित्रिविधोदेविशुकचंचुनिभोवरः
मध्यमःपीतवर्णःस्याच्छुक्लवर्णोऽधमःप्रिये

अर्थ- सोगंधकतीनप्रकारकीहै- लालतोताकेचोंचकेरंगकी उत्तमहै- पीलेरंगकीगंधकमध्यमहै- सपेदरंगकीअधमहै॥

ग्रंथान्तरेगंधकलक्षणम्

चतुर्धागंधकोज्ञेयोवर्णैःश्वेतादिभिःखलु
श्वेतोत्रखटिकाप्रोक्तोलेपनेलोहमारणे
तथाचामलसारःस्याद्योभवेत्पीतवर्णवान्

शुकपिच्छः सएवस्याच्छ्रेष्ठोरसरसायने २
रक्तश्चशुकतुंडाख्योधातुवादेविधौवरः
दुर्लभःकृष्णवर्णाश्चसजरामृत्युनाशनः ३

अर्थ- श्वेतआदि- वर्णोंसे गंधक चारप्रकारकीहै- श्वेतको- खडियाजाननी- सोधरके पोतनेतथा लोहमारणमेंलेनीउचितहै- औरजोपीलेरंगकीहोयसो- आमलासारजाननी यदियहीगंधक तोताकेपक्षअर्थात् हरेरंगकीहोय- सोरस औररसायनमेंलेनी- योग्यहै- और तोताकेचोंचसमानला लसोधातुवादकीविधिमेंलेनी- चाहिये- औरजरामौतको दूरकरनेवाली- कालेरंगकी- गंधक- दुर्लभहै॥ ॥ ॥

तथाच

गंधकंद्विविधंप्रोक्तंलोणियंचाम्लसारकं
योग्यंचैवाम्लसारंहिरसमार्गेगुणात्मकम्

अर्थ- गंधकदोप्रकारका- एक- लोणिया- औरदूसराआ मलासार- तिनमेंआमलासार- पारेकेकर्मकरनेमेंप्रशस्तक ॥हीहै ॥१॥

गंधकशोधन विधि-

पयःस्विन्नोघटीमात्रंवारिधौतोहिगंधकः
गव्याज्यविद्रुतोवस्त्रगालितःशुद्धिमृच्छति
एवंसंशोधितःसोपंपाषाणानंवरेत्यजेत्
घृतेविषंतुषाकारंस्वयंपिंडत्वमेवच॥२॥
इतिशुद्धोहिगंधाश्मानापथ्यैर्विकृतिव्रजेत्

अर्थ- एकहांडीमें एक १ सेरदूधभरै- तिसहांडीकेमुखपर वस्त्रबांधिदेय- पीछेआमलासारगंधक को पीसकर प्रथम घीमेंगलावैजब- गंधकघीमेंगलजाय तब- उसहांडीकेमुख परवस्त्रबंधाहैउसपैगेरदेय- ऐसेकरनेसे गंधक- उसकपड़े

मेंसें रुपककार- दूधमेंगिरेगी- और दूधमें जमजायगी- और जो उसगंधकमें- पत्थरकेछोटेछोटे टुकडेहैंसो- वस्त्रमें रहिजानेंगे और -गंधकमेंजोविषरहेहे सोधीमें रहिजायहै- पीछेउसगंधककी निकालकर- पानीसें धोयशुद्धकर- सुखायकेधररखे ऐसेंशुद्धभई गंधकअपथ्यसेभीविगाडनहींकरे

गंधकशोधनकादूसराप्र-

गंधकोद्रावितोभृंगरसेक्षिप्तोविशुध्यति
तद्रसेसप्तधाभिन्नोगंधकःपरिशुध्यति १
अथवाकांजिकेतद्वत्शुध्यतेपूर्ववत्सुटात

अर्थ- गंधक को घृतमें गलायकर- भांगरेकेरसमेंसातवारपूर्वोक्तप्रकार- डारनेसें- शुद्धहोतीहै अथवा एकपात्रमें कांजी भर- उसका मुखकपडेसेबांध- उसकपडे पर घीकेसमान गंधकके छोटेछोटे टूककर- बिछायदेय- ऊपर उसके लोहेका सवाधरे- उसतवेमें खूबआंचवरावे- उस तवेकेतप्तेहोनेसें गंधकपिगलकर- कांजीमेंगिरेगी- उसको निकालशुद्धपानीसें धोयकर- धररखे- काम पडें तब काम में लावें । ॥ । ॥

अथशुद्धगंधकानेलाकृष्टि-

अर्कक्षीरैस्नुहीक्षीरैर्वस्त्रंलेप्यंतुसप्तधा ॥
गंधकंनवनीतेनपिष्ठ्वावस्त्रंविलेपयेत् १
तद्वर्तिज्वलितांदण्डेधृताकार्य्यात्त्वधोमुखीं ॥ तैलंपतेद्वधोभांडेग्राह्यंयोगेषु-
योजयेत् ॥२॥

अर्थ- एक गजभरका- महीनकपडालेय- तिसकपडेको आकके दूधमें सातवार भिजोवे और हरदफेसुखायलेई- इसीप्रकारसातपुट- थूहरकेदूधकीदेइ- पीछेशोधीगंधक- इतनीलेनीचाहियेकि- जिसमें एक१गजभरकपडामेंलेपहोजाय-

उसगंधक को मक्खनमें · खरलकर एक१जोकेप्रमाणउसक पड़ेमें लेपकरै · पीछेइसकीवत्ती बनाय · लोहेकेचीमटासेंपक रिकर एकओरसैंबरावे · जिसओरसें बरावे उसओरकीतर फ · वत्तीनीचेकोलटकायदेय · वत्तीकेनीचे एकपात्रधरे · ऐसे करनेसें उसवत्तीमेंसें तेलटपकटपक कखसनीचेकेपा त्रमें गिरेगा · यह तेल चार४ रत्ती पानकेसंग खानेसेंदेहमेंपु ष्टताहोय · श्वास · कास · बंधकोष्टदूरहोइ ॥

गंधकतेलकीदूसरीवि ·

आदित्यास्तेचपयसीदद्याद्गंधकजंरज:
तज्जातदधिजंसर्पिर्गंध तेलनियच्छति
गंधतैलंगलत्कुष्टंहंतिलेपाच्चभक्षणात्

अर्थ- गंधककाचूर्ण करसंध्याकोदूधमें भिजोयदेय जबदही जमजायतब · इसकोमथकर · मक्खननिकालघृतकरै · इसी कोगंधक तेलकहतेहैं · या गंधक तेलके खानेसें · औरल गानेसें · गलत्कुष्टदूरहोय · ॥

गंधककीदुर्गंधहरण

विचूर्णगंधकंक्षीरघनीभावावधि: पचेत्
तत:सर्पावर्त्तरसे पुनर्दत्वापचेच्छने: ॥१
पश्चात्त्रिफलातयस्मात्तोजलेत्रिफलसंभवे ·
जहातिगंधकोगंधंनिजंनास्तीहसंशय: ॥

अर्थ- गंधककाचूर्ण कर दूधमें तबतकपचावै · जबतकगा ढाहोइ · तदनंतरकालेभांगरेकेरसमें · मंदाग्निसें पचावेपीछे त्रिफलाकेकाढ़ेमें · पतलीकर औटावेतो गंधककीदुर्गंध · जातीरहैहैनिस्संदेह ·

गंधककाअनुपानलि ·

इत्थंविशुद्धस्त्रिफलाज्यभृंगमध्वान्वित:

भागमितोवलीढः ॥ गृध्राक्षितुल्यंकु
रुतेक्षियुग्मंकरोतिरोगोज्झितदीर्घमायुः
॥१॥ शुद्धंगंधंनिष्कमात्रंसदुग्धैःसेव्यं
मासंपौरुषंवीर्यप्रवृद्धौ ॥ षण्मासात्स्या
सर्वरोगप्रणाशोदिव्यादृष्टिर्दीर्घमायुःस्व
॥ रूपम् ॥२॥

अर्थ- चारमासे शुद्धगंधकत्रिफला· घृत· भांगरेकारस· इन
केसंग खानेसैं· गीधकीसी दूरदृष्टिहोइ· और रोगरहित
दीर्घआयुहोय· तथा निष्कमात्र· गंधक· दूधकेसंग ए
कमहीनापर्य्यंतखानेसें· स्वरपत्र और वीर्य· इनकीवृद्धी·
होय· ऐसें छः महीनासेवनकरनेसें· सवरोगदूरहोइ·
॥ और दिव्यदृष्टीतथाआयुष्यकीवढवारहो

मोचाफलेनत्वग्दोषंचित्रकेनमहाबलं
आटरूषकषायेनश्वासकासानजयेद्ध्रुवं
मंदानलत्वंजयतित्रिफलाक्वाथसंयुतः
ऊर्ध्वगान्सकलान्रोगान्हंतिशीघ्रंसुगंधकः२

अर्थ- गंधक· मोचाफल· के संगखानेसें· त्वचाकेदोषदू
रहो· चित्रककेसंगवलदायक· अडूसेके काढेकेसंग·
खांसी· श्वासदूरहोय· त्रिफलाके· काढे के संग मंदाग्नि·
॥·॥ नाशकऔर· देहकेऊर्ध्वभागकेरोगोंकानाशकरै२

गंधककल्क

चूर्णीकृत्यपलानिपंचनितरांगंधाश्म
नोयत्नतस्तच्चूर्णंत्रिगुणंतुमार्कवरसे
छायाविशुष्कंकृतम् ॥ पश्चाच्चूर्णम
थाभयामधुघृतंप्रत्येकमेकंपलं ॥ हृ
ष्टोभोजनमेतिमासयुगलेखादन्नरःप्र

त्यपं योगंधाश्म विचूर्णितंपिबतियत्ते
लेनकर्षोन्मितं अन्येघुस्यजलावशेन
चरत:कालेयथाभ्रत्यह ससाहात्रित
यान्निहंतिसकलापामादिसर्वाकुन्नो
नित्याभ्यासवशाद्विनष्टसकल:क्लेशोप
तापःपुमान् २

अर्थ- गंधक पांचपल पीसकर और इससे तिगुना भांगेका रस मिलाय छायामें सुखाय तदनंतर यामें छोटीहरड़ मिलाय- सहत- घृत- सबस्येक दो२ तोले मिलाकर नित्य२ महीने परिमितखायतो वृद्धभीपुरुष तरुनहोजाय अथवा तेल केसाथ तथा जलकेसंगनित्यदसमासे खानेसे सात अथवा तीनदिनमें खाजसे आदिले सबरोगदूरहोय और नित्यसेवनकरैतो संपूर्णक्लेश उपताप येसबनाशहोय२

दूसराप्रकार

योवात्युग्रमतीवचूर्णितमिदंगंधाश्मकं
क्षासमं पथ्यातुल्यमपिप्रपूजितगुरु
भूतेशपूजापर: आहारादिषुमंत्रणादि
रहित:स्यात्पुष्टिवीर्याधिक: योक्तोलां
वुजनेत्रयुग्मविलसत्त्वामीकराभासुर:२

अर्थ- गंधकचूर्ण पीपर अथवा हरडइनमें मिलाकरखानेसें क्षुधा पुष्टि तथा वीर्य इनको बढावे और नेत्रतथादेह कीकांतिदिव्यहोय॥३॥

गंधकरसायन॥

शुद्धोवलिर्गोपयसाविभाव्यस्ततश्चतुर्जा
तगुडूचिकाभि: पथ्याक्षधात्रौषधभृंग
राजैर्भाव्योयथास्यपृथगष्टकेस॥१॥

सिद्धे सितां योजय तुल्यभागां रसायनं गंध
कस्य हि नं स्यात् धातुक्षयं मेहगणाग्नि
मांद्यं शूलं तथा कोष्ठगतांश्च रोगान् ॥२॥
कुष्ठान्यथाष्टादश रोगसंख्यान्निवारयत्ये
व च राजयोगं कर्षोन्मितं सेवितमेनि
मन्योवीर्यं च पुष्टिं बलवान्प्रदीप्तमाग्नि ॥३॥
वमनं रेचनं पूर्वं शुद्धे चैव समाहरेत् जांग
लानि तु मांसानि बिल्लागल्लानि प्रयोजयेत् ४

अर्थ- शुद्ध गंधक को गोदुग्ध चतुर्जात गिलोय- हरड़ ब-
हेडा- आमला सोंठ भांगरो इन प्रत्येक की आठ२ भावना
देय और आठही भावना अदरक के रसकी देइ पीछे गंधक-
के समान चीनी मिलावै यह गंधक रसायन है यह तोले
से कुछ कम मात्रा देने सें धातुक्षय संपूर्ण प्रमेह अग्निमां-
द्य- शूल उदरके विकार सर्वकुष्ठ इन सबका नाश हो तथा
बल वीर्य पुष्टि को देय- इस रसायनका खानेवाला पुरुष प्र
थम वमन विरेचन सें देहको शुद्ध करले और पथ्य जां
गलजीवों का मांस तथा बकराका मांस खाय इति ॥

गंधकद्रुति

कलोशव्योषसंयुक्तं शुद्धगंधं विमर्दये
त् आर्द्रमाचेव वस्त्रे न हि प्रकीर्य विवर्ज
येत् ॥१॥ सूत्रेणावेष्टयित्वा च पामतैले
निमज्जयेत् धृत्वा संदंशतो वह्निमध्ये
प्रज्वालयेच्च तां ॥२॥ द्रुतो निपतिताग
धो निर्दोषः काचभाजने तां द्रुतिं प्रक्षि
पेत्पात्रे नागवल्याहि विंदकान् ॥३॥
वस्त्रेण प्रमितं शुद्धं सूतेन्द्रं च विमर्दयेत्

कासंश्वासंचशूलानिगृन्हीयादपिदुर्ध
रं ॥४॥ आमंविशोधयत्याशुलघुत्वंप्र
करोतिच ॥

अर्थ- शुद्धगंधकका सोलवां भाग त्रिकुटा मिलाय खरलक
रे पीछे सवा हाथ का कपड़ा लेइ तिसमें इसगंधकको फैलाय
बातीकरे फिर इसबातीको डोरामें बांध देइ पीछे इसबाती
को तिलके तेलमें पहरभर भिजोकर निकाल चीमटासें ए
कओर सें पकड़ दूसरी ओरसें जलावे नीचे बत्तीके कांच
का कटोरा धरदेय- उसमें जो तेल टपके उसगंधककी द्यु
तिमें द्युतिके समान पारा घोटके कज्जली करे इसकज्जली
के खानेसें खांसी- श्वास- शूल- एअसाध्य भी दूरहोइ तथा
कुष्ट आमका रोग नाश होतथा देहको हलका करे४

गंधकलेप

धांपाकमूलस्वरसैः संघृष्टो गंधकोत्तमः
लिप्तोदेहेध्रुवंहन्तिकुष्टपामादिमर्द्दनः

अर्थ- गंधकको अमलतासकी जडके रसमें घोटदेहमेंले
पकरे तो कोढ़ खाज पामाको दूरकरे

गंधककीधातुवेधककज्जली

पीतेचगंधकेसूतंरक्तचित्ररसैर्ध्रुवम् ॥
वज्रीक्षीरेणसंपिष्टंवंगस्तंभकारं ॥१॥

अर्थ- पीलीगंधक और पारा इनकी कजली लालचित्रक
के रसमें तथा थूहर के दूध में घोटनेसें वंगकास्तंभनकरे१

गंधकेनहनेत्सुल्वंदरदेनसमंकुरु मा
तुलुंगरसेपिष्टात्रिपुटान्मृपलेपशी
सिंदूराभंभवेन्नागंतास्मभवतिकांचनम्

अर्थ- गंधकसें तामां मारे तिसमें तामेकी बराबर हिंगुल मिलाय-

विजोरेकेरसमें खरलकरै पीछे शीशेके पत्रोंपरलेपकर पुटदेप-
यापकार तीनपुट देनेसे सिंदूरकेसमानभस्महोइ इसभस्मको
तांबे में डारैतोसुवर्णहोय-

अशुद्धगंधकदोष॥

अशुद्धगंधककरतेचकुष्टंतापंभ्रमंपित्त-
रुजंतथैव रूपंसुखंवीर्यबलंनिहंति
तस्माद्विशुद्धोविनियोजनीयः

अर्थ- अशुद्ध गंधक कोढ-ज्वर-भ्रम- पित्तकेरोग औररूप
तथा सुख- वीर्य- बल- इनका नाशकरै यातेंऔषधमें गंधक
शुद्धडारैअशुद्धनहींडारै

गंधकभक्षणमेंत्याज्यवस्तु

लवणाम्लानिशाकानिद्विदलानितथैव
च स्त्रियश्चारोहणंयानंपदाचैतानि
वर्जयेत्

अर्थ- गंधकखानेवालामनुष्य नोनकेखट्टे औरसेवलु साग
इत्यादित्यागदे दोदलकाअन्न आरहस्यादि स्त्रीगमन-
घोडाआदिपर बैठना पैरोंसे चलना तथापित्तकारवस्तु
सबत्यागदेवै ॥९॥

गंधकविकारशांति

विकारोयदिजायेतगंधकाच्चेत्तदापि-
बेत् गोघृतेनान्वितंक्षीरंसुखीस्यात्
सचमानुषः॥

अर्थ- जोगंधकखाने से विकार होपतो गौकेघृतसंगमिलाके
॥दूधपीवै॥

इतिश्रीमाथुरदत्तरामनिर्मितरसराज-
सुन्दरग्रंथेगंधकप्रकरणंनामद्वितीयोध्यायः

अष्टलोहोंकेनामतथा सप्तधातु

सुवर्णरजतंताम्रंत्रपुशीशकमायसं षडेते
तानिचलोहानिकृत्रिमौकांस्यपित्तलौ १

अर्थ- सोना· चांदी· तांबा· लोहा· रांगा· शीसा· येछः लोहे· श्रेष्टहैं और कांसा पीतल· येदोकृत्रम अर्थात् बनेहुएलोहेहैं पित्तलविनापूर्वोक्तसातधातुकहातीहै

सुवर्णकेनाम

स्वर्ण· सुवर्ण· कनक· हिरण्य· हेम· हाटक· तपनीय· गांगेय· कलधौत· कांचन· चामीकर· सातकुंभ· कार्त्तस्वर· जाम्बूनद· जातरूप· महारजत· इतनेसुवर्णकेनामहैं

सुवर्णकेभेद ॥

प्राकृतंसहजंवन्हिसंभूतंखनिसंभवम् ॥
रसेन्द्रवेधसंजातंस्वर्णंपंचविधंस्मृतं ॥२॥

अर्थ- १ प्राकृत २ सहज ३ वन्हिसंभूत· ४ खानसेप्रगट ५ पारेके वेधउत्पन्न ऐसेंसुवर्ण पांचप्रकारकाहै अबकहतेहैं किजो गुणसेप्रगट और जिसने संपूर्णब्रह्मांडको आच्छादितकर रक्खा ऐसादेवतानको दुर्लभप्राकृतसुवर्णकहाताहै औरजो ब्रह्मांके जन्मकेसंगप्रगटभया सोसुवर्णसहज अग्निनेजो शिवकादुःसह तेजपानकर फिरत्यागकरा उससेजोप्रगटभया सोवन्हिसंभव सुवर्णजानना सतीनों सुवर्ण दिव्यहैं धारण मात्रतेही शरीरको अजरअमरकरैंहैं औरजोपहाडकीखानसेंप्रगटहो सो खनिज सुवर्णकहाताहै औरजोपारेकेवेधसें अर्थात् रसायनसेंवनें सोवेधजसुवर्णजानना चाहिये॥

सौख्यंवीर्यंबलंहंतिरोगवर्गंकरोतिच अ-
शुद्धंमृतंस्वर्णंतस्माच्छुद्धंचमारयेत् ॥३॥

अर्थ- अशोधितसुवर्ण सुख बल वीर्य को हरणकरै और देहमें अनेकरोग प्रगटकरै यासे अशुद्धसुवर्णकाजारणवर्जि ॥ तहै ॥

अथशोधनम् ॥

तैलेतक्रेगवांमूत्रेकांजिकेचकुलत्थके
त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्यात्स्वर्णादिनांसमा
॥ मतः ॥ १ ॥

अर्थ- १ तोलेभरिसुवर्णके कं टकवेधी पत्रकर इसीरीतिसे चांदी तामा के पत्रकरै फिर इनको मीठेतेलमें मठामें गौके मूत्रमें कांजीमें कुलथीके काढेमें प्रत्येकमें पत्रोंको गरमकर तीनतीनवार बुझावैतौ सोना चांदी तामा शुद्धहोय और रांग जस्त सीसेको अलगअलग गलाय पूर्वोक्ततैलादिक में बुझावैतो तीनौ शुद्धहोंय और लोहेके टूकआगमें गरमकरके तीनतीनवारबुझावै तौ लोहशुद्धहोइ यहसब धातुनकाशोधनसंक्षेपसेंकहाहै ॥ १ ॥

सुवर्णशोधन

हेमंपंचदशंशुद्धंसूक्ष्मपत्राणिकारयेत्
शोधयेत्कांजिकेनैवपश्चान्निंबुकेद्रवैः
तक्रेणशोधयेद्धेमदुग्धेपंचपुनः पुनः
शोधयेत्सर्वौषध्यैःक्षालयेदुदकेपृथक्

अर्थ- उत्तम सोनेकेपत्रकरके कांजीमें नीबूकेरसमें औरम ठामें तथादूधमें तपायतपायकर वारवार बुझावे अथवा सर्वौषधी के काढेमें तपायकर बुझावे पीछेशुद्धपानीसें धोवैतौ सुवर्णशुद्ध होइ अथवा किसीधातुकेपत्रक रि तिनकी गेरू सज्जीखार बिड़नोन और नौसादर इन को आकके दूधमें ग्वारपाठेकेरसमें और घूंघचीकेरसमें

खरलकरे पूर्वोक्त पत्रोंमें जेमकारके अग्निमें तपावे तो सुवर्णशुद्ध
होइ **अथवा** संपूर्णधातुनके पत्रकरिके अग्निमें तपाय
तैलवर्गमें दशवार बुझावै इसीप्रकार तक्रवर्गमें कांजीमें मू
त्रवर्गमें क्षारवर्गमें अम्लवर्गमें पुष्पवर्गमें रक्तवर्गमें फ
लवर्गकेरसमें दुग्धवर्गमें रंगवर्गमें तिनपत्रोंकोतपाय
१२० वारबुझावैतो जोधातुमें दूसरी कृत्रिमधातुमिलीहोय
सोजरजाय और यहधातु स्वच्छ गंगाजलकेसमान निर्मल
होजाय येसंपूर्णवर्ग निघंटमेंलिखेहैं ॥ ॥

प्रश्न क्योजी बहुतसेमनुष्यकहतेहैंकि धातुकामारनाजड़
ीबूटीसे उत्तमहै क्योंकिजड़ीमें मरीहुईधातुकच्चीनहीं
रहती इसमें आपकीक्याअनुमतिहै **उत्तर** सुनोहमारेप्यारेमित्र यहबात
सर्वथाझूंठीहै क्याहमारेप्राचीनऋषि जड़ीऔर बूटीन्कोनहींजानतेथे उन्होंनेयह

लोहानांमारणंश्रेष्टंसर्वेषांरसभस्मना
मध्यमंमूलकाभिश्चअधमंगंधकादिभिः

अर्थ-अर्थात् लोहकहिये सोना· चांदी· तामा· नाग· कां
सा· बंग· लोहा· पीतर· इत्यादि अष्टलोहोंकामारना पा
रेकेसंयोगसे श्रेष्टहै जड़ीबूटीसे मारना मध्यमहै औरगंध
कआदि अन्यवस्तुसेमारना अधमहै यासे जड़ीबूटीकी
फुंकीधातुहमारे समझमेंतो उत्तमनहीं है और मोलिखाहै

यथा

चपलेनविनालोहंयः करोतिपुमानिह
उदरेतस्यकीटानिजायतेनात्रसंशयः

अर्थ- अर्थात् पारेकेविनालोह कोमारे हैं उसकेपेटमें इ
सकेखानेसे,कीड़ापड़जातेहैं यासे मनुष्योंको वैरागी अथ
वा ठगनेवालेपामरलोगोंसे बचानेकेवास्तेहमने यहलि
खदियाहै अर्थात् वैरागी आदिकीफुंकीऔषधमनुष्यको

नखाना श्रौर नतनकाविश्वासकरना चाहिये श्रौर येबीसोच लेनाकिहमारे ऋषिमूर्खनहीये जिन्होनेसुगमक्रियानकोछो ड़कठिनक्रियालिखी ॥

॥ सुवर्णमारणकीपहिलीवि·

पारावतमलैर्लिप्तैदथवाकुक्कुटोद्भवैः हेमपत्राणितेषांचप्रदद्यादथरोत्तरम् ॥१॥ गंधचूर्णंसमंदत्वासरावयुगसंपुटे प्रदद्यात्कुक्कुटपुटंपंचभिर्गोमयोत्पलैः ॥२॥ एवंनवपुटंदद्याद्दशमेचमहापुटं त्रिंशद्वनोत्पलैर्देयंजायतेहेमभस्मकम् ॥३॥ सुवर्णंचभवेत्स्वादुतिक्तं· स्निग्धंहिमंगुरु बुद्धिविद्यास्मृतिकरं· विषहारिरसायनम् ॥४॥·॥·॥

अर्थ- सोनेकेपत्रकके तिनपरकबूतरकी अथवा मुरगाकी बीटलेपकर तिनपत्रोंकेसमान गंधकका चूर्णतिनपत्रोंपर· बुरकताजाय श्रौर एकके ऊपरदूसरापत्र धरै पीछेमाटी· केसरावसंपुटमें गंधककाचूर्णबिछायकर सोनेकेपत्रधरैं श्रौरबाकी गंधककाचूर्ण उनपत्रोंकेऊपर बिछायदूसरे सरावसे मुखबंदकर कपडमिट्टी करनो कुक्कुटपुटदेवै ॥

कुक्कुटपुटकेलक्षण

वितस्तिमात्रगर्त्तेपुटंयुत्पलेनतुकौक्कुटे

अर्थ- बिलांदभरकालंबा श्रौरइतनाही चौडा तथाइतनाहीश्रौंडा गढेलाखोद आधेमेतोदोतीनऊपलोंकेटुकडे भर बीचमेंसराव अथवा मूषको धरकरपीछेऊपरदोतीनऊपलोंकेटुकडेसेबंदकर अग्निदेना इसीकोकुक्कुटपुट कहतेहैं ऐसेनौपुटदेचुकेतब दसमा ३० ऊपलानकामहा

पुट देय याही रीतिसें दशपुट देनेसें सोनेकी भस्महोय याभस्मके
गुण- मधुर- तीखी- स्निग्ध- शीतल- भारी- है- यह भस्म- बुद्धि-
विद्या- स्मरण- को बढावे- विषबाधाको- दूर करै और रसायन है

सुवर्णमारणकी दूसरी विधि-

सौवीरमंजनं पिष्ट्वा मार्कवस्वरसैर्दहेत्
जातरूपस्य पत्राणि शरावे संपुटे पुटेत्
गजाख्येन पुटेनैव सुवर्णो याति भस्मतां

अर्थ- कालेसुरमेकी डली जलभांगरेके रसमें घोटके सोने
के पत्रोंपर लेपकर सरावसंपुटमें धरकर गजपुटकी आंच दे
यतो एकही आंचमें सुवर्णकी शुद्ध भस्महोय ॥ २ ॥

सुवर्णमारणकी तीसरी विधि

सूतस्याहि गुणा गंधं मर्दनं कृत कज्जलिं
द्वयो समीकृतं स्वर्णं लम्पाग म्लेन मर्द्दयेत्
सरावसंपुटं तस्य मध्य ऊर्द्ध्वं चूर्णैर्धवम् ॥
अष्टयामाद्भवेद्भस्म सर्वयोगेषु योजयेत्

अर्थ- शुद्धपारा १ टंक- शुद्ध गंधक १ टंक- दोनोंकी कजली क
रैं पीछे कागदीनीबूके रसमें इसकजलीको एकघडी घोटै पी
छे इसमें शुद्ध सोनेके वर्क तीन टंक घोटै एकपडी जबगाढा
हो तब एक टिकरी कर घाममें सुखावैं पीछे एक सरवा लेउ
समें नोन बिछाय- ऊपर उस सोनेकी टिकरीको धरै ऊपर फि
र नोन धरै जिससैं वह टिकरी ढकनेसें बंद होजाय- पीछे इस
के ऊपर दूसरा सराव धरके मुखमिलाय- कपरौटीकर सुखाय-
ले- और इसको गजपुटकी आंच देयतौ आठपहरमें सोनेकी
भस्म होइ इसीरीतिसें चांदीकी भस्महोय- तांबाभस्महोय-
परंतु तांबेको कजरीमें मिलायके एक पहर नीबूके रसमें घोटे
तब टिकरीको बनावै तब तांबेमें जो खटाई सैयो दूजी वनहीं आवलावे

सुवर्णमारणकीचतुर्थविधि

शुद्धंहेमभवस्यापत्रीकृतंतद्वारंवारंमृत
गंधानुलिप्तम् तीव्रैर्वह्नौकांचनारोहलि
न्याज्वालामुख्यासंपुटेभस्मकुर्यात् ॥४॥

अर्थ- शुद्धसोनेकेपत्रकरै तिनको वारंवारगंधकऔर पारा कीकजलीकालेपकर फिरउनपत्रोंको कचनार· हींस· और अरनी· इनतीनोंकी लुगदीमेंधर सरव संपुटमें सातक परोटीकरवारंवारगजपुटकीअग्निदेनेसें सोनाभस्महोय·

मृतसुवर्णकेगुण

स्वर्णंविधत्तेहरतेचरोगान्करोतिसौख्यं
प्रबलेन्द्रियत्वं शुक्रस्यवृद्धिंबलतेजपु·
ष्टिंक्रियासुशक्तिंचकरोतिहेम ॥ १ ॥

अर्थ· सुवर्णभस्मखानेसें उत्तमकांतिहोइ रोगोंकानाशक रै सुखदेय· इन्द्रीनकोबलदेय· शुक्र· बल· औरतेजयेवढावै कामकरनेकीशक्तिदेय इतनेगुणहैं ॥

सुवर्णभस्मकेगुण ॥

स्वर्णंस्वर्णसुवर्णरूपजनकंसर्वक्षयोन्
मूलकृत् बल्यंहृद्यमनुत्तमवीर्यमसकृ
न्मुखहृन्नेत्रहरं निश्शेषामृतसंयसं
हृतिकारतेजस्कारशुक्रकृत् नेत्ररोगज
राहरंनवसुधापानोपमंप्राणिनाम् ॥२॥

अर्थ- सुवर्णकीभस्म खानेसैं सुवर्णकेसमानदेहकारंगहोय· खईरोगदूरहोय· बलकरै· हृद्यहै· शीतलहै· वीर्यकोवढावै· भूखवढावै· देहशुद्धहै· अखिलरोगहर्ता· तेज· व· शुक्रको वढावै· नेत्रकेरोगको· बुढापेको· दूरकरै· सबप्राणीनको अमृतकेसमानगुणदायकहै ॥

तथाऽन्यगुण

स्वर्णं शीतं पवित्रं क्षयवमिकसनश्वास मेहास्र पित्तक्षैण्यं स्वेडक्षतास्रप्रदर गदहरं स्वादु तिक्तं कषायं वृष्यं मेधाग्निकांतिप्रदं मधुरसकं कार्श्यहानि त्रिदोषोन्मादापस्मारशूलज्वरजयि वपुषो बृंहणं नेत्रपथ्यम् २

अर्थ- सुवर्ण भस्म शीतल पवित्र है और खई वमन खांसी श्वास प्रमेह रक्तपित्त क्षीणता विष घाव रुधिरविकार और प्रदर इन सबका नाशक करता है और स्वादिष्ट चिरपरा कसेला वृष्य बुद्धि अग्नि और कांति इनका देनेवाला मीठा जैसी खांड होय है और कृशता त्रिदोष उन्माद मृगी शूल और ज्वर इनको नाश करै तथा देहको पुष्ट करै नेत्रोंको परम हित है २

केवल सुवर्णके गुण

सर्वौषधिप्रयोगैर्व्याधयो हि गतास्तथा कर्मभिः पंचभिश्चापि सुवर्णं तेषु योजयेत् ॥३॥

शिलाजतुप्रयोगात्तु ताप्यस्तकयोस्तथा रसायनानामन्येषां प्रयोगाद्धेम चोत्तमम् ॥४॥

अर्थ- जिस पुरुषकी सर्व औषधके द्वारा व्याधि निवृत्त नहीं हुई होय अथवा वमनादि पंचकर्मसें रोग सब नष्ट होगये होय उस पुरुषको सुवर्ण खवावे और शिलाजीत चांदी पारा अथवा और जो रसायनके प्रयोग हैं उनसें सुवर्णका प्रयोग ॥ उत्तम है ॥४॥

अपक्वं हेम संयुक्तं शिलापांजलयोगतः

द्रवरूपंतुतत्येयंमधुनागुणदायकं॥५॥
यद्वाचवरखाख्यंतुस्वर्णपत्रंविचूर्णितम्
मधुनासंगृहीतंचसद्योहंतिविषादिकं॥६॥

अर्थ- शोधनकराभयासोना पानीसे पत्थरपरजलकेसंयोगसें- घिसकर सहतकेसंगखानेसें गुणदायकहोय अथवा- उत्तमसोनेकेवरक सहतकेसंगखायतो तत्कालविषादिककानाशहोय इति

सोनेकेवर्ककेगुण

सिद्धंस्वर्णदलंसमस्तविषहृच्छूलाम्ल-
पित्तापहं हृद्यंपुष्टिकरंक्षयव्रणहरंका
साग्निमांद्यंजयेत् हिक्कानाहनिरंतरं
कफहरंधूर्णाहितंसर्वदा तत्तद्रोगहरा
नुपानसहितंसर्वामयध्वंसनम्॥७॥

अर्थ- सोनेकेवर्क संपूर्णविषोंको- शूल- और- अम्लपित्त इनकोनाशकरै हृदयको- हितकारक- पुष्टिकारक- खई- घाव- मंदाग्नि- हिचकी- अनाहवात- वदाभयाकफ इनको दूरकरै और सर्वदानेत्रोंको प्रियऔरसर्वरोगनाशकोअ- नोपानकेसाथशीघ्रदूरकरै

सुवर्णभस्मानुपान

मत्स्यपित्तस्ययोगेनस्वर्णंतत्कालदा
हजित् भृंगयोगात्सुतद्वच्चदुग्धयोगा
द्बलप्रदं॥८॥ पुनर्नवापुलंनेत्रघृत-
योगेरसायनम् स्मृत्यादिकहृच्चायो-
गानकांतिकृत्कुंकुमेनच॥९॥ राजय
क्ष्माचपयसानिर्विष्याचविषंहरेत॥
शुंठीलवंगमरिचैस्त्रिदोषोन्मादतापकं१०

अर्थ- सुवर्णकीभस्म मछलीकेपित्तेकेसाथखानेसें तत्का लदाहकोजीते भांगरेकेरस संयुक्तखानेसें स्त्रीप्रसंगमेंहितहै दूधकेसंगबलबढावे पुनर्नवा सोंठ केसाथनेत्रोंकोहित कारक घृतसंयुक्त वुढापाश्रौरव्याधि इनकोदूरकरै वच केसंगखानेसें वुद्धिवढावै केशरसें कांतिकारक दूधसंख ईकोहरै निर्विषी संयुक्तदेनेसें विषरोगदूरकरै सोंठ· लोंग· कालीमिर्च· इनकेसंयुक्तत्रिदोषश्रौर उन्मादरोग ॥कोदूरकरै॥

मध्वामलकचूर्णेनसुवर्णंचेतित्त्रयं
प्राश्यारिष्टगृहीतोपिमुच्यतेप्राणसंकटात्
शंखपुष्प्यावयार्थेचविदार्य्याचप्रजार्थकः

अर्थ- सोनेकीभस्म· श्रामरेकाचूर्ण· सहत· इनकेसाथखा नेसें· प्राणकेसंकटसेंछूटै कोईकहताहैकि ग्रहणीप्रव लांहरेत् श्रर्थात् पूर्वोक्तश्रौषधीन्केसंगसुवर्णकी भस्म प्रवलसंग्रहणीकोनाशकरै संखपुष्पी श्रर्थात् संखा हूलीकेसाथ खानेसें श्रायुस्यवढै विदारीकेरससंयुक्तपुत्रदे ॥नेवालीहै॥

सुवर्णभस्मश्रोरपथ्य

दुग्धंवैशर्करोपेतंस्निग्धमन्नंचपेशलम्
वलीपलितनाशायस्वर्णपथ्यानिदाप
॥येत॥१२॥

अर्थ- दूध· खांडसंयुक्त· श्रौर· चिकनातथास्निग्धश्रेंसा श्रन्न वली· पलितनाशहोनेकेवास्ते सुवर्णखानेवालेको ॥पथ्यदेय॥१२॥

सुवर्णभस्मामेंश्रपथ्य॥

ककारसहितंचान्नंकजनंतुकपूर्वकम्

ककारपूर्वमांसानिस्वर्णभुगदूरतस्त्यजेत्

अर्थ- ककारहैपूर्वमेंजाके ऐसाअन्न-औरव्यंजन तथा मांस- ये सुवर्ण भस्मका सेवनकरने वालामनुष्यत्यागदेवैं

सोनेकीद्रुति

चूर्णरसेन्द्रगोपानांदेवदालीफलद्रवैः
भावितंसहशंभस्मक रोतिजलवद्रुतिम्।

अर्थ- मारा और वीरवहूटी इनकाचूर्णदिवालीफलकेरसमें घोटेपीछे इसकीसुवर्णकेचूर्णमेंभावनादेयतौ सुवर्णपानी केसमानद्रवहोजाय ॥१४॥

मंडुकास्थिवसाटंकहयलालेन्द्रगोपकैः
प्रतिवापेनकनकंसुचिरंतिष्ठतिद्रवम् ॥१५

अर्थ- मेंडुकाकी हड्डीऔर वसा- सुहागा- घोडेकी मुखकी लार- वीरवहूटी- इनकासमानभागले सबकोमिलाय इससे सोनागलाकर केडारनेसैं सोनापानीकेसमानबहुतदिनतकरहै

अशुद्धसुवर्णकेदोष

बलंचवीर्यंहरतेनराणांरोगव्रजान्पोष-
यतीहकाये असौख्यकार्यंचसदैवहेम।
ऽपक्कंसदोषंमरणंकरोति ॥१६॥ ॥

अर्थ- अशुद्धभस्मसुवर्णकी बल- और वीर्यनष्टकानाशकरै तथा देहमें रोगोंकासमुदाय प्रगटकरै औरअसुखनथामरणकरै

अथतद्दोषशांति ॥

अभयासितयाभुक्ताबिदिनंचूर्णितंगने ॥
हेमदोषहरीख्याता सत्यंसत्यंनसंशयः ॥१७

अर्थ- हरड और खांड- तीनदिनपर्यंतखायतौ अशुद्धसो नेकेखाने सैं जो विकारप्रगटभयाहो सोसवशांतिहोजाय॥१७

इतिश्रीरसराजसुंदरेसुवर्णप्रकरणंसमाप्तं

अथ रौप्यप्रकरणप्रारंभः

चांदीकी उत्पत्ति

एक समय त्रिपुरवधके निमित्त श्रीशिवजीने अति कोप कर्यो तास मैं तिनके एक नेत्रमेंसे कांतो पैदाभयो और दूसरे नेत्रमेंसे वीरभ द्रगण प्रगटभयो तथा तीसरे नेत्रमेंसे जो अश्रुपातकी बिंदु गिरी तासों रूपो (चांदी) प्रगटभयो सो अनेक प्रकारकी पृथ्वीमें स्थित है

रौप्यकेभेद

सहजं खनिसंजातं कृत्रिमं च त्रिधा मतं
रजतं पूर्वपूर्वं हि स्वगुणैरुत्तरोत्तरम् ॥१॥
कैलासाद्यद्रिसंभूतं सहजं रजतं भवेत् ॥
तत्स्पृष्टं हि सकलव्याधिनाशनं देहिनां भवेत्
हिमाचलादिकूटेषु यद्रूप्यं जायते हितम्
खनिजं कथ्यते तज्ज्ञैः परमं हि रसायनम् २
श्रीरामपादुन्यस्तवंगं यद्रूप्यतां गतम् ॥
तस्माद्रूप्यमित्युक्तं कृत्रिमं सर्वरोगनुत् ४
कृत्रिमं चापि भवति वंगादे सत्प्रयोगतः ॥

अर्थ- सो रौप्य (चांदी) सहज १ खनिज २ और कृत्रिम ३ ये भेदसें तीन प्रकारका है क्रमपूर्वक एकसें दूसरेमें गुणविशेष है जो कैलाससें रूपा प्रगटा है सो सहज कहाता है इसके स्पर्शमा त्रसेंही सकलरोगोंका नाश हो और जो हिमालयआदि पर्व तसे प्रगट हो सो खनिज कहाता है और श्रीरामपादुकाके नीचे जो रांग रौप्य ताको प्राप्तभया सो कृत्रिम कहाता है कोई को ई कहते हैं कि जो पारेके और वंगके अर्थात् रांगके संयोगसें ॥ बना है उसको कृत्रिम चांदी कहते हैं॥

त्रिविधं परिकीर्तितं च रूप्यं खनिजं वंगज
वेधजं तथैव अवलोक्य रसोदधिग्रंथ।

न सम्यक्लैर्वैद्यवरैर्विशारदैस्त्र॥६॥ ॥

अर्थ- चांदीतीनप्रकारकीहै· खनिज· वंगज· वेधज· औरसें रसकेअनेकग्रंथ आलोचनकर प्राचीनवैद्योने कहाहै ॥६॥

रौप्यपरीक्षा।

उभे वंगजे नैव ग्राह्ये चरूप्येपतोनैवशुभ्र
त्वमेवंमृदुत्वं अतोग्राह्यमेकंखनीजंच
रूप यतः स्वेतवर्णंचकोमलस्पर्शं॥७॥

अर्थ- चांदीजो तीनप्रकारकीहै· तिनमें· वंगजऔर· वेधज· को त्यागकरै क्योंकि इनमें सुफेदीऔर मृदुतानहींहै यातें· खानमेंजोप्रगट सपेद और· कोमल· चांदीहैउसकोग्रहणकरै

घनेस्वच्छं मृदुस्निग्धंदाहेछेदेसितंगुरु
शंखाभमस्रास्फोटरहितंजलसुभम् ८

अर्थ- जो चांदी· दृढ· स्वच्छ· नरम· चिकनी· तपानेमेंतथा तोड़नेमें सपेद और भारीहो तथाशंखके समानसुवहो और घनचोटसे फूटेनहीं सोचांदी मारणकेअर्थलेनीचाहिये ॥

अशुद्धचांदीकेलक्षण।

दाहेरक्तंचपीतंचकृष्णंरूक्षंस्फुटल्लघु·
स्थूलांगंकर्कशांगंचरजतंत्याज्यमष्टधा।

अर्थ- तपानेमें लाल और पीलीहो· तथा काली रूखी· और घनकी चोटसे टुकड़े २होजांय तथा वजनमें हल्की हो देखने में स्थूलहो तथाकर्कशहो औसीआठप्रकार कीचांदी मारणकर्ममेंत्याज्यहै ॥८॥

आयुःशुक्रंबलंहन्तितापविड्बंधकृद्रुजं
अशुद्धनष्टंतारंशुद्धंमारितमतौबुधैः ॥

अर्थ- आयु· वीर्य· बलको हरणकरै तथा अफरआदिअनेकरोगकरै यासें अशोधितरूपामारणपंडितोंनेवर्णितकराहै

रौप्यशुद्धि

पत्रीकृतंतुरजतंसंतप्तंजातवेदसि नि-
र्वापितमगस्त्यस्य रसेवारत्रयंशुचि॥१०

अर्थ- चांदीके पतले पत्र करि अग्निमें तपाय अगस्तके पत्रोंके रसमें तीन वार बुझानेसे चांदी शुद्ध होतीहै ॥१०॥ ॥

रौप्यंशुद्धसमादायमनागुष्णंतुशोध
येत् शुद्धंतारंपुनःपश्चात्सूक्ष्मपत्रा
णिकारयेत् ॥१॥ तानिचिंचिणिद्राक्षा
भिःशोधयेत्पृथकपृथक ॥ ॥ ॥

अर्थ- उत्तम चांदीकोलेकर उसमें थोमा देकर शोधे पीछे उस कं के एकवेधी पतले पत्रकराय इमली और दाखके रसमें अलग शोधै तो चांदीकी उत्तम प्रकारकी शुद्धि होयहै

रूपामारणकी पहिली विधि

भागैकंतालकंमर्द्यंयाममम्लेनकेनचित्
तेनभागद्वयंतारंपत्राणिपरिलेपयेत्॥
धृत्वामूषापुटेरुध्वापुटेत्त्रिंशद्वनोत्पलैः
समुद्धृत्यपुनस्तालंदत्वारुध्वापुटेपचेत्
एवंचतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्रजायते ॥०॥

अर्थ- हरताल एकतोलालेइ इसको कागदीनींबूके रसमें एकपहरघोटै अथवा गाढाहोइ तब चांदीके पत्र तीन तोलालेय अंगुलके नखकी बराबर छोटे तिनको हरताल की पीठीसें चुपरै सरवासंपुटधरिकै ३० जंगली कंडानकी आंचदेय याहीतिसैं चौदह आंचदेइ तौ रूपा चांदी भस्महोइ सबजोगनमें विशेषकरके सुवर्णपर्पटीमें मिलावैतौ सुवर्णपर्पटीगु णकरै ॥१७॥

दूसरीविधि

कनकमाक्षिकसूक्ष्मविचूर्णकैस्त्वथविर·
स्नुकपयसासह मर्दितैं रजतपत्रवरा
णिविलेपयेत्कपित्थतालकसंपुटि
पाचयेत् ॥२॥

अर्थ- सोनामक्खीकाचूर्ण बारीककर· थूहरकादूधऔर हींसबारसडालकर घोटे जबगाढाहोयतब चांदीकेपत्रोंपर लेपकर नांटीकेसंपुटमें पूर्वोक्त प्रकार ३ पुटदेनेसें रूपेकी ॥भस्महोय॥२॥

तीसरीविधि

शिवबंगबलिनाचतालकैस्तारपत्रमुवि
शेषलेपितं इन्द्रपुष्पदंडपिंडपाचितं
तारयोगपुटयोगसिद्धिदम् ॥

अर्थ- बंगभस्मगंधक और हरताल· इनसबकोएककरखरल में घोटे पीछेइसकजलीको चांदीकेपत्रोंपरलेपकर इन्द्राय नकेफलकोकूटकर लुगदीकरउसमें चांदीकेपत्रधरऊप रउसकेकपरोटीकर गजपुटकीआंचदेयतौरूपाभस्महोय बडेनमनुष्य गजपुटगजभरलंबे चौडे और गहरेकोबता तेहैं सोमिथ्याहै इसवास्तेप्रमाणलिखतेहैं ॥

॥गजपुटकेलक्षण॥

घनचौरसकैसा येहस्तैर्येवनुगर्तके
पूर्णवह्नीयतेचाग्निस्तत्पुटंगजसंज्ञकं
माहिषंवेत्तिसंज्ञेयंसूरिभिःसमुदाहृतं

अर्थ- लंबावचौडावमेंडेढहाथकाहो औरइतनाहीगं हिराबहो उसको आधाऊपरानेंसें भरकरऔषधकासंपुट बीचमेंधरे आधेकोफेरऊपरानसैं भरकरअग्निदेना इसको गजपुटकहतेहैं॥· ॥

चतुर्थविधि

गंधपारदयोरेकं किंचिद्वंगं चघर्षयेत् द्राक्षायांचेवसंयुक्तं तानि पत्राणि लेपये त् ॥२॥ चक्रेपत्रविनिक्षिप्यलेपयेत् वस्त्रमृत्तिकां प्रक्षिप्यपुटगर्ते च ज्वाल येद्गजच्छाणकैः ॥३॥ स्वांगशीतलमुद्धृ त्यखल्वेनमर्दयेद्दृढः पंचामृतपुटं देयंवस्त्रपूतंचकारयेत् ॥४॥ वल्लार्द्धं भक्षयेत्प्रातः पूजयेत्सर्वदेवता पूज येद्द्विजान्देवान्भाजने निधापयेत् ४

अर्थ- गंधक पारा और बंग इनकी कजलीकर दाखके रसमें घोटे पीछे इसकजलीको चांदीके पत्रों परलेपकर सराव संपुटमें धर कपडमिट्टीकर गजपुटमें फूंकदेवै जब शीतलहो जायतब संपुटमेंसे चांदीकीभस्म निकालखरलमें डालकर चूर्णकरै पीछे इसमें पंचामृतकहिये- नींब मूसली गिलो य सतावर और गोखरू- इनकीपुटदेय तदनंतर वस्त्र मेंछानकर अच्छीसीसीमें भरधरै यहभस्मएकरत्तीप्रातःका ॥लखायाकरै॥

रूपेकीपांचमीविधि

शुकपिच्छपलाशपत्रकल्कं चतुर्गुणं तारकमेवरुध्वा सरावके संपुटके पु टेत्रिभिःपुटैरेववराहसंज्ञैः ॥५॥

अर्थ- अनार और ववूरके पत्ते ४ तोलेलेय इनकोपीस के लुगदीकरैउसमें शुद्धचांदीके १ तोले कंटकेधीपधर सरावसंपुटमें बंदकर कपरौटी चढाय वराहपुटमेंफूंकदेवै ॥ तीतीनपुटमेंरूपाभस्महोय॥

अरत्निमात्रे गर्त्ते यद्दीयते पूर्ववत्पुटम्
करीषाग्नौ तु तत्प्रोक्तं पुटं वाराहसंज्ञिकं

अर्थ- अरत्निमात्र नाम विलस्तभरका गढेलाखोदकर उपरों मेंभरके गजपुटकी रीतिके अनुसार पुटदेना उसे वाराहपुट वैद्यलोग कहते हैं परंतु पूर्वोक्त रूपेकी विधिमें हाथभरका गढेला खो ॥ दकर पुट देवै ॥

रूपेकी भस्मके गुण

तारं च तारयति रोगसमुद्रपारं देहस्य·
सौख्यदमिदं पलितं निहन्ति हन्तीहरो
गविषदोषमलं प्रसह्य वृष्यं पुनर्नवक
रं कुरुते चिरायु: ॥१॥

अर्थ- रूपा· रोगसमुद्र से पार करनेवाला देहको सुखका दाता वली· पलित· और विषदोष इनका नाशक· तथा· वृष्य तरुणावस्थाका देनेवाला और आयुष्यको देय· ऐसा है ॥१॥

अथ रूपेके अनुपान

भस्मीभूतं रजतममलं तत्समं व्योमभानु:
सर्वैस्तुल्यं त्रिकटु रसवत् सारमाज्येन युक्तं
लीढं प्रात: क्षपयति नृणां यक्ष्मपांडूदरार्श:
श्वासान् कासान् तिमिरमथ नयेत् पित्तरो·
गानशेषान् ॥२॥

अर्थ- रूपेकी भस्म· अभ्रक· ताम्र· इन सबके समान त्रिकुटाका चूर्ण मिलाय प्रात:कालखानेसें खई· पीलिया· उदर· बवासीर· स्वास· खांसी· तिमिररोग· पित्तरोग इन सबका नाशकारी है ॥२॥

सितयाहन्ति दाहाद्यं वातपित्तं फलत्रिका
तु त्रिसुगंध्या प्रमेहादि गुल्मं सैन्धवसमन्वि
तं ॥३॥ कासे कफे दरूपस्य रसाः त्रिकटुकान्विते

श्वासे च्छी विश्व युतं श्वासे क्षयजित्तु शिलाजतु ॥२॥ क्षीणे मांसरसे देयं दुग्धं वा लल्लनी तमे पक्तुच्छीहहरं चांक्र वरापिप्पलिसंयुतं ॥३॥ पुनर्नवायुतं शोफे पांडौ मंडूरसंयुतं वलीपलितहं कांतिपुष्टिकरं घृतसंयुतम् ॥४॥

अर्थ- मिश्रीके संग दाहमें त्रिफलाके संग वातपित्तजनितरोगमें प्रमेहमें तजपत्रज- इलायचीके संग- गोलाके रोगमें क्षारयुक्त देनी- चाहिये- कफ और खांसीमें त्रिकुटा-(सोंठ- मिरच- पीपल-)के चूर्णसंयुक्त- अदूसेके रसमें- श्वासमें भारंगी- और सोंठके संग- क्षईके रोगमें- शिलाजीतके साथ देनी ॥२॥ क्षीणतामें मांसके यूष अथवा दूधसंयुक्त- यकृत्प्लीहमें त्रिफला और पीपलके साथ ३ शोथमें पुनर्नवाके साथ- पीलियामें मंडूरयुक्त- घृतके साथ देनेसें- वलीपलितकोदूरकरै- और मुख और कांतिकोवढावै इतिरौप्यभस्मगुणाः

चांदीके वर्कके गुण ॥

सिद्धं रौप्यदलं कायेकरोति विविधान् गुणान् मेहघ्नं शीतलं वृष्यं बलंवीर्यं विवर्धयेत् ॥१॥

अर्थ- सिद्धरूपेके दल अर्थात् वर्क देहमें अनेकगुणकरै और प्रमेहको दूरकरै- शीतलहै- वृष्यहै- बलवीर्यकोवढावै १

रूपेकीद्रुति ॥

प्रातधानरसं वेगाभावयेद्वदालिकाम् तद्गणीचापमाचेणद्रुतिः स्यातस्वर्ण ॥तारयोः॥

अर्थ- देवदालीके चूर्णमें १०० भावनामनुष्यके मूत्रकी देयके उपरांत तिसको रूपेके रसमें डारनेसें रूपेका पानीहोजाय॥१॥

॥ अशुद्धरूपेके अवगुण॥

अशुद्धं रजतं कुर्यात् पांडुकंडुगलग्रहान् विबंधं वीर्यनाशं च बलहानि शिरोरुजम्॥

अर्थ- अशुद्धरूपेकीभस्म पांडुरोग खुजली गलग्रह मलबंध वीर्यनाश बलहानि और मस्तकशूल इनको॥उत्पन्नकरैहै॥

अशुद्धदोषशांति

शर्करां मधुसंयुक्तां सेवयेद्यो दिनत्रयम् अपक्वरौप्यदोषेण विमुक्तः सुखमश्नुते

अर्थ- मिश्री और सहत तीनदिनखावै तो रौप्यविकारमिटै

इतिश्रीदत्तरामगाथुरनिर्मितरसराजसुंदरे रौप्यप्रकरणसमाप्तम्

अथताम्रप्रकरणं तत्रादौताम्रोत्पत्ति

रवेः पतत्कांतिदं तेजः पतितं धरणीतले तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः

अर्थ- सूर्यकाकांतिदेनेवाला तेज पृथ्वीमें पडनेसें तामा प्रगटभया॥

ताम्रकेभेद

म्लेच्छं नेपालकं चेति द्विविधं ताम्रमीरितं

अर्थ- तामा दो प्रकारकाहै १ म्लेच्छ २ दूसरा नेपाल॥१॥

म्लेच्छताम्रकेलक्षण

कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहं क्षालितं च पुनः कृष्णमेतन्म्लेच्छस्य लक्षणं

लोहनागयुतंमुल्वंदुष्टंमृत्योस्त्यजेद्बुधः

अर्थ-जो तामा काला रूखा कड़ा सपेद घनकीचोटके योग्य नहो धोनेसे फेर कालो चले आवै ये म्लेच्छ ताम्रकेलक्षणहै और लोहे सीसेसे मिलाहोय वह दुष्ट तामा मारनेमें त्याज्य है

नेपालताम्रकेलक्षण

जपाकुसुमसंकाशंस्निग्धंमृदुघनंक्षमं
लोहनागोज्झितंताम्रंनेपालंमृत्यवेशुभं

अर्थ-जो तामा चिकना और रंगमें जपा (दुपहरिया) के फूलके समानहो घनके चोटके योग्य होय और जिसमें लोहा और शीसा नमिलाहोइ वह तामा मारनेमें श्रेष्ठहै ॥ • ॥

नविषंविषमित्याहुस्ताम्रंतुविषमुच्यते
एकोदोषोविषेसम्यकताम्रेत्वष्टौप्रकीर्तिताः

अर्थ-पंडित विषको विषनही कहतेहैं किंतु ताम्रहीको विष कहतेहैं क्योंकि विषमें एकदोषहै और तामेमें आठदोषहैं ॥

ताम्रदोष शोधनं च

अतःपरंताम्रसमाश्रितांश्चवक्ष्येबहुधा
विलोक्य वांतिर्भ्रांतिःसक्लमस्तापश्चले
कंडुत्वंवेरचनावीर्यहंता अष्टौदोषाः
कीर्तितास्ताम्रमध्येतेषांसर्वेशोधनंकीर्ति

॥ पिष्ये ॥

अर्थ- वांति१ भ्रांति२ ग्लानि३ दाह४ अरुचि५ खुजली६ दस्त७ वीर्यनाश८ ये आठ दोष तामेमें रहतेहैं यातेंतामेकाशोधन क ॥ हमाहूं सुनो ॥

ताम्रशोधन

तक्रंतैलंधेनुमूत्रंचवांतिभ्रांतिहन्त्यात्कां
जिकंकौलत्थांभः वज्रीदुग्धंधेनुदुग्धं

क्रमेंचतापंहन्यात्तिंतिणीनिवृत्तोयं ॥१॥
शूलंहन्यात्कन्यकाशोधितोपंहन्याद्भ्रमं
गोघृतेकंडुतांच रेचंहन्यात्क्षौरशोमलु
तोयक्षौद्रद्राक्षावीर्यंहंतृत्वमाशु ॥२॥
नष्टानितस्मान्निश्चपत्रकाणिताम्रस्यसम्यक्।
णिविशोधयेद्वा सतैलनागाम्लपृथक्पृ
थक्वैतत:परंशुद्धताम्रनाशान्नम् ॥३॥

अर्थ- ताम्र तेल वा गोमूत्र इनमें शोधाभया वमनदूरकर्ता हे और कांजी तथा कुल्थीके काढेमें भ्रांतिनाशक प्रहरका द थ और गौके दूधमें म्लानिनाशक और इमली वा नीबूकेरस में संतापनाशक मारपडे और नारियल इनकेपानीमें शोधा भया शूलनाशक· दूध और गौकेघृत· इनमें शोधाभया· खु जलीकानाशक· और निमीकैर तथा मठामें शोधाभयाद स्तकानाशक· और· सहत तथा दाखके रसमेंशोधाभयाता म्र वीर्यनाशकदोषकोदूरकरताहै यामेंकहीभई औषधोंमें ताम्रकेछोटे और पतलेपत्र आगमें तपाय तातातावाबुझा नेंसें ताम्रउत्तमशुद्ध होताहै **अथवा** तेल मठामें शुद्धक रनामेंभी विशेषशुद्धीकहतेहैं· थूहर· आक· इनकादूध· और नोन· इनकोमिलायखरलकर इसकल्ककोताम्रकेप त्रोंपरलेपकर अग्निमेंतपाय पीछे निर्गुंडीकेरसमेंतीनवार बुझावे **अथवा** थूहर और आकके दूधमें बुझानेसेंताम्र बहुतउत्तमशुद्धहो **अथवा** ताम्रकेपत्र गोमूत्रमें इमली और नोनडालकर तेजआंचमें एकप्रहरतकपचानेसें उत्तम

॥शुद्धहोय॥

ताम्रमारणकीप्रथमविधि

पलानिपंचशुद्धानिताम्रपत्राणिबुद्धिमान्

गृहीत्वा पोजपेत्र त्रतदर्द्ध शुद्धपारदम्
मर्द्दयेन्निंबुकद्रावैस्त्रिदिनान्युभयं भिषक्
ताम्रपत्रसमं शुद्धं गंधकं तत्र निक्षिपेत् २
मर्द्दयित्वा घटीयुग्मं काचकूप्यां निधापयेत्
यामानष्टौ पचेद् ग्नौ स्वांगशीतलमुद्धरेत् ३
एवं ताम्रेश्वरो ह्यस्मात् कृष्णादीन खिलान्गदान्
धातुपुष्टिकरश्चैव सूतिकारोगनाशनः ॥४॥

अर्थ- पैसा १० भर स्वर्णगढाके नखकेवराबर छोटेश्रौरपतरेशुद्ध तामेंकेपत्र लेय श्रौर सिंगरफ का निकालापारा पैसा ५ भरलेय इनदोनोंको कागदीनीबूके रसमें एकप्रहरघोटै फिरदूसरेदिनरसकोनिकालडारै इसीरीतिसे तीनदिन नीबूके रसमें घोटै श्रौर हरदफेनीबूकारस निकारडालै चौथेदिनपारासंयुक्तजो तामेंकेपत्रहैं तिनकोपानीसे धोयडारै पारेकेसंबंधसेजोतामेंकेपत्र सपेदभये हैं तिनको खरलमेंडार इसमें १० पैसाभरि सोधागंधक डारै दोनोंको २ दोघड़ीपर्यंत बिनारसकेघोटै पीछे १ एकशीशीमेंडारि शीशीकामुख मूंदके वालुकायंत्रमेंघरके ८ श्राठप्रहरकीश्रांचदेय श्रौर बहुतसेवैद्यसीसीकामुंहखुलाराखतेहैं श्रौर यह यादरहै कि जिसहांडीमें सीसीधरै उसकेनीचे एकपैसाकी बराबरछेदकर श्रौर उसकेचौगिर्दमाटी लगायके सीसीवैठारै पीछेवालूसेंभरै श्रैसे करनेसे तामेश्वरबनकरतैयारहै जबशीतलहोयतब सीसीफोरके नीचेताम्रहैसो निकासलेय सीसीकेऊपरजोसिंदूरहै सोजुदानिकासलेय इसरसमेंसे एकरत्ती भरलेकर लौंगकेचूर्णसंयुक्तखानेसे श्वासदूरहोय धातुपुष्टहोय कोढसेंश्रादिले सबरोगोंकोनाशकरै श्रौर प्रसूतरोगदूरहोय यहरसगरमहै श्रैसातामासबजोग में मिलाना चाहिये सोजानना

तिलपर्णीरसैस्ताम्रपत्राणि परिलेपयेत्
शुभ्रवर्णं भवेद्भस्म नात्र कार्या विचारणा ॥२॥

अर्थ- तिलपर्णीके रस को ताम्रपत्रोंपर लेपकर गजपुटमें फूंकदेय तो तांबे की सफेद भस्म होय- यह भस्म उत्तम है ॥

ताम्रेकी तीसरी विधि

शुद्धार्कपत्रं च रसाद्विलिप्तं द्विभागगंधान्वि
तदुग्धिकांबु स्मृतं ततो भस्म पुटे दिनैकं
तदा शुभ्रत्वं समुपैति ताम्रम् ॥३॥

अर्थ- पारा १ भाग · गंधक २ भाग इन दोनोंको दुद्धीके रसमें खरलकर तांबेके शुद्धकरे पत्र १ भाग लेप उनपर लेपकर गजपुटमें फूंकदेय · तो ताम्र मरै ॥३॥

सोमनाथ ताम्रेकी विधि

सूताद्द्विगुणितं ताम्रं पत्रं कन्यारसाप्लुतम्
पिष्ट्वा तुल्येन बलिना भांडमध्ये विनिक्षिपे
त् छन्नं शरावकेणैतत् तदूर्ध्वं लवणं क्षिपे
त् मुखे शरावकं दत्वा वह्निं यामचतुष्टयं
ज्वालयेद्दवचूर्णितं तद्वल्लमात्रं प्रयोजयेत्
पिप्पलीमधुना साकं सर्वरोगेषु योजयेत्
श्वासं कासं क्षयं पांडुमग्निमांद्यमरोचकं
गुल्मप्लीहयकृन्मूर्च्छा शूलं पंक्त्यूर्ध्वमुद्धतं
दोषत्रयसमुद्भूतानामयान्जयति ध्रुवम्
रोगानुपानसहितं जयेद्वातुगतं ज्वरम् ॥
रसे रसायने चैव योजयेद्युक्तमात्रया ॥ ॥
सोमनाथाभिधं ताम्रं पुरा प्रोक्तं चिकित्सकैः ॥४

अर्थ- पारेसे द्विगुणित तांबेके पत्र शुद्ध लेप · इन दोनोंको ग्वारपट्ठेके रसमें घोटै पीछे इससे द्विगुणगंधक मिलाय फेर घोटै पीछे सक

सरवाले वसमें नोनको विछाय उसमें ताम्र गंधक कापुटा धरै और ऊपर नोन विछाय देय दूसरे सरवासे उसका मुख बंद कर गजपुटमें ४ प्रहरकी अग्निदेय तदनंतर स्वांगशीतल होनेसे इस को निकालकर और पीसकर सीसीमें धर राखे जबकाम पड़ै तब इसमेंसे २ रत्ती तामेकी भस्म पीपल और सहतके साथ देय तो सर्वरोगमात्रको नाशकरै और श्वास खांसी खई पीलिया मंदाग्नि अरुचि गोला तापतिल्ली मूर्छा शूल उद्वेगत रोग तथा त्रिदोषके रोग धातुगतज्वर इनको अनोपान के संग शीघ्र नाशकरै रसमें और रसायनमें अपनी युक्तिसे मात्रा कल्पना करै यह सोमनाथनाम ताम्र पुराने वैद्योंने कहा है ४

दूसरी विधि

अथवा तामा १ भाग गंधक १ भाग हरताल चौथाई भाग मनसिल अष्टमांस एसब पदार्थ एकत्रकर खरलमें घोटवा रीक कज्जली करै इस कज्जलीको तामेंके पतले पत्रों पर लेप कर वालुकायंत्रमें पचावै चार प्रहर जब आंगशीतल हो जा यतब निकाल लेय **गुण** यह तामकी भस्म ६ रत्ती नित्य अ नुपानके संग खानेसे जिस २ रोग पर खाय सोई २ रोगका नाश होय और परिणामशूल उदरशूल पांडु ज्वर गोला तापतिल्ली खई मंदाग्नि श्वांस खांसी ग्रहणी इतनेरोग नाशहोय यह सोमनाथी ताम्र है

ताम्रभस्म परीक्षा॥

वह्निकंठच्छविनिभं ताम्रं भवति केवलं
पिष्टचूर्णत्वमायाति सरसं चेत्तु चंद्रकं

अर्थ-जो तामा रंगमें मोरके गर्दनके समान हो और पीसने से सहज चूर्ण होजाय और पारेके संयोगसे चमकदार हो ॥ सो उत्तम है॥

रसेन्द्रेण विना ताम्रं यः करोति पुमानिह
उदरे तस्य कीटानि जायन्ते नात्र संशयः

अर्थ- जो मनुष्य पारे के बिना ताम्रका मारण करते हैं उस ताम्रके खाने से पेटमें कृमी रोग प्रगट होय है ॥ इति ॥ ॥

ताम्रमारणकी दूसरी रीति

रसगंधकयोः कृत्वा कज्जलीमर्द्धजातया।
पत्रं लिप्त्वा कटुवेध्यं मितनेताम्रमातपे।

अर्थ- तांबे से आधा भाग गंधककी कजली कर तांबेके कंटकवेधी पत्रों पर लेप कर धूपमें धरनेसे ही ताम्र भस्म हो जाय।

अम्लपिष्टं मृतं ताम्रं सूरणस्थं बहिर्मृदा
पुटे पञ्चामृतैर्वापि विधा वान्त्यादिनाशनः

अर्थ- तांबेकी भस्मको अम्लवर्ग में घोटकर जिमीकंदकी गांठमें भर उसका मुख जिमीकंदके ही टुकड़े से बंदकर गजपुट में फूंकदेय ऐसेही तीनपुट पंचामृत (सोंठ मूसली गिलोय शतावर गोखरू) के देनेसे तांबेके वांतिआदि सबदोष दूरहो और अमृतके समान गुण करे है ॥

अमृताम्रगुणाः

कुष्ठश्लीहज्वरकफमरुत्श्वासकासातिशोफ तन्द्राशूलोदरकृमिवमीपांडुमोहातिसारान् अर्शोगुल्मक्षयभ्रमशिरोव्याधिमेहादिहिक्काः शुद्धंशुल्वं हरतिसततं वन्हिवृद्धिं करोति॥१॥

अर्थ- शुद्ध रीतिसे भस्म किया ताम्र कोढ ज्वर कफ वादी श्वास खांसी तंद्रा शूल उदर कृमीरोग वांति पांडु मोह अतीसार बवासीर गोला क्षई भ्रम मस्तक व्याधि और प्रमेह इनका नाश करै और अग्नि को बढावै ॥१

ताम्रभस्मका मेअनुपान

दुग्धंखंडंचानुपानंप्रदद्यात्साज्यंभोज्यं ।
स्याज्यमन्नेनयुक्तं वीर्यपुष्टिंदीपनंदे
हदार्ढ्यंदिव्यांदृष्टिःजायतेकामरूपं ॥

अर्थ- तामेकीभस्म सेमके रससंयुक्त १ रत्ती और दूधमेंस हत और घृतमिलायके ऐसें ६ महिनाखाय इसेंदूध मिश्रीमिलाकरपीवे तथा घृतकामिला दिव्यमिष्टपदार्थ भोजनकरै खट्टानखाय- तो पुष्टता-अग्निकीदीपनता-वीर्यदृढ- देह दिव्यदृष्टि और कामके समान सुंदररूपहो-

पूर्वेषांमतमालोक्यभिषगाधुनिकैर्बुधैः
स्वबुध्यादापयेत्ताम्रंरोगनाशनवस्तुभिः

अर्थ- पूर्व वैद्योंकी संमति को देख और आधुनिकपंडित वैद्योंकी सम्मतिलेकर वैद्यअपनीबुद्धिके अनुसार रोग- नाशक वस्तुन के साथ- ताम्रकी भस्म रोगीन को देय॥-

केंचुआ- और मोरकीपांख सेताम्रनिकालनेकीविधि

वर्षासुवृष्टिसंक्लिन्नेभूगर्भेसंभवंतिहि ॥
जंतवःकृमिरूपायेतेभूनागइतिस्मृताः
चतुर्विधास्तुभूनागास्वर्णादिखनिसंभवा
स्वर्णादिभूमिसम्भूतादुर्लभास्तेप्रकीर्तिताः
ताम्रभूमिभवाःप्रायःसुलभागुणवत्तराः

अर्थ- वर्षामें धरतीगीलीहोनेसें जो कृमिरूपजानवरपैदाहो उनको केंचुआ कहतेहैं सोकेंचुआ पृथ्वीके भेदसेंचारप्रकारकेहैं तिनमेंसुवर्णकी खानसें प्रगटदुर्लभहै विशेषकरके तामेकीधरती के प्रगट भूनागमनुष्यो को मिलते हैं ॥ औरये गुणवानहै॥

ताम्रभूभवभूनागान्क्षिशिग्धिष्टे समेत्य तान् ॥
गुडगुग्गुललाक्षोर्णामच्छपिण्याकटंकणैः
दृढमेतांश्च संयोज्य मर्द्दयित्वा धमेत्खलम्
सुचं तिताम्रवत्सत्वं तद्वन्मयूरोपि विहितो ॥ २

अर्थ- तामेकी पृथ्वीमें प्रगट भूनाग (केंचुवा) कोलेकर उनमें हलदी गुड़ गुग्गुल लाख ऊन मछलीछोटी खल सुहागो ये मिलायकर घोटै पीछे वंकनालमें धरकर धोंकने सें तामेके समान सत्व निकले इसीप्रकार मोरपंखमेंसेंभी तामानिकलताहै

भूनागसत्वके गुण

भूनागसत्वं शिशिरं सर्वकुष्ठव्रणापहम् तद्युक्तजलपानेन स्थावरं जंगमं विषम्
विषेनश्यति सूतोत्र गतः स्तेम्निसंहृढो
रावं मयूरपिच्छोत्थसत्वस्यापि गुणा मताः

अर्थ- केंचुआका सत्व शीतल तथा सर्व कुष्ठ व्रण स्थावर जंगमविष विष इनका नाश करै और पारेके साथ योग करनेसें पारा अग्निस्थाई हो ऐसेंही मोरपंखसे निकलेस ॥त्वके गुणहैं ॥

अथ तुत्थताम्र ॥

तुत्थस्य टंकणं पादं दत्त्वा पिनमधुसर्पिषा
तुत्थेन मिश्रितं ध्मातं कोष्ठ्यां जायते सत्वं किरतं
धमितं द्रवते सत्वं किरतुंड समप्रभम् ॥

अर्थ- लीलाथोथेका चतुर्थांस सुहागा मिलाय सहत और घृतमें मिलाय के घोटे पीछे कोठियंत्रमें तीव्रअग्निसें धमानेसें लाल रंग का सत्व निकले (अथवा)
लीलाथोथेको कंजाके तेलमें एकदिन घोटै खलेमें तुत्थीसतुरा

गोमिलाय हलायंचमेंभरकरफूंके अथवा मनुष्यके कालेवा लमिलायकर फूंकेतोलालरंगका ताम्र निकसे ऐसेहीभुनाग (कैंचुआ) का सत्व निकलताहै तथा मोरकीपांखोसे निकलताहै इनतीनो सत्वोकी रविवारकेदिन अंगूठी बनावें इसअंगूठीको पानीमें धोयकर पीवैतो तत्कालविष दूरहोय और जिसके बालकभयाचाहै वो स्त्री इसजलकोपीवैतो तत्कालप्रसूतीहोय मंत्रपूर्वकदेनेसें भूतग्रहबाधा त्रिदोषकीपीड़ा भूतबाधा येनाशहोय इसकोभरदेइ नेत्रमेंडारनेसें नेत्रोंको हितहै ऐसेंभालुकीनेकहाहै

मंत्रयहहै

रामवत्सोमसेनानी सुदिनैतितथाक्षरं
हिमालयोत्तरे पार्श्वेवैवकरीअमरुदुम:
तत्रशूलसमुत्पन्नं तत्रैवविलयंगत: ॥

अर्थ- पूर्वकहा पानी मंत्रित करनेका मंत्रयहीहैसोजानो

ताम्रकीकृति ॥

लवणक्षारम्लाणिस्नेहाश्चौषधसंभवा
रसोक्षारसमस्तेषांश्चौषधीकंदसंभवा
॥१॥ येचान्येद्रावकंकल्कफलत्रयकटुत्रयं कुलत्थक्काथतोमंत्रतर्वैभूधराग्निनापचेत् ॥२॥ गालयेद्वस्त्रयोगेनपुन: पाकंचकारयेत् तेनैवभावयेद्देवसूक्ष्मशुल्बस्यचूर्णकम् ॥३॥ एकविंशतिवारांश्चभावयित्वाविशोषयेत् स्वादिमध्येतुभूगर्भेधान्यराशौचभास्करे ॥४॥ सप्ताहंधारयेत्तंतुदोलायांचैवस्वेदयेत् एकविंशदिनेजातेशुल्बस्येवद्रुतिर्भवेत्तथा

दृतिर्भवतिसुल्वस्यस्तह्यान्निर्मला ॥

अर्थ- सैंधनोन सबभूनोंकेक्षार सबऔषधीनकेक्षार के दोकेक्षार और जो द्रावककरनेवालीवस्तुहैं त्रिफला त्रिकुटा इनसबको कल्थीकेकाढेमें मंदअग्निसैंपचावे पीछेवस्त्रसैं छान फेरपक्ककरै जबकुछगाढा होजायतब इसेसुद्ध तामेके चूर्णमेंभावनादेय ऐसे २१पुटदेदेकर सुखायलेय पीछे इसकोलीदमें पृथ्वीमें धानकीरासमें घाममें सात २ दिनधरकर पूर्वोक्तदोलायंत्रमें स्वेदनकरे ऐसे २१दिनकरनेसै तामेकी मारेकेसमान निर्मलद्रुतिहोय॥

तांबजनितदोषकीशांति

मुनिव्रीहीसितापानैर्धान्याकेसितांचकैः
ताम्रदोषमशेषंवैपिबन्हन्यादिनत्रये ॥१॥

अर्थ- सामखिया अथवा धनिया इनको खांडकेसंगमिलाकर जलसे पीवैतो संपूर्ण ताम्रका दोष दूरहोजावै ॥१॥

इतिश्रीमाथुरदत्तरामनिर्मितरसराजसुन्दरेताम्रप्रकरणंसमाप्तम्

अथवंगप्रकरणप्रारभ्यते

खुरकंमिश्रकंचेतिद्विविधंवंगमुच्यते ॥
खुरकंचगुणैःश्रेष्ठं मिश्रकंनरसेहितम् ॥१॥

अर्थ- वंगदोप्रकारकाहै एक खुरक दूसरामिश्रक इनमे खुरक श्रेष्ठहै ॥

खुरकवंगकेलक्षण

धवलंमृदुलंस्निग्धंद्रुतद्रावंचगौरवम् ॥
निःशब्दंखुरवंगस्यान्मिश्रकंश्यामशुभ्रकं

अर्थ- जोरांगा सपेद नरम चिकना जल्दी पिगलजाय भारी शब्दरहित इसकोखुरकवंगकहतेहैं और मिश्रवर्णश्याम

वाकालाहोतुसेमिश्रककहतेहैं

अथवंगशोधनम्

अपूम्लवर्गेम्लवर्गेबहूनांजलेक्षारतोये
चचक्राकवर्गे ततःक्षालयित्वाकदंब
स्पनीरेशुभेक्षालयेत्तप्तकंसमवारान् ॥

अर्थ- रांगको तपाय मूत्रवर्गमें अम्लवर्गमें सबक्षारोंकेपानी मे थूहरकेदूधमें आककेदूधमें इनप्रत्येकमें सातश्वारबुझावै पीछेकदंबकेपानीसेसातवाररांगेको धोनेसें रांगाशुद्धहोइ

द्रावयित्वानिशायुक्तेक्षिप्तंनिर्गुंडिकारसे
विशुध्यतित्रिवारेणखुरवंगंनसंशयः ॥१॥

अर्थ- रांगको पतलाकर निर्गुंडीकेरसमें हल्दीकाचूर्णमिलाय उसमेंतीनवार बुझानेसें खुरकवंगशुद्ध होताहै ॥ ॥

वंगमारणकीमेंहलीविधि

मृत्पात्रेद्राविते वंगेक्षिपेत्तत्रसुवर्चिकाम्
घर्षयेल्लोहदर्व्यातु यावत्स्यात्तनुपात
निसृत्यप्रदहेत्सर्वंवंगशीतंसमुद्धरेत् ॥
सुवर्चिकापनोदार्थंसलिलैःक्षालयेन्मुहुः
ततोतिनिर्मलंयास्यंवंगभस्मभिषग्वरैः ॥

अर्थ- शुद्धरांगआधपावले उसको एकबड़ेठीकरामें डारके पिघलावै जबपिघलजाय तबकच्चालोन२दोपैसाभरडारेऔर लोहेकी कड़छीसें रगडतजाय जबकीचलाहोजायतब फेरि दोपैसाभरिसोराडारै और फेररगडे जबफेरकीचलाहोजायतब फिरदोपैसाभर सोराडारै ऐसेंहि छःबार सोराडारै ज्ञहोवेरवीच साहोजायतब फेरनडारै जबतकअग्निठीकरासेंननिकसैंजब अग्निपरखेंदे और सरकरणांतिहोजाय तबउतारले इसरांग कोछुरीसें सबखुरचलेय और पीसकें एकप्यालेमेंभरपानीसेप्या

लेकोभरदे और उसभस्मको पानीमेंमलकर थोडीदेररहनेदे जब रांगानीचेको बैठजाय तबपानी को निकालडारै इसभांतितीनवार धोवै जबसोराकीरासदूरहोजाय जबरांगभावकीसपेद भस्मरहिजा य उसकोसुखायकरधरराखे जिसयोगमें चाहेउसयोगमेंमिलावे

बंगमारणकीदूसरीविधि

अथभस्मसमंतालं सिद्धाम्लेन विमर्द्दयेत्
ततोगजपुटेपक्वापुनरम्लेनमर्द्दयेत् ॥१॥
तालेनदशमांशेनयाममेकंततःपुटेत् ॥
सर्वदशपुटैःपक्वंवंगंभवतिमारितम् ॥२॥

अर्थ- सोराकामारारांगा जो पहिलीविधिमेंकहिआयेहैं उसकी भस्मजितनीहो उसीकेसमानशुद्धहरताल डारै पीछेइसको कागदीनीबूकेरसमें एकपहरघोटै सरवासंपुटमेंबंदकर गजपुटमेंफूं कदेय फेररांगकीदशांशहरतालडालै एकप्रहरनीबूकेरसमेंघोट गजपुटमेंफूंके ऐसेंदशआंचदेनेसें रांगानिरुत्थभस्महोजाय त मिश्रपंचकसेभी नजीवै मिश्रपंचक आगेलिखेंगे ॥२॥

बंगकीधातुवेधीभस्मतीसरी

श्वेताभ्रंश्वेतकाचंचविषसैंधवटंकणम्
स्नुहिक्षीरेर्हिनंमर्घंतेनवंगस्यपत्रकम् ॥
लेप्यंपादांशकल्केनांधमूषगतंधमेत् ॥
यावद्रवपतेवंगंपूर्वतैलेनढालयेत् ॥
वार्यादिलेपमेकंचसप्तवारांणिकारयेत् ॥
पुनर्जीवोस्यतैलेनढालयेत्सप्तवारकम् ॥
तद्वंगंजायतेतारंशंखकुन्देन्दुसंनिभम् ॥

अर्थ- सपेद अभ्रक सपेदकांच विष सेंधानोन सुहागो येसब औषधोंको पहरकेदूधसें घोटकर रांगकेपतलेपत्रोंकी चतुर्था शलेपकरै पीछेइसको अंधमूषामेंधरकर फूंके जबवंगपतलाहोय

तवपूर्वोक्त औषधीन्सैं निकाले भयेतेलमैं बुझावे पीछे पानीसैं सात वारलेपकर फूफ युत्तजीवी औंवापोला के तेलमें बुझावे सात वार तौ वंग · शंख · कुंदपुष्प · व · चंद्रमाके · समान · सपेद चांदी ॥ होजाय ॥ इति ॥

वंगमारणकी चतुर्थविधिलि·

वंगोघर्षणात्कालरवभिवज्रः सिद्धापयानी
रजो न्यस्यंतिमूत्राशः शिलाजतुतथाभ·
स्यापयामार्गजं क्षिप्त्वारंगदस्तान्मृहक्ष
पिशितैर्भार्डितुर्विचाल्यचो भूपास्सस्तर
संस्थितानिपुरतः कुर्वंतिभस्मान्यपि ॥१॥

अर्थ· वंगको कढाईमैंगलाय तिस्मे क्रमाक्रमानें अजमायन काघोडा२ चूर्ण अथवा शिलाजीत औगाकी भस्म इमलीकी छालकाचूर्ण ये प्रत्येकवंगके मारकपदार्थहै अर्थात् इनमैंसें एकएकसेंही वंगकीभस्महोयहै१

वंगमारणकी पंचमविधि

वंगभस्मसमंकांतं लोमभस्मचतत्समम्
मर्दयेत्कनकांभो भिर्विवपत्ररसैरपि ॥२॥
दाडिमस्यमधूरस्यरसेनचपृथकपृथक
भूपालावनेभस्माथविनिक्षिप्यसमांसकं३
गोमूत्रकशिलाधातुजलैसम्यक्विमर्दयेत
ततोगुगुलतोयेनमर्दयित्वादिनाष्टकं४
विशोध्यपरिचूर्णाथ समभागेनयोजयेत
भृष्टवंदूरनिर्यासैर्गकुलीवीजचूर्णकैः ५
ततक्षिपेत्कांडांतर्विधायपटगालितं·
गोतक्रे पिष्टरजनी सारेणसहपाचयेत ६

अर्थ· वंगकी भस्मके समान· कांतिलोहकीभस्मले· और इतनोही

अभरककी भस्मले· इनसबकोमिलायधतूरेकेरसमें और नीमकेपत्ता
नकेरसमें तथा अनार के पत्तोंके रसमें· और औंगाकेरसमें अल
ग अलगमर्द्दनकरै फेर इसमेंराजावर्त्तमणिकीभस्म· समानभागमि
लाय· गोमूत्र और शिलाजीतके पानीमेंघोटै· इसीप्रकार७दिन
गूगलकेपानीसेंघोटै· पीछे इसकोसुखायके पीसडारै पीछेइसमें
बबूरकागोंद· और· चिरमलीकेबीज· इनकोपीसकेमिलावै· फिर
इसकोएक स्वच्छबरतनमें वस्त्रमें छानकरभरै पीछेगोकीछांछ
में हल्दीपीस उसकेसाथ इसबंगकी भस्म१२बारहरत्तीपिवावै

चतुर्भिर्वल्लकैस्तुल्यंरम्यंवंगंरसायनम् ॥
निश्चितंतेनन्श्यंति मेहाविंशतिभेदकाः
शालयोमुद्गसपंच नवनीतंतिलोद्भवम्
पटोलंनिम्बतुंडीरंतक्रंपथ्यापशस्यते ॥

अर्थ- इसरीतिसें इसबंगकी भस्मरसायनहै· और२०बीसप्रका
रकाप्रमेहदूरकरै· चावल· मूंग· मक्खन· तिलकेपकवान· परवल·
तुंडीर· छांछये इसमें पथ्यहैं

तालकंकर्कटास्थीनिशंखशुक्तीवराटिका
सिंधुकर्पूरसंयुक्तंमारयेद्वंगपर्वतम् ॥१॥

अर्थ- हरताल· करकेटाकीहड्डी· शंख· सीप· कौड़ी· नोंन· कपू
र· ये औषधवंगके पर्वतको भस्म कर सक्ते हैं ॥· ॥ · ॥

वंगभस्मकेगुण

वल्यंदीपनपाचनंरुचिकरंपज्ञाकरंशी
तलं सौन्दर्यैकविवर्धनंहतरुजंनीरोगता
कारकं धातुस्थैर्यकरंक्षयक्षयकरंसर्व
प्रमेहापहं वंगभस्मपतोनरस्यनभवेत्
स्वप्नेपिशुक्रक्षयः

अर्थ- शुद्धरीतसें भस्मकरावंग· बलकारक· दीपन· पाचन· रुचि

कर्ता· वृद्धवढावे· शीतल· कांतीकर· बुढापेकोदूरकरै· निरोगकरै· धातुकोस्थिरकरै· और· खईको· और· संपूर्ण प्रमेहमात्रकोदूर करै· वंगखानेवाले मनुष्यके स्वप्नमेंभी शुक्र का क्षय नहींहोय।

वंगके अनुपान

कर्पूरसाद्धैं मुखगंधनाशं जातीफलैः पुष्टि करं नराणां तुलसीपत्रसंयुक्तं प्रमेहं नाशयेद्ध्रुवं ॥१॥ घृतेनपांडुरोगंच टंकणे गुल्मनाशनम् ॥ · ॥

अर्थ- वंगकी भस्मकपूरके संगखानेसे मुखकीदुर्गंधिनाशकरै· जायफलके संगपुष्टताकरै· तुलसीके पत्रसंयुक्तखानेसे प्रमेहदूर हो· घृतके संगपांडुरोग· और सुहागेके संग खानेसेगुल्म रोग शांतहो ॥१॥

हरिद्रारक्तपित्तघ्नी मधुनाबलवर्द्धिकृत् खंड्यासहपित्तघ्नं नागवल्याचवंधनम् पिप्पल्याचाग्निमांद्यत्वं निशावैचोर्ध्वश्वा सहृत् चंपकस्वरसेनैवदुर्गंधंनाशयेद्ध्रु वम् निंवकस्वरसेनाद्यं देहेदहनशांत ये कस्तूरीवंगसंयुक्तं भक्षणाद्वीर्यरोध कृत् खदिरक्वाथयोगेनचर्मपक्षिमलैः सह पूगीफलस्यसाधैनाजीर्णनाशयते स्वरोगात् नवनीतसमायुक्तमस्थिजीर्णा ॥ नवंभवेत् ॥

अर्थ- हरदीकेसंग· रक्तपित्तशांतहो· सहतकेसंगबलकोवढावै मिश्रीकेसंगपित्तकोशांतकरै· पानकेसंगदेहजिंकड्जानेको· अग्निमंदमेंपीपरकेसंग· हरदीकेसंगऊर्ध्वश्वासमें· चंपाकेरसमेंदुर्गंधकानाशक· निंवकेरसमेंदाहमें· कस्तूरीकेसंगवीर्यकोस्तंभन

कत्नी· खैरकेकाढ़े· श्रौर· पक्षिकेमलसें· चर्मरोगमें· सुपारीकेसंग अजीर्णमें· मक्खनकेसंगखानेमें पुरानीहड्डीकोनवीनकरैहै ॥

दुग्धसार्द्धं भवेत्तुष्टिर्विजयास्तंभनंभवेत्
लशुनेवातजांपीड़ांनाशयेन्नात्रसंशयः
समुद्रफलसंयोगान्निर्गुंड्यासहभक्षणा
त् कुष्टंनाशयतेक्षिप्रंसिंहनादैमृगाइ
व अपामार्गजटिकायोगात्षंडत्वंनाश
येद्ध्रुवं देवपुष्पस्यसंयोगे समुद्रफल·
योगतः नागपत्ररसैर्लेप्याल्लिंगवृद्धि·
प्रजायते गोरोचनलवंगेनतिलकोमो
हनेभवेत् एरंडजटिकायोगेपर्षंपिष्वा
चवंगकं लेपयेच्चललाटेषुचापशीर्ष
॥गदंजयेत्॥

अर्थ– दूधकेसाथतुष्टिकरै· भांगकेसंगस्तंभनकरै· लहसनके· साथ· वातकीपीड़ादूरकरै· समुद्रफल· श्रौर· सम्हालकेसाथ· कुष्टकोदूरकरै· चिरचटाकी जड़केसाथनपुंसकपना· लौंगश्रौर समुद्रफलकेसंयोगसें· पानकेरसमेंलिंगपर लेपकरैतो लिंग· कीवृद्धिहो· गोरोचनश्रौर लौंगकेसाथ· बंगकीभस्मकातिलक मोहनकर्त्ताहै· अंडकी जड़को बंगकेसाथघिसकर मस्तक परलगानेसें मस्तकपीड़ादूरहो–

कौञ्चैःपामार्गमूलेनक्षौहेटंकणसंयुतं
रसोनतैलयुक नस्यमपस्मारनिशूदनम्
युवा म्लैरासभीक्षीरैस्तकासंवातगुल्मनुत्
यवानिकायुतंवातेवाजिगंधायुतं तुवा।
जलोदरेत्वजाक्षीरसंयुतंगुणकृद्भवेत्।
जातीफलाश्वगंधाभ्यांकटिपीड़ानिवारणं।

अर्थ- कुष्ठरोगमें आंगाकीजड़के संग· तापतिल्लीमें सुहागेकेसा थ· पुत्रोत्पत्ति के निमित्त गधीकेदूधमें· वायगोलामें छाछकेसंग वादीमें अजमायनके संग· वा· असगंधकेसाथ· जलंधरमेंबक रीकेदूधमें· कमरकीपीड़ामें· जायफल और· असगंधकेसाथ

॥ वंगकीभस्मदेनीचाहिये॥

अशुद्ध बंगके दोष

पाकेनहीनः खलुवंगकोसौकुष्ठानिगु-
ल्मानिमहानिरोगान् पांडुप्रमेहापचि
वातशोणितबलापहारंकुरुतेनराणां

अर्थ- कच्चीवंगकीभस्म· कोढ़· गोला· घोरव्याधि· पांडुरोग· प्रमे ह· अपचि· और· वातरक्त· इनकोउत्पन्नकरै औरबलकानाश

॥ करै है ॥

बंगविकारशांति ॥

मेषश्रृंगीसितायुक्तांयः सेवतिदिनत्रयं
वंगदोषविमुक्तोसौसुखंजीवतिमानवः

अर्थ- जोमनुष्य मेढासिंगी को मिश्रीके संग ३ तीनदिनखाय·

॥ तोवंगकाविकारशांतिहो॥

॥ इतिश्रीमाथुरदत्तरामरचितरसराजसुं
दरेवंगप्रकरणंसम्पूर्णम् ॥

अथजसदप्रकरणम् ॥

खर्परंद्विविधंप्रोक्तंजसदस्यवकंतथा
रसोपिजसदंप्रोक्तंखर्परंचगुणात्मकंम्

अर्थ- खपरियादोप्रकारकीहै· एकजस्त· और· दूसरा· शबक ये जस्ताभी· खपरिया· का· भेदहै· इन में खपरियागुणयुक्तहै॥

॥ जस्तशुद्धि ॥

जसदंगालयेत्पूर्वं दुग्धमध्येतुढालयेत्

एकविंशतिवारांश्च पयसुद्धमिष्यते ॥

अर्थ- जस्तको गलायकर दूधमें बुझावे ऐसे २१ वारकरने से जस्त शुद्धहोताहै ॥

जसदंवंगसदृशंशोधनंमारणंमतम् ॥
तथापिकथयिष्यामिमारणंचविशेषतः

अर्थ- जस्तका शोधन और मारण वंगके समान जानना ॥ परंतु तोभी इसकामारणविशेषकहताहूं

अथमारणम्

यसदंलोहजेपात्रेद्रावयित्वापुनर्धमेत् अग्नौ तत्रैनिवस्य पत्रैर्निबस्यविनिक्षिपे त् घर्षयेदयिलोहस्य दंडेनभिषगुत्तमः घर्षणाल्लोहदंडेनवह्निरुत्तिष्ठति ध्रुवम् यथायथाभवेत्पृष्टिर्भस्मीभावस्तथास्तथा भस्मीभूतंपृथक्कृत्वाघर्षयेत्पुनःपुनः नेत्ररोगेषुसर्वेषुभस्मीभूतमिदंशुभम् ॥ ॥

अर्थ- लोहेके बडे और गहिर कढाईमें जस्तपैसा २ भरीगेरभट्टीमें धोके जववहुतगरमहो जाय तव दो तीन नींमके पत्ता डारै और लोहे के मूसरसें रगरै रगडनेसें आंचनिकलतीहै तिसआगसें जस्त धानकी खीलकीसी तरह सफेदभस्महोय उस भस्मको अलग निकालले और फेररगडे और फेरघोटे इसीप्रकार जवतक सव भस्मनहोजाय जवतकघोटै ऐसेकरनेसे जस्तकी भस्महोय यहभस्मकेवलअंजनके कामकीहै खानेकेकामकी नहीहै खानेसें वादीकरैहै इसजस्तकीभस्म पीसकर एक रत्तीनेत्रमें आंजनेसे नेत्रकेसवरोगनष्टहों अथवा इसजस्तकीभस्म१पैसेभरिऔर कालीमिरचका चूर्णपैसाभर

मकलनपैसार भरि इन तीनों को कागदी नींबू के रस में १ एक मासप र्यंत घोटै फेर इसकी गोली आध रत्तीकी बनावै इस गोली को एक बंदवासेपानीमें घिसकर प्रातःकाल लगावै तो धुंधदूरहो

दूसरी विधि

जसदस्य चतुर्थांशं पारदं गंधकं प्रिये॥
मर्दयेत्खल्वके सम्यक्कन्यानिंबूरसेःटथक्
लेपयेत्तेन पत्राणि गजाख्ये पाचयेत्सुधे॥
एवमेव पुटेनैव भस्मसाज्जसदं भवेत् ॥

अर्थ- जसदके पत्रका चतुर्थ भाग और गंधक मिलाय ग्वारपट्टे के रसमें खरलकरै फिर नींबूके रसमें खरलकर और पत्रोंपरलेप कर सरवासंपुटधर गजपुटमें फूंकदेय तौ एकहीपुटमें जलकी भस्महो

गुंजाद्वयं तु जसदं सर्वरोगानपोहति
अर्थ- जस्तकी भस्म दो रत्ती सर्व रोगों को नाश करतीहै॥

तथा सामान्यगुणाः

जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत
चक्षुष्यं परमं मेहपांडुश्वासे च नाशयेत

अर्थ- जस्त भस्म कसैली कड़वी शीतल कफ पित्त प्रमेह पीलिया और श्वास इनका नाश करै और नेत्रों को परमहित है

जस्तके अनुपान

पुराणे गोघृतेनैव नेत्रं तां बूलेन प्रमेहजिन्
अग्निमन्थेनाग्निकरं त्रिगुंगधेस्त्रिदोष
नुत्॥ ॥

अर्थ- जस्तकी भस्म पुराने गौके घृतसैं नेत्रोंको हितकरै बीड़ा के साथ प्रमेह को नाश करै अरणीकेसाथ अग्नि बढावै त्रिसु गंधके साथ खाने सैं संनिपात को दूर करै है॥ ॥ ॥

सनेदुलाहिमेहेत्तिवजीरैमापुजेज्वरम्

मवानिकालवं गाभ्यां पुनश्शीतज्वरं जयेत्

अर्थ- पित्तज्वर में चामलकादिम· श्रौर· खजूरकेसाथ· शी तज्वर में लौंग· श्रौर· श्रजमायनके संगखाय· ॥·॥·॥

खर्जूरतंदुलहिमैरक्तातीसारनाशकृत्
शर्करा जीरकैसंयुक्तमतिसारंविनिर्जयेत्

अर्थ- खजूर श्रौर चामलके हिमसे रक्तातिसारनाशहो· जीराश्रौर मिश्रीके संग खाने से बातिश्रौरअतिसारनष्टहो

सदोषजसतकेदोष

अपक्कंजसदंरोगान्प्रमेहाजीर्णमारुतान्
वमिभ्रमकरोत्येनं शोधयेन्नागवत्ततः ॥१॥

अर्थ- कच्चा·जसद· प्रमेह· अजीर्ण· सर्दी· वमन·भ्रम· इ तनेरोगप्रगटकरैहै ॥

अथास्य शांतिः

धात्रीभयासितायुक्तांसेवयेद्वो दिनत्रयं
जसदस्यविकारोस्यनाशमायातिनान्यथा

अर्थ- छोडी·हरड़·श्रौर मिश्रीश्तीनदिनसेवनकरै तोजसदवि कार शांति होय ॥

* इतिपं·दत्तराममाथुरप्रणीतरसराजसुंदरेजसतप्रकर्णसमाप्तम्शुभं

अथनागप्रकर्णालिख्यते

उत्पत्ति·॥

दृष्ट्वाभोगीसुतांरम्यांवासुकिस्तुमुमोचयत्
वीर्य्यंजातस्ततोनागः सर्वरोगापहोनृणाम्

अर्थ- पहिले वासुकी नाग अपनी सुंदर कन्या कोदेखकर वीर्यकापरित्यागकरताभया उसीसेसर्वरोगोंका नाशक शीशा·

॥ग्रगटभयाहै॥

नागंचद्विविधंप्रोक्तंकुमारंसमलंतथा
कुमाररसमार्गेषुयोजनीयंगुणाधिके

अर्थ- सो शीशा दोप्रकारकाहै कुमार और समल तिन में कुमार रसक्रियामें योजनाकरै यह उत्तमहै ॥ ॥

नागकीपरीक्षा

द्रुतौपातंमहाभारंछेदेकृष्णंसमुज्वलं
पूतिगंधंबहिःकृष्णंशुद्धंशीशमतोन्यथा

अर्थ- जो पतले करनेसें भारीहो और तोडनेसें भीतरसें कालातथा उज्वल निकसे जिसमें बासआतीहो औरबाहरसे भीकाला दीखै ऐसा शीशा शुद्धजानना यासेंअतिरिक्त अशुद्ध है॥

नागशोधन

कल्लिकज्जकषायेवाकुमारीरसेवाक
रिवरसलिलेवागालयेत्सप्तवारं ख
दिरदहनतप्तेलोहपात्रेस्थितंसन्द
नुसप्तदिनागोजायतेशुद्धभावः॥

अर्थ- लोहेके पात्रमें खैरकी लकडीकी आंचसें शीशा गलाय त्रिफलाके काढेमें ग्वारपट्ठेकेरसमें हाथीकेमूत्रमें सातसात बार बुझानेसें शीशा शुद्धहोताहै अथवा शीशेको अग्निमें पिगलाय छेददारहांडीमें आकका दूधभरउसमेंतीनवारबुझानेसेशुद्धहो

अथनागमारण

त्रिभिःकुंभपुटैर्नागोवासारसविमर्दितः
समशिलोभस्मतामेतितद्रजःसर्वमेहनुत्

अर्थ- शीशा अथवा मनशिल इनका चूर्णअडूसेपीप-

रसमें खरलकर गजपुटमें फूंकदे ऐसे तीनपुटसें सीसेकी उत्तम-
भस्म होय॥

॥ दूसरीविधिश्वेतभस्म

भागैकमहिफेनस्यनागभागचतुष्टयम्
घर्षयान्निंबकाष्ठेन मंदवन्हिप्रदानतः
नागभूतिर्भवेच्छ्वेतावीर्यवार्द्ध्यकरीमताः

अर्थ- सीसासे चौथा भाग अफीम खीपरामें दोनोंको अग्निदे
और नीबकी लकडीसें चलाताजायतो शीशेकी सफेदभस्म-
होय-खानेसें वीर्यको बढावे

तीसरीविधि

कुडवंनागपत्राणांकुनट्यांस्यात्तत्प्राद्धिकं
तंदुलीयरसैर्यामंमामवासार्सैलया॥
संमर्द्यचक्रिकांकृत्वाघर्मेसंशोष्यतांपुनः
शरावसंपुटेकृत्वापचेद्वन्योपलैर्भिषक्।
एवंसप्तपुटैर्नागोभस्मीभवतिनिश्चितम्
द्विगुंजोमधुवंहन्यात्प्रमेहानखिलान्गदान्

अर्थ- चनेकीदार के बराबर सीसा के पत्र ८ आठपैसाभरिकेकरा
वे पीछेमैनसिल पैसाएकभरि ले दोनोको चौंलाईके जडके
रस सें एकपहरभरि घोटै और पहर भरअडूसे के रसमें घोटै
पीछे घाममें सुखाय सरबासंपुटमें धर २० बीसआंचजंगलीक
परानकीदे इसीप्रकार सातआंचदे परंतु मैनसिल हरदफेगेरै
और पूर्वोक्तरसों से हरदफेघोटै तो सीसाभस्महोय-दोरत्तीवा-
४ चाररती इस भस्मको मधौ(?) इलायचीके चूर्ण और सहतके
साथखायतो प्रमेह और मूत्रस्राव आदि सबरोगनाशहोय-

अर्थ ॥ नागकीहस्तिभस्म

वीर्यंवापौरंनिहितनागेश्वविमलेनमर्दयेत्॥

यामत्रिकैर्भवेद्भस्महरिद्दूर्गीमद्युगाम् ॥

अर्थ- खीपरा में सीसा डाल चूल्हेपर चढाय आंच देय— और आककी जडसे रगडता जाय· तो तीनप्रहर में सीसे की हरे रंगकी भस्म होय

सीसेकी पीली भस्म

शिलागंधककर्पूरकुंकुमैर्मर्दयेत्समम्
जंबीरस्य द्रवैर्यामं तत्समं नागपत्रकम्
लिप्त्वा लिप्त्वा पुटे पाच्यं यावत्षष्टिपुटं भवेत्
तन्नागं विद्युदाभासं जायते नात्र संशयः ॥

अर्थ- मैनसिल· गंधक· कपूर· केशर· इनको जम्हीरीकेरसमें पीसै पीछे कंटकवेधी शीशे के पत्रले उनपर इसका लेपकर गजपुटमें फूंकदे ऐसे ६० साठ पुट देनेसें शीशेकी बिजलीके सदृशी ॥ तसोनेके वर्णकी सी पीली भस्म हो

सीसेकी लाल भस्म ॥

कुमारीपाद्घातेन तस्त्वणान्निपतेत्फणी
तन्मज्जाशतपुटेनकं वल्लं सिंदूरं भवेत् ॥
तारं ताम्रं तथा वंगे पालवेधि भवेद्ध्रुवम् ॥

अर्थ- सीसेको तायकर ग्वारपट्ठेके रसमें रगडै तो लाल शीशाभस्म होय· और ग्वारपट्ठेकेरसमें शीशेके पत्रखरलकर गजपुटमें फूंके ऐसें १०० पुट देनेसें सिंदूरके समान भस्म हो· येभस्म चांदी अथवा तांबेको गलायकर डारै तो शतांसभागवे धकर सुवर्णकरै ॥ · ॥

नागकी सातवीं विधि

तांबूलीरससंपिष्ट शिलालेपात्पुनः पुनः
द्वात्रिंशद्भिः पुटैर्नागो निरुत्थो याति भस्मताम्

अर्थ- पानकेरसमें मैनसिल घोटकर सीसेके कंटकवेधी प·

ओंपरधरकर सराव संपुटमें धरकरफूंकदेय· इसी प्रकार२पुट देनेसें सीसेकीनिरुत्थभस्महो॥

नागकीआठमींविधि

भूनागागस्तिपत्राणि पिष्ट्वापात्रंविलेपयेत् वासापामार्गजंक्षारं तन्नागेदद्यान्नैव च ...
मर्दयेत् संपुटेनैव ... गसिंदूरकंशुभम् ॥

अर्थ- केचुआ और अगस्त वृक्षके पत्र पीसकर पात्रमे लेप करिऊपरि सीसाधर· चूल्हेपर चढावै जवसीसागले तबअडूसा और ओंगाकाक्षार· सीसा में चौथाभागडारतजाय· और अडूसेकी मोटी लकडीसे रगडतजाय· तोसीसाएक प्रहर में भस्महोय· फिरअडूसाकेरसमेंखरलकरि गजपुटमें फूंकेतो लाल भस्महोय॥

नागकीनवमींविधि

पलद्वयंमृतंनागेहिंगुलंच पलद्वयम् शिलाकर्षमिताग्राह्या सर्वतुल्यंहिगंधकं निंबुनीरेणसंमर्घ ततोगजपुटेपचेत् ॥ तदानागेश्वरोयंस्यान्नगराजसुतोपमः ॥

अर्थ- शुद्ध सीसेकी भस्म ८ आठतोला· और· हिंगुल ८ आठतोला· मनसिल १ एकतोला· गंधक १७ सत्रहतोला· इनसबकोनीबूके रस में खरलकर· गजपुटकी· आंचदेयतोय ह नागेश्वर रसतैयारहोय॥

नागभस्मकेगुण॥

क्षयपवनविकारेगुल्मपांडामयेषु भ

मरुत्कृमिकफशूलमेहकासामयेषु ग्रह-
णिगुदगदेषु नष्टवन्हौप्रयुक्तः शुभावि-
ध्वस्तनागःकामपुष्टिंददाति ॥ ० ॥

अर्थ- शीशेकी भस्म· खई· बादी· गोला· धोंकिया· भ्रम· कृमि· कफरोग· शूल· प्रमेह· खांसी· संग्रहणी· ववासीरआदिगुदाके रोग· मंदाग्निइनका नाशकरै और कामदेवकी वृद्धि करै· ॥

नागके अनुपान

नागंमृतंसितायुक्तंमायुवायुशिरोग्य-
ग्मां नेत्ररोगशुक्रदोषप्रलापदाह-
कंजयेत् प्रददातिरुचिंकामवृद्धिं-
येत्सव्यसेविनः स्वबुध्याकल्पयेद्धी-
माननुपानंगदेषुच ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अर्थ- शीशेकी भस्म मिश्रीकेसाथ खानेसें· पित्त· वायु· मस्तकरोग· नेत्ररोग· शुक्रकेदोष· प्रलापदाह· इनसबकोदूर करै· अत्रमेरुचिदोष· कामदेवकी वृद्धिकरै· और· चतुर मनुष्य सबरोगोंमें अपनी बुद्धिसें अनुपान कल्पनाकरैं· ॥

अशुद्धनागदोष॥

कुष्ठानिगुल्मारुचिपांडुरोगान्क्षयंक
फंरक्तविकारकृच्छ्रं ज्वराश्मरीशूलभ-
गंदरादीन्नागस्त्वपक्वःकुरुतेनराणाम्॥

अर्थ- अशुद्ध सीसेकी भस्म· कुष्ठ· गुल्म· अरुचि· पांडुरोग· खई· कफरोग· रक्तविकार· मूत्रकृच्छ्र· ज्वर· पथरी· शूल· और· भगंदर· इतने रोगोंको प्रगट करताहै· ॥ ॥

नागदोषशांति

हेमाहरीतकींसेवेत्सितायुक्तांदिनत्रयं
अपक्वनागदोषेणविमुक्तःसुखमेधते॥

अर्थ- चौक और हरड़ खांड़के संग ३ तीनदिन खाने में -
अपक नागदोषशांतहोनिस्संदेह

॥ इतिश्रीमाथुरदत्तरामनिर्मितरसराज
सुन्दरेनागप्रकरणंसमाप्तम् ॥

अथलोहप्रकरणम्

लोहादौत्पत्ति

पहिले देव दैत्योंने मिलकर समुद्र मंथन करा तासेंसब देवतानका जीवन अमृत प्रगटभया उसअमृतको जब देव गणोंने पानकरा उससमयजो बहुतसूक्ष्म अमृतकी बिंदू उछटकर पृथ्वीमें गिरी उनको श्री शिवजीने पत्थरका स्वरू पलोहाबनाकर पर्वतों में छिपायदिया औरतेपापरोगकरके ॥ पीडितमनुष्योंकेलियेयहलोहपैदाभया

लोहकेभेद ॥

मुंडंतीक्ष्णंतथाकांतंभेदास्तेषांत्रयोदश॥

अर्थ- लोहा तीन ३ प्रकारकाहै मुंड तीक्ष्ण कांत इन तीनोंके तेरहभेद है ॥ - ॥

यथा

मृदुकुंडंचकाडारं त्रिविधंमुंडमुच्यते-

अर्थ- तहां मुंडलोहके तीन ३ भेदहैं मृदु कुंड और कांडार

खरसारंचह्रोनालंतारवहंचवज्रकंतथा-
काललोहंगजाख्यंचषड्विधंतीक्ष्णमु
॥च्यते॥

अर्थ- तीक्ष्ण ६ छप्रकारकाहै खरसार ह्रोन्नाल तारवट
विड्काललोह गजाख्य-

कांतलोहंचतुर्द्धास्यांरोमकंधामकंतथा-

चुंबकंद्रावकंचैवगुणास्तस्योत्तरोत्तराः ॥

अर्थ- कांतलोह ४ चारप्रकारकाहै· रोमक· भ्रामक· चुंबक· द्राव क· इनमेंउत्तरोत्तरअधिक गुणहैं ॥

पंचमंतुकचित्प्रोक्तंकर्षणंचरसायने ॥
यद्देशाकरसंभूतंतद्देशजरोगनुत् ॥

अर्थ- कहीं२ पंचमकर्षणनाम का लोहा कहाहै यहलोह जिसदेशकी· आकर· अर्थात्· खानसे· प्रगट हो उसीदेस के रोगोंको दूरकरै है

॥ खरसारके लक्षण

जो नेत्रवाला के पुष्पकेरंग सदृश हो सो सार· वा· खरसार कहाताहै· सो स्थूल· और· लघुके भेदसें दोप्रकार काहै एक ओंड्र· यानीउड़ियादेशका· दूसराकलिंगज· जो पहर के पत्रके समान· और· जिसमें छेदहों सो ओंड्र· और· जोतो ताके पींजराके वर्णसमान तथा नरमहो सो कालिंगजहै अर्थात् कलिंगदेशमेंपैदाहोताहै

गजवल्लीतिविख्यातासर्वलोहस्यमातरः
स्थूललघ्वंगभेदेन तस्माद्वज्रादिसंभवः

अर्थ- सबलोहोंकी माता गजवेलि नामसें विख्यातहैसो स्थूल· और· लघुके भेदसें दो प्रकार कीहै यह वज्रकेलो· हसेंप्रगटहै सो वज्रलोहादशप्रकारकाहै

असितंकाललोहाख्यरक्तंलोहितवज्रकं
मयूरवज्रकंचान्यदन्यत्तित्तिरवज्रकम्
रोहिणीवज्रकंचान्यदन्यच्छुकवज्रकम्
एवंदशविधंवज्रंगुणाढ्यमुत्तरोत्तरम् ॥

अर्थ- असित· काल· लोह· रक्त· लोहित· वज्रक· मयूरवज्र तित्तिरवज्रक· रोहिणीवज्र· शुकवज्र· र गोरख संहिताके

मतसें दशप्रकारका वज्रसंज्ञक लोहा है इन में क्रमसें एक
सेंदूसरेकेंअधिकगुणहै ॥

पांडुलोहके लक्षण

जो घिसने सें गोलहोजाय· और जिसमें सुवर्णकीसीरेखा·
प्रतीतहो उसेपांडुरलोहा कहते है सो दो प्रकार काहै· एक·
कालादूसराश्वेत ॥· ॥

कांतलोहके भेद·॥

एकास्यंद्विमुखास्यंच वेदास्यंशंखचक्रिकं
सर्वतोमुखमित्येवमुत्तमाधमकांतकम्
भेदानांलक्षणंषण्णांनवुक्तंग्रंथगौरवात्

अर्थ- अबकहतेहैं कि पेहले जो चुंबक भ्रामक येकांत·
लोहके भेदकहे उसीके· एकमुख·द्विमुख· चतुर्मुख·शंख·
चक्रीक· और· सर्वतोमुख· ऐसे छः भेद और हैं· येउत्त
म· मध्यम·कनिष्ठ· से अनेक भेदहैं·परंतु हमने ग्रंथविस्ता
॥ रकेभयसेंनहींलिखे जोमुख्यहैंसोलिखेहै

मुंडंतुवर्तुलंभूमौ पर्वतेषुचदृश्यते ॥
गजवल्ल्यादितीक्ष्णंस्यात्कांतंचुंबकसमु
द्भवं मुंडात्कटाहपात्रादिजायतेतीक्ष्ण
लोहतः खड्गादिशस्त्रभेदाश्चकांतलो
हेसुदुर्लभम् ॥

अर्थ- मुंडलोहा· पृथ्वी अथवा पर्वतों में· वर्तुलरूपसेंमि
लताहै· और तीक्ष्णलोहा· गजवेलिआदिसें पैदाहोय·
है· और· कांतलोह· चुंबक पथ्थरसे पैदाहोताहै मुंडलो
हके· कढैया· तवा· आदिबनते हैं· तीक्ष्णलोहसें तलवार
आदिशस्त्र बनतेहैं· और कांतलोहदुर्लभहै ॥

किट्टादशगुणंमुंडंमुंडात्सारंचतुर्गुणं

सारात्षोढं द्विगुणितं कालिंगं च ततोऽष्ट
धा तस्माद्दृढं दशगुणं भद्रं लौहंजं मह
स्त्रधा वज्रात्सप्तगुणं पाडं कांतिजे श
धातनः सर्वलोहोत्तमं यस्मात्तस्मात्को
टिगुणं मतं यल्लोहं यद्गुणं लौहं ष्टंतत्किं
ष्टमपितद्गुणं ॥ ॥ ॥ ॥

अर्थ- कीटसें दशगुण मुंड लोह में अधिक है मंडसें चतुर्गुण सारलोह में सारसें द्विगुणविशेष तूडियादेश के लोह में यासें आठगुण कालिंगदेशके लोहमें तातेसें गुणविशेष भद्र संज्ञक लोहमें भद्र सें हजारगुणविशेष वज्रलोहमें हैं और वज्रसें ६० लाखगुण विशेष पांडलो हमें है पांडसें सौगुण विशेष कांतिलोहमें कहे हैं ये लोहसर्वोत्तमहोने सें इस्में कोटिगुण कहे हैं और जिसलोहमें जितने गुणकहे हैं उतने ही गुणउसकी कीटमें जानने

कांतेलक्षगुणं प्रोक्तं रसकर्मविशारदैः ।
स्फटिकोस्यकोटिगुणं विद्युत्संभूतदुर्लभं

अर्थ- कांतलोहमें लक्षगुण है स्फटिक के लोहमें किरोडगुण है और विजलीसें जो पैदालोह टथ्वीमें दुर्लभ है अब पहिले जो लोहके भेदकहिआये उनप्रत्येक के लक्षण भाषामें अलग २ लिखते हैं ॥ ॥ ॥

मृदुलोहकेलक्षण

जो शीघ्र पतलाहोजाय और घनकी चोटसें फटैनहीं चिकना और नरम हो सो मृदुलोह कहाता है यउत्तम है

कुंडलोहकेलक्षण

जो घनकी चोटसें कठिनतासें टूटै सो कुंडलोह मध्यम है ॥

कांडारलोहकेल·

जो घनकीचोटसे शीघ्रटूटजाय· और· भीतरसें कालानिकसै उसे कांडार लोह मुंडकाभेदकहते हैं

तीक्ष्णजोछैभेदकहेहैं उनके पृथक२भेद लिखेप्रथम

खरलोहकेल·

जो कठिन और तोड़नेसें भीतरसें टेढ़ीरेखा पारेकीसीमालूम· हो· और भार केधरनेसें भीनहीं नवै· उसे खरलोह कहते हैं·

सारलोहकेलक्षण ॥

जो पृथ्वीसें प्रगट लोहपीला· और कुटिल रेखा संयुक्त हो उसे सार लोह कहते हैं

होन्नाललोहकेल·

जो·काला· और· नीला· रंगमें हो· कुटिलरेखायुक्त· तोड़नेमें· अति कठिन हो उसेहोन्नाल लोह कहते हैं॥

नागलोहकेलक्षण

जिसका वज्रके समानप्रकाशहो· सूक्ष्मरेखाओंसें युक्त· काला और भारीहो उसको नागलोहकहते हैं·

काललोहकेलक्षण

जिसकारंगनीला· और· कालाहो· चिकना· और· भारी· घनकी चोटसें टूटैनहीं उसेकाललोहकहतेहैं

अथकांतलोहकीपरीक्षा

पात्रेयस्मिन्प्रसरतिजलेतैलबिंदुर्नलि प्तो हिंगुर्गंधोविमृजतितथातिक्तता निंबकल्क: पाक्वंदुग्धंभवतिशिखरा कारतानेतिभूमौ कांतलोहंतदिदमुदि तंलक्षणोक्तंनचान्यत ॥

अर्थ- कांतिलोह के पात्र में पानीभरकर जिसमें तेलकी बूंदडारनें से फेलैनहीं और हींग धरनेसें हींगकीवासनआवें नीमकारस कांतके वासन में धरने से मीठाहोजाय और कांत लोहके पात्रमें दूध औटानेसें उफनेनहीं ऊंचापर्वतकी तरहहोजाय उसेकां तलोहकहते हैं अबकांतके भ्रामकादिभेदोंको अलग२लिख तेहैं तहांप्रथमभ्रामककेलक्षण-

भ्रामयेल्लोहजातंतुतत्कांतंभ्रामकंमतम्
चुंबयेच्चुंबकंकांतंकर्षयेत्कर्षकंतथा ।
साक्षाद्द्रावयेल्लोहंतत्कांतंद्रावकंभवेत्
तन्नुमकांतंस्फुटिताद्यतोरोमोद्गमोभवेत्

अर्थ- जोसबलोह की जातिमात्रको भ्रमावे उसकांतकोभ्राम ककहतेहैं और जो अन्यलोहको चुंबनकरलेइ उसकोचुंब क तथा जो और लोहको आकर्षण करे उसेकर्षक और जो अन्यलोह को नरम करदेय उसेद्रावक और जिस्कोतोड़ नेसें भीतर से रुआंसेमालूमदें उसे रोमकनाम कांतलोहका

॥ हतेहैं सोजानना ॥

पीतंरक्तंतथाकृष्णंत्रिवर्णंस्यात्पृथक्पृ थक् क्रमेणदेवतास्तत्रब्रह्माविष्णुमहे श्वराः ॥

अर्थ- इसकांतलोहकेतीन रंगहैं पीला काला औरलाल इनतीनों के ब्रम्हा विष्णु और शिव क्रमसे देवता जानने इनमें पीलेरंगका स्पर्शवेधीहै और रसायनमें कालेरंगकाले ना उचित है तथा लालवर्णका कांतिलोहपारेके बंधनमें लेनाचाहिये और इनमेंभ्रामकप्रधनहै चुंबक मध्यम औ

॥ रकर्षकतन्नमतथाद्रावकउत्तमोत्तमहै

कांताभावेतीक्ष्णलोहंचग्राह्यंतल्लोहवैसं

मृदुत्वं विधत्ते मुंडं त्याज्यं सर्वथा नैव ग्रा
ह्यं यस्मान्मुंडं भूरिदोषावहं हि ॥ ॥ ॥

अर्थ- कांतलोहके अभावमें तीक्ष्णलोह लेना चाहिये सो तीक्ष्णलोहा उत्तम और नरम हो और मुंडलोहको कदाचि त ग्रहण न करें क्योंकि इसमें बहुत दोष रहते हैं ॥ ॥ ॥

अशुद्धं तु मृतं लोहमायुर्हानिकरं परम्
कुष्ठांगमर्दहृत्पीडादिदं तस्मात्तु शोध
॥येत्॥

अर्थ- विनाशुद्धीके मरणलोहा आयुष्यको घटावै और रोग कोढ़ अंगोंका टूटना हृदयमें पीडा हो यासें लोहको शुद्धकरै

अथ लोहशोधनम्

गुरुता दृढताक्लेदी कश्मलो दाहकारकः
अश्मदोषः सुदुर्गंधो सप्तदोषायसस्य च

अर्थ- गुरुता दृढता क्लेद कश्मल दाह गिरिदोष ये सात दोष लोहमें स्थित हैं ॥

अथ लोहशोधनम्

गरलं क्लमवांतिवीर्यहानिदोषाश्च व
दंति शोधके अथ शोधनभावनात्सुवा
द्विधिनैकेन वदंति शरारपः शशरक्तेन
संलिप्तं चार्कपयसाघमे दग्धकृता
शनध्मातं सिक्तं त्रैफलवारिणा एवं
त्रिधाःकृते लोहं शुद्धिमाप्नोत्यसंशयम्

अर्थ- लोहमें विष क्लम वमन और वीर्यका नाश ये दोष रहते हैं इसलिये एक विधिसैं लोहशोधन कहता हूं ॥ लोह में शशाके रुधिरका लेपकर आंचमें तपायकर त्रिफलाके काढेमें बुझावैं याप्रकार तीनपुट दे पीछे दमली और आकका

दूधइनकी अलग २ लेपकर तपाय २ तीनवार त्रिफलाके काढे में बुझावै तो कांतआदि लोह शुद्ध होय. अथवा

सर्वलोहानितप्तानिकदलीमूलवारिणा
सप्तधाभिनिषिक्तानिशुद्धिमायांतयो.
॥ऽन्नमम्॥

अर्थ- सबलोहोको तपायकर केलाकीजडमें सातवार बुझानेसें लोहमात्रशुद्धहोय. यहशुगमरीतिहै

शुद्धिमायांतितीक्ष्णंचमुंडंनिर्गुंडिरसेच
यात इतराणिचलोहानिसर्वान्यूलक
॥विष्टपा॥

अर्थ- सम्हालूके रसमें तीक्ष्ण. और मुंड. बुझानेमें. शुद्धहोते हैं और बाकीकेलोहे तुलकीबीठसें शुद्धहोते हैं ॥.॥.॥

समदूलवणोपेतं तप्तंनिर्वापितंखलु
त्रिफलाकथितेनूनंगिरिदोषमपास्य
जेत्॥

अर्थ- समुद्रनोन संयुक्त लोहकोतपाय. पीछेत्रिफलाके काढे में बुझानेसे लोहमें जो पर्वतकादोष रहताहै सोदूरहो. ॥

शुद्धलोहकीपरीक्षा

नविस्फुलिंगानचबुद्बुदायदायस्येषां
पटलनशब्दः मृषागतं रत्नसमंस्थिरं
चतदातिशुद्धंप्रवदंतिलोहम्॥.॥

अर्थ- जिसमें चिनगारी नहीं निकले. और पानीमें बुझानेमें वकलानिकले तथा मूषा में धरनेसें रत्नकेसमानस्थिररहै. उसको शुद्धलोहकहतेहैं

सम्यगोषधकल्पानांलोहकल्पः प्रशस्यते
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनलोहमादौविमारयेत्॥

अर्थ-सबऔषधीनके कल्पसे लोहकल्पश्रेष्ठहै. इससेंप्रथम लोहकामारणकरैं

नाथ:पचेल्लंचपलाद्वोगर्ध्वेत्रयोदशात् आदौमंत्रस्तत:कर्मकर्तव्यंमंत्रमुच्यते ॐअमृतोद्भवायस्वाहा ॥ ॥

अर्थ-लोहापंचपलसे कमनफूंके. और तेरहपलसे अधिक नफूंके. प्रथम मंत्रकोपढ़पीछे. और मारणआदिकर्मकरे. मंत्रयहहै. ॐअमृतोद्भवायस्वाहा ॥ ॥ ॥

नरसेनविनालोहंनलोहंचाभ्रकंविना सकत्वेनशरीरस्यबंधोभवतिदेहिनाम् पारदेनविनालोहंय:करोतिपुमानिह: उदरेतस्यकीटानिजायंतेनात्रसंशय:

अर्थ-पारेकेविना अथवा अभ्रक केविना. लोहका और शरीरकी एकतानहीहो. और देहमें लोह ठहरतानही है. इससें लोहमें पारद अथवा अभ्रक का संस्कारकरें जोवैद्यपारेकेविना लोहकी भस्मकरैं है उसलोहसें रोगीकेपेटमें कृमीपैदा होतीहै इसमेंसंशयनहीहै

पोलादिलोहकीभस्म

शुद्धंलोहभवंचूर्णंपातालगरुडीरसै: मर्दयित्वापुटेद्वन्हौदद्यादेवंपुटत्रयम् पुटत्रयंकुमार्याश्चकुठारछिन्नकारसै: पुटषट्कंततोदद्यादेवंतीक्ष्णमृतिर्भवेत्

अर्थ-पोलादिलोहकाचूर्णकर. पातालगरुडीके रसमें. खरलकर सरावसंपुटमें धरकपडमिट्टीकर आरनेकंडेनकीतीन ३ पुटदे. इसीप्रकारग्वारपठेकेरसमेंघोट ३तीनपुटदे. इसीप्रकार वनतुलसीकेरसमें घोट६वार गजपुटमेंफूंके तीक्ष्णपोलादलोहकीभस्म.

॥ह्योय॥

दूसरीविधिः

द्वादशांशेनदरदंतीक्ष्णाचूर्णस्यमेलयेत्
कन्यानीरेणसंमर्द्यंयामयुग्मंतुनस्तुनः
धान्यसंपुटेकृत्वापुटेद्गजपुटेनवै॥१॥
सप्तधैवंकृतंलोहंरजोवारितरंभवेत्॥

अर्थ- पोलादलोहके चूर्णका १२ बारवां हिस्सा हिंगुलमिला य- ग्वारपट्ठेके रसमें दोपहर खरलकरै- पीछे सरावसंपुटमेंध र कपडमिट्टीकर गजपुटमें फूंकदे ऐसे सातपुटदेनेसें लोह- कीभस्मपानीपरतैरनेलगै

तीसरीविधि॥

शुद्धंसूतंद्विधागंधंखल्वेकृत्वाथकज्जलीं
द्वयोःसमंचूर्णलोहंमर्द्येत्कन्यकाद्रवैः।
यामद्वयांसमुद्धृत्यतद्गोलंताम्रपात्रके।
आच्छाद्यैरंडपत्रैश्चयामार्द्धेऽत्युष्णताभवेत्
धान्यराशौन्यसेत्पश्चात्रिदिनांतेसमुद्धरेत्
संपेष्यगालयेद्वस्त्रेसत्यंवारितरंभवेत्।
कांततीक्ष्णंतथामुंडंनिरुत्थंजायतेध्रुवं

अर्थ- पारा१ एकभाग- गंधक२ दोभाग- इनदोनोंको खरल- में डाल- कजलीकरै- पीछे इनदोनोंकी बराबर लोहका चू र्णले ग्वारपट्ठेके रसमें दोपहर घोटै- पीछे निकालकर गो- लाकरै- फिर उसगोलेको तामेके पात्रमें धर- और अरंडके प त्तोंसें ढक- डेढपहेर तक घाममें धर देय- पीछे उठाय कर धा नकीराशमें तीन दिनतक गाडदेवै- पीछे चौथे दिन निकाल उसको पीस वस्त्रमें छानलेय- सो पह सारपानीमें तैरनेलगै- वारीतिसें कांत- तीक्ष्ण- और मुंड- इन तीनों लोहेनकी निरुत्थ

भस्महो· यहतारसुवर्णपर्पटीमेंडारतेहैं· औरजोगराजजोग
मेंडारतेहैं· नवायसचूर्णमें डारते है ॥ तबवहऔषध
गुणकरैहै· औरखांसीदूरकरनेकोलोह रसायनकेसाथदे
॥ तेहैं ॥

चतुर्थविधि

लोहचूर्णपलेखल्वेसोरकस्यपलंतथा
अश्वगंधापलंचापिसर्वमेकत्रमर्दयेत्
कुमार्याद्विदिनंपश्चा गोलकंअर्कपत्रके।
संवेष्ट्य चमृदालिप्त्वापुटेद्गजपुटेपचेत्।
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यसिंदूराभमयोरजः।
घृतेवारितरंग्राह्यंसर्वकार्यकरंपरम्॥ ॥

अर्थ- लोहकाचूर्णतोले४ चार· सोरातोले४ चार· औरअश्व
गंधतोले४चार· इनसबकोमिलायऔरग्वारपट्ठेकेरसमें
एकदिनखरलकरै· पीछेअर्कके पत्तेमें उसगोलेकोधर· और
उस्पै लातकपरौटीकर· गजपुटमेंफूंकदेजब· स्वांगशीतल
होजाय· तबनिकासले इसका रंग सिंदूरकेसमानहो· और
॥ यहपानीमेंतरै येसबकार्यकरनेमेंउत्तमहै॥

लोहकीसर्वोत्कृष्टभस्म

आदौलोहविचूर्णितंतदनुगोतोयस्यभा
वात्दिने रात्रौचैवपुटाश्चविंशतिमिता·
कुमार्यब्यपत्रेशुभे सर्वैस्त्रिफलाजलस्य
कथिताभावेश्चषष्टिपुटा कन्यापारस
भावनाश्चकथिताचाष्टौचवेदैःपुटाः ॥
वज्राकौहलिनीपुदीह रजनीगुंजातुरं
गीघनो निर्गुंडीगरुडीकुठेरकनकंच
न्द्रिश्चमच्छालताः हेमीहंसपदीतथा

मृतस्तताभृंगेंद्रवृक्षौदिने रात्रौतदुत्थ-
कौष्ट्यकृष्णगहोसमैवभावाः पुटाः
रात्रीतक्रपुनस्तुवल्कलस्लेपिष्ठादिने
कंदूदं भावाश्चैवपुटाश्चसप्तकथिता
सर्वैश्चवैद्याधिपैः पश्चात्त्याः कथितांभ
वादिनदिनेनित्यंपुनःसूरिभिः रात्रौस
मपुटास्त्रसन्निगदितायंत्रेचकूर्माभिधे
पश्चाद्भावपुटाश्चपंचसततं पंचामृतानां
पुनः स्तत्त्वर्गांधु दशांशकंमुदरदंमुक्ता
प्यनारीपयः गोदुग्धंप्रदिवात्रयोपित
ततंपिष्ठाचभावाःपुटेत पश्चाद्घृतु-
पादेनसुचिनागंधेनकन्यारसैः तच्चू
र्णंघारिमर्द्दयेतदृढतरंसंपाचयेत्संपुटे
पश्चात्केवलकन्यकाम्बुविहीर्भस्मत्रि
शःपाचयेत पश्चात्कज्जलसंनिभंज
लतरंसूक्ष्मंचलोहंभवेत् दृसैरेवचल्ला
जलैःपरिहृतंतल्लोहकंयुत्तमम् ॥ ॥

अर्थ- शुद्धलोहकेचर्णकोलेकरदिन में गोमूत्रमें खरलक
रै- और रात्रीमें गजपुटकीआंचमेंफूंकदे- याप्रकारकूर्मयंत्र
में २० पुटदेय- इसीप्रकारत्रिफलाकेरसकीभावनादेय-और
हरदफे गजपुटमेंफूंके- यारीतिसैं ७ पुटदेय- पीछेच्यारपादे
कीः गजपुटदेय- तथा- थूहर- आक- हींस- गोंदी- हलदी-
दारुहलदी चिरमिठी- असगंध- नागरमोथा- निर्गुंडी- पाता
लगरुडी- आजवला- धतूरा- चित्रक- कुटकी- कांगनी- म
ठेठी- सोनजुही- हंसपदी- गिलोय- भांगरा- औरकूडा- इ
नप्रत्येकके दूधवा- रसमें- दिनमेंतोखरलकरै- औररातमेंगजपुट

कीआंचदेय· ऐसें सातसातदिन खरलकरै· और नित्यरातको· गजपुटमें फूंके· ऐसेही राई और छाछकीसातसातभावनादेय· पीछेपंचामृतकी पांचभावनादेय· औरपांचहीवेर गजपुटमेंफूं के· पीछे इसलोहकादशांशसिंगरफडार· घीके दूधमें खरल करै· फिरगौके दूधकीतीनभावनादेकर तीनहीगजपुटकी आंचदे तदनंतरलोहकाछठाभागपारा और इतनीहीगंध क इनतीनोंको ग्वारपठेकेरसमेंखूबघोटै फिरसराबसंपुट मेंधर गजपुटमें फूंकदेय· फिरनिकाल केवलकुमारी (ग्वार पाठा) केरसकीतीनपुटदेय· गजपुटमेंफूंकेतो· लोहकीभस्मक· ज्जलकेसमान पानीमें तरनेयोग्य सुद्धहोय· इसमेंबल्लाकेरस कीपुट और देनेसें पहउत्तमभवेकि शुभस्महोय· ॥·॥·॥

लोहमारनेकीदूटीविधि

तीक्ष्णस्यचूर्णसूतेनगंधेनसेनसंमर्द्य
भृगांकुमार्याः पंकीकृतंकांस्यपुटांतर
स्थं स्यपितपे भूस्तुमुपेतियुक्तम् ॥·॥

अर्थ– तीपादलोहकाचूरा· पारा· वा· गंधक· इनतीनोंकोघी गुवारके रसमेंघोटकर कांसेकेपात्रमेंधर सूर्यकीधूपमेंरखदेतो लोहकीभस्महोय·

पुटदेनेकेगुण

लोहानामपुनर्भावोयथार्थगुणकारिता
सलिलेतरणंचापिपुटनादेवजायते ॥

अर्थ– लोहों का फेरनजीना· और यथार्थगुणकाकरना न याापानीमें तरना येसबपुटकेदेनेसे होते हैं

पुटनास्याल्लघुत्वंचशीघ्रव्याप्तिश्चदीपनं
जारितादपिसूतेन्द्राल्लोहानामधिकोगुणः·

अर्थ– और हलकापन· तथा शीघ्रदेहमें फैलना और जठरा·

निकोप्रवलकरनाथेभी पुटदेनेसेहोयहै पारेकीभस्मसे लोहे कीभस्ममें विशेषगुणहै अबकहतेहैंकि कौनधातुमें कौनसा पुटदेनाचाहिये सोलिखतेहैं

स्वर्णरूप्यवधेज्ञेयपुटंकुक्कुटकादिकम्
ताम्रेकाष्टादिजोवन्हिर्लोहेगजपुटानिच

अर्थ- सोने और चांदीमें कुक्कुटपुट तथा तांबमें काष्टादिकअग्नि और लोहमें गजपुटकीअग्निदेनी चाहिये ॥

रसादिद्रवपाकानांप्रमाणात्तानजंपुटम्
नेष्टोन्यूनाधिकःपाकःसुपाकंहितमौषधे

अर्थ- पारेसे आदिले सवधातुमात्र के पाकमें जितनेपुट लिखेहैं उतनेहीपुटदेनेचाहिये कम या ज्यादानदे क्यों ॥ किसौषधयथार्थपकीहितहोतीहै

लोहभस्मकेगुण

लोहामृतंकज्जलसंनिभंतुभुंक्तेसदायो
रसराजयुक्तं तस्यैवदेहेनभवंतिरोगा
मृतोपिकामःपुनरेतिधाम ॥ ॥ ॥

अर्थ- लोहभस्म रंगतमें काजलके समान और पारेयुक्त ऐसीजो सेवनकरे उसकीदेहमें रोगकभीनहोय और गया कामदेवफेरउत्पन्नहोय

आयुःप्रदाताबलवीर्यकर्ता रोगस्यहर्तामदनस्यकर्ता अयःसमानंनहि किंचिदन्यद्रसायनंश्रेष्ठतमंवदंति॥

अर्थ- आयुष्य बल और वीर्य इनकोबढावे रोगोंका नाशकरे कामकोपैदाकरै ऐसालोहके समानदूसरीरसाय नन्हीहै ऐसाश्रेष्टवैद्यकहतेहैं ॥ ॥

लोहभस्मानुपान

शूलेहिंगुघृतान्वितोमधुयुतोकृष्णायुत·
गज्वरे वातेसाज्यरसोनकः श्वसनके
क्षौद्रान्वितंत्र्यूषणं शीतेश्चाल्लताद
लसमरिचंमेहेवराखोपला दोषाणां·
न्वितपेनुपानमुदितं सक्षौद्रमार्द्रोदकम्
॥१॥ घृतेन वातकेदेयं मधुनापित्त
केज्वरे श्लेष्मपित्तेचार्द्रकेन निर्गुंड्या
शीतवातके ॥२॥ शुंठीवातेसितापि
त्तेकफेकृष्णात्रिजातकं संधिरोगेवराशे
हेप्रोक्तंलोहानुपानकम् ॥३॥ ·॥·॥

अर्थ- शूलमें हींगश्चार घृतकेसाथ· जीर्णज्वरमें सहत· श्चोर·
पीपलकेसाथ· वातमें लहसन श्चोर घृतकेसाथ· श्वासमें· सोंठ·
मिरच·पीपल·सहतके संग· शीतमें मिरच·श्चोर·पान·केसंग·
प्रमेहमें· त्रिफला· श्चोर·खांडके साथ· त्रिदोषमें· सहत·श्चो
र·श्चदरखके रसमें· वातज्वरमें घृतसें· पित्तज्वरमें सहतसें
कफपित्तज्वरमें· श्चदरखकेरसमें· श्चोर· ९० वातमें सह्माल
के रसमें· वातमें सोंठकेसाथ· मिश्रीकेसंगपित्तमें· पीप·
लकेसंगकफमें· संधिकेरोगमें·दालचीनी· इलायची· न
मालपत्र· इनके साथ लोहकीभस्म खानीचाहिये॥·॥

वल्लंवल्लार्धमानंच यथायोगेनयोज·
येत् त्रिफलालोहचूर्णंचवलीप·
लितनाशनम् कज्जलीमधुकृष्णाभ्यां
श्लेष्मरोगनिवारणं खंडमासचतुर्भि
र्नरक्तपित्तनिवारणं पुनर्नवात्वगाक्षी
रैर्बलवृद्धिकरंपरं पुनर्नवारसैर्नेवपां
डुरोगनिदूषनम् हरिद्रालोहचूर्णंचि

पिप्पल्यामधुनासह विंशतीचप्रमे
हाणांनाशयेन्नात्रसंशयः ॥·॥·॥

अर्थ- लोहकीभस्म ३ तीनरत्ती· अथवा १॥ डेढरत्तीरोगोक्त·
अनुपानकेसाथदेय· वली पलितनाशकेअर्थ त्रिफला
केसाथदेय· कफकेरोगमें· पारेगंधककी कजली· औरपी·
पलसहतके साथ· रक्तपित्तमें· मिश्रीऔर· चतुर्जातके
साथ· बलकीवृद्धिकेलिये· पुनर्नवा· और· गोकेदूधके
साथ· पांडुरोगमें पुनर्नवाके रसमें· बीसप्रकारकीप्रमेहमें
हलदी· पीपल· और· सहत· इनकेसंगलोहकी भस्मदेनी
॥ चाहिये ॥

शिलाजतुसमायुक्तंमूत्रकृच्छ्रनिवारणं
वासकःपिप्पलीद्राक्षालोहंचमधुना
सह गुटिकांभक्षयेत्सातःपंचकास·
निवारणं तांबूलेनसमायुक्तंभक्षये·
त्तल्लोहमुत्तमम् अग्निदीपकरंवृष्यं·
देहकांतिविवर्धनम् त्रिफलामधुसं
युक्तं सर्वरोगेषुयोजयेत् पथ्यासिता
लोहभस्मपथ्योक्तंगुणादंभवेत् किम
त्रबहुनोक्तेनदेहलोहकरंपरम् येगु
णामृतरूप्यस्यतेगुणाःकांतभस्मनः·
कांताभावेप्रदातव्यरूप्यमित्याहभैरवः

अर्थ- मूत्रकृच्छ्रमें· शिलाजीतकेसंग· अडूसा· पीपल· दा·
ख· इनमें लोहकीभस्ममिलाय· गुटिकाबनावे इसकेखा·
नेसे पांच प्रकारकीखांसीदूरहोय· पानकेसंगखानेसेमंदा
ग्निदूरहोय· औरदेहकी कांतिबढे· और· वृष्यहै· त्रिफ
ला और· सहतकेसाथ· सर्वरोगोंकानाशकरै· छोटीहरड

और मिश्रीकेसाथ पूर्वोक्तगुणकरै बहुतकहनेसेक्याहै - ये देहको लोह का कर्त्ताहै और जो अमृतमेंगुणहै सोकां तिलोहमेंगुणाहै जबकांतिलोहकीभस्म नमिलेतब रूपेकी

॥ भस्मदेनीचाहिये ॥

लोहसेवनमें अपथ्य ॥

कूष्मांडं तिलतैलं च माषान्नं राजिकातथा
मद्यमम्लरसंश्चैव त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥

अर्थ- पेठा तिल तेल उरद राई मदिरा खट्टेपदार्थ इतनीवस्तु लोह सेवनकरने वालात्यागदेवै

मत्स्यजीवककार्त्ताकमाषंचकारवेल्लकं
आपानंतीक्ष्णकंमद्यंतैलाम्लंदूरतस्त्यजेत्

अर्थ- मछली जीवककासाग बेंगन उरद करेला इंड्क मल लालमरिचआदि तीखेपदार्थ मद्य तेल खटाई इनतेपदार्थलोहभस्मका सेवनकरनेवालात्यागदे

अमृतीकरण

लोहाष्टभागशेषेण त्रिफलापलपंचकं
घृतंक्काथस्यतुल्यंस्यात्पलतुल्यंमृतायसं
पाचयेताम्रपात्रे च लोहदर्व्या विचालयेत्
योगवाहमपाख्यातं मृतंलोहं महारसम्
द्वस्यंकांतस्यतीक्ष्णस्य मुंडस्यापिप्रयत्नतः

॥ धि ः ॥ ॥

अर्थ- त्रिफला ५ पांचपल लेकरइसमें अठगुणाजलडा लकर काढाकरै जब आठवांहिस्साजलरहिजाय तबइस कोछानले फेरइसक्काथकेसमानगौकाघृत और इस मीही शुद्धलोहकीभस्म लेकरतांबेकेपात्रमें पक्वकरै और लोहकीकरछीसेचलाताजाय जबजलसोरहजाय

केवल लोहकी भस्ममात्र रहिजाय नक्तुतारलेय येमेनें योगों में देने योग्य लोहकी भस्मकीविधि कहीहै इसीरीतिसेंकांत तीक्ष्ण मुंड कीविधिजाननी ॥

लोहभक्षणाकरनेकामंत्र

ॐअमृतोद्भवस्यामिनमःस्वाहा

लोहपाक ॥

लोहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुमध्यखरस्तथा
पंकसुष्कसमोपूर्व वालुकासहशःखर ः

अर्थ- मृदु मध्य खरके भेदसे लोह पाक तीनप्रकारहै खरा कीचसरीका मृदु और मध्यमहै वालरेत सरीका खरहै ॥

तावल्लोहपुटेद्वैद्योयावत्तुरिंगकृतोजले
निस्तरंगोलघुतोयेसमुत्तरतिहंसवत् ॥

अर्थ- लोहमें जवनकपुटदे किजवनकजलमें नतरै ॥

तावच्चमर्दयेदेवं यावत्कज्जलसंनिभं
करोतिनिहितंनेत्रेनेवपीडामनागपि

अर्थ- लोह को जवनकपीसे कि जवनक काजलके समान नहो और नेत्र में आंजनेसें नेकभीनेत्रमें पीडानकरै

यथायथाप्रदीयंतेपुटास्तुबहवोयसः
तथातथाविवर्द्धंतेगुणाशतसहस्रशः

अर्थ- लोहमें जितने ज्यादापुटलगेंउतनेहीगुणविशेषवद ॥ते जाते है ॥

लोहभस्मकीपरीक्षा

सर्वमेवमृतंलोहंध्मातव्यंमित्रपंचकैः
यदेवस्यान्निरुत्थंतुसेव्यंवारितरंहितत्

अर्थ- संपूर्ण अष्टलोहोकी भस्म ने मित्रपंचक मिलायकर अग्निमेंधमानेसें जो नहीं जीवे तथा पानीमें जोतरै उसका

॥ सेवन करना चाहिये निश्चै ॥

मध्वाज्ये मृतलोहं च रूप्यं संपुटगे क्षिपेत्
रुध्वाध्माते च संग्राह्यं रूप्यं वै पूर्वमानकम्
तदा लोहं मृतं विद्यादन्यथा मारयेत्पुनः

अर्थ- सहत घृत लोहकी भस्म और चांदी ये सब पदार्थ एकठा कर संपुटमें धरकर धमानेसें यदि चांदी जितनीथी उतनी हीहै तो जानना लोहकी भस्म होगई और जो चांदी न घटा ॥ वैतो फेर लोहका मारण करै ॥

लोहका द्रावण ॥

देवदाल्या रसै र्भाव्यं गंधकं दिनसप्तकम्
तेन प्रवापमात्रेण लोहं तिष्ठति सूतवत्

अर्थ- देवदालीके फलके रसमें गंधक सात दिन भीगने दे पीछे उस गंधकके चूर्णको तपाये हुये लोहमें डारनेसें लोहा पारे के सदृश पतला होकर रहि जायगा

तीक्ष्णा मारणयोगेन कान्तमारणमिष्यते
शुद्धिश्च लोहरीतिश्च यथा च सत्त्वपातनं तथैव हि

अर्थ- जैसें तीक्ष्ण कहिये पोलादका मारण कहाहै उसी रीतिसें कांतलोहका मारण जानो और शुद्धि तथा सत्त्वकी ॥ विधिभी जाननी ॥

अशुद्धलोहके अपगुण

असम्यग्धृतलौहपुटैर्हीनगंधकपारदैः
अपक्वलोहजं चूर्णमायुःक्षयकरं परम्

अर्थ- जिसमें लिखे अंदाजसें थोडी औषध पडीहो और जिसमें थोडे पुट दीनेहों और जिसमें पारा गंधक न पडाहो ऐसी लोहकी कची भस्म आयुष्यका नाश करतीहै

षंढत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेत्हृद्रोगम्

लौकुष्ठेस्मीच नानाद्यानांवनथाव्र
कोपंकरोति हन्तास शस्तुदूलोहम् ॥

अर्थ- नपुंसकता· कुष्ट· मृत्यु· हृदयरोग· मल· पथरी· और नानाप्रकारकेरोग· खालीरहइतने· औगुनकचालोहकरताहै·

लोहविकारशांति· ॥

मुनिद्रुतपिष्टविडंगमुनिद्रुतली हंपिबेरस्थि
तेषयं द्रावयतिलोहदोषान्वन्हिर्नव
नीतमिवंशिव· ॥ · ॥ · ॥

अर्थ- यदि देह में लोहकेखानेसे विकार मालूमहोतो· अगस्तवृक्षकेरसमें· वायविडंगपीसकर· और· अगस्तिया केही रससे खाय· पीछे बहुतदेर धाममें बैठनेसे· लोहके· दोषों को पहरवा पतला करदेय· जैसेअग्निमाखनको कर ॥देती है ॥

आरग्वधस्यमज्जानुरेचनंकीदशांतये
भवेद्यलितारअपीत्वादुग्धंतुतत्यजेत्

अर्थ- यदिलोहखानेसें पेटमें हानिपहुंगईहोयतो· अम लतासका गूदाखायतो· दस्तकेद्वाएसवकृमि· निकलजाई पीछे इसके दूधपीवे· और· लोहके विकारसे पेटमेंदर्दहोता होयतो· अभ्रकभस्म· और· वायविडंग· का· चूर्ण· वायवि डंगकेही स्वरसके संग पीवे अथवा खांड· और· सहत· ॥केसंग इलायचीकाचूर्ण३दिनपीवै॥

❖ इतिश्रीमाथुरदत्तरामनिर्मितरसराज
सुन्दरलोहप्रकर्णसमाप्तं

अथमंडूरप्रकर्णलिख्यते

ध्मायमानमयोमन्होपरिमज्जतिपन्नलं

सकिट्टसंज्ञात्तमनेलदनेकविधंमतम् ।

अर्थ- अग्निमें लोहेको तपानेसें जो मैलनिकलताहै उसीको कीटी कहतेहैं सो कीटी अनेक प्रकारकी हैं अथवा लोह के तपाने सेजो मैलनिकलताहै उसको मंडूरकहतेहैं ॥

मंडूरवाकीटीकेलक्ष

ईषच्च विगुरुस्निग्धमृदु किट्टंजगुर्बुधाः भिन्नांजनाभं यत्किट्टं विशेषाद्व्रणनिर्व्रणं निःकोटरञ्च वितंपंतीक्ष्णाकिट्टंमनीषिभिः पिंगरूक्षंगुरुतरंदर्धमज कोटरी ॥ ॥ छिन्नेचरजतच्छायंस्यात्किट्टंस्थितकांतजं

अर्थ- जिसकीटमें थोडारंगहो भारीहो चिकनीहो वो मुंडलोह कीजाननी और जो काजलके समानकालीहो भारी और व्रणरहित तथा छिद्र नहो सोकीटी तीक्ष्ण अर्थात पोलादकी और जोपीलीरूक्षभारी जिसमें चालनीकेसेछेदन हों और फोडनेसे चांदीकीसी झलकदे उसकीटीको कांतलो ॥हकीजाननी ॥

कीटग्रहण

अकोटरंगुरुस्निग्धंहदंशतसमाधिकं । चिरोत्थितजनस्थानेसंस्थितंकिट्टमाहरेत्

अर्थ- छिद्ररहित भारी चिकनी सौवर्षव्यतीतहोगयेहोंय बहुतदिन सहर में जिसके ऊपर ओसपडतरव्यतीतहोगये होंऐसेस्थानकीलेनीयोग्यहै ॥

शतोर्ध्वमुत्तमंकिट्टंमध्यंचाशीतिवार्षि कम् अधमषष्टिर्वर्षीयं ततोहीनं वि षोपमम् ॥ ॥

अर्थ- सौवर्षकी कीटी उत्तमहोतीहै औरअस्सीवर्षकीमध्य

म· और· साठवर्षकी· अधमजाननी· इससेभीकमवर्षकीकीटी
॥विषके समानजाननी॥

मंडूरबनानेकीविधि

अक्षांगारैर्धमेकी ट्टलोहजंतद्वाजले:
सेचयेत्तप्ततंतत्सप्तवारंपुन: पुन: ॥
चूर्णयित्वाततःक्वाथेद्विगुणोत्रिफलाभ
वैः आलोड्यभर्जयेद्वन्हौ मंडूरंजायते
॥ वरम् ॥

अर्थ- बहेडेकीलकड़ीके· कोलाकर· उनमें पुरानीकीटकोखूब· धमावे· जबलालहोजायतब· गोमूत्रमें· बुझावे· ऐसे सातबेरकरै· पीछे· कीटका बारीकचूर्णकर· और· इससे द्विगुना त्रिफलाका काढ़ाकर· हंडियामें भरै· उसमें· कीट· पिसीहुईडार· उसकामुंह· अच्छीतरह ढककर· कपड़मिट्टीकर· आरने कंडेकेगजपुटमें फूंकदे· जबस्वांग:शीतलहोजाय· तबउसको हांडीसेनिकाल· लेय· तो कीटीका शुद्धमंडूरहोय· यहमंडूरउत्तमहै॥·

अथहंसमंडूरकीविधि

मंडूरंमर्दयेत्श्लक्ष्णंगोमूत्रेष्टगुणे:पचेत
त्र्यूषणंत्रिफलामुस्ताविडंगचव्यचित्रकैः
दार्वीग्रंथीदेवदारुतुल्यंतुल्यंविचूर्णयेत
ततन्मंडूरतुल्यंचपाकांतेमिश्रयेत्तत:
भक्षयेत्कर्षमात्रंतुजीर्णेतेतक्रभोजनम्
पांडुशोथहलीमंचउरुस्तंभंचकामलाम्
अर्शांसिहंतिनोचित्रंहंसमंडूरकाह्वयम्

अर्थ- प्रथम मंडूरको त्रिफलाके काढेसेखूबघोटै· पीछेअठगु ने गोमूत्रमें· पूर्वोक्तरीतिसें फूकें· पीछेइतनी औषधइसमेंमिलावें· सोंठ·मिरच·पीपल·हाड़·बहेड़ा·आमला·मोथा·बायबि

इंग·चव्य·चित्रक·दारूहलदी·पीपरामूल·देवदारु·समवसना
नले इनको मिलाय इसमेंसेदवा तोले नित्यखायजवपचेतव
कांढ इसके ऊपर पीवेतो पांडु·सूजन·हलीमक·पेटकारहिजाना
कामला·बवासीर·इनसबरोगोंकोयह·इसमंडूर·नाशकरै·इ

॥ इसमेंआश्चर्यनहींहै ॥

॥ इतिमंडूरप्रकरणम् ॥

अथमिश्रधातुकांसाविधि

तस्योत्पत्तिः

अष्टभागेनताम्रेणद्विभागकुटिलेनच
एकत्रद्रावितेतस्मात्कांस्यंस्याद्भोजनेशुभं

अर्थ-आठभागतांबा·और·दोभाग·रांगायेदोनोधातुकोंमिला
करढालनेसें·कांसाहोताहै·इसकेभोजनकेपात्रअच्छेहो
॥ तेहैं ॥

ताम्रत्रपुजमाख्यातंकांस्यंघोषंचकंसकं
उपधातुर्भवेत्कांस्यंद्वयोस्तरणिरंगयोः

अर्थ-तांबे·और·रंगसेंकांसाबनताहै·इसकोघोसभी
कहतेहैं·यहकांसातांबेका·और·रंगका·उपधातुहै·॥

कांस्यकेभेद

कांस्यंचद्विविधंप्रोक्तंपुष्पंतैलकभेदतः
पुष्पंश्वेततमंतत्रतैलकंतुकफप्रदम्
सतयोःप्रथमंश्रेष्ठंसुखेऽरोगशान्तये।

अर्थ-फूल·और·तैलक·के·भेदसे·कांसादोप्रकारकाहै·
उसमें·प्रथमश्रेष्ठहै· दूसराकफकोप्रगटकर्ताजानना·फूल
॥ कांसासपेदहोताहै ॥

उत्तमकांसेकेलक्षण॥

श्वेतंदीप्तम्मृदुज्योतिः शब्दाढ्यंस्निग्धनि
र्मलम् घनाघातसहंस्वच्छंकांस्यमुत्तम
मीरितम्

अर्थ-श्वेत-प्रकाशमान-नरम-उजला-शब्दकरनेवाला-
चिकना-निर्मल-घनकीचोटसहनेवाला-सफीदहोवे
सोकांसाउत्तमहोयहै

पीतल॥

रीतिर्हिचोपधातुःस्यात्ताम्रस्यजसदस्यच
पित्तलस्यगुणाज्ञेयाः स्वयोनिसदृशाबुधैः

अर्थ-पीतल-ताम्र-श्रौर-जसतकीउपधातुजाननी-॥

पित्तलकेभेद

रीतिकाद्विविधाप्रोक्तारवाद्याराजरीति-
का काकतुंडीहितीयातत्रयोराद्यागु
णाधिका

अर्थ-पीतल-राजरीति-श्रौर-काकतुंडीकेभेदसें दोप्रकार
॥ कीहै उनमें पहिलीमें गुणश्रधिकहै॥

श्रथपरीक्षा॥

संतप्ताकांजिकेक्षिप्तातांम्राभास्याद्राजरीति
का काकतुंडीतुकृष्णास्यात्तासोसेआपि
॥रीतिका॥

अर्थ-पीतलकोतपायकांजी में बुझावे यदिइसकारंग
तांबेकेरंगसदृशहो-उसेराजरीतिकहतेहैं-श्रौर-काला
रंगहोयतोउसको काकतुंडीकहतेहैं-इसकासेवनवर्जितहै-

उत्तमपीतलकेलक्षण

गुर्वीमृद्वीचपिङ्गाभासारांगीताडनेक्षमा-
सुस्निग्धामसृणांगीचरीतिरेतादृशीशुभा

अर्थ–भारी· नरम· पीलेरंगकी· कठोर· घनकी चोटको सहने· वाली· चिकनी· समान· ऐसी पीतल· मारणकर्ममें शुभहै·॥

अथम

पांडु पीतास्वराह्यासवर्वीताड्नेःक्षमा
पूतिगंधाजयालघ्वीरीतिर्निष्टास्मादिषु·

अर्थ–किंचित पीत· खरदरी· रूखी· भृष्ट· चोटके लगनेसे टूट जाय· दुर्गंधवाली· और· हलकी· ऐसी पीतल त्याज्यहै·

अथकांसपित्तलशुद्धि·

निक्षारंपंचलवणं सनधाम्लेनभावयेत
रीतिकांशुद्धपत्राणि तेनकल्केन लेपयेन्
रुध्वागजपुटेपक्वाशुद्धिमायातिनान्यथा

अर्थ–सज्जीखार· जवाखार· सुहागा· पांचोंनोन· इनसब· को· खटाईकी सात· भावनादेकर पीछेपीतलके पत्रोंपरले पकर· गजपुटमें फूंकेतो पीतलशुद्धहोय· अथवा सआम्लकेरसमें थोडीहरद का चूर्णडालकर· उसपीतलके पत्रोंको गरमकरबुझानेसें अथवा अम्लवर्गमें औटा· नेसें पीतलशुद्धहोतीहै अथवा तेल· छाछ· गोमूत्र· कांजी· कुल्थी· का काढा· इनप्रत्येकमें पीतलकांसेके पत्र गरमकर· सात२वार बुझानेसें कांसापीतलदोनोंशुद्धहोय·

गोमूत्रेणपचेद्यामंकांस्यपत्राणिबुद्धिमा
न् हृढाग्निनाविशुध्यंतिपक्वान्याम्लद्
॥वेपिवा॥

अर्थ–कांसेके पत्रोंको १ एकप्रहर गौकेमूत्रमें औटावे अ थवा अम्लवर्गमेंऔटावे तोकांसाशुद्धहोय

मारणकीप्रथमविधि॥

ग्निपतेनाश्मतेदेहोगंधतालात्सुटेनच·

अर्थ- कांसेके अथवा पीतलकेसमान गंधक और हरताल लेकर आकके दूधमें घोट कांसे पीतलकेपत्रोंपर लेपकर सरावसंपुटमें बंदकर गजपुटमेंफूंकदेतो कांसा औ ॥ र पीतलदोनोंमरें शुद्ध होदेय॥

मारणकीदूसरी विधि

अर्कक्षीरं वटक्षीरं निर्गुंडीक्षीरकोतथा
ताम्रीतिध्वनिवधे समगंधकयोगतः॥

अर्थ- ताम्र पित्तल और कांसा इनके मारनेकेवास्ते समान भाग गंधकलेकर आक बड सह्यालू इनकेदूधमें घोटपत्रोंपर लेपकर गजपुटमें फूंकेतो भस्महोय ॥ ॥ ॥

तीसरीविधि

कांस्यकं राजरीतिं च ताम्रवच्छोधयेद्भिषक्
ताम्रवन्मारणंचापि तथोक्तं पंभिषग्वरैः॥

अर्थ- कांसे और पीतलका तामेंके समानशोधन और तामेंकेसमानमारण जानना ऐसे श्रेष्ठवैद्यकहतेहैं ॥ ॥

कांस्यपित्तलयोर्विधिभस्म

आरंतारंसमंकृत्वामृतवंगंनियोजयेत्॥
राघाराजवतीविद्यापितापुत्रंनकथ्यते॥

अर्थ- पीतल और चांदी येदोनोसमानभागले इनकोगलाय इसमें वंगकीभस्मगेरे तोचांदीहोय यहचांदीवनानेकी विद्यापितापुत्रसेनहींकहना

पीतलभस्मकेगुण

सकलमेहमरुद्गुदजारुजं ग्रहणिकाकफपांडुभवंरुजं॥ श्वसनकामलशूलभगंदरंहरतिभस्मतदाकरसंभवम्॥१॥

अर्थ- पीतलकीभस्म संपूर्णप्रमेह वादी ववासीर संग्रहणी

कफ पांडुरोग श्वास खांसी कामला और शूलइनका नाशकरै.

कांस्यभस्मगुण ॥

कांस्यंकषायंतिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम्
गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरंपरम् ॥ ॥

अर्थ- कांसेकीभस्म कषेली कडुई गरम लेखन स्वच्छसर भारी नेत्रकोहितकारक रूखी कफ पित्तकीनाशक होतीहै ॥

कांस्यपित्तलकेदोष

विविधरोगचयंकुरुतेभ्रमंगुदरुजंस्नुति
मेहरुजांगणं विविधतापकमाननुतेसना
वमृतमारकमाशुहिमृत्युदम् ॥

अर्थ- कचीपीतल अनेकप्रकारकेरोग भ्रम ववासीर प्रमेह देहमेंअनेकप्रकारकेताप उत्पन्नकरै पथार्थ जिसकीभस्मनभई होयऐसीपीतल तत्काल मृत्युकोकरतीहै ॥ ॥

अथपंचलोहलक्षणोत्पत्ति

कांस्यंरीतिस्त्रपाताम्रंनागोवंगश्चपंचमं
एकत्रद्राविते तैः पंचलोहंप्रजायते ॥

अर्थ- कांसा पीतल तामा शीशा और वंग येपांचधातुको एकरूपकर एकत्रकरनेसें (पंचलोह) अर्थात् मनिकहतेहैं और इसीकोपंचरसभीकहतेहैं

पंचलोहकाशोधन

आदौतैलादिकेशोध्यंपश्चात्तमात्रके
निषिक्तंशुद्धिमायातिपंचलोहनसंशयः

अर्थ- मनीकेपतले पत्रकर और उनको तपाय मूत्रवर्गमेंबु झावे पीछे तेलमेंबुझावे तौपंचलोहकीशुद्धि होय.

पंचरसकामारणविधि

अर्कक्षीरेणसंपिष्टंगंधकंताललेपितम्

पंचकुंभीपुटैर्भस्म स्रियते योगवाहकम्.

अर्थ- गंधक और हरताल सदोनोंबराबरले आककेदूधमेंख रलकरै पीछेभस्तिके पत्रोंपरलेपकर और सरावामें बंदकर कपड़ मिट्टीकर पांचकुंभपुटदेपतो भस्तकीभस्महोय.

वृत्तलोहकाशोधनमारण

कांस्यकारीतिलोहादिजातंतद्वृत्तलोह कम् ॥

अर्थ- कांसा पित्तल लोह इनकेमिलानेसें वृत्तलोहवनता है इसका मारण और शोधनभस्त्रकीरीतिसेंहै

॥ मित्रपंचक

घृतमधुगुग्गुलुगुंजाटंकणानेतत्तुपंचकं मित्रं भेलयतिसप्तधातूनंगारानौतुध मनेन॥

अर्थ- घृत सहत गूगल घुंघची सुहागा इनकोमित्रपंचककह तेहैं जिसधातुकी कच्ची वा पक्की की परीक्षाकरनीहो उसकी भस्ममें एपांचोंवस्तुमिलाय घरियामेंधर वंकनालकेधोंकनेसें क च्चीधातुजीउठतीहै

निरुत्थकरण

गंधकंचोत्थितंभस्मतुल्यंखल्वेविमर्दयेत् दिनैकंकन्यकाद्रावैरुध्वागजपुटेपचेत्. इत्येवंसर्वलोहानांकर्तव्यंतुनिरुत्थितम्

अर्थ- जो मित्र पंचकसेंजीउठै उसमें गंधकसमानभागदे कर घीगुवारकेरससें एकदिनखूबघोंटै पीछेसंपुटमें धरकपड़ मिट्टीकर गजपुटमेंफूंकेतो निरुत्थभस्महो इसीरीतिसें सर्वलो ह सोना चांदी आदिकी निरुत्थभस्मकरनीचाहिये

अथपक्कधातुजारण

हयनखगजदंतंमाहिषंशृंगमूल मज
नखशशकेवेमेषशृंगमघृतं मधुघन
गुड्जानं टंकणंभेदतैल मितिपटुस
मकंगंसर्वलोहंमृतिलम् ॥ १ ॥ ॥

अर्थ- घोड़ेके नख· हाथीदांत· भैंसकोसींगकामूल· बकरी· और ससाकेनख· मेंढाकासींग· सहत· घृत· गुड़· घूंघची· सुहागो तेल· और· नोन· ये सबवस्तु· समभागलेकर· इसमें कच्चीधातुकोघोट· आंचदेयतो· समस्तलोहभस्मनमरे ॥१ ॥

सबधातुकीभस्मकावर्ण

स्वर्णंकपोतकंठाभमारमेवंसदाभवेत्
मूल्वंमयूरकंठाभंतारवंगौसमुज्वलौ ॥
कृष्णसर्पनिभंनागंतीक्ष्णंकज्जलसंनिभं·
तदाशुद्धंविजानीयाद्भ्रांतिभ्रांतिविवर्जि

॥तम् ॥

अर्थ- सोनेकीभस्म· और पीतलकीभस्म· कबूतरके कंठ· अ थवा· पीलीकौड़ीके समानहोतीहै· और· तांबेका मोरकंठके सदृशनीलारंगहोताहै· और· चांदी· तथा· बंगकीभस्म· सपे दहोतीहै· और· शीशेकीभस्मकावर्ण· कालेसर्पकेसदृशहो ताहै· लोहकी भस्मकारंग· काजलकेसमानहोताहै· इनस बधातुनकीऐसीभस्म होयतोजाननीशुद्धहै· ऐसीभस्मसेवां ति· भ्रांति· नहींहोती· दूसरेरंगकीभस्म· अशुद्धजाननीचाहिये

भस्मखानेकाप्रमाण·

सेवनस्यप्रमाणंतुकथयिष्येहितैषिणः
वल्लार्धंकनकंहिसुप्रकथितंशूल्वंचशुल्वं
तथा तीक्ष्णंवंगभुजंगमारनिचयोव·
ल्लार्धवल्लोन्मितः तत्तुल्याशुभपिप्पली

निगदिता क्षौद्रं चकर्षोन्मितं सेव्यं सर्पिः
ग्रीष्मशरद्दो ताम्रं सुसेव्यं नरैः ॥१॥

अर्थ- अब भस्मके खानेका प्रमाण कहते हैं · सोना · चांदी · और · तामा · ये · १॥ डेढ़ रत्ती · और · लोह · बंग · नाग · पित्तल · ये ४ चार रत्ती खाय · जिस भस्मको खाय उस भस्मकी · बराबरघी · पल · सहत · मिलाले · और · गरमीकी ऋतुमें सेवनकरे · परंतु · तामेंकी भस्म शरद् ऋतुमें करे

धातुसेंधातुकामारण

तालेन वंगं दरदेन तीक्ष्णं नागेन हेमं शि
लया च नागं शुल्वं तथा गंधवरेण नि
त्यं तारं च माक्षीकवरेण हन्यात् ॥२॥

अर्थ- हरतालसें वंग · सिंदरफसें लोह · शीशेसें सोना · मनसिलसें शीशा · गंधकसें तामा · और · सोनामक्खीसें रूपा · मारना · चाहिये · ये धातुसें धातुमरणउत्तम होतीहै ॥ · ॥

सप्तधातुद्रावण ·

पीतमंडूकगर्भे तु चूर्णितं टंकणं क्षिपे
त् हत्वा भांडे क्षिपेद्भूमौ त्रिसप्ताहं समु
द्धरेत् तत्समस्तं विचूर्ण्याथ द्रुते लोहे
प्रवापयेत् तिष्ठंति रसरूपाणि सर्वलो
हानि नान्यथा

अर्थ- पीले मेंडकाके पेटमें सुहागेका चूर्ण भरि · फिर उसको · पात्रमें धर मुख बंद करि · और · कपड़ मिट्टी देकर · पृथ्वीमें गाड़ · दे · जब · इक्कीस दिन हो जायतब · निकाल उसका चूर्ण कर · धर राखे पीछे अष्टलोहमेंसें किसी लोहको अग्निमें गलाय · उसमें इस चूर्णको डारेतो सर्वलोह पानीके समान पतले होकार र

॥ हिजाय ॥

अथ द्रसरीविधि ॥

तीक्ष्णचूर्णं तु सप्ताहं पक्वधात्रीफलद्रवैः लोलितं भावयेद्घर्मे क्षीरकंदद्रवैः पुनः सप्ताहं भाविकं सम्यक्तावसं पुटकेतलः धमितं द्रवतां याति चिरं निष्टतिसत्ववत्

अर्थ- लोहके चूर्णको सातदिन आमलेके रसमें भिजोयदेय पीछे उसको घाममें धरदे तदनंतर क्षीरकंदमें सातदिन भिजोयकर घाममें धरदे पीछे मूसीमें धरकर अग्निमें धमानेसें बहुत दिनपर्य्यंत पानी सा रहै

सप्तधातूनके अवगुण

स्वर्णं सम्यगशोधितं श्रमकरं स्वेदावहं दुःसहं रौप्यं जाड्यमांद्यजननं ताम्रं वमिभ्रांतिदं नागं चत्रपु चांगदोषदमथो गुल्मादिदोषप्रदम् तीक्ष्णं शूलकरं च कांतमुदितं कार्श्यामयस्फोटदं अशुद्धौ हितौ यदि तु तीक्ष्णौ सुधाप हौ गौरव गुल्मदायकौ कांतापसंक्लेद कतापकारकं रीत्यौ च संमोहन क्लेश ॥ दायकं ॥

अर्थ- सोना अच्छीतरह नहीं सुधा श्रम स्वेद और दुख का रक होता है अशुद्ध रूपा देहको जकडदे मंदाग्निकरै और अ शुद्ध ताम्र वमन भ्रांतिकरै शीशा और रांगा देहको बिगाडदे और गोला आदि रोगको करै अशुद्धपोलाद शूलको पैदा करै अशुद्ध कांति कृशता रोग और विस्फोटकको करै और शु द्ध तथा तीक्ष्णलोह अशुद्ध होय तो शरीरको अहित करै और

सुधाकानाश· जङ्गना· गोलाइनकोकरै· अशुद्धकांतलोह·को
द· व· ताप· इनकोकरैं· पीतल·कांसे·अशुद्ध· मोहऔर· दु:
खकारकजानने चाहिये ॥

इतिकथितप्रयोगैर्मारयेदष्टलोहम्
प्रकृतिपुरुषभेदंदेशकालंविदित्वा ॥
उपचरतिरुजार्तं धर्ममूर्तिर्यशस्वी स
भवतिनृपदेहेदेववत्पूजनीयः ॥ १ ॥

अर्थ- जोपुरुष· याप्रकार· देश· काल· प्रकृति· और· मनुष्यों
केभेदोंको· जानकर· जो· अष्टलोहका· मारणकरताहै· औररो
गीमनुष्यको देय· उसकोधन· और· धर्म· तथा· यशकीप्राप्ति·
॥ हो और राजमान्यहोय है ॥

श्रीमन्माथुरवंशभव्यगणमणिःश्रीघासि
रामोद्विजः जातस्तस्यसुतात्त्रयस्समभ
वन्श्रीरामह र्म्यात्मकाः सोमान्ताह
रिचन्द्रसनुरभवच्छ्रीकृष्णलालाभिधः ।
मान्यस्सर्वजनैस्तदुद्भवइहश्रीदत्तराम
॥स्सुधिः॥

अर्थ- श्रीमान्माथुरवंशकेभूषणमेंमणिकेसदृशश्रीघासीराम
विप्रवर्य्यप्रगटभये· तिनकेपरमधार्मिकगुणवान्श्रीचन्द्र· राम
चंद्र· हरिश्चंद्र· येतीनपुत्र प्रगटभये· तिन्मेंश्रीहरिश्चंद्रकेसर्वमा
न्यकन्हैयालालपुत्रभये· तिनकापुत्रमें दत्तरामहूं · ॥ ॥

त्रिशुद्धमार्तण्डगुणाङ्कभूसमे श्रीविक्र
मस्योर्जेरमोत्सवेभृगौ श्रीदत्तरामेण
मयायखंड समापितःश्रीरसराजसुंद
रः प्रथमभागस्येतिशेषः ॥

अर्थ- श्रीविक्रमके १९३९ के बत्सरमें औरकार्तिकवदी ३० भृगु·

वार को यह रसराजसुन्दर के प्रथमखंडमें पूर्वभागको मैंनेसमाप्त ॥किया॥

इतिश्रीपंडितदत्तराममाथुरनिर्मित रसराजसुन्देरेप्रथमखण्डे रस·गंधक सप्तधातूनां·शोधन·मारण·द्रावणादि वर्णनंनामपूर्व्वभागः समाप्तः ॥

हस्तलिपि पण्डित केशवदेव

समाप्तम

तैलाद्रक्षेज्जलाद्रक्षेद्रक्षेच्छि
थिलबंधनात् मूर्ख
हस्तेनदातव्य
मेवंवदति
पुस्तकं

Ext Bellad Liqd ʒj
Fowler's solution mxv
Spt chloroform mx
Aq menth pip ad ℥ij
Misce on dose b each
one 3ss daily

26/7/88

J D Beck

इस प्रथम खंड का दूसरा भाग छप रहा है जिन सज्जनों को लेने
की इच्छा हो वह शीघ्र कृपा पत्र भेजें और इस ग्रंथ की रजस्टरी
एक्ट २५ सन १८६७ ई० के अनुसार कराई गई द० दत्तरामके



दूसरा भाग २

रसराजसुन्दर

मध्यमखण्ड

जिसको

श्रीयुत माथुरकुलकमलदिवाकर चतुर्वेदी कन्हैयालाल पाठक तत्पुत्र पण्डित

दत्तराम ने

निर्माण किया

मुंशी रामनारायण भार्गव ने निज शिलायंत्र में छापकर प्रकाशित किया॥

स्थान मथुरा



सूचीपत्र

रसराजसुंदरके मध्यमखंड का

हीरा

सूचना

योगचिंतामणि

यह ग्रंथ हमारे छपकर तयार होचुका है· यह ग्रंथ जैनियों का बनाया बहुत प्राचीन है· और इसमें सात अध्याय हैं· प्रथम अध्याय में आम्रपाक· मूसलीपाक· पीपलपाक· इत्यादि बहुत उत्तम २ पाक हैं· दूसरी अध्याय में कुंकुमादि· लवणभास्करादि· अत्युत्तम चूर्ण कहे हैं· तीसरी गुटिकाध्याय है इसमें चंद्रप्रभा· लवंगादि गुटिका (गोली) हैं· चौथी क्वाथाध्याय है इसमें सब प्रकार के काढ़े हैं· पांचवीं घृताध्याय इसमें अनेक प्रकार के घृत हैं· छटी तैलाध्याय· इसमें सब प्रकार के तेल· सातवीं मिश्राध्याय अर्थात् इसमें हिम· फांट· वंधेरण· नाश· वमन· विरेचन· (शुस्राव) उद्धूलन· स्वेदन· आदि कही है· अनंतर कर्मविपाक कहा और इसके आदि में नाड़ीपरीक्षा· मूत्रपरीक्षा· नेत्रपरीक्षा· वर्णपरीक्षा· स्वरपरीक्षा· इत्यादि अष्टविध परीक्षा हमने लिखी है तथा शारीरिक· और मागध तथा कालिंग परिभाषा भी ग्रंथ के आदि में ही लिखी है· इसके सब प्रयोग ग्रंथकर्त्ता ने अनुभव करके लिखे हैं· इस एकही ग्रंथ द्वारा थोड़ा भी पढ़ा मनुष्य वैद्य होसक्ता है· और इस ग्रंथ की भाषाटीका सरल हिन्दी में की है यद्यपि यह ग्रंथ वंबई और मथुरा में पहले छप चुका है· तथापि उन दोनों जगह छपे हुए से इसमें कुछ विशेषता है· यह इसके देखने से ही विदित होगा इसकी क़ीमत ॥।) और डाक महसूल ≋) जिनको लेना मंजूर होवे वह नीचे लिखे पते से खत भेजकर मंगा लेवें॥

दत्तरामचौबे

नईसड़क

मथुरा

शिलाजीतकीदूसरीप॰

गोमूत्रगंधयत्कृष्णं स्निग्धंमृदुतथागुरुः तिक्तंकषायंशीतंच सर्वश्रेष्ठंतदायसं ॥१॥ —

अर्थः लोह शिलाजीत गोमूत्र के समान गंध वाला · काला · चिकना · नम्र · और भारी · कडुवा · कषेला · शीतल · ऐसा है · यह सब से उत्तम है·

तीसरी परीक्षा

यत्तुगुग्गुलसंकाशं तिक्तंच लवणान्वितं विपाकेकटुकंशीतं सर्वश्रेष्ठंतदायसं ॥१॥ —

अर्थः जो शिलाजीत गूगल के सदृश होय · कडुवा · खारा · और जिसका पाक तीखा और शीतल होय · यह सब शिलाजीतों में उत्तम है ॥

द्विविध शिलाजीत

शिलाधातुर्द्विधाप्रोक्तो गोमूत्राद्योरसायन कर्पूरपूर्वकश्चान्य तत्राद्योद्विविधः पुनः ससत्वश्चैव निसत्वः स्तयोः पूर्वगुणाधिकः ॥१॥

अर्थः शिलाजीत दो प्रकार का है · पहला गोमूत्रसंज्ञक सो रसायन है · और दूसरा कर्पूरसंज्ञक तहां गोमूत्रसंज्ञक शिलाजीत के दो भेद हैं एक ससत्व · दूसरा · निसत्व · इनमें ससत्व शिलाजीत अधिकगुणवाला है ·

वर्णभेद से गुणभेद

वातपित्तेतुसौवर्णं श्लेष्मपित्तेतुराजतं ताम्रजंकफरोगेषु लोहजंतत्रिदोषनुत्तविद्यादौबहुतंत्रेषु तत्रलोहयतोधिकम् ॥१॥

अर्थः वात पित्त के विकार में सौवर्ण शिलाजीत देवे · और कफ · पित्त के रोग में रजत (चांदी) वर्ण शिलाजीत देवे · और केवल कफविकार में ताम्रवर्ण शिलाजीत देवे · और लोहशिलाजीत त्रिदोष नाशक है · तंत्र · मंत्र · विद्यादि में देते हैं ॥ इसी कारण इस लोह शिलाजीत में अधिक गुण है ॥

शिलाजीत शोधन

तच्छोधनस्मृतेव्यर्थ मनेकमलमेलनात्॥ शिला
जतुसमानीय लोहजंलक्षणान्वितम्॥ बहिर्मलमथा
कर्तुं क्षालयेत्केवलाम्बुना॥ —

अर्थ॥ इस शिलाजीत में अनेक मल (कूडे) का मिलाप होने से जबतक शुद्धी नहोवे तब तक निरप्रयोजन का है· प्रथम लोह की खानवाले पर्वत में जो शिलाजीत सर्व लक्षणयुक्त प्रकट होवे उसको बाहर की शुद्धी के निमित्त केवल शुद्धजल से धोडाले॥

शोधनका दूसराप्र·

लोहस्थितंनिंबगुडूचिसर्पिःप्रथात्थावत्परिभाव
येत्तत् संतानिकाकीट पतंगदंशदुष्टौषधी दोषनि
वारणाय॥ —

अर्थ॥ शिलाजीत की उत्पत्ति के समय कीट· पतंग· दंश और दुष्टौषधि मिला उत्पन्न होता है· इस कारण सर्वदोष हरण करणार्थ· लोह के पात्र में नीम· गिलोय· और घृत इनकी भावना देने से शिलाजीत शुद्ध होता है॥

तीसराप्रकार

उष्णेचकालेरवितापयुक्ते व्यभ्रेनिवातेसमभूमिभा
गे न्यवारिपात्राण्यपिचायसानि न्यस्तानितत्रापि
कृतावधानः शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यधात्रे प्रक्षिप्यत
स्मात्द्विगुणंचतोयं उष्णंतदर्धंक्वथितंप्रदत्वा विशो
षयेत्तन्मृदितंयथावत्सुवस्त्रपूतंप्रविधायतत्तुसंस्था
पनीयंपुनरेवतत्र ततस्तुपत्कृष्णमतीवचोर्ध्वे संता
निकावद्वविरासितत्तत् पात्रेतदन्यत्र ततोनिदध्यात
स्यांतरेचाष्णजलंनिधाय ततश्चतस्मादपरत्रपा

नैतस्माच्च पात्राद्परं भूयः पुनस्ततोऽन्यत्रनि धायकृत्स्नं यत्संहृतं तत्पुनराहरेच्च यदाविशुद्धंज लमच्छमूर्ध्वं प्रसन्नभावान्मलमेत्यधस्तात् तदा तुत्याज्यं सलिलं मलंहि शिलाजतुस्याज्जलशुद्ध मेव चतुर्थपात्राद्गलितंहि सर्वं परीक्षणीयं खलुवै द्यवर्यैः॥

अर्थ- गरमी के दिनों में जब कडी धूप निकले और आकाश बद्दल तथा पवन वर्जित होय. उस समय समान पृथ्वी में चार लोहे के पात्र स्थापन करे. उनमें से प्रथमपात्र में शिलजीत के टुकडे २ कर डाल देवे. और शिलाजीत से दूना जल डाले. और उससे आधा गरमजल डाले. धीरे २ हाथ से मलकर वस्त्र में छान डाले उस छने हुए जल को पात्र में भरकर रख देवे. धूप में जब मलाई उसपर जम जाय तब उसको उतारकर दूसरेपात्र में रखता जाय जब मलाई जमना बंद हो जाय तब दूसरेपात्र में जो मलाई जमा की है. उसमें गरमजल डाल कर धूप में रखदेवे उसमें जो मलाई पडती जाय उसको उतार२ कर तीसरे वरतन में रखता जाय. पीछे उसमें गरमजल डालकर पूर्ववि धि से धूप में रख देवे. उसमें जो मलाई पडे उसको चौथे पात्र में रख लेवे. उसमें जो मलाई पडे उसको पूर्वविधि से पहलेपात्र में रख लेवे. इस प्रकार चार पांचवार करे जब पात्र में ऊपर पानी स्व च्छ रहे. तब जाने कि शिलाजीत शुद्ध होगया. उस जल को फेंक शिलाजीत निकाल लेवे. इसकी परीक्षा आगे कहेंगे उसके अनुसा र करे.॥

चतुर्थप्रकार

शिलाजतुसमानीय ग्रीष्मतप्तशिलाच्युतं गोदुग्धैस्त्रि फलाक्वाथै र्भृंगद्रावैश्च मर्दयेत् आतपादिनमेकैकं

तच्छुष्कं शुद्धतां व्रजेत् ॥

अर्थ॰ ग्रीष्मऋतु में अत्यंत गरमी पडने से जो पर्वतों में शिलाजीत प्रगट होय. उसको गौ के दूध की त्रिफला के काढे की भांगरे के रस की एक २ दिन भावना देकर सुखा लेवे तो शिलाजीत शुद्ध होवे

पंचमप्रकार

सुखयांशिलाजतुशिलांसूक्ष्म खंडप्रकल्पितां निः क्षिप्यात्युष्णपानीये यामैकंस्थापयेत्सुधीः मर्दयित्वाततोनीरं शुद्धंयाह्यस्त्रगालितं स्थापयित्वाचमृत्पात्रे धारयेदातपेबुधः उपरिस्थघनंचस्यात् तत्क्षिपेदन्यपात्रके धारयेदातपेधीमान् परिस्थंघनंनयेत् एवंपुनः पुनर्नीत्वाद्विमासाभ्यां शिलाजतु स्यात्कार्यक्षमंवन्हौ क्षिप्तंलिंगोपमंभवेत् निर्धूमंचततः शुद्धसर्वकर्मसुयोजयेत् अधःस्थितंचयच्छेषं तस्मिन्नीरंविनिक्षिपेत् विमर्द्यधारयेत घर्मेपूर्ववच्चैवतन्नयेत् ॥

अर्थ॰ जिस पत्थर से शिलाजीत निकले उस पत्थर को उत्तम देखकर लावे. उसको फोडकर टुकडे २ करे पीछे उसको अत्यंत गरम पानी में डालकर एक प्रहर पर्य्यंत रक्खा रहने देवे. तदनंतर उसको हाथ से खूब मसलकर वस्त्र में छान लेवे उस छने जल को मिट्टी के पात्रमें भरकर धूप में रख देवे जब २ उसके ऊपर मलाई जमती जाय तब २ अचक उतार २ दूसरे वर्त्तन में रखता जाय. जब एकही मलाई होजाय तब गरमजल डाल पूर्वोक्त रीति से छानकर धूप में रखदेवे. उसमें जो मलाई पडे उसको तीसरे वर्त्तन में रखता जाय. ऐसे वारंवार दो महीने तक करे तो शिलाजीत अग्नि में रखने से निर्धूम होय. कार्यकर्त्ता तथा अग्नि में रखने से लिंग के समान

ऊंचा होजाय इस प्रकार शिलाजीत को शुद्धकर सर्व कर्मों में योज ना करे. पीछे पात्र में नीचे जो शेष रहे उसमें गरमपानी डाल मसल कर धूप में रख पूर्वोक्त विधि से उसकी मलाई उतार लेवे॥

शुद्धकीभावना

त्रिफलाबारिगोदुग्ध मूत्रैर्भाव्यंशिलाजतु स्वल्पं स्वल्पंविधानेन स्थापयेत्काचभाजने अगर्वादिश भेधूपैं धूपयेत्तत्प्रयत्नतः मात्रयाशिलयापश्चात्त द्धं शुद्धंयथाविधि एकत्रिसप्तसप्ताहं कर्षमर्द्धपलं पलं हीनमध्योत्तमोयोगो शिलजस्यक्रमाद्भवेत्‌ः। क्षीरेणाल्लोडितंकुर्या च्छीघ्रंरसफलप्रदं हन्याद्रोगा न शेषांश्च जीर्णहीन मिताशनः॥

अर्थः- शुद्ध शिलाजीत लेकर उसमें त्रिफला के काढे. गौके दूध गौ के मूत्र इनकी भावना देवे. पीछे कांच के पात्र में रख अगरादि की धूनी देय. पीछे एक कर्ष अथवा अर्द्धपल वा पल इस मान से उ त्तम. मध्यम. कनिष्ट मात्रा दूध के साथ मिलाकर इक्कीस या सात दिन सेवन करे. तो संपूर्ण रोगों का नाश करे. और शीघ्ररस का फलदेय. इसके ऊपर पथ्य पुराने साठी चावलों का भात थोडा दे ना चाहिये॥

शुद्धकीपरीक्षा

वन्हौक्षिप्तंतुनिर्धूमं पक्कालिंगोपमंभवेत् तृणा ग्रेणांभसिक्षिप्तमधोगालितितंतुवत् गोमूत्रेगंधंम लिनंशुद्धंज्ञेयंशिलाजतु ॥

अर्थः- जो शिलाजीत अग्नि में डालने से निर्धूम पक्क होकर लिंग के समान खडा होजाय. तिनका के अग्रभाग पर रखकर जल में डालने से तंतुओं के समान गलकर नीचे को बैठे और गोमूत्र कीसी

दुर्गंध आवे. मलिन होय. ऐसे शिलाजीत को शुद्ध जानना चाहिये॥ १॥

शिलाजीतकेगुण

रसोपरससूतेंद्ररत्नलोहेषुयेगुणाः॥ वसंतितेशिलाधातौ॥ जरामृत्युजिगीषया॥ शिलाजंकटुतिक्तोष्णं कटुपाकंरसायनं॥ छेदिरोगान्यथाहंति कंपमेहाश्मशर्कराः॥ मूत्रकृच्छ्रक्षयंश्वासं वातमर्शांसिपांडुतां॥ अपस्मारंतथोन्मादं शोफकुष्ठोदरकृमीन्॥ १॥

अर्थः—रस. उपरस. पारद. रत्न. और सुवर्णादिक अष्टलोहों में जो गुण हैं वो सब मृत्यु के जीतने को और बुढापे के जीतने को शिलाजीत में रहते हैं. शिलाजीत तीखा है. और कडवा और गरम है और पाक के समय तीखा है. रसायन है. छेदि है. और कंप प्रमेह पथरी. शर्करा. मूत्रकृच्छ्र. खई. श्वास. वादी. बवासीर. पांडुरोग. मृगी उन्माद. सूजन. कोढ. कृमिरोग. सबका नाश करे॥

विशेषगुण

नसोस्तिरोगोभुविसाध्यरूपो येत्वस्यजेयंनजयेत्प्रसह्य॥ तत्कालयोगैर्विविधैः प्रयुक्तंस्वास्थ्यं तनोत्याढ्यपुलंदधाति॥

अर्थः—ऐसा कोई असाध्यरोग पृथ्वी पर नहीं है. जो शिलाजीत के खाने से नजाय. तत्काल अनेक योगों के साथ देने से देह में स्वस्थता करे है.

शिलाजीतकेअनुपान

एलापिप्पलिसंयुक्तं मानमात्रंतुभक्षयेत॥ मूत्रकृच्छ्रंमूत्ररोधं हंतिमेहंतथापरं॥ सर्वानुपानैः सर्वत्ररोगेषु विनियोजितं॥ जपत्यभ्यासतो नूनंरसा

नस्तान्रोगान्नसंशय ॥ —

अर्थ॰ छोटीइलायची॰ और पीपल के संग शिलाजीत को एक मास पर्यंत खाय तौ मूत्रकृच्छ्र॰ मूत्ररोध॰ प्रमेह॰ इत्यादि इन रोगों का नाश करे॰ और सब रोगों मे अनुपान के साथ देने से उन्हीं २ रोगों को अभ्यास से नष्ट करे॰ ॥

पथ्यापथ्य

व्यायाममातपमारुतचेतः संतापगुरुविदाहादि उपयोगादपि परितोह्निगुणं परिवर्जयेत्कालं पि बेन्नाहेन्द्रं सलिलंकौपंमास्रावणांतुवा कुलत्था न्काकमाचीव कपोतांश्चसदात्यजेत् ॥ —

अर्थ॰ शिलाजीत खानेवाला मनुष्य दंड कशरत॰ धूप॰ पवन॰ चित्त को संताप कारक वस्तुओं को त्याग देवे॰ और भारी तथा दाहकारक वस्तुओं का त्याग करे॰ जितने दिन औषधि सेवन करे उससे दूने दिन पर्यंत त्याग करे और महेंद्रपर्वत संबंधी जल वा कुआ और झरना का जल पिये॰ कुलथी॰ मकोय॰ और कबूतर का मांस इनको शिलाजीत सेवन कर्त्ता त्याग देवे॰ ॥

शिलाजीतकीभस्म॰

शिलायांगंधतालाभ्यांमातुलुंगरसेनच पुटितं हिशिलाधातु म्रियतेष्टौपलैनच भस्मीभूतेशि लोद्भवं समतुलंकांतिचपंक्रांतिकं शुल्कंविफला कटुत्रयघृतंवल्येनतुल्यंभवम् पांडौयक्ष्मगदेत थाग्निसदने मेहेचमूत्रामये गुल्मेप्लीह्महोदरेव हुविधे शूलेचयोन्यामये ॥ —

अर्थ॰ शिलाजीत मे गंधक और हरिताल मिलाकर बिजौरे नीबू के रस मे पुट देकर॰ आठ उपलों की अग्नि देवे॰ इस प्रकार आठ पुट देने

से शिलाजीत की भस्म होवे· पीछे शिलाजीत लेय उसकी बराबर कांतलोह की भस्म और वैक्रांतमणि की भस्म मिलाकर उसे त्रिफला· सोंठ·मिरच·पीपल·घृत·मिलाकर वल्लावल्ल देख देवे तो पांडुरोग·राजयक्ष्मा मंदाग्नि·प्रमेह·गुदाकीबीमारी·गोला·तापतिल्ली·उदरकेघोरविकार शूल और योनिविकार नाश होवें॥

शिलाजीतकासत्व

पिष्टंद्रावणवर्गेण साम्लेनगिरिसंभवं रुद्धामूषोदरे ध्मातं कोकिलैः सत्वमृच्छति सत्वंशुचेच्छिला धातुरचोत्तमं लोहसन्निभं॥

अर्थः शिलाजीत को द्रावण वर्ग में और अम्लवर्ग में घोटकर मूषा में बंद कर भट्टी में रख कोयलों की अग्नि देवे·तो शिलाजीत का सत्त्व निकले·इसका सत्त्व लोहे के सदृश निकलता है·॥

दूसराशिलाजीत

द्वितीयंसोरकारव्यंस्याच्छ्वेतवर्णंशिलाजतु अग्निवर्णंहियुक्तंतद्धितंमूत्रामयेषुच॥

अर्थः दूसरा सोरकारव्य अर्थात सोरानाम से प्रसिद्ध शिलाजीत होता है· वह सफेदवर्ण· अथवा अग्निवर्ण होता है· यह मूत्ररोग में हित है·॥

इसके गुण

पांडुरंसिकताकारं कर्पूराभंशिलाजतु मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेह कामलापांडुनाशनं एलातोयेनसंमिश्रं सिद्धंसिद्धमुपैति नत नतस्यमारणंसत्त्व पातनंविहितंबुधैः॥

अर्थः शिलाजीत कपूर के समान सफ़ेद होवे· वो मूत्रकृच्छ्र·पथरी प्रमेह· कामला·पांडुरोग· इनका नाश करे इसको इलायची के

जल में मिलाने से इसकी शुद्धी होवे· इसका मारण और सत्त्वपातन पंडितों ने नहीं कहा·॥

अशुद्धसेवनकेदोष

अशुद्धंदाहमूर्च्छादीनभ्रमपित्तास्त्रशोणितं शि
लाजतुप्रकुरुते मांद्यम निश्चविद्ग्रहं॥ —

अर्थ= अशुद्ध शिलाजीत दाह·मूर्च्छा·भ्रम·पित्तरक्त·रुधिरविकार· मंदाग्नि·मलका रुकना·इतनेरोग करे·॥

शिलाजीतकेविकारोंकी शान्ति

मरिचंघृतसंयुक्तं सेवयेद्दिनसप्तकम् शिलाजतु
भवंदोषं शान्तिमाप्नोतिनिश्चितम्॥ —

अर्थ= कालीमिरच घृतसंयुक्त सातदिन सेवन करने से शिलाजीत के विकारोंकी शांति होवे·॥

इतिरसराजसुंदरेशिलाजतुप्रकर्ण समाप्तम्

अथसाधारणरसाः

कंपिल्लश्चपलोगौरी पाषाणोनवसारकः कपर्दी
वन्हिजारश्च गिरिसिंदूरहिंगुलौ केदारस्टंगमि
त्यष्टौ साधारणरसास्मृतो रससिद्धिकराः प्रोक्तानां
गार्जुन पुरस्सरैः

अर्थ= कंपिल्ल·चपल·गौरीपाषाण (संखल अथवा संखिया) नौसादर·कौड़ी·वन्हीजार·गिरिसिंदूर·हिंगुल·केदारस्टंग·ये आठ साधारणरस हैं पारद की सिद्धीकर्त्ता नागार्जुन आदि आचार्यों ने कहें हैं·

इति॥

साधारणरसोंका शोधन

साधारणरसाःसर्वे मातुलुंगार्द्रकांबुना त्रिवारंभावि
ताश्शुष्का भवेयुर्दोषवर्जिताः ॥

अर्थः सब साधारण रस बिजौरे नींबू अदरक के रस की तीन भावना दे सुखाने से दोषरहित अर्थात् शुद्ध होते हैं ॥

कंपिल्ल

इष्टिकाचूर्णसंकाशश्चंद्रिकावान् प्रभेदनः सौरा
ष्ट्रदेशेखनिज साहिकंपिल्लकोमतः ॥

अर्थ ईंट के चूर्ण (कूकुआ) के सदृश चमकदार रेचक सौराष्ट्रदेश (दक्षिण में प्रसिद्ध) गोदावरी के किनारे के देशों की खानि से उत्पन्न को कंपिल कहते हैं ॥

कंपिल्लके गुण लि॰

पित्तज्वराऽऽध्मान विबंधनिघ्नः श्लेष्मोदरार्त्ति
क्रिमिगुल्मवैरी व्रणामशूलज्वरशोफहारी कंपि
ल्लकोनेकगदापहश्च ॥

अर्थः पित्तज्वर, अफरा, बंधकोष्ठ, कफविकार, उदररोग, क्रमिरोग, गोला, व्रणरोग, आमवात, शूलरोग, ज्वर, सूजन, इन सबरोगों का नाश करे, कंपिल्ल अनेकरोग नाशकरता है, चपल के गुणदोष पहले कहि आये हैं ॥

गौरीपाषाण

गौरीपाषाणकः पीतोविकटोहृतचूर्णकः रसबंध
करः स्निग्धोदोषघ्नो वीर्यकारकः ॥

अर्थः गौरीपाषाण पीत कहिये पीला विकट और हृत चूर्णक कहाना है, यह पारे का बद्ध करनेवाला चिकना है, त्रिदोष का नाश करे, और वीर्य को बढावे ॥

गौरीपाषाणकः प्रोक्तोद्विविधः स्वेतपीतकः स्वे
तः शंखसमः पीतोदाडिमाभः प्रकीर्त्तितः स्वेतः
कृत्रिमकः प्रोक्तः पीतपर्वतसंभवः विषकृत्यक
रौतौहिरसकर्माणि पूजितौ दुर्ल्लभौः कृष्णवर्णाभो
जरामृत्युहरोभुवि॥

अर्थ = गौरीपाषाण (संखिया) दो प्रकार का है. एक सफ़ेद, दूसरा पीला. सफ़ेद शंख के समान होता है, और पीला अनार के समान, इन दोनों में सफ़ेद कृत्रिम अर्थात् बनाया हुआ है, और पीला पर्वत से प्रकट होता है. ये दोनों विषके कर्म (मारणादि) करते हैं और पारद के कर्म में पूजित हैं. अर्थात् संखिया भी पारे का बन्धक है. परंतु बुढापे और मृतु का हरणकर्त्ता काला संखिया पृथ्वी में दुर्ल्लभ है॥

जोड़ा बनाना

चतुःकर्षं समं ग्राह्यं गौरीपाषाणतत्समं निंबुनी
रेणसमाहं मर्दयेत्कुशलोभिषक् घनभावेसमु
त्पन्ने तस्मादुद्धृत्य रक्षयेत् पटिकांताम्रजांरम्यां
निर्मितांयमनीषया पलभावस्यमेधावी तन्मध्ये
पिष्टिकांक्षिपेत् तस्योपरिपुटंदेयं यथोद्घाटं भवे
न्नच त्रिंशद्वन्योपलैः गनिपदद्याद्दृढ़ासास्थितः
उक्तताम्रपलार्द्धंतु वह्निनाद्रवतांनयेत् द्रवीभू
तेचताम्रेच गुंजापंचमितंखलु निक्षिपेच्छंख
संयुक्तं पारदंतस्यमध्यकं तत्ताम्रंजायतेशुभ्रंशं
खकुंदेन्दु सन्निभं तत्समारोप्यकंदत्वा प्रथमेदृ
ढवह्निना जायतेसकलंरौप्यं साधकानां सुखाव
हम्॥

अर्थ॥ पारा ४ कर्ष. संखिया ४ कर्ष. दोनों को नीबू के रस में सात दिन खरलकरे. जब गाढा होजाय तब खरल से निकालकर रख छोडे पीछे चंदी की एक डिबिया ऐसी बनावे कि जिसमें एकपल पारे की लुगदी समाजावे. जब बनकर तयार होजावे तब उसमें पारे और संखिया की पीठी को भरदेय. और बंद कर ऐसी कपरमिट्टी करे जिससे वो डिबिया खुले नहीं पीछे उसे सुखाकर एकांत में तीस आरने उपलों की आंच देवे तो वो औंधी डिबिया समेत सब चांदी होजाय. पीछे फ़कतांबा दोकर्ष ले आंच में तपाकर पतला करे. जब पतला होजाय तब उसमें पूर्वोक्त डिबिया की पांच रत्ती चांदी डाले. तो वह तांबा शंख. कुंद. और चंद्रमा के समान सफ़ेद होजाय. पीछे सफ़ेद तांबे की बराबर चांदी मिलाय अग्नि में रखखूब धमावे तो सबचांदी होजाय.॥

नवसादर

नवसारः समाख्यातः श्चुल्लिकालवणाभिधः र
सेंद्रजारणंलोहे जारणंजठराग्निकृत् प्लीहगुल्मास्य
शोषघ्नं भुक्तमांसादिजारणं विडाग्र्यंचत्रिदोषघ्नं
चूलिकालवणंमतं॥

अर्थ॥ नवसादर इसीको चुल्लिका लवण भी कहते हैं. यह पारद के जारण में और सुवर्णादि अष्टलोह के जारण में ग्राह्य है. इसके खाने से जठराग्नि बढे. तापतिल्ली. वायगोला. मुख का सूखना ये बंद होवें. भोजन किये हुए मांसादिकजारण होवें. यह पारे के सब विडों में अग्रवर्ती है त्रिदोष को भी दूर करे ऐसा यह चूलिका लवण है.॥

नवसादरकीउत्पत्ति

करीरपीलुजैः काष्ठैः पच्यतेनेष्ट कोद्भवः क्षारो

सौनवसारः स्याच्चूलिकालवणंमतं मनुष्यशूक राणांसविष्ठातः कीटवद्भवेत क्षारेषुगणनातस्य स्व र्णशोधनकः परः इष्टिकादहनेजातंपांडुरंलवणंल घुः शंखद्रावेरसेपूज्यो मुख्यकर्माणिपारदे विडद्र व्योपयोगीच क्षारवत्तगुणास्मृता॥

अर्थः करील और पीलू की लकडी से ईंट का खार पचाने से नौसादर खार प्रकट होता है· उसीको चूलिका लवण कहते हैं यह मनुष्य और सूअर की विष्टा (मल) ये कीट के समान ईंटों के पंजावे में होता है· इसकी क्षारों में गणना है· यह सुवर्ण का शोधन करता है· ईंटों के पकाने में पीले रंग का लवण उत्पन्न होता है· सो हल का है· शंखद्राव रस में पडता है· और मुख्य पारे के कर्म में लिया जाता है· यह विडद्रव्य (पारेकी बद्धक वस्तु) का उपयोगी है· इस्के क्षारों के समान गुण हैं॥

अग्निजार

सासमुद्रेणाग्निनाप्तश्च जरायुर्वहिरुत्सृतः संशुष्को भानुतपेन सोऽग्निजारइतिस्मृतः जरायुवद्वह्नतस्या पि पिच्छलंसागरस्थमं जरायुतश्चतुर्वर्ण्यं श्रेष्ठं तं सर्वलोहितं॥

अर्थः अग्निजार यह समुद्र में बडवाग्नि के जोर से तप्त होकर जरायु के सदृश पदार्थ बाहर को आता है· वह सूर्य की धूप से सूख जाता है· उसीको अग्निजार कहते हैं अथवा समुद्र में जरायु के समान अग्नि के तेज से पिच्छल तथा समुद्र में तैरने वाला ऐसा पदार्थ उत्पन्न होता है· वह जरायु चारवर्ण रूप होता है· उनमें से तांबे के वर्णका उत्तम होता है॥

इति अग्निजार

अग्निजारकेगुण

स्यादग्निजारः कटूरुष्णवीर्यः समीरहृद्रोगकफा
पहश्चापित्तप्रदः सोधिकसान्निपातःशूलाग्निशीता
मयनाशकश्च॥

अर्थ॰ अग्निजार तीखा होता है· उष्णवीर्य · वातनाशक · कफरो
गनाशक · पित्तकावढानेवाला · सान्निपात · शूल · मंदाग्नि और शी
त संबंधी विकारों का नाशक है॥

अब्धितीरेग्निनक्रस्य जरायुः शुष्कतांगतः अ-
ग्निजारस्तुतत्प्रोक्तं सक्षारोजारणेहितः अग्निजा
रस्त्रिदोषघ्नो धनुर्वातादिवातनुत् वर्द्धनोरसवीर्य
स्य दीपनोजारणस्तथा नदाब्धिक्षारसंशुद्धं तस्मा
च्छुद्धिर्नहिस्यते॥

अर्थ॰ समुद्र के किनारे अग्निनक्र अर्थात् गरमी से मगर का जरायु
सूख कर · बाहर को आजाता है· उसको अग्निजार कहते हैं यह क्षार
जारणकर्म में उत्तम है· अग्निजार त्रिदोष का नाशक धनुर्वात (जि
स से देह कमान के समान नवजाय) इत्यादि वात के रोगों को दूर
करे · रस और वीर्य को बढावे · दीपन है · जारण कर्ता है· यह अग्नि
जार समुद्र का खार स्वयं शुद्ध है· इसी कारण इसकी शुद्धी नही
कही गई॥

समुद्रफेन

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनः शीतलः सरः कर्ण
स्रावरुजागुल्महरः पाचनदीपनः अशुद्धः सकरो
त्यंगभंगतस्माद्विशोधयेत॥ —

अर्थ॰ समुद्रफेन नेत्रोंकाहित कारक है· सर · लेखन · कान के ब
हने को पेट के गोले को दूर करे · जठराग्नि को दीपन करे · परंतु अ

शुद्ध समुद्रफेन अंगभंग करता है इसलिये इसको शुद्ध जरूर क
र लेवे ॥

समुद्रफेनकीशुद्धी

समुद्रफेनः संपिष्टो निंबुतोयेन शुद्ध्यति ॥

अर्थ = समुद्रफेन नीबूकेरस में पीसने से शुद्ध होता है ॥

बोल

बोलगंधरसप्राणमिन्द्रगोपरसाः समाः बोलं
तुत्रिविधंप्रोक्तं रक्तंश्यामंमनुष्यजं ॥

अर्थ = बोल. गंधकरसप्राण. इंद्रगोपरस सम ये नाम हैं. बोल तीन
प्रकार का है. काला. लाल. मनुष्यज.

लालबोलकेलक्षण

बोलंरक्तहरंशीतं मेध्यंदीपनपाचनं मधुरंकटु
कंतिक्तं मेहस्वेदत्रिदोषनुत ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं
गर्भाशयविशोधनं चक्षुष्यं च सरं प्रोक्तंरक्तबोलं
भिषग्वरैः ॥

अर्थ = लालबोल रक्त का हरण करे शीतल. पवित्र. दीपन.
और पाचन. मीठा. तीखा. कड़वा. प्रमेह. स्वेद (पसीना) और त्रि
दोष को दूर करे. ज्वर. मृगी. कोढ का नाश करे. गर्भाशय का
शोधन करे. नेत्रों का हित है. दस्तावर ऐसा है कि जिसको भा
षा में बीजाबोल कहते हैं ॥

कालेबोलकेगुण

श्यामबोलंतीक्ष्णगंधं दद्रुकुष्ठविषापहं भग्ना
स्थिसंधिजननं त्रिदोषशमनोहिमं धातुकांतिवय
स्थैर्य बलौजोवृद्धिकारकं ॥

अर्थ = कालाबोल. तीक्ष्णगंधवाला. दाद. खुजली. और विष के

विकारों का नाश करता है ॥ और टूटी हड्डी का जोड़ने वाला त्रिदो
ष नाशक शीतल धातु कांति अवस्था इनको स्थिर करता है
बल ओज का बढ़ानेवाला इसको सुसघर कहते हैं ॥ दूसरा मानु
षबोल है अर्थात जो मनुष्य के रुधिर से बनता है इसको भाषामें
मिमियाई कहते हैं इसके गुण भी स्यामबोल के समान हैं को
ई स्यामबोल को ही मिमियाई कहते हैं परंतु स्यामबोल मिमि
याई नहीं है॥

गुग्गुलवागूगल

भगवन्गुग्गुलोर्योगोयथावीर्यंतथागुणः व
कुमर्हसियोगेषु येषुचास्यप्रशस्यते एवमुक्तेन
शिष्येण प्रत्युवाचमहातपाः मरुभूमौप्रजायंते
प्रायशः सुरपादपाः भानोर्मयूखैः संतप्ता ग्रीष्मे
मुंचंतिगुग्गुलं हिमार्त्तिदेचहेमंते विधिवत्तत्समा
हरेत जातरूपनिभंकश्चं पद्मरागनिभंच् कचि
त् कश्चिन्महिषसंकाशं यक्षदेवतवल्लभं विधा
नंतस्य विधिवान्नि योगाब्रुदतोमम ॥

अर्थः अग्निऋषि का शिष्य पूछता है कि महाराज मेरे आगे गूगल के
योग वीर्य और गुण ये कहो उसके वचन को सुन महातपा ऋषि
कहते हैं इस गूगल के वृक्ष मारमाड देश में होते हैं वे वृक्ष ग्री
ष्मऋतु में सूर्य की गरमी से तप्त होकर गुग्गुल को छोडते हैं वो
सरदी के दिन हिमवंतऋतु में विधि पूर्वक ग्रहण करना चाहिये
वो गुग्गुल चांदी के समान सफ़ेद अथवा पुखराज मणि के समा
न तथा भैंसा के नेत्रों के समान कांति वाला होवे यह गूगल यक्षऔ
र देवताओं को परम प्रिय है उसका विधान कहता हूं तू श्रव
ण कर ॥

गुग्गुलकेगुण

त्रिदोषशमनोवृष्यः स्निग्धोबृंहणदीपनः गुग्गुलुः कटुकः पाके बलवर्णप्रवर्द्धनः आयुष्यःश्रीकरः पुण्यः स्मृतिमेधाविवर्द्धनः पापप्रसमनश्रेष्ठः शुक्रार्त्तवकरोमतः वर्णगंधरसोपेतं गुग्गुलं मात्रयायुतं भेषजैः सहितैः क्वाथ्यो यथाव्याधिहरः प्रथक् मात्रावशिष्टं तं ज्ञात्वा गालयेच्छुक्लवाससा मृन्मयेहेमपात्रे च स्फाटिकेराजतेपिवा पुण्ये तिथिषुनक्षत्रे क्षीणाहारसमान्वितः हुताग्निपरियुंपास्यान देवब्राह्मणभक्तितः प्रविश्यचशुभाकीर्णमंदिरेवमतिस्कृतं॥

अर्थः गुग्गुल त्रिदोष को शमन कर्त्ता वृष्य (वीर्यको बढानेवाली) है. चिकनी है. बृंहण. दीपन. पचने के समय तीखी है. बल और वर्ण को बढाने वाली है. आयु. शोभा की देनेवाली पुण्य. स्मृति तथा मेधा को बढावे. पापोंकोदूर करे. वीर्य और आर्त्तव को करे. और यह वर्ण गंध. इनसेयुक्त रोगी अनेक रोग हर्ता औषधियों के काढे के साथ औटाने से शुद्ध होती है जब चतुर्थांश बाकी रहजाय तब उतार कर. सफ़ेद महीन वस्त्र में छान लेवे और उस वस्त्र में से मिट्टी वा सुवर्ण वा स्फटिक. वा चांदी के पात्र मे रख लेवे. और शुभ तिथि नक्षत्र में अग्नि और देव ब्राह्मण इनका पूजन कर इसके सेवन का प्रारंभ करे और उत्तम स्थान में निवास करे.॥

शोधनकीदूसरीविधि

माहिषंगुग्गुलंशुभ्रं भंगनाद्यंपलपंचकं प्रस्थमात्रेतुगोमूत्रे त्रिफलासंविपचोद्भिषक दोलायं

ऋस्यविधिनापादशेषं समाहरेत् अनेनविधिना सम्यक् गुग्गुलः शुद्धतांव्रजेत् सर्वकर्मसुसं योज्यं योगेचफलदायकः॥

अर्थ॥ उत्तम भैंसा गूगल को पांच पल लेवे. उसकी पोटली बांध एक पात्र में एक प्रस्थ गोमूत्र भर उसमें डाल देवे. और दोलायंत्र की रीति से उसमें लटका देवे. और मंदाग्नि से पकावे. जब गोमूत्र चतुर्थांश बाक़ी रहे. तब उसको चूल्हे से उतार लेवे. पीछे उस पोटली को खोलकर धूप में सुखा देवे. वह सफ़ेद होजाती है उसमें जो कंकर तिनका होवें उनको निकालकर दूर कर देवे इस प्रकार गूगल शुद्ध होता है. इसको सर्वकर्मों में योजना करे (मिलावे) और जिसं२ योग में यह शुद्ध गूगल पड़े उसमें नीचे लिखे गुण करे यद्यपि रसकपूर बनाने और खाने की विधि पारे के प्रकर्ण में लिख आये हैं. तथापि नवीन पाठ इस जगह भी लिखते हैं.॥

रसकपूरकीविधि

पारदः स्फटिकाचैव हिराकासीसमेवच सैंधवं च समांसेन विंशांशंनवसादरं खल्वेविमर्द्यस र्वाणिकुमारीरसभावना क्रमवृद्धाग्निनापक्वो रसः कर्पूरसंज्ञकः॥

अर्थ॥ पारा. फटकरी. हीराकसीस. और सेंधानोन. ये सब समान भाग लेय. और इन सबका बीसवां भाग नवसादर लेकर सब को खरल में डाल ग्वारपट्टे के रस की भावना देकर. सुखाय - सिसी मे भरकर क्रम से मंद. मध्य. तेज. अग्नि देय. तो यह रसकपूर नाम का रस बनकर तयार होवे.॥

इतिप्रथमविधिः

रसकपूरकीतीसरीविधि

गैरिकातुवरीकटुका सैंधवगंडरजः कुडवंप्रत्ये
कंन्नुदहंड्यां रसंचदत्तभूयस्तदेयं कुडवामितायत
दूर्ध्वदेयाहंडीतदास्यमुखे अथतत्संधेमुंद्रांकृत्वा
वतदधोहुतासनोज्वाल्पः अर्मणघटप्रामितैश्चद
रुभिर्सुनातिदुर्वलस्थूलैः अग्निक्रमेणदद्याद्गुरु
दर्शितवर्त्मनाद्युनिशं तदनुततोयत्नवरादुत्तार्यक
पूरसन्निभंस्तुतं आदायकचकुंभे निधायनवसाद
रं दद्यातसंमर्द्यचाथकाष्टैरेधमणसंमितैः पचेद्हरखं
चुल्लिकहंडमरुवकमध्य वितास्तिचतुरंगुलावका
शंतुकर्त्तव्यंक्रमेण दहनंतदधःप्रज्वाल्यमध्यमं
शाशीधवलन्युपरिलग्नंयुक्तयासंगनह्य रक्षयेद्य
लात ॥

अर्थ॥ गेरू॰ फटकरी॰ कुटकी सेंधानोंन॰ ईंटकाचूर्ण॰ इन सबको से
र २ भर लेवे॰ और हंडिया में डालकर उसमें पारा रखे पीछे सेरभर
पूर्वोक्त चूर्ण उस पारे के ऊपर रखकर दूसरी हंडिया से उसका मुख
वंद कर देवे॰ और दोनों की संधि अच्छी रीति से लेपकर वंद करदे
पीछे उसको भट्टी पर चढ़ाकर छः मन उपलों वा लकडियों की अ
ग्नि गुरू की वताई हुई रीति से रात्रि दिन देवे॰ तो रसकपूर वनकर
सिद्धि होवे॰ पीछे उन हंडियों को धीरे उतार मुंह खोल॰ ऊपर की हं
डिया में जो सफेद रसकपूर लगरहा हो उसको निकाल लेवे॰ पीछे
उसे वरावर नौसादर डालकर पीसे॰ फिर कांच की कुप्पी वा शी
शी में भरकर वीस सेर लकडी की आंच देवे॰ इस प्रकार कि हंडि
या और अग्नि का एक वालिश्त और चार अंगुल का फासिला
रहे॰ ऐसी हंडिया रखकर मध्यमाग्नि देय॰ जव शीतल होजाय

तब ऊपर जो चंद्रमा के समान सफ़ेद भस्म लग रही हो उसको नि
काल यत्न से रख छोडे ॥

रसकपूरकेअनुपान

वल्लंवल्लार्द्धमानेनजीर्णगुडः समंददेत यथोचि
तानुपानेन सर्वकर्मसुयोजयेत दुग्धौदनंतुपथ्यं
देयं चास्मिश्चताकूलं हरतिसमस्तान्रोगान्
कर्पूराख्योरसोत्तमः ॥ —

अर्थः रसकपूर में से तीन वा डेढ़ रत्ती के प्रमाण पुराने गुड के सा
थ खाने को देवे・अथवा रोगोक्त अनुपान के साथ देवे・ और इस
के ऊपर पान का बीडा खाय तथा दूध भात का पथ्य तो संपूर्ण रो
गो का नाश करे・॥

रत्नोपरत्नोकीउत्पत्ति

मणयोपिचविज्ञेयाः सूतबंधस्यकारकाः देह
स्यधारकाश्चेणांजराव्याधिविनाशकाः ॥

अर्थः मणि अर्थात रत्न भी पारद के बंधन कर्त्ता और देह के
धारण कर्त्ता तथा बुढापे और व्याधि के दूर करने वाले हो
ते हैं・॥

रत्नशब्दकीनिरुक्ति

धनार्थिनोजनाः सर्वेरमंतेस्मिन्नतीवयत् अतो
रत्नमितिप्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः ॥

अर्थः धनार्थी सब मनुष्य रमण करते हैं और इच्छा करते हैं
इसी से शब्द शास्त्रके जानने वाले उनको रत्न ऐसा कहते हैं

नामानि

रत्नंक्लिवेमणिः पुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते तत्त

त्पाषाणभेदोस्ति वज्रादिश्चयथोच्यते॥

अर्थ॥ रत्न शब्द नपुंसकलिंगी और मणिशब्द पुल्लिंगी तथा स्त्रीलिंगी है· ये रत्न पाषाण के अनेक भेदों से इनको हीरा ·पन्ना· आदि नामों से कहते हैं॥

रत्नोंकेभेद

वज्रंविद्रुममौक्तिकंमरकतंवैडूर्यगोमेदकं माणिक्यंहरिनीलपुष्पहृषदौ रत्नानिनाम्नानव यान्यन्यान्यपिसंतिकानिचिदह त्रैलोक्यसीम्निस्फुटंनाम्नातान्युपरत्नसंज्ञकतमान्याहुः परीक्षकाः॥

अर्थ॥ हीरा· मूंगा· मोती · पंना· वैडूर्यमणि ·गोमेद· माणिक· नीलम· पुखराज· ये नौ प्रकार के पत्थर नवरत्न के नाम से विख्यात हैं· इस पृथ्वी पर और जो रत्न के समान मिलते हैं उनको रत्नों की परीक्षा करनेवाले मनुष्य उपरत्न कहते हैं॥

दूसराप्रकार

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि तार्क्ष्यंचपुष्पंभिदुरंचनीलं गोमेदकंचाथविदूरजंच क्रमेणरत्नानिनवग्रहाणां॥

अर्थ॥ माणिक· मोती· मूंगा ·पन्ना· पुखराज · हीरा · नीलम ·गोमेद· वैडूर्य · ये क्रम से नवग्रह (सूर्य· चंद्रमा) आदि के नवरत्न कहाते हैं·॥

तीसराप्रकार

मुक्ताफलंहीरकंच वैडूर्यपद्मरागकं पुष्परागं चगोमेदं नीलंगारुत्मतंतथा प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव॥

अर्थ = मोती · हीरा · वैदूर्य · पद्मराग · पुखराज · गोमेद · नीलम · पन्ना · मूंगा · ये मोती से आदि ले महारत्न हैं ॥

चौथाप्रकार

पुंवज्रगारुडोद्गारं माणिक्यंवासवोपलं वैदूर्यं पुष्पगोमेदं मौक्तिकंसप्रवालकं एतानिनवर त्नानि सदृशानिसुधारसैः ॥

अर्थ = हीरा · पन्ना · माणिक · इंद्रमणि · वैदूर्य · पुखराज · गोमेद · मोती मूंगा ये अमृत के तुल्य नवरत्न हैं ॥

मणिवर्गः

वैक्रांतः सूर्यकांतश्च हीरकंमौक्तिकं तथा चंद्रकांतस्तदाचैव राजावर्तस्तथैवच गरुडो द्गारकःश्चैव ज्ञातव्यामणयोअमी पुष्परागम हानीलं पद्मरागंप्रवालकं वैदूर्यंचतथानील मेतेचमणयोतथा ॥ —

अर्थ = वैक्रांतमणि · सूर्यकांत · हीरा · मोती · चंद्रकांत · राजावर्त्त पन्ना · पुखराज · महानीलम · पद्मराग (माणिक) मूंगा · वैदूर्य · नील मणि · ये सब मणिवर्ग हैं ॥

रत्नऔरउपरत्नोंकेभेद —

उपरत्नानिचत्वारि महारत्नानिपंचधा प्रवालंग रुडोद्गारंवैदूर्यंपुष्परागकं उपरत्नंसमाख्यातं रत्न शास्त्रार्थकोविदैः ॥

अर्थ = चार उपरत्न हैं और पांच महारत्न हैं मूंगा · पन्ना · वैदूर्य और पुखराज · इन चारों को रत्नशास्त्र के ज्ञाता उपरत्न कहते हैं बाकी महारत्न अर्थात हीरा · माणिक · गोमेद (पीलीमणि) नीलम और मोती ये पांच ॥

मणिरसः

राजावर्तंचपुष्पंच मौक्तिकंविद्रुमंतथा वैक्रांतश्च
समायुक्ता एतेमणिरसास्मृताः॥ इतिरत्नपद्धतौ —

अर्थः राजावर्त · पुखराज · मोती · मूंगा · और वैक्रांतयुत ये सब मणिरस कहाते हैं·॥

सर्वरत्नशोधनकीआवश्य·

रत्नोपरत्नान्येतानि शोधनीयानियत्नतः अशु
द्धानितुकुर्वंत्यगुणान् रोगांश्चतन्वते॥ —

अर्थः जितने रत्न और उपरत्न हैं उनको यत्न पूर्वक शोधन करे· क्योंकि अशुद्ध रत्न · और उपरत्न अवगुण और रोग करते हैं॥

शोधन

शुद्ध्यत्यम्लेनमाणिक्यं जयंत्यामौक्तिकंतथा
विद्रुमंक्षीरवर्गेण तार्क्ष्यंगोदुग्धतः शुचिपुष्परा
गंसैंधवेच कुलित्थक्वाथसंयुतं तंदुलीयजले
वज्रंनीलंनीलीरसेनच रोचनाद्भिश्वगोमेदं वै
दूर्यंत्रिफलाजलैः एतान्येतेषुसंस्विन्नान्याशुश
ध्यंतिदोलया॥ —

अर्थः माणिक अम्लवर्ग में शुद्ध होता है· मोती की जयंति (अरनी) के रस में · मूंगा की दुग्धवर्ग में · पन्ना की गौ के दूध में पुखराज की संधेनोंन मिले कुलथी के कादे में हीरा · की चौलाई के रस में · नलिम की नील के रस में · गोमेद की गोरोचन के जल में वैदूर्य की त्रिफला के काढे में शुद्धी होती है· इन रत्नों को कहे हुए रसों में दोलायंत्र की रीति से स्वेदन करने से शुद्धी होती है·॥

इति शोधन॥

हीराआदिरत्नोंकेमारणमेंदोष

नहन्याद्धीरकादीनिनवरत्नानिबुद्धिमान् महा
मौल्यानितेषांतु यथाद्धीरवस्तुच्छति यद्वालदवृ
नीजातलज्जातीयानिलक्षणैः स्वल्पमौल्यानिते
षांतुवधेनास्तिहिपातकम्॥

अर्थः–बुद्धिमान पुरुष हीरादि नवरत्नों का मारण नकरे· ये बहुमौल्य के होते हैं· इनके मारने से रौरवनर्क में पड़ता है· अथवा कोई मनुष्य यह कहते हैं· कि हीरा आदि के खुज पृथ्वी में प्रगट होने वाले उसीः२ जात के अल्प मोल के ऐसे रत्न देखकरइनके मारण से पाप नहीं होता·॥

हीराविनाऔररत्नोंकामा·

लकुचद्रावसंपिष्टैः शिलातालकगंधकैः वज्रं
विनान्यरत्नानि मृयंतेष्टपुटैः खलुः

अर्थः–मनासिल· हरताल· गंधक· इनको समान भाग लेकर बड़हल के रस में पीसकर पुट देवे तौ आठपुट से हीरा के विना सब रत्नों की भस्म होवे·॥

दूसरीविधि

हिंगुसैंधवसंयुक्तेक्षिप्तेकाथेकुलत्थके रत्नानां
सप्तसप्तानां भवद्भस्मात्रिसप्तधा॥

अर्थः–सात रत्न और सात उपरत्न इनको कुलथी के काढे में सेंधानोंन और हींग डालकर इक्कीस पुट देवे तो भस्म होवे·॥

तीसरीविधि

माक्षिकंगंधकंतालंदरदंच मनः शिलापार
दटंकणं दत्वायामेकंप्रपेषयेत रत्नानिपिष्टापि

त्वातुह्ढंगजपुटेपचेत् मरणंसर्वरत्नानां पुटेनैकेन जायते॥ —

अर्थ॥ सोनामक्खी· गंधक· हरिताल· हींगलू· मनसिल· पारा· सुहागा· इन सबको एकत्र कर उसकी बराबर रत्न लेकर खरल कर गजपुट देवे तो सब रत्नों की एकही पुट से भस्म होजावे॥

रत्नोपरत्नकेगुण

रत्नानिसोपरत्नानि चक्षुष्याणिसराणिच शीतलानिकषायाणि मधुराणिशुभानिच धृतानिमंगलान्याशु तुष्टिपुष्टिकराणिच ग्रहलक्ष्मीविषक्षुद्र पापसंतापनाशयेत यक्ष्मपांडुप्रमेहार्शः कासंश्वासंभगंदरं ज्वरंविसर्पंकुष्टार्ति शूलकृच्छ्रव्रणामयान् ददातिपुण्यंयशः कीर्तिपुण्यंचवचनं भृशम्॥ —

अर्थ॥ सब रत्न और उपरत्नों की भस्म नेत्रों की आनंदकर्ता है· दस्तावर· शीतल· और कषैली होती है· मीठी और शुभ है· इन रत्न और उपरत्नों के धारण करने से तत्काल मंगल· तुष्टि और पुष्टि होती है· नवग्रह· अलक्ष्मी· विषबाधा· पाप· संताप· इन सब का नाश करे· तथा खई· पीलिया· प्रमेह· बवासीर· खांसी· श्वास· भगंदर· ज्वर· विसर्प· कुष्टकीपीडा· शूल· मूत्रकृच्छ्र· व्रणरोग· इन सबका नाश करे· पुण्य· यश· कीर्ति· शुभवचन· इन को देवे॥

हीराकीउत्पत्ति —

दधीच्य स्थ्नः समुत्पन्नाः पतिताश्चकणाःक्षितौ विकीर्णास्तेतुवज्राख्यं भजन्तेतेचतुर्विधं॥

अर्थ॥ पहले जब विश्वकर्मा ने इंद्र के निमित्त वृत्रासुर मारने को दधिचि ऋषी की हड्डियों से वज्रको बनाया उसके बनाने में जो हड्डियों के कणिका पृथ्वी पर गिरे वही काल पाकर हीरा के नाम से विख्यात होगये. वह हीरा चार प्रकार का है॥

दूसराक्रम

पूर्वंमंदरमंथनाज्जलनिधौ प्रत्युत्तायांसुधातां प्रायः पिबतांसुरासुरगणा नामाननाद्विंदवः ये भूमौपतिताविकर्त्तनकरध्वांतैः पुनः शोषिता स्तेवज्राण्यभवन्भवेन कथितंपूर्वंमृडानि प्रति॥

अर्थ॥ पहले देवता और दैत्यों ने क्षीर समुद्र में मंदराचल पर्वत डालकर उसका मथन किया था उस समय अमृत उत्पन्न हुआ उसको देवता और दैत्य जब पीने लगे उस समय उनके मुख से जो अमृत की बिंदु पृथ्वी पर गिरीं वोही बिंदु सूर्यकी किरणों से सूखकर वज्र (हीरा) होगई यह महादेव जी ने पार्वती प्रति कहा है॥

अज्ञानसेरत्नोंकेमोलकहने कादोष

अज्ञानात्कुरुतेमौल्यं सन्मुक्तामणिहीरकान् इहासुखंपरत्रंचरौरवंनरकंव्रजेत॥

अर्थ॥ जो मनुष्य अज्ञान से मोती. मूंगा. मणि. हीरा. आदि का मोल (कीमत) करता है वह इस लोक में दुःख और परलोक में रौरव नर्क पाता है॥

इति॥

तथाच

अज्ञानात्कथयेदन्यो रत्नमोल्यंकदाचनः कुर्यो
त्त्वनिग्रहंतस्य मंडलीतस्यविक्रये अधमस्योत्त
मंमोल्यं मुत्तमस्याधमंतथा स्नेहमोहभयात्कुर्युः
मद्यकुष्टभवेन्मुखे॥

अर्थ॥ जो मनुष्य अज्ञान से रत्नों का मोल्ल कहता है· उसको राजा दंड देवे· अधमरत्न का मोल्ल उत्तम और उत्तमरत्न का मोल्ल अधम जो प्यार से अथवा मोह से किंवा भय से कहे·उसके मुख में तत्काल कोढ होवे·॥

रत्नपरीक्षा

ग्राहकोभक्तिपूर्वेण समाहूयविचक्षणः आस
नंगंधमाल्याद्यैः तद्वैद्यंतुप्रपूजयेत वीक्ष्यसम्य
क्गुणानदोषान् रत्नानांचविशारदः दापयेकुरु
संज्ञांचलक्षमेकैकसंनिधौ॥

अर्थ॥ रत्न का खरीद ने वाला भक्तिपूर्वक रत्नपरीक्षक को बुलावे· और आसन· गंध (चंदन) माला आदि से पूजन कर पीछे उसको सब मनुष्यों के आगे रत्न निकालकर देवे· और कहे कि इसकी परीक्षा करो· तब वो वैद्य उसकी अच्छी तरह गुण दोष देखकर और मन में निश्चय कर उसका मोल्ल कहे·॥

लक्षयेद्वैद्यशास्त्रज्ञो शाणोत्कर्षणलेखनैः लो
हानियानिसर्वाणि सर्वरत्नानियानिच॥

अर्थ॥ शास्त्रज्ञाता वैद्य सर्व लोह (सोना·चांदी·आदि) की और सब रत्नों की परीक्षा सान पर घिस कर तथा कसौटी पर लिखकर कर लेवे·॥

इति·॥

तानिवज्रेणलेख्यानि सचतेनाविलिख्यते अ
भेद्यमन्यजातीनां लोहवज्राग्निसान्निधौ नचान्य
भेदकंतस्यवज्रं वज्रेणभिद्यते॥

अर्थ॰ संपूर्णलोह और रत्नों को हीरा से घिसकर परीक्षा करे क्यों
कि संपूर्ण जाति के लोहा से तथा अग्नि से भी हीरा तोडने में नहीं
आता इसकी तोडने वाली और वस्तु नही है यह अपने आपही से
टूटता है॥

हीराकीचारजाति

वज्रजातिविशेषेण चतुर्वर्णसमान्वितं प्रयत्नेन
चतुर्वर्णप्रविचार्यंपृथकपृथक्॥
सुस्निग्धः स्फटिकः प्रभाः शशिकला शंखाभ
वर्णोत्तमो ह्यारक्तद्युतिमप्रियंगु कुसुमच्छायाय
भावक्षियः वैश्यश्चासितपीतवर्ण रुधिरो दीप्ती
मद्दीप्तिर्भवेत् शूद्रश्चकृष्णमुखस्तथा विरचितो
वर्णैश्चतुर्भिः शुभैः स्याताेमंतद्विशेषण वज्राणां
वर्णलक्षणं॥

अर्थ॰ हीराजाति की विशेषता करके और चार प्रकार के रंगों से
उनके वर्ण न्यारे २ विचार ने चाहिये जो हीरा चिकना और फटिकम
णि के समान कांति वाला तथा शंख के समान सफ़ेद होवे वह
ब्राह्मणवर्ण कहलाता है और जो रंग में लाल तथा प्रियंगु के
फूल के रंग के समान होवे उसे क्षत्रीवर्ण जानना चाहिये और
जो कुछ काला तथा पीला तथा रुधिर के समान दीप्तिवाला
होवे तौ वैश्यवर्ण मानना चाहिये और जो शुद्ध कालेमुखका
होवे वह शूद्र है इन चारों वर्णों करके शुभ कहा है यह हीराके
वर्ण और लक्षण हैं॥

तथाच

श्वेतांद्विजाभिधंरक्तं क्षत्रीयाख्यंतदीरितम् ॥
पीतंवैश्याख्यमुदितं कृष्णस्याच्छूद्रसंज्ञकं

अर्थ॥ जो हीरा सफ़ेद होवे वह ब्राह्मण है· और जो लाल होवे वह क्षत्री· और पीले रंग का वैश्य· और काले रंग का हीरा शूद्र संज्ञक है·॥

धारणकरनेकाफल

धारणाद्यत्फलं पुंसां कथयामि पृथक्पृथक
सप्तजन्मांतरोविप्रो विप्रवज्रस्यधारणात् ॥ १ ॥
लभेद्वीर्यंमहत्वंच दुर्जयाजयमाप्नुयात् सर्व
सप्तांगसंपूर्ण क्षत्रीवज्रस्यधारणात ॥ २ ॥
प्रगल्भकुशलोदक्षो वलवानधनसंग्रही
प्राप्नोतिफलितंचैव वैश्यवज्रस्यधारणात ॥ ३ ॥
वहुपार्जितवित्तेन धनवान् च समृद्धिमान ॥
साधुपरोपकारीच शूद्रवज्रस्य धारणात ॥ ४ ॥

अर्थ॥ अव इनके धारण करने का फल जुदा २ कहते हैं· चारों वेदों का अनुष्ठान करने से जो फल होता है सो फल ब्राह्मण हीरा धारण करने से होवे और सात जन्म ब्राह्मण कुल में होय·॥

वीर्य को वढावे· महत्वता को करे· दुर्जन से जय पावे· संपूर्ण सातों अंगयुत· क्षत्रीवर्ण का हीरा धारण करने से होवें हैं·॥

बुद्धिवान·कुशल·चतुर·वली·धन का संग्रह कर्ता· ऐसा वैश्य जाति का हीरा धारण करने से होवे·॥

अपनेभुजोपार्जित धन से धनवान् होयसाधुस्वभाव वाला परोपकारी ऐसा शूद्रजाति का हीरा धारण करने से होवे·॥

इति

जातिभेदकरकेगुण

विप्रोरसायनेप्रोक्तः सर्वसिद्धिप्रदायकः क्षत्रियो व्याधिविध्वंसी जरामृत्युहरः परः वैश्योधनप्रदः प्रोक्तोतयादेहस्यदार्ढ्यकृत् शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयः स्तंभकरोतिच स्त्रीपुंनपुंसकारचेतिलक्षणीयाश्चलक्षणैः॥

अर्थः ब्राह्मण रसायन क्रिया में लेना. वह सर्वसिद्धि दाता है. क्षत्री संपूर्ण व्याधि और बुढापा और मृत्यु का हरण कर्ता है. क्षत्री सकलव्याधि और बुढापा तथा मृत्यु का हरण कर्त्ता है. वैश्यजाति का हीरा. धनदाता. और देह का दृढ कर्त्ता है. शूद्र संपूर्ण व्याधियों को दूर करे. तथा देह का स्तंभन करे. और हीरा के लक्षणों से स्त्री नपुंसक और पुरुष विशेष जानने.॥

वज्रंचत्रिविधंप्रोक्तं नरोनारी नपुंसकं पूर्वपूर्वमिहश्रेष्ठं रसवीर्याविपाकतः॥

अर्थः हीरा तीन प्रकार का होता है स्त्री. पुरुष. नपुंसक. के भेद से इनमें क्रम से रस. वीर्य. और विपाक के भेद से अधिक गुण हैं.॥

पुरुषसंज्ञकहीराके.

अष्टास्रंचाष्टफलकं षट्कोणमतिभासुरम्॥ अंबुदेंदुधनुर्वारितरंपुवज्रमुच्यते॥

अर्थः जो हीरा अष्टाधार और आठ जगह उसमें फलक (ढाल) के समान ऊंचा ठौर होवे. छः कोने अत्यंत चमकदार होवें. जल में इंद्र के धनुष के समान चमके तथा जल में जो तरे उसको पुरुष संज्ञक कहते हैं.॥

स्त्रीनपुंसकसंज्ञकहीराओंके लक्षण

तदेवचिपटाकारं स्त्रीवज्रं वर्त्तुलायतं वर्त्तुलं कुंठकोणाग्रं किंचिद्गुरुनपुंसकं स्त्रीपुंनपुंसकं वज्रं योग्यंस्त्रीपुंनपुंसके व्यत्ययान्नैवफलदं पुंवज्रेणविनाक्वचित॥

अर्थः- जो हीरा कुन्ठ चपटा होवे और गोल हो वह स्त्री संज्ञक है और जो गोल हो और कौने भोंतरे होवें और भारी होवे उसे नपुंसक जानना चाहिये ये तीनो प्रकार के हीरा क्रम से स्त्री पुरुष नपुंसक को यथा क्रम देने चाहिये पुरुष हीरा के विना और हीरा क्रम के विपरीत देने से गुण नहीं करता अर्थात् पुरुष को स्त्री संज्ञक और स्त्री को नपुंसक संज्ञक देने से गुण नहीं करते परंतु पुरुष संज्ञक सबको गुण करता है॥

मतान्तर

सुवृत्ताः फलसंपूर्णा स्तेजोयुक्ताबृहत्तरा पुरुषा हीरकास्तेच रेखाबिंदुविवर्जिताः रेखाबिंदुसमायुक्ताः षडस्रास्तेस्त्रियः स्मृताः त्रिकोणश्च सुदीर्घाश्च विज्ञेयास्तेनपुंसकाः सर्वेषुपुरुषाः श्रेष्ठावेधकारसबंधका॥

अर्थः- जो हीरा गोल गाढदार साबित तेजस्वी बड़ा और रेखा तथा बिंदु रहित होवे वह पुरुष संज्ञक है और जो रेखा बिंदु युक्त तथा षटकोण होवे उसे स्त्री संज्ञक जानना और जो त्रिकोण तथा लंबा होवे वह नपुंसक कहलाता है इन सब में पुरुष संज्ञक श्रेष्ठ है यह पारे का बद्धक और वेधक है॥

वज्राणांगुणदोषाः

गारस्त्रासश्चबिंदुश्च रेखाचजलगर्भका सर्वरत्नेष्वमीपंच दोषाः साधारणामताः सोभ्रतोय

भवादोषारत्नेषुनलगांतिते॥
अर्थः गाद्‌· त्रास· विंदु· रेखा· और जलगर्भता· ये पांच दोष संपूर्ण रत्नों में साधारण होते हैं॥

मतान्तर

दोषाःपंचगुणाःपंचछायाचैवचतुर्विधाः म लोविंदुर्यवोरेखा भवेत्काकपदंतथा दोषाः प चसमुद्दिष्टाः शुभाशुभफलप्रदाः मूल्यंद्वाद शकंप्रोक्तं वज्रस्यापिमहात्मनः धारासूत्रांस्थि तं कोणवज्रमध्येभवेद्यदि तत्स्थानेमंगलंप्रो क्तं रत्नज्ञानविशारदैः वन्हिभयंभवेन्मध्ये तीक्ष्ण धारासुदंष्ट्रिणः रत्नविद्भिरिदंप्रोक्तं तथाह्यंकोण माश्रितं॥

अर्थः हीरा में पांचदोष और पांचगुण· चार प्रकार की छाया ये होते है· मल· विंदु· यव· रेखा· और काकपद· ये पांच दोष हैं· ये शुभ अशुभ फल देते हैं· और हीरा का मोल भी बारह प्रकार का है· जिस हीरा के कोण में धार वा सूतसा प्रतीत होवे अथवा एक लक्षण बीच में होवे· तो उस स्थान में मंगल होवे· ऐसा रत्नों के जानने वाले कहते हैं· और रत्न केबीच में सर्पाकार तीखी रेखा होवे तो उसे पास रखने में अग्नि की भय हो· ऐसे रत्नों केज्ञाता जोहरी कहते हैं॥

विंदुकेभेद

आवर्त्त वृत्तकश्चैवकम् लोविंदुर्यवाकृतिःगु णदोषान्वितवज्रे विंदुर्ज्ञेयश्चतुर्विधः आव र्तेविपुलवर्त्ती हत्तकोपियवाकृतिःआयुःश्रि यः क्षयोरक्ते देशाश्चयदाकृतिः रक्तपीतशित

छायावर्णायवपदाश्रयःतेषुदोषगुणासर्वे ल
क्षंतेचपृथकपृथक गजवाजिक्षयोरक्ते पीतेवंश
क्षयस्तथा आयुःधान्यंधनंलक्ष्मी सितेयवपदा
श्रये सव्यंचैवापसव्यंच छेदोछेदार्थंगोपिवा

अर्थः आवर्त्तक· वर्त्तक· वलविंदु · यवाकृतिविंदु · इन गुणदो
षोंयुक्त हीरा में चार प्रकार के विंदु भेद जानने · आवर्त्तक विंदु
वड़ा होता है · और वर्त्तकविंदु गोल और छोटा होता है · और यवा
कृतिविंदु जौ के आकार होता है · यदि यह विंदु लाल होवे तौ आ
यु · लक्ष्मी · और क्षय · इनको क्रम से करे · इसकी पदाकृति को
भी देखना · यदि हीरा की पदाश्रय छाया लाल होवे तौ हाथी घो
डों का क्षय होवे · पीली होवे तो वंशाक्षय करे · आयु · धन · धान्य
लक्ष्मी · इनको यव पदाश्रय सफेद छाया होतो नाश करे · इन में
रेखाओं का सव्य और अपसव्य तथा छेद्य और छेदार्ध भी देखना
चाहिये सो आगे लिखते हैं॥

रेखाओंकेभेद

वज्रेचतुर्विधारेखा बुधैरेवोपलक्ष्यते सव्या
चायुःप्रदाज्ञेया नापसव्याशुभप्रदा ऊर्ध्वा
चासिप्रहाराय छेदोछेदायबंधुभिः॥

अर्थः हीरा में चार प्रकार की रेखा पंडितों करके जाननी चाहिये
यदि वो रेखा सव्य (दक्षिणावर्त्त) होवें तौ आयु को वढावें · और
अपसव्य (वामावर्त्त) होवें तो अशुभ जाननी · और वह रेखा ऊ
पर होवें तौ तलवार का प्रहार करावें और छेद होतो बंधुओं का ना
श करावे॥

षट्कोणंलघुतीक्ष्णाग्रं चहुपत्रदलोपिवावज्रे
काकवलोपेते ध्रुवंमृत्युर्विनिर्दिशेत सवाद्या

भ्यंतरेभिन्नेभग्नेकोणेषुवर्त्तुले नसमर्थं भवे त्तस्य शुभाशुभफलोदये॥

अर्थः छःकोण वाला· हलका· और जिसका अग्रभाग तीक्ष्ण हो वे· तथा कमलदल के सदृश लंबा हो · उस हीरा को काकवल्लो पेत कहते हैं· इसको निश्चय मृत्यु कारकजानना · और जो हीरा भीतर और बाहर से भिन्न अथवा टूटा होवे तथा जिसके कोने गो ल होवें· वह हीरा शुभ और अशुभ फल नहीं देता·॥

शुभहीराकेलक्षण

लघुरष्टांगषट्कोणतीक्ष्णधारासुनिर्मलं गुण पंचकरायुक्ता तद्वज्रंदेवभूषणम्॥

अर्थः जो हीरा हलका अष्टांगयुक्त छः कोने वाला जिसकी धारा तीखी होवें और निर्मल होवे· वो पंचगुण युक्त हीरा देवताओं का भूषण है·॥

छायाकेभेद

श्वेतारक्तातथापीता कृष्णाछायाचतुर्विधा सि तछायाभवंसर्वं शशिछायासुलक्षणं धाराविं दुश्चराहिते सर्वलक्षणसंयुते तद्वज्रंतोलयेच्छ म्यक पश्चान्मूल्यंविनिर्दिशेत्॥

अर्थः सफेद·लाल·पीली और काली·ये चार प्रकार की छा या हैं· जिसकी छाया सफेद होवे वह चंद्रछाया कहलाती है सो उत्तम है· प्रथम धारा· बिंदु रहित और सर्व लक्षणयुक्त हीरा को लेकर तोले·पीछे मोल कहे·॥

तोलऔरमोल

पूर्वपिंडसमंकुर्याद्वज्रतोल्यप्रमाणतः सपिंडं त्रिविधंज्ञेयं लघुसामान्यगौरवैः अष्टाभिःसि

तासिद्धार्थैस्तंडुलश्चप्रकीर्तितः तंडुलस्यप्रमाणे न वज्रमौल्यंस्मृतंबुधैः गुरुत्वेचार्द्धमौल्यंस्या सामान्येमध्यमंस्मृतं लाघवेचोत्तमंमौल्यंमु त्तमामध्यमाधमं गुरुत्वेत्रिविधंमौल्यं त्रिवि धंलाघवेतथा सामान्येषद्विधंज्ञेय मेतद्वादश धास्मृतं॥

अर्थः प्रथम हीरा की तोल में पिंड के समान करे. सो पिंड लघु सामान्य और गौरव के भेद से तीन प्रकार का है. आठ सफ़ेद स रसों का एक चांवल होता है. चांवल के प्रमाण से ही पंडितों ने हीरा का मोल कहा है. चामर गुरु होय अर्थात तोल में तो चांवल की बराबर होवे. परंतु चांवल से छोटा दीखे तो उसका मोल आधा होता है. सामान्य में मध्यम तथा लघु होय अर्थात् दीखने में तो बडा दीखे. परंतु तोल में चामल की बराबर होय तो उसका उत्तम मोल होता है. इस प्रकार उत्तम. मध्यम. और अधम के भेद से गुरुत्व मोल के तीन भेद हैं. इसी प्रकार (लाघ व) हलके के भी तीन भेद हैं. और सामान्य मौल्य के छः भेद हैं इस प्रकार तोल और मोल के बारह भेद हैं.॥

मौल्य

मनसाभावयेत्पिंडं यवमात्रैकतंडुलं तत्पिंडं समवज्रंतुज्ञात्वामूल्यंविनिर्दिशेत् मात्रेण यवमात्रश्च गुरुत्वंतंडुलेनच मूल्यंपंचशतं तस्य वज्रस्यचविनिर्दिशेत यवद्वयसमंपिंडं लाघवंतंडुलोपमं मूल्यंचतुर्गुणंतस्य त्रिभि श्चाष्टगुणंभवेत् चतुर्भिः द्वादशंप्रोक्तं पंचभिः शोडषंस्मृतं॥

अर्थः—प्रथम मन में पिंड का अनुमान करे लेय. अर्थात् कितने यव के बराबर इसका मुटाया है. और कितने चांवल के अनुमान तोल में है. इस प्रकार उस हीरा के पिंड की मन में कल्पना करे. पीछे उसका मोल कहे. जो हीरा मुटाव में जौ के समान होवे. और भारी एक चांवल के समान तो उसका मोल ५००) रुपये कहे. और जो मुटाव में दो जौ के समान और तोल में एक चांवल होतो उसका मोल २०००) रुपये जानना चाहिये और इसी प्रकार मुटाव में तीन यव के समान और तोल में एक चांवल होतो उसकी क़ीमत ४०००) रुपये होते हैं. और जो मुटाव में चार यव के समान और तोल में एक चांवल होतो उसकी कीमत ६३००) रुपये कहने और जो मुटाव में पांच यव हो और तोल में एक चांवल होतो उसका मोल ८०००) रुपये कहा है.॥

षटविंदुयस्यवज्रस्य स्थापयेयस्यानिर्गुणं ॥ सपादयवषटकस्य पादहीनंचतंदुलं अष्टाविंशतिकंमूल्यंकथितंचभिषक्वरैः सप्तमांपिंडमौल्यंच द्विसहस्त्रंविनिर्दिशेत यावतापिंडनिबंधतं दापयोद्वचतुर्गुणं पिंड शास्त्रेभवेद्वज्रं पादांशलघुतोयदि अष्टादशगुणमौल्यं रत्नकोशप्रभाषितं हीयवोलघुवज्रस्य षटविंशत्स्थापयेद्गुणान त्रिपादोपरितेवज्रे चत्वारिंशद्गुणंभवेत पिंडपादाधिकंवज्रं तौल्यंतद्गुणतांव्रजेत क्षीयतोद्विगुणंमौल्यं रत्नकोशेप्रभाषितं ॥

अर्थः—ये श्लोक एक बहुत प्राचीन पुस्तक में से लिखे हैं.

सो जहां तहां अशुद्ध है. दूसरी पुस्तक नहीं मिली इसलिये शुद्ध नहीं किया गया. और बहुत अशुद्धता के कारण टीका नहीं लिखी. जिस किसी को इसका अर्थ जानना होवे. वह किसी पढे लिखे जौहरी से जान लेवें.॥

यवसप्तकुगात्रंतु यदिवारतरंभवेत् वज्रस्यां हि स्यात्विंदं मौल्यंद्विसहस्त्रंभवेत् दोषप्रकाश्यते वज्रे समूल्यंयत्रयद्भवेत् हीनत्वंप्राप्यतेतस्य मौल्यंशतगुणाधिकम्॥

अर्थः- जो हीरा सात जव के समान मोटा होवे और जल में तैरे. उस हीरा का मोल दो हजार गुणा जानना. जिस हीरा में दोष नहीं मालूम होवें. उसका जो मोल उत्तम का होता है. उससें सौगुणा मोल कम होजाता है.॥

हीरकपरीक्षाकाप्रकारान्तर

भस्मकंकाकपादंच रेखाक्रांतंतुवर्तुलं आधार मलिनंविंदुं मन्त्रासिस्फुटितंतथा नीलाभंचिपिटंरूक्षंतद्वज्रंदोषलत्यजेत॥

यत्पाषाणतलेनिकाषनिकरे नोघर्षतेनिष्ठुरे यं चान्यांपललोहसुन्दर सुखैलेखानयात्यीपद्वंयं चान्यान्निजलीलयैवदलयेवज्रेणवाभिद्यते तज्जात्यंकुलिशंवदंनिकुशलाः स्याज्यंमहार्घंचतत्॥

अर्थः- भस्म के समान रंगवाला त्रिकोण रेखायुत. गोल. आधार से मलिन वर्ण. विंदुयुत. खरदुरा. फूटा. नीलवर्ण चिपटा हुआ रूखा ऐसा हीरा दोषयुत त्याज्य है. और जो पत्थर वा कसौटी पर घिसने से घिसे नहीं जो लोह वा और किसी पदार्थ से फूटे नहीं

और आप दूसरे पदार्थ को लीलापूर्वक फोड़ देवे. अथवा आप ही
रा से फूटे. उसको हीरा के परीक्षक उत्तम हीरा कहते हैं इसको घर
में रखने से शुभदायक होता है.॥

स्त्रियः कुर्वंतिकायस्य कांतिस्त्रीणांसुखप्रदाः।
नपुंसकाः स्ववीर्याः स्युरकामाः सत्ववर्ज्जिताः।
स्त्रियः स्त्रियःप्रदातव्यः क्लीवाः क्लीवेप्रयोज
येत् सर्वेभ्यः पुरुषायोज्या वालाद्यावीर्यवर्द्धनाः

अर्थः—स्त्रीजाति का हीरा स्त्रियों को कांति और सुखदायक है.
और नपुंसकजाति का हीरा स्ववीर्य करता है. ये अवीर्य और निष्का
म इसमें सार नहीं है. स्त्रीजाति का हीरा स्त्रियों को देवे. और नपुं
सकजातीय हीरा नपुंसक को देवे. तथा पुरुषजाति का हीरा सब
के लिये श्रेष्ठ है. उसको औषधियों में डालना चाहिये और वालजा
तीयहीरा वीर्यवर्द्धक है.॥

अशुद्धहीराकेदोष

अशुद्धवज्रंकुरुतेकुष्ठं पार्श्वव्यथांतथा पांडुता
पगुरुत्वंचतस्मात्संशोध्य मारयेत्॥

अर्थः—अशोधित हीरा कुष्टरोग और पसवाडों में पीडा करे तथा पी
लिया. ज्वर. देह में भारीपन. करता है. इसलिये प्रथम इसको
शोधकर मारण करे.॥

हीराकाशोधन

व्याघ्रकंदगतंवज्रं दोलायंत्रेणपाचयेत् सप्ताहं
कोद्रवक्काथैः कुलिशंविमलंभवेत्॥

अर्थः—हीरा को व्याघ्रीकंद के वीच में रखकर कोदों के काढे
में दोलायंत्र की विधि से सात दिवस पचावे. तो हीरा शुद्ध
होता है.॥

दूसरीविधि

कुलत्थक्काथकेस्विन्नंकोद्रवक्काथितेनवा एक
यामावधिस्विन्नंवज्रंशुद्धयतिनिश्चितं॥

अर्थः कुलथी वा कोदों के काढे में एक दिन दोलायंत्र में पचाने से हीरा शुद्धहोय॥

तीसरीविधि

कुलित्थकोद्रवक्काथे दोलायंत्रेविपाचयेत ॥
व्याघ्रीकंदगतंवज्रं मृदालिप्तंपुटेपचेत अहोरा
त्रात्समुधृत्य हयमूत्रेणसेचयेत वज्रीक्षीरेणवा
सिंचेत कुलिशंविमलंभवेत॥

अर्थः हीरा को व्याघ्री के कंद में रखकर दोलायंत्र में कुलथी वा कोदो के काढे में पचावे. पश्चात व्याघ्रीकंद में रख ऊपर कपरमिट्टी कर. संपुट में रखकर फूंक देवे. जब एक दिन और एक रात व्यतीत होजाय. तब निकालकर घोड़े के मूत्र अथवा थूहरके दूध में बुझावे तो हीरा शुद्ध होजाय.॥

चतुर्थीविधि

गृहीत्वान्हि शुभंवज्रं व्याघ्रकंदेविनिः क्षिपे
त महिषीविष्टयालिप्त्वा करीषाग्नौविपाचये
त त्रियामंचचतुर्यामं यामिन्यंतेश्वमूत्रकैःसे
चयेत्पाचयेदेवं सप्तरात्रेणशुद्धयति॥

अर्थः हीरा को व्याघ्रीकंद में भर ऊपर भैंस के गोवर का लेपकरे फिर उपलों की आंच चार अथवा तीन प्रहर की देवे. पीछे आग से निकार घोडे के पिशाव में बुझावे ऐसा सातवार करने से हीरा शुद्ध होवे. व्याघ्रीकंदकंटेरीकीजडकोकहतेहै॥

इति

हीराकामारण

त्रिवर्षरूढकर्पास मूलमादायपेशयेत् त्रिवर्षा नागवल्यावाबीजद्रावैः प्रपेशयेत् तद्गोलके क्षिपेद्वज्रं रुध्वागजपुटेपचेत् एवंसप्तपुटैर्नूनं कौलिशंभस्मजायते॥

अर्थ: तीन वर्ष की कपास की जड की लुगदी में अथवा तीन वर्ष के नागवेलों के बीजों की लुगदी में हीरा को रखकर सात कपरौटी करे और गजपुट में फूंक देवे. इस प्रकार सात पुट देय तो हीरा की निश्चय भस्म होवे॥

मारणकीदूसरीविधि

त्रिसप्तकृत्वासंतप्ताः खरमूत्रेणशुद्ध्यति मत्कुणस्तालकंपिष्टा तद्गोलेकुलिशंक्षिपेत् प्रध्मातं वाजिमूत्रेण सिक्तंपूर्वक्रमेणच भस्मीभवंतितद्वज्रंशंखशीतांशुपांडुरं॥

अर्थ: हीरा को तपा२ कर गधे के मूत में बुझावे. इस प्रकार इक्कीस वार बुझाने से हीरा शुद्ध होवे. पीछे हरताल को खटमल मिलाकर घोटे. उसकी लुगदी में रखकर अग्नि देवे. जब खूब अग्नि लगजाय तब निकालकर घोडे के पिशाव में बुझावे. इस प्रकार इक्कीस वार करने से हीरा की भस्म सफेद शंख और चंद्रमा के तुल्य होजाय॥

तीसरीविधि

हिंगुसैंधवसंयुक्ते क्वाथेकौलत्यजेक्षिपेत् तप्तंतप्तंपुनर्वज्रं भूयात्चूर्णंत्रिसप्तधाः

अर्थ: हींग. कुलथी. सेंधानोंन. इन तीनों के काढे में हीरा को तपा२कर इक्कीस वार बुझाने से हीरा की भस्म होवे॥

पांचवींविधि

मेषशृंगंभुजंगास्थिकूर्मपृष्टाम्लवेतसं शशदंतं समंपिष्टावज्रीक्षीरेणगोलकं कृत्वातन्मध्यगं वज्रंम्रियतेध्मातवह्निना॥

अर्थः— मेंढाकासींग·सांपकीहड्डी·कछवेकीपीठ·अमलवेत ससेकेदांत·इन सब के समान भाग ले चूर्णकर थूहर के दूध में घो टकर गोला बनावे·उसके बीच में हीरा को रख सात कपरमिट्टी करे·गजपुट में फूंक देवे·तो हीरा की भस्म होवे॥

छटवींविधि

विलिप्तंमत्कुणस्यांत्रैः सप्तवारंविशोधितं कास मर्दरसापूर्णं लोहपात्रेनिवेशयेत सप्तवारंपरि ध्मातं वज्रंभस्मभवेत्खलु वज्रचूर्णंभवेद्वर्ण्यं योजयेच्चरसादिषु ब्रह्मज्योतिमुनीद्रेण क्रमोयं परिकीर्त्तितः॥

अर्थः— हीरा को तपा के खटमल की आंतों का लेप करके सुखा लेवे·पीछे उसको कसोंदी के रस के भरे हुए पात्र में रखकर अ ग्नि देवे·जब सूख जावे तब फिर अग्नि में तपावे·और खटमलों का लेप कर·उसीप्रकार कसोंदी के रस में रख अग्नि देवे·तो इस प्रकार सातवार करने से निश्चय हीरा की भस्म होय यह भस्म कांति दायक है इसको रसादिकों में डाले·यह ब्रह्मजोति मुनींद्र का कहा हुआ योग है॥

सर्वोत्तमसातवींविधि

वज्रंमत्कुणरक्तेन चतुर्वारंविभावितं सुगंधिमू षिकामांसे वर्त्तितंपरिमर्द्यच पुटेत्पुटैर्वराहाख्यै स्त्रिंशद्वारंततः परं ध्मात्वाध्मात्वा शतंवारान

कुलत्थक्काथकेक्षिपेत् अन्यैरुक्तः शतंवारा न्कर्तव्योयंविधिक्रमः कुलत्थक्काथसंयुक्तः लकुचद्रावपिष्ट्या शिलयालिप्तमूषायां वज्रं क्षिप्त्वानिरुध्यच अष्टवारंपुटेत्सम्यक् विशुष्कै श्चवनोत्पलैः शतवारंततोध्मात्वा निक्षिपेच्छ द्धपारदे निश्चितंम्रियतेवज्रं भस्मवारितरंभवेत् सत्यवाक्सोमसेनानी रेतद्वज्रस्यमारणं दृष्टंप्रत्य यसंयुक्तं सुजानानरसकौतुकी ॥

अर्थ॥ हीरा को खटमल के रुधिर में चार भावना देय । तदनंतर सुगंध मूंसा के मांस से मर्दन कर बाराह पुट में फूंक देवे । इस प्रकार सात पुट देय । पीछे उस हीरा को आंच में तपा २ कर कुलथी के काढे में सौ वार बुझावे । और आचार्य यह कहते हैं कि प्रथम सौवार खटमलों के रुधिर की भावना देकर पीछे कुलथी के काढे में बुझानी चाहिये । पीछे कुलथी के काढे में बदल का रस मिलाकर मनसिल को पीस हीरा पर लपेट घडिया में रखकर आंच में फूंक देवे इस प्रकार सूखे आरने उपलों के आठ पुट देवे । तदनंतर सौवार हीरा को तपा २ कर शुद्ध पारे में बुझावे । इस प्रकार करने से निश्चय जल में तैरने वाली हीरा की भस्म होवे यह सोमसेनानी सत्यवक्ता का कहा है । उस रस कौतुकी का यह प्रयोग देखा और आजमाया है ॥

आठवींविधि

विलिप्तंमत्कुणस्यास्त्रै सप्तवारंविशोषितं का सर्मदरसापूर्णे लोहपात्रेनिवेशितं सप्तवारंपरि ध्मातं वज्रभस्मभवेत्खलु ब्रह्मज्योतिर्मुनींद्रेण क्रमोयंपरिकीर्तितः॥

अर्थः हीरा को खटमल के रुधिर में लपेटकर सुखालेवे· पीछे ए क छोटे मिट्टी के पात्र में कसौंदी का रस भर उसमें उस हीरा को रख अग्नि में धमावे· जब रस सूख जाय तब फिर खटमल का रुधिर ऊपर लपेट कसौंदी के रस में रख अग्नि में धोंके इस प्रकार सात वार करने से निश्चय हीरा की भस्म होवे· यह ब्रह्मज्योति का क ह्रा हुआ क्रम है॥

नवमविधि

नीलज्योतिलताकंदे धृतंघर्मोपिशोषितं वज्रं भस्मत्वमायाति क्रमवद्दत्तवह्निना॥

अर्थः हीरा को नीलज्योति लताके कंद में रख धूप में सुखाय यथासं भव अग्नि देने से हीरा की भस्म होवे·॥

दशमविधि

मदनस्य फलोद्भूतरसेन क्षोणिनागरैः कल्क ल्केनसंलिप्य पुटेद्विंशतिवारकं वज्रचूर्णंभ वेद्दूर्यं योजयेच्चरसादिषु॥

अर्थः मैनफल के रस में अलसी और सोंठ को मिलाय कल्क ब नाय उसमें हीरा को लपेट अग्नि में धमावे इस प्रकार बीसपुट दे य तौ हीरा की उत्तम भस्म होवे इस भस्म को रसादिकों में मिला कर काम में लावे·॥

ब्राह्मणजातीयहीराका मारण

गरुडंगंधकंतालं बदरीरससंभुतं अश्वत्थेनच प्रभाव्य पुटेत्पिंडसुरक्तकं क्षिपततेनयोगेनब्रह्म स्त्वानितत्वतः॥

अर्थः पन्ना का चूरा · गंधक · हरताल · इनको बेर के रस में घोट

पीछे पीपल के पत्तों की भावना देय. खटमल के रुधिर की भावना देवे. तो ब्राह्मण जाति का हीरा भस्म होवे.॥

वैश्यजातीयहीराकामारण

स्नुह्यर्ककरवीरंच भूनागं दरदं वटः उन्मावारुणी हीरैं वैश्यानांमारणंपुटैः॥

अर्थः थूहर. आक. कनेर. केंचुआ. शिंगरफ. वड का दूध. इनको इ- न्द्रायनी के दूध में भावना देकर फूके तो वैश्यजाति के हीरा की भस्म होवे.॥

क्षत्रीजातीयहीराकामारण

नीलंचशंखचूर्णंच शिलाभूनागसूरणं म्रियतेक्षत्र जातीनां पुटैःस्वाभिन्नसंशयः॥

अर्थः नील. शंखकाचूरा. मनसिल. केंचुआ. जिमीकंद का रस इ- न सबको एकत्र पीसकर. पुट देने से क्षत्री जाति के हीरा की भस्म होवे.॥

शूद्रजातीयहीराकामारण

गंधकंकुमेपृष्ठंचवा लत्रयसुदंवरं वहुवज्रलतामर्द्यं शूद्राणांमारणंकरं॥

अर्थः गंधक. कछुवेकीपीठ. वालत्रय. (वेल. वार. सुगंधवाला) गू- लर का दूध. इन सब को हार सिंगार के रस में खरल कर पुट देवे तो शू- द्रजाति के हीरा की भस्म होवे.॥

सबप्रकारकेहीराओंकामारण

गंधासमंकुरुततात्ले मेषशृंगंसमाक्षिकं विषकान्त स्नुहीक्षीरं नारीपुष्पंपलप्तुलं एभिर्विलिप्तमूषायां धमनादन्यमारणं॥

अर्थः

विष· कांतलोह· थूहर का दूध· स्त्री के रजोदर्श का रुधिर· दूध· इनको एकत्र हीरा में पुट देकर· मूषा में रख वंकनाल धोंकनी से धोंकने से सर्वजाति के हीराओं की भस्म होवे॥

हीराआदिसवरत्नोंका मारण

रसंहंसंशिलातालं गरुडंगंधटंकणं भूनागंविम लंवंगं मेषशृंगंसचुंबकं शक्रःशोणितसंयुतं। स्वेदनौषधिभावितं मूषालेपप्रयोगेण रत्नानांमा रणंध्रुवं सर्ववज्रभवंभस्मं वज्रस्थानेनियोजये त्॥१॥

अर्थः पारा· सिंगरफ· मनसिल· हरताल· पन्नाकाचूर्ण· गंधक सुहागा· केंचुआ· विमल· वंग मेंढाकासींग· चुंबकपत्थर का चूर्ण पुरुष का शक्र· और रुधिर· इन सब औषधियों को पीस कर· इसमें स्वेदन औषधियों की भावना देवे· पीछे इनको मूषा में लेपकर उसके बीच में हीरादि रत्नों को रख धोंकने से सर्वरत्न निश्चय मरें इस प्रकार मरेहुए हीरा की भस्म· जिस प्रयोग में हीरा की भस्म लिखी होय मिलावे॥

तद्भस्मंचूर्णयित्वाथ किंचिट्टंकणसंयुतं खरभूनाग सत्वेन विशनावर्त्तनेध्रुवं तुल्यस्वर्णेनतद्भस्मातं योज नीयंरसादिषु॥

अर्थः फुके हुए हीरा की भस्म में कुछ थोडा सा सुहागा मिलावे· चौ सवा हिस्सा· फिर गरम केंचुए के सत्व में डाले· और बराबर का सोना डालकर अग्नि पर धमावे तो सत्व निकले फिर इस सत्व को सब रसों में मिलाकर खाय॥

स्त्रिगुणेनरसेनैवसंमर्द्यगुटकाकृतं सुखेधृतंकरो
त्याशुचलदंतविबंधनं॥

अर्थः हीरा की भस्म से तिगुना शुद्ध पारा मिलावे· और गुटिका
बना लेवे· इस गुटिका को मुख में राखे तौ हिलते हुए दांत दृ
ढ होवें·॥

भस्मसेवनकीविधि

सूतभस्मार्द्धसंयुक्तं मृतवज्रस्यभस्मकं मृताभ्र
सत्वमुभयो स्तुलितंपरिमर्द्दितं क्षौद्राज्यसंयुतंप्रा
ज्ञैः गुंजामात्रंचसेवितं निहंतिसकलान्रोगान्
सत्यंसत्यंवदाम्यहं एवंवज्रभवंभस्मं सेवनीयं
नृभिः सदात्रिसप्तदिवसैर्न्नृणांगंगांभइवपात
कः॥१॥

अर्थः हीराकी भस्म एक भाग पारे की भस्म अर्द्धभाग· इन दोनोंके
समान मरी अभ्रक का सत्व लेकर घृत और शहद में सबको घोट
कर· एक रत्ती नित्य खाय तौ सब रोगों को दूर करे· इस प्रकार ही
रा की भस्म मनुष्य को सदा सेवन करने से इक्कीस दिन में गंगाज
ल के समान शुद्ध देह करे·॥

त्रिंशद्भागमितंहिवज्रभसितं स्वर्णंकलाभावि
कं तारंचाष्टगुणंसिता मृतवरं रुद्रांशकंचाभ्रकं
पद्मांशंखलुताप्यकं वसुगुणंवैक्रांतकं षड्गुणं
भागोप्युक्तरसैःरसोयमुदितः षाड्गुण्यसंसिद्ध
ये॥१॥

अर्थः हीरा की भस्म तीस भाग· सुवर्ण की भस्म सोलह भाग·
रूपरस आठ भाग· सिंगियाविष ग्यारह भाग· अभ्रक की भस्म ग्या
रह भाग· सोनामक्खी की भस्म एक भाग· वैक्रांतमणिकीभस्म

छः गुणी · पारे की भस्म एक भाग · इन सब भस्मों को एक करके रस छोड़े · इस रस को षट्गुण की सिद्धी के निमित्त पूर्वाचार्यों ने कहा है ·॥

हीराकीभस्मकेगुण

आयुःप्रदंसद्गुणदंच वृष्यंदोषत्रयःप्रशमनंसकलामयघ्नं सूतेंद्रबंधवधसद्गुणदंप्रदीप्तं मृत्यंजयेत्तदमृतोपममेववज्रं॥

अर्थः मनुष्य की आयु और श्रेष्टगुणों की वृद्धी करे · वृष्य है · तीनों दोषों को शमन करे · सकल रोगों को दूर करे · पारे का बंधक और मारण कर्त्ता यथा पारे मे उत्तम गुण प्रगट करे · अग्नि को दीप्त करे · मौत को जीतने वाली अमृत के समान गुण वाली ऐसी हीरा की भस्म है ·॥

वज्रंचषड्सोपेतं सर्वरोगापहारकं सर्वाघशमनं सौख्यंदेहदार्ढ्यंरसायनं॥

अर्थः हीरा षटरस युक्त संपूर्ण रोग नाशक तथा सकल पाप हरण कर्त्ता सुख और देह को दृढ करता है · तथा रसायन है

तीसरेगुण

वज्रंसमीरकफपित्तगदांश्च हन्याद्वज्रोपमंच कुरुतेवपुरुत्तम श्रीशोषक्षयज्वर भगंदरमेहमेदपांडूदरश्वयथुहीरिमषड्सात्यं आयुःपुष्टिंबलं वीर्यंच वर्णंसौख्यंकरोतिच सेवितंसर्वरोगघ्नं मृतवज्रंनसंशयः॥

अर्थः हीरा की भस्म वात · पित्त · और कफ के विकारों का नाश करे · देह को वज्र के समान दृढ और उत्तम करे · शोष · क्षई · ज्वर · भगंदर · प्रमेह · मेद · पांडु · उदर · और सूजन इनका नाश क

करे. छः रसयुक्त है. आयु और वीर्य को पुष्ट करे. देह का वर्ण उ
त्तम करे. और सुख करता है. मरा हीरा खाने से निस्संदेह सक
ल रोग नाश होवें॥

हीराभस्मकेअनुपान

कुष्ठेखादिरत्वक व्यथा पवनजेसृक शृंगवेरंस
धुदेयं कासश्वासे श्वास विकृतौवासोषणात्व
क्कणा पित्तेदाहसितासमं ज्वरगणेछिन्नाजले
नित्तकेवज्रंमारितशल्कभस्मगदहृद्योज्यंभि
षक्युक्तिभिः॥

अर्थः कोढ रोग में खैर की छाल के साथ. वातव्याधि तथा वा
तरक्त इनमें अदरक के रस और शहद के साथ देवे. खांसी. कफ़
और श्वास इन रोगों में अडूसा. कालीमिरच. दालचीनी. और पी
पल इनके साथ देवे. पित्त और दाह इनमें मिश्री के संग देवे. स
बज्वरों में गिलोय और चिरायते के काढे में हीरा की भस्म को देवे
हीरा की भस्म सर्वरोग नाशक है परंतु और सब रोगों में वैद्य अ
पनी युक्ति से अनुपान कल्पना करके देय॥

अथवज्रमृदुकरणं

मातुलुंगांतरेवज्रं रुध्वावाह्यमृदालिपेत पुटे
त्पश्चात्समुध्दृत्य शतंशतपुटैः पचेत नागवल्या
द्रवैर्लिप्तं तत्पत्रेणवेष्टयेत भूमध्येचस्थितंया
वत तद्वज्रंमृदुतांव्रजेत॥

अर्थः हीरा को बिजौरे केभीतर रख उसके ऊपर कपर मिट्टी कर
पीछे उसको अग्नि में रख फूंक देय इस प्रकार १०० पुट देवे
पीछे नागरवेल के पत्तों के रस में लपेट और ऊपर से नागरवेल
के पत्ते बांध जमीन में गाड देवे. तो थोडे दिन में हीरा मोम के

समान नरम होजाय. यह (रसेंद्रपद्म कोश) में लिखा है.॥

हीराकीद्रुति

वज्रवल्ल्यंतरस्थंच कृत्वावज्रंनिरुत्थितं अम्ल
भांडगतंस्वेद्यं सप्ताहाद्द्रवतांव्रजेत्

अर्थ॰ हीरा को वज्रवल्ली की लुगदी में रख कर फूंक देय जब निरुत्थ होजाय तब अम्लवर्ग के पात्र में डाल स्वेदन करे तो हीरा की पारे के समान द्रुति होवे

अशुद्धवज्रकेदोष

पीडांविधत्तेविविधान्नराणां कुष्ठंक्षयंपांडुगदंच
दुष्टं हृत्पार्श्वपीडां कुरुतेतिदुस्सहा मशुद्धवज्रं॥
कमात्महृत्यजेत्॥

अर्थ॰ अशुद्ध (कच्चा) हीरा मनुष्यों के अनेक प्रकार की पीड़ा करे कोढ़. खई. पांडुरोग. हृदय. और पसवाडों में पीड़ा करता है. दुःसह है. भारी है. तथा अशुद्ध हीरा प्राणहारक है इसलिये अशुद्ध हीरा को त्याग देवे.॥

हीराकेविकारोंकीशांति

सितामधुघृतैः सार्कं गोदुग्धंदिनसप्तकम् विधिना
सेवितंहांति वज्रदोषंचिरात्स्थितं॥

अर्थ॰ मिश्री. शहद. घी. इनको दूध में मिलाकर सात दिन विधि से सेवन करे तो. हीरा का दोष नष्ट होवे

मूंगाकीउत्पत्ति

बालार्ककिरणरक्ता सागरसलिलोद्भवे जल
लतायानत्यज तिनिजं रूपं निकषेदृष्टापिसाप्र
तान्जात्या॥

अर्थः-समुद्र की मिट्टी में जो कीड़ा रहते हैं, उनसे प्रातःकाल की सूर्य की लाल किरणों के समान बेल प्रकट होती है, उनको (प्रवाल (मूंगा) कहते हैं उनमें से जो कसौटी पर घिसने से अपने रंग और क्रांति को न छोड़े वह मूंगा अमृत के समान गुण करता है॥

शुभमूंगाकेल०

पक्वबिंबफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकं स्निग्धम
व्रणकंस्थूलं प्रवालंसप्तधाशुभं॥

अर्थः-पकी कंदूरी के समान गोल वक्रता रहित चिकना छिद्रादिक रहित, मोटा, कुछ थोड़ा लंबा ऐसा सात प्रकार का मूंगा शुभ है॥

अशुभमूंगाकेल०

आररंगंजलाक्रांतिवक्रंसूक्ष्मंसकोटरं रूक्षंकृष्णं
लघुश्वेतंप्रवालमशुभंत्यजेत॥

अर्थः-जो रंग में पीतल के समान होवे, और जल कीसी क्रांति टेढा बारीक, छिद्र सहित, रूखा, काला, छोटा, सफ़ेद ऐसा मूंगा अशुभ है॥

मूंगाकेगुण

प्रवालंमधुरंसाम्लंकफपित्तादिदोषनुत वीर्यं
कांतिकरंस्त्रीणां धृतेर्मंगलदायकं क्षयपित्ता
स्रकासघ्नंदीपनंपाचनंलघु विषभूतादिशमनं
विद्रुमंनेत्ररोगहृत॥

अर्थः-मूंगा मधुर, खट्टा, दीपन, पाचन, तथा लघु (हलका) ऐसा है, तथा वीर्य और कांति को बढावे, स्त्रियों को धारण करने से मंगल कर्त्ता है, और कफ, पित्त, त्रिदोष, खई, रक्तपित्त, खांसी

विष · भूतबाधा · और नेत्ररोग · इनका नाश करे ॥

मूंगाकामारण

मौक्तिकस्यविधिप्रोक्तः प्रवालेपि तथाविधिः

अर्थः जो विधि मोती के मारण की है · वही विधि मूंगा के मारने की जाननी चाहिये ॥

मोतीकीउत्पत्ति

शक्तिः शंखोगजः क्रोडफणीमत्स्यश्च दर्दुरः ॥
वेणश्चाष्टौसमाख्याता सुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः ॥

अर्थः पंडितों ने मोती की उत्पत्ति शिपी · शंख · हाथी · सूकर · सर्प · मछली · मेंडक · और बांस इनसे कही है ॥

गजमौक्तिक

यद्दंतावलकुंभसंभवमदः पीतारुणंमंदरुक
धात्रीदृष्टतयात्र रत्नमधमंकांभोजकुंभोद्भवं ॥

अर्थः गजमुक्ता यह कांबोजदेश के बलवान हाथी के गंडस्थल से किंचित लाल तथा पीतवर्ण · ऐसा मोती उत्पन्न होता है · इन मोतियों को स्त्रियां धारण करती हैं यह हलका रत्न है ॥

वाराहमौक्तिक

एकाकीससुरवेनानिरप्रह तया यः काननंगाह
ते तस्यानादिवराहवंशजनुषः कोलस्यमूर्द्धि
स्थितं कंकोलाकृति मिन्दुवत्सधवलं देवाद
वाप्नोतियःसोमर्त्यं समुपासते मनिधिभिर्मर्त्यो
धनाधीशवत् ॥

अर्थः श्रीआदि वाराहवंश में जो सूकर प्रकट हुआ वो बन में एक ही निस्पृहता पूर्वक विचरता है · उसके मस्तक में बेर के समान

वडा और चंद्रमा के समान सफ़ेद ऐसा मोती होताहै यह मोती दैवेच्छा से हाथ पडता है· जिसके पास यह मोती होता है· वह अटूट संपत्यवान होता है·॥

वेणुमौक्तिक

मुक्तांसंतिकुलाचलेषुकरका कांत्युद्भवावंशजा कर्कंधूफलवंधवो निदधते कंठेषुशुद्धांगनाः॥१॥

अर्थः कुलाचल पर्वत में वर्फ के समान सफ़ेद · बांसों में से वेर के समान वडा मोती प्रगट होता है· उसको पवित्र स्त्री गले में धारण करती हैं॥

मत्स्यजमौक्तिक

प्रोष्ठीगर्भगतस्तुमौक्तिकमणिर्नागस्समः पाटलीपुष्पाभः सनलभ्यते भुविजनैरस्मिन्कलौ पापिभिः॥

अर्थः मत्स्यजमौक्तिक मच्छी के पेट में गजमौक्तिक के समान वर्ण में पाढर के पुष्प के सदृश होता है वह इस पृथ्वी परकलयुगी पापी मनुष्यों को नहीं प्राप्त होता है॥

दर्दुरमौक्तिक

यन्मेघोदरसंभवंतदवनीमप्राप्तमेवासरैः व्योमस्थैरपनीयते विनिपतद्वर्षासु मुक्ताफलं तिग्मांशोरपिदुर्निरीक्ष्यमकशं सौदामिनीसन्निभं देवानामपिदुर्लभं नमनुजैस्यै तस्यप्राप्तिपुनः॥१॥

अर्थः मेंडक का मोती वर्षाऋतु में जो मेंडक मेघोदर से उत्पन्न होता है· पृथ्वी पर नहीं गिरे · उन मेंडकों के पेट में मोती उत्पन्न होता है· वो पृथ्वी पर नहीं गिरे उसे देवता ग्रहण करलेते हैं·॥

वह सूर्य के समान तेजस्वी बिजली के सदृश होते हैं. वो देवताओं को भी दुर्लभ मनुष्य को तो कब प्राप्ति होसके हैं॥

शंखमौक्तिक

शंखस्याच्युतहारिणोजलनिधौयेवंशजाःकंबु कास्तेष्वंतःकिलमौक्तिकंभवतियैतच्छुक्कता शनिभं कापोतांडसमंसुवृत्तमसकृत श्रीकंमरू पंलघु स्निग्धंस्पर्शकृतं चतेचन पुनर्मर्त्यैस्तदा साद्यंते॥

अर्थः पांचजन्यशंख के वंश में प्रगट ऐसे शंख समुद्र में होते हैं. जिनके भीतर तारागणों के समान प्रकाशित कबूतर के अंडे के समान बडा गोल ऐसे मोती होते है वो पानीदार हलके चिक ने तथा लक्ष्मी कारक होय हैं वो एकवार मनुष्य का स्पर्श करने से फिर दूसरे के हाथ न ही आवे॥

सर्पजमौक्तिक

शेषस्यांन्वयिनांफणासुफणिनां यन्मौक्तिकंजा यते वृत्तंनिर्मलमुज्वलं शशिरुचिश्यामच्छवि श्रीकरं कंकोलाकृतिकोपकोटसुकृतैःप्राप्नोति चेन्मानवः सस्याद्वाजिगजाधिकोनृपसमोजातो पिनीचेकुले आस्तेसद्मनिचेत्सपन्नगमणि स्ते यातुधानामराहर्तुरंध्रमवेक्षतेइतरतःकुर्यान्महा शांतिकम्॥

अर्थः सर्पजमौक्तिक यह शेषनाग के वंश में उत्पन्न हुए सर्पों के फण में होता है वह गोल निर्मल. चकचकाहट लिये चंद्रमा के समान सफेद शोभायमान आकार में बेर के समान होता है. यह मोती करोड़ जन्म पर्यंत पुण्यकर्त्ता के हाथ लगता है. जिसके

पास यह मोती रहे उसके घर में हाथी घोडा आदि की वृद्धी हो कर नीचकुल का भी बालक राजा के समान होवे. इस मोती की चोरी करने को राक्षस छिद्र देखा करते हैं. इसलिये इसके मिलने की शांति करे.॥

सिपीमौक्तिक

षटप्वेतेश्ववापिरूक्मिणी वजगानिख्यानिर्गतारु क्मिणी नाम्नाशक्तिमतीन्द्रचोत्तमगुणा सिंधौस मुत्पद्यते तस्यागर्भभवंतुकुंकुमनिभं जातीफला कृतिंनस्थूलंस्निग्धमतीव निर्मलमलंभूमौप्र कारांसदा॥

अर्थ = जो सीप चांदी के समान झलझलाहट करे वोउत्तम है. और समुद्र में उत्पन्न होती है. उसमें लाल जायफल के समा न मोटा. चिकना अत्यंत निर्मल ऐसा मोती निकलता है.

लक्षण

श्वेतंस्निग्धमतीववंधुरतरं स्यात्पारसीकोद्भवं रूक्षंकांचनवर्णसंकरयुतं स्यद्दर्वरंमौक्तिकं॥ शोणंदूर्मजसंभवं विदुरीतिस्निग्धंतया दोषजं चतुर्वर्ण्ययुतं सुलक्षणमिति श्लक्ष्णंकवि श्री करं॥

अर्थ = जो फारिस के समुद्र में मोती प्रगट होता है. वह सफेद चिकना और अतितेजस्वी होता है. और जो अरब के समुद्र में मोती उत्पन्न होता है. वो रूखा तथा जिसमें सुवर्ण का संकर ऐसा होता है. और अन्य समुद्र का मोती लाल अतिचिकना दोषयुक्त. चारवर्णयुक्त. उत्तमलक्षणयुक्त और बारीक शोभायमा न होता है.॥

मौक्तिकपरीक्षा

यद्विच्छायं मौक्तिकंव्यंगकायं शुक्तिस्पर्शरक्त
वर्णंचापियच्च मत्स्याक्षाकंरूक्षमुक्तानिम्नं नैत
द्धार्य्यंधीमतादोषदायी॥

अर्थः जो मोती फीका व्यंग शीपी से चिपटा लालवर्ण मछली
के नेत्रसम चिन्हित रूखा ऊंचा नीचा ऐसा होवे उसको बुद्धिवा
न धारण नकरे यह दोष कारक है॥

शुभमोतीकेलक्षण

नक्षत्राभंच्चत्तमत्यंतमुक्तं स्निग्धंस्थूलंनिर्व्रणानि
र्मलंच न्यस्तंयत्तेगौरवंयत्तुलायांनिर्मौल्यंतन्मौ
क्तिकंसिद्धिदायी॥

अर्थः जो मोती नक्षत्र के सदृश गोल चिकना मोटा निर्व्रण
निर्मल तथा तोल में भारी होवे यह मोती महामौल्यवान सि
द्धि दायक है॥

मोतीकाशोधन

लवणक्षारसंनोदिते पात्रेगोमूत्रपूरितेक्षिप्तं मर्दि
तमपिशालितुषैर्यदाविकृतंमौक्तिकंशुद्धं॥

अर्थः गोमूत्र में नोनडालकर उसमें मोती दोलायंत्र की रीति से
लटका देवे पीछे उसमें से निकाल धान के तुषाओं में डालकर
मले यदि वह मोती विकार को प्राप्ति नहोतो जान लेवे कि शु
द्ध है॥

मणिमुक्ताप्रवालशोधन

स्वेदयेद्दोलिकायंत्रे जयंत्यस्वरसेनच मणिमुक्ता
प्रवालानां यामैकंशोधनंभवेत

अर्थः मणि मोती मूंगा इनको जयंती के रस में दोलायंत्र की

विधि से एक महर पचन करावे तो शुद्ध होवे॥

दूसराप्रकार

मौक्तिकंशोधयेद्दम्लैःकांजिकेनिंबुकद्रवैःगोमू
त्रेशोधयेत्पश्चाच्छोधयेत्पयसातथा

अर्थः— मोती को अम्लवर्ग में कांजी में नींबू के रस में गोमूत्र में और दूध में शोधन करे॥

मुक्ताप्रवालमारण

कुमारीतंदुलीयेन स्तन्येनचविपाचयेत् प्रत्येकं
सप्तवारंच तप्ततप्तानिकृत्स्नशः उक्तमाक्षिकवन्मु
क्ता प्रवालानिचमारयेत्॥

अर्थः— मोती को अग्नि में तपा २ कर घी गुवार के पाठे के रस में चौलाई के रस तथा स्त्री के दूध में सात २ वार बुझावे और सो नामक्खी की मारण विधि से मोती और मूंगा का मारण करे

दूसरीविधि

गंधपारदयोरैक्या न्मौक्तिकानिविमर्दयेत्॥
भावयेद्दुग्धयोगेन शरावःसंपुटेक्षिपेत् वस्त्र
मृत्तिकयोर्लेपा ज्ज्वलयेद्धस्तिजेपुटे स्वांगशी
तलमुद्धृत्यचूर्णंभांडेनिधापयेत्॥

अर्थः— मोती को गंधक और पारे की कजली में दूध डालकर खूब घोटे तदनंतर शराव पुट में रख कपरामिट्टी कर गजपुट में फूंक देय जब स्वांगशीतल होजाय तब निकाल भस्म को कांच की सीसी में रख देवे॥

मोतीकीभस्मकेगुण

मौक्तिकंसमधुरंसुशीतलं दृष्टिरोगशमनंविषापहं
राजयक्ष्मपरिकोपनाशनं क्षीणवीर्यबलपुष्टिवर्द्धनं

अर्थ= मोती की भस्म मधुर है· शीतल है· नेत्ररोग·विषरोग· और राजयक्ष्मा·(खई) इनको नाश करे· क्षीणवीर्य और क्षीणबल का नाश करे·॥

अन्यच्च

कफपित्तक्षयध्वंसी कासश्वासाऽग्निमांद्यजित्
पुष्टिदंवृष्यमायुष्यंदाहघ्नंमौक्तिकंमतम्॥

अर्थ= कफ·पित्त·खई·श्वास·खांसी·मंदाग्नि· इनका नाश करे· पुष्टिकरे·वीर्य और आयुष्य को बढावे· तथा दाह कोजीते

मोतीकीद्रुति

मुक्ताफलानिसप्ताहं वेतसाम्लेनभावयेत जंबीरोद्रसमध्येतु धान्यराशौनिधापयेत पुटपाकेनतच्चूर्णंद्रवेतसलिलंयथा कुरुतेयोगराजोयं रत्नानांद्रावणे शुभं॥

अर्थ= मोतियों को अमलवेत के रस की भावना देकर नीबू के भीतर भर धान की राशि में गाड देवे· पीछे उसमें से निकाल पुटपाक करे· तो मोती का चूर्ण जल के समान द्रवे·॥

पन्नाकी परीक्षा

स्वच्छंगुरुस्निग्धं गात्रंचमार्दवंसमेतं अव्यंगं बहुरंगंशृंगारिमरकतं विभूयात शर्करिलं रूक्षमलिनं लघुहीनकांतिकल्मषं त्रासच्युतांविकृतांगंमर्कतंममरापिनोपभुंजीयेत॥

अर्थ= स्वच्छ·भारी·चिकना·मृदु·अव्यंग·बहुरंग· ऐसा पन्ना शृंगार कर्त्ता मनुष्यों को धारण करना चाहिये· और जो खरदरा· रूखा मलिन·हलका·कांतिहीन·कल्मषयुक्त·त्रासयुक्त·विकृतांग पन्ना को देवता भी नहीं धारण करे·॥

दूसरी परीक्षा

हरिद्वर्णंगुरुस्निग्धं स्फुटरश्मिरयंशुभं भासुरंभासनं तार्क्ष्यगात्रसमंसुसंमतम्॥

अर्थः जो पन्ना हरे रंग का भारी चिकना · कांतिवान् · तेजस्वी · दीप्तियुक्त · गरुडकांति के समान कांति वाला हो वह शुभ है॥

अशुभ पन्नाके ल०

कपिलंकर्कशंनीलं पांडुकृष्णंचलाघवे चिपिटंविकृतंकृष्णं रूक्षंतार्क्ष्यंनशस्यते॥

अर्थः कपिलवर्ण का · कठोर · नीला · पीला · काला · हलका · चिपिटा हुआ · विकृत · और रूखा ऐसा पन्ना अच्छा नहीं होता है·

शोधनप्रकार

शोधनंमारणंरत्नप्रकर्णेकथितंमया

अर्थः पन्ना का शोधन और मारण रत्न के प्रकर्ण में कह आयेहैं

गुण

मरकतंहिविषघ्नं शीतलंमधुरंसरं अम्लपित्तहरंरुच्यं पुष्टिदंभूतनाशनं॥

अर्थः पन्ना विष नाशक शीतल मधुर रेचक · अम्लपित्त का हर्त्ता रुचिकर्त्ता · पुष्टिकर्त्ता · और भूत नाशक है·

दूसरेगुण

ज्वरच्छर्दिविषश्वासं संतापाग्निक्षयमांद्यनुत दुर्नामपांडुशोफघ्नं तार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम्

अर्थः गरुडमणि (पन्ना) ज्वर · वमन · विष · श्वास · संताप · मंदाग्नि · बवासीर · पांडुरोग · सूजन · इनको दूर करे · तथा ओजधातु को बढावे ·॥

इति

वैडूर्यमणि

घृष्टंयदात्मनास्वच्छं स्वच्छायानिकषाश्मनि स्फु
टंप्रदर्शयेदेतद्वैडूर्यं जात्यमुच्यते॥

अर्थः जो वैडूर्यमणि घिसने से अपने तेज को न छोडे स्पष्ट दीखे.
उसको जातिवंत अर्थात् उत्तम जाननी वैडूर्यमणि काले और पीले
रंग मिली होती है॥

वैडूर्यकेदोष

विच्छायंमृच्छिलागर्भंलघुरूक्षंचसक्षतं सत्रा
संपरुषंकृष्णंवैडूर्यं दूरतस्त्यजेत॥

अर्थः जो वैडूर्य गतच्छाया और मिट्टी तथा पत्थर जिसमें दीखते
होवे तथा हलका और रूक्ष सछिद्र त्रासयुक्त खरदरा काला ऐसा
हो उसे दूर से ही त्याग दे॥

वैडूर्यकेऔरलक्षण

एकंवेणुपलाशपेशलरुचा मायूरकंठत्विषा
मार्जारेक्षणपिंगलाचविदुषा ज्ञेयंत्रिधाछाय
या यद्गात्रंगुरुतांदधाति नितरांस्निग्धंतुदोषोज्झि
तं वैडूर्यंविमलंवदंति सुधियः स्वच्छंचतच्छो
भनं॥१॥

अर्थः एकजाति का वैडूर्यमणि में वंशपत्र के समान मोर के कंठ
के समान. बिलाव के नेत्रों के सदृश पीला. ऐसा तीन रंगत का हो
ता है. तिनमें जो शरीर पर धारण करने से भारी मालूम होय. तथा
चिकना और दोष रहित स्वच्छ होवे. ऐसा वैडूर्यमणि बुद्धिवान उ
त्तमसमझे॥

वैडूर्यकेगुण

वैडूर्यमुष्णमम्लंचकफमारुतनाशनं गुल्मादिदोष

शमनंभूषितंचशुभावहं॥

अर्थ= वैदूर्यमणि उष्ण (गरम) · स्वादी · भूषणाई · तथा मंगलकर्त्ता · ऐसा है और कफ़ · वादी · तथा · गुल्मादि · दोषों का नाशक है॥

अशुद्धगोमेदकेल०

कुरंगश्वेतकृष्णांगरेखात्रासान्वितंलघु विच्छा यशर्करारंगगोमेदंविबुधस्त्यजेत्॥

अर्थ= जो गोमेदमणि हरिण केसे रंग की सफ़ेद · काली · रेखायुक्त · त्रासक · हलकी · छायारहित · खरदरी · और दुष्टरंग की को पण्डित त्याग देवे पीले रंग की मणि को गोमेदक कहते हैं,

उत्तमगोमेदकेलक्षण

पीतछागसमच्छायंस्निग्धंस्वच्छंसमंगुरु निर्दलंमसृणंदीप्तंगोमेदंशुभमष्टधा॥

अर्थ= गोमेद पीलेरंग की बकरी की कांति समान · चिकनी और स्वच्छ · समान · भारी · पत्तरहित · सचिक्कण · कांतिसहित · इन आठ लक्षणयुक्त शुभ है॥

गोमूत्राभंयद्गुरुस्निग्धशुक्लं शुद्धच्छायंगौरवं यच्चधत्तेहेमारक्तंश्रीमतांयोग्यमेतद्गोमेदाख्यंरत्नमाख्यांतिसंतः॥

अर्थ= जिस गोमेदमणि का गोमूत्र के समान रंग होवे · और भारी चिकनी · कुछ सफ़ेद शुद्धछाया युक्त गौरवतायुक्त · सुवर्ण के समान आरक्त ऐसे लक्षणोंयुक्त गोमेदमणि श्रीमतोंकेयोग्य कही है॥

गोमेदकेगुण

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्चवातकोपविकारनुत दीपनःपाचनश्चैव धृतोयंपापनाशनः॥

अर्थ- गोमेदमणि खट्टी गरम दीपन पाचन और धारण करने से पापों को नाश करता है और वात के सब विकारों को नाश करता है॥

माणिक्य

यद्रक्तंयदिपद्मरागमपितत्पीतातिरक्तंद्विधा जानीयात्कुरुविंदकंयदिरुणस्यादीशसौगंधिकम् तन्नीलंयदिनीलगंधकमिति ज्ञेयंचतुर्धायुधैः माणिक्यंकषघर्षणेप्य विकृतंरागेण जात्यंजगुः॥

अर्थ- लाल पद्मराग सदृश तथा पीलापन लिये अत्यंत लाल होवे ये दो प्रकार और जो हिंगुल के समान अरुण वर्ण होकर लाल कमल के समान होवे सो अति उत्तम है तथा जो नील वर्ण होवे सो नील माणिक्य ये दो प्रकार हुए ऐसे माणिक्य के चार भेद हैं इन चारों में भी जो कसौटी पर घिसने से विकृति को प्राप्त न होवे ज्यों का त्यों तेजवान रहे वो उत्तम जातिवंत माणिक्य है॥

प्रकारान्तर

स्निग्धंसुगात्रंरुचिरंदीप्तंस्वच्छंसुरंगंकुरुरक्तं इति जात्यंमाणिक्यंकल्याणंधारणात्कुरुते॥

अर्थ- जो माणिक गोल सुंदर झलझलाहट युत स्वच्छ उत्तम रंगदार तथा लाल होवे ऐसा माणिक जातिवंत जानना यह धारण करने से कल्याण करता है॥

अशुभ

विच्छायंमलपिहितमतिकर्कश शर्करंविधूमंच रागाविलंविरूपं लघुमाणिक्यंनधारयेद्धीमान्

अर्थः जो माणिक कुरंग और जिसके ऊपर अभ्र (बादल) के समान दोष होवें · खरदरा · शर्करायुक्त · विधूम रंग से मलीन · विरूप · हलका ऐसे माणिक को बुद्धिवान धारण न करे ॥

माणिकके गुण

माणिक्यं मधुरं स्निग्धं वातपित्तविनाशनं रत्नप्रयोगे प्रज्ञातं रसायनकरं परं ॥

अर्थः माणिक मधुर (मीठा) · चिकना · वातपित्त का नाशक · रत्नप्रयोग में श्रेष्ठ · और रसायन कारक है ॥

हरिनील

मृच्छर्कराश्मकलिलो विच्छायो मलिनो लघुः रूक्षः स्फुटितगर्तश्च वर्ज्यो नीलः सदोषकः

अर्थः हरिनील (इन्द्रमणि) मट्टी · कंकर · पत्थर · मिली होवे · बुरे रंगकी मलीन लघु · रूक्ष · फुटी · तथा गड्ढेवाली ऐसी नील दोष युक्त जानकी इसको त्याग देवे ॥

उत्तमनील

नानिम्नो निर्मलो गात्रे मसृणो गुरुदीप्तकः तृणग्राही मृदुर्नीलो दुर्लभो लक्षणान्वितः

अर्थः जो बीच में नीची न होवे · निर्मल · चकचकाहट युक्त · भारी तेजस्वी · तिनका को पकड़ने वाली मृदु · ऐसी नीलमणि लक्षणयुक्त दुर्लभ है ॥

नीलके वर्णभेद

सितशोणपीतकृष्णच्छाया नीलाः क्रमादिमे कथिताः विप्रादिवर्णसिद्ध्यै धारणमस्यापि वज्रवत्फलदम् ॥

अर्थः सफ़ेद · लाल · पीली · और काली इन चार प्रकार के रंगों से

नीलमणि क्रम से ब्राह्मण · क्षत्री · वैश्य · शूद्र · संज्ञक जाननी इसका धारण करना हीरा के समान फलदायक है ॥

नील (नीलम) की परी०

आनंदचंद्रिकाकारःसुंदरःशीरतप्तकःयःपात्रंरंज यत्याशुसजात्योनीलउच्यते ॥

अर्थः—जिस नील में आनंद होवे तथा जो चकचकाहट वाला सुंदर ऐसे नील को अग्नि में तपाकर दूध में डालने से पात्र नीलवर्णका दीखे सो उत्तम है ॥

जलनीलेंद्रनीलंच शक्रनीलंतयोर्वरं श्वेत गर्भितनीलाभंलघुतज्जलनीलकं काष्र्ण्यगर्भितनीलाभंसभारंशक्रनीलकं ॥

अर्थः—नीलम · जलनील और इंद्रनील · के भेद से दोप्रकार की है तिनमें इंद्रनील उत्तम है · उनके लक्षण कहते हैं · जो नील श्वेतगर्भित होवे · और हलकी होवे उसे जलनील कहते हैं और जो भीतर से काली होवे · नीलीप्रभा युक्त भारी हो उसको इंद्रनील कहते हैं · ॥

उत्तमोत्तमनील

एकच्छायंगुरुस्निग्धं स्वच्छंपिंडितविग्रहं मृदुमध्येलसज्ज्योति सप्तधानीलमुत्तमम ॥

अर्थः—एकछाया · भारी · चिकनी · स्वच्छ · गोल · बीच में कुछ नम्र · और ज्योतिवान् ऐसी सात प्रकार की नीलमणि उत्तम जाननी चाहिये ॥

अधम

कोमलंविहितंरूक्षं निर्भाररक्तगंधिच चिपिटाभं सरूक्षं च जलनीलं च सप्तधा · ॥

अर्थः- पांचवर्ण युत आधे भाग में संपूर्ण वर्णवाला आधे भाग में कोमल · रूखी · हलकी · रुधिर कीसी गंधवाली · चिपटी हुई ऐसे जलनील सात प्रकार की हैं

नीलके गुण

श्वासकासहरं वृष्यं त्रिदोषघ्नं सुदीपनं विषमज्वरदुर्नामपापघ्नं नीलमीरितं॥

अर्थः- श्वास · खांसी · त्रिदोष · विषमज्वर · बवासीर · इनको दूर करे · नया द्रव्य है · जठराग्नि को दीपन करे · पापों का नाश करे · नीलम में इतने गुण हैं ॥

पुखराज

पुष्परागं गुरुस्वच्छं स्थूलं स्निग्धं समं मृदु कर्णिकारप्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा॥

अर्थः- पुष्पराज (पुखराज) भारी · स्वच्छ · मोटी · चिकनी · समान मृदु · कनेर के पुष्प कीसी कांतिवाली · झलझलाहट वाली · ऐसी आठप्रकार की पुखराज शुभ हैं॥

अधम

निष्प्रभं कर्कशं रूक्षं पीतश्यामं नतोन्नतं कपिलं कलिलं पांडु पुष्परागं परित्यजेत॥

अर्थः- जो पुखराज निष्प्रभ · कड़ा · रूखा · पीला · काला · ऊंचा · नीचा · कपिल · (नीला · पीला · मिला हुआ रंग) कलिल · पांडुरंग · हो वह त्याज्य है ॥

मतान्तर

कृष्णं विन्द्वांकितं व्यंगं धवलं मलिनं लघु विच्छायं शर्कराभासं पुष्परागं सदोषलं॥

अर्थः- जो काला विन्दु · चिन्हित · व्यंगवाला · सफ़ेद · मलिन · हलका

बुरे रंग का छाया रहित कंकर के आकार ऐसा पुखराज दोषयुक्त त्यागने योग्य है॥

स्वच्छायपीतगुरु गात्रसुरंगश्लक्ष्णं स्निग्धंचनिर्मलमतीवसुवृत्तशीलं॥ यत्पुष्परागममलं कलयेद सुष्य पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्य सुखायुरर्थान्॥ अयं खलुपुष्परागो जात्यस्तथा चापरीक्षके रुक्तः॥

अर्थ॥ जो पुखराज स्वच्छ· पीला· भारी· उत्तम रंग दार· श्लक्ष्ण· चिकना· निर्मल· गोल· और तेजस्वी· होवे सो उत्तम है यह कीर्ति· सूरता सुख· आयु· और धन को बढावे· यह जातिवंत पुखराज है ऐसे जौहरी कहते हैं॥

पुखराजकेगुण

पुष्परागंविषच्छर्दिकफवाताग्निमांद्यजित् दाहकुष्ठार्शशमनंदीपनंलघुपाचनं॥

अर्थ॥ पुखराजमणि· विषबाधा· वमन· कफ· वातजरोग· मंदाग्नि दाह· कोढ· बवीसार· इनका नाश करे· दीपन करे· और पाचन करता है॥

बाजूबंद आदिमें नवरत्न

रखनेकाक्रम

प्राच्यादिक्कुलिशस्य मौक्तिकमणिराग्नेय्कोदक्षिणादिग्वार्धिप्रभवस्य नैर्ऋतककुभंगोमेदंसावारुणी नीलस्यांतदागी विदूरजमणेर्वायोः कुवेरस्यादिग्पुष्पस्यायहीरन्मणेरहरिच्छेषस्यशेषाहरित्॥

अर्थ॥ यदि दुष्टग्रह को बाजू अथवा चौकी आदि बनवावे तो नव

रत्नों को इस क्रम से रक्खे. हीरा पूर्व में. मोती अग्निकोन में. मूंगा दक्षिण में. गोमेद नैऋत्य में. नीलम पश्चिम में. वैदूर्य वायव्य में. पुखराज उत्तर में. पन्ना ईशानकोण में. और माणिक को बीच में जड़वाना चाहिये. इसी प्रकार अंगूठी आदि में भी नगों को जड़वाना चाहिये.॥

नवग्रह रत्नदान

माणिक्यंतुरवेः बुधस्य गरुडोद्गारोगुरोः पुष्प कंगोमेदंतमसः प्रवालमवनीसूनो विधोर्मौक्तिकं नीलंमंदगतेः कवेस्तुकुलिशं केतोर्विडालाक्षकं रत्नंरत्नविदोवदंति विहितंदानेथवा धारणे॥

अर्थ-सूर्य का माणिक. बुद्ध का पन्ना. बृहस्पति का पुखराज राहु का गोमेद. मंगल का मूंगा. चंद्रमा का मोती. शनिश्चर का नीलम. शुक्र का हीरा. केतु का वैदूर्य. इस प्रकार ग्रहों के प्रसन्नतार्थ रत्नों का दान अथवा धारण करना चाहिये. ऐसे रत्नज्ञाता कहते हैं.॥

पंचरत्न

पुष्परागंमहानीलं पद्मरागंचवज्रकं प्रोक्तंमरकतश्चैव पंचरत्नवराःशुभाः

अर्थ-पुखराज. नीलम. माणिक. हीरा. और पन्ना ये पांचरत्न सबरत्नों में उत्तम हैं.॥

सर्वशोधनतथामारण

वज्रवत्सर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा प्रोक्तंनसारणंतेषां रत्नज्ञैःस्थगेवही

अर्थ-सब माणिक आदि रत्नों का शोधन और मारण हीरा के स

मान जानना चाहिये इनका पृथक मारन नहीं कहा॥

उपरत्न

वैक्रांतःसूर्यकांतश्च चंद्रकांतस्तथैवच राजाव
र्त्तोलालसंज्ञः पेरोजाख्यस्तथापरे नीलपीता
दिमणयोप्यन्येविषहराहिये वन्ह्यादिस्तंभका
येचतेसर्वेहिपरीक्षकैः उपरत्नेषुगणितामणयो
लोकविश्रुताः रत्नादीनामलाभेतु ग्राह्यंतस्यो
परत्नकं मौक्तिकस्याप्यभावेतु मुक्ताशक्तिः
प्रयोजयेत्॥

अर्थः- वैक्रांत॰ सूर्यकांत॰ चंद्रकांत॰ राजावर्त्त॰ लाल॰ पिरोजा
और नील तथा पीतवर्ण की मणि॰ और विष के हर्ण कर्त्ता तथा
अग्नि के स्तंभक॰ जो रत्न हैं वो सब रत्न परीक्षकों ने उपरत्नोंकी
गणना किये हैं॰ जहां रत्न नमिलें वहां उनकी प्रतिनिधि में उस
का उपरत्न लेना योग्य है॰ मोती के अभाव में मोती कीसीप
लेनी चाहिये॰॥

उपरत्नोंकेगुण

गुणायथैवरत्नानां सुपरत्नेषुतेतथा तेषुकिंचित्ततो
हीनाविशेषोयमुदाहृतः॥

अर्थः- जो गुण रत्नों में हैं वही गुण उपरत्नों में हैं परंतु रत्नों
के गुणों की अपेक्षा इनमें किंचित न्यून गुण हैं॰ यह विशेष
कहा है॰॥

वैक्रान्तकीउत्पत्ति

दैत्येन्द्रोमाहिषःसिद्धः महदेहसमुद्भवः दुर्गाभ
गवातिदेवीनंशूलेनविमर्द्द यत तस्यरक्तंतुपाति

तंयत्रयत्रास्थितंभुवि तत्रतत्रतुवैक्रांत वज्रा कारंमहारसम् विंध्यस्यदक्षिणेचास्ति उत्तरेचा स्तिसर्वतः विकृंतयातिलोहानि तेनवैक्रांकः स्मृतः॥

अर्थ॰ दैत्यों का पती महिषासुर और देवताओं का घोर संग्राम हुआ॰ उसको दुर्गा भगवती देवी॰ शूल से मारती हुई॰ उस शूल के लगने से महिषासुर की देह से जहां२ पृथ्वी में रुधिर गिरा वहीं २ वैक्रांतिमणि हीराके आकार महारस प्रगट हुई॰ यह वैक्रांतिमणि विंध्याचल के दक्षिणभाग में तथा उत्तर में सर्वत्र प्राप्ति होती है॰ यह लोहे को विकृत करती है इसीसे इसको वैक्रांत कहते हैं॥

मतान्तर

देव्याहतेमहादैत्ये माहिषासुरसंज्ञके तद्देहरुधिरोद्भूता विंदवोयत्रयत्रहि पर्वतेषुविकारास्तु वैक्रांतोइतिविश्रुता॥

अर्थ॰ जब श्रीभगवतीजी ने महिषासुर दुष्ट दैत्य को मारा॰ उसकी देह से जो रुधिर की बूंद जिस पर्वत में गिरी॰ उसी पर्वत में रक्त के विकार से वैक्रांतिमणि प्रगट हुई॰ यह रसेन्द्रकल्पद्रुम में लिखा है॥

तथाच

दैत्येन्द्रोमाहिषः सिद्धः तस्यदेहात्समुद्भवः अवध्यः सर्वदेवानां वलोनाममहासुरः त्रिदिवस्योपकारार्थं त्रिदिशेःप्रार्थितोमरवे देवैःसमस्तैः शक्राद्यैः स्तुतिः दुर्गांप्रचक्रमुः तदादेवी भगवतीतंवज्रेण विनाशयत् तस्यरक्तंतुपतितं

यत्रयत्रास्थितंभुवि तत्रतत्रतुवैक्रांतं वज्राकारं महाद्युरं वज्रसंज्ञाकृतोदेवैर्नामप्राप्तोस्तिमुत्त मम् संभूत्वारत्नकूटानि वज्रेणहतमस्तकः भू द्विवर्णोत्तमो जातोभुजयोः क्षत्रियः स्मृतः वैश्या नाभिप्रदेशेतु पादेशूद्रस्तथैवच सुरदैत्योरगैः सिद्धैर्यक्षगंधर्वकिंनरैः मुकुटेकटिसूत्रेच कट कादिविभूषणे स्वाचिताऽनेकरत्नानां त्रैलोक्येष्व पिदुर्लभाः॥

अर्थः दैत्येंद्र महिषासुर सिद्ध की देह सैं उत्पन्न हुआ सर्व देवता ओं से अवध्य ऐसा बलनामा महा असुर उसको स्वर्ग के उपका रार्थ संग्राम में सर्व इंद्रादिक देवता दुर्गा की स्तुति करते हुए उस समय देवी भगवती देवताओं के प्रसन्नतार्थ उसको वज्र से मारती हुई. उस समय उसकी देह से जो रुधिर जहां २ पृथ्वी और पर्वतों में गिरा. वहां २ हीरा के समान वैक्रांतमणि प्रगट हुई इस की देवताओं ने वज्र संज्ञा की. इस प्रकार इसका उत्तम नाम पडा. वज्र से जो उस दैत्य का मस्तक तोड़ा सो रत्न स्वचित पर्व तों में इसकी उत्पत्ति हुई. जो उस दैत्य के मस्तक के रुधिर सेब ना वो ब्राह्मणवर्ण वैक्रांत प्रगट हुआ. और भुजा से क्षत्रीवर्णका नाभि से वैश्यजाति का. और पैरों के रुधिर से शूद्रजातीय वैक्रां त उत्पन्न हुआ देवता. दैत्य. सर्प. सिद्ध. यक्ष. गंधर्व और किन्न र ये मुकट. कटिसूत्र और कड़े आदि भूषणों में अनेक रत्नों के साथ इस वैक्रांत को धारण करते भये.॥ यह रसेंद्रपद्मकोश में लिखा है॥

शुभवैक्रांतकेलक्षण

अष्टास्रश्चाष्टफलकः षट्कोणोमसृणोगुरुः शुद्ध

मिश्रितवर्णैश्च शुक्लोवैक्रांतमुच्यते॥

अर्थः अष्टास्र आठ फलक छः कोने चकचकाहट भारी रङ्ग मिले हुए वर्ण का ऐसा वैक्रांत उत्तम कहाता है॥

वैक्रांतकेवर्ण

श्वेतोरक्तश्चपीतश्चनीलपारावतच्छविः श्याम लः कृष्णवर्णश्च कर्बुरश्चाष्टधाहिसः॥

अर्थः सफ़ेद लाल पीला नीला कबूतर के रंग का श्याम काला और कर्बुर (विचित्रवर्ण) ऐसा आठ वर्ण का वैक्रांतमणिहोता है॥

मतान्तर

वैक्रांतश्वेतपीतादिभेदेनाष्टप्रकारकं स्वर्णरूप्यादिकरणेस्ववर्णः श्रेष्ठमतः वैक्रांत कृष्णवर्णो यः षट्कोणोवसुकोणकः मसृणोगुरुतायुक्तो निर्मलः सर्वसिद्धिदः॥

अर्थः वैक्रांतमणि सफ़ेद पीले आदि रंगों करके आठ प्रकार की है सुवर्ण रूपा आदि करने में अपने २ वर्ण का उत्तम होता है जो वैक्रांत काले रंग का छः तथा आठ कोने वाला हो और चकचकाहट युक्त भारी और निर्मल हो वह सर्व सिद्धिदायक होता है॥

अन्यप्रकारान्तर

श्वेतःपीतस्तथारक्तो नीलपारावतप्रभः मयूर वालसदृशश्चान्योमरकतप्रभः देहसिद्धिकरं कृष्णं पीतपीतासितं सितं सर्वार्थसिद्धिदंरक्तं तथामरकतप्रभं शेषद्वेनिः फलेवर्ज्यंवैक्रांत मितिसप्तधा॥

अर्थ॥ सफ़ेद ∙पीला ∙ लाल ∙ नीला ∙ कबूतर के रंग का ∙मोर कीसी गरदन कासा ∙ पन्ना के सदृश हरा ∙ इनमें काला देह की शुद्धी करता है ∙ सुवर्ण के बनाने में पीला ∙ चांदी के बनाने में सफ़ेद और सर्व सिद्धी के निमित्त लाल ∙ और हरा वैक्रांतमणि लेना योग्य है ∙ बाकी दो रंग का अर्थात् नीला और कबूतर के रंग का निस्फल है सो वर्जित है ∙ ऐसा वैक्रांतमणि सात प्रकार का जानना चाहिये

वैक्रांतग्रहणकीविधि

यत्रदेशेस्थितंचैवं वैक्रांतंतत्रभैरवं विनायकंचसंपूज्य गृन्हीयाच्छुद्धमानसः॥

अर्थ॥ जिस स्थान में वैक्रांत होवे ∙ उस जगह भैरव और गणपति का पूजन करना शुद्ध मन से वैक्रांत को ग्रहण करे ∙ किसी पुस्तक में(सुमुहूर्त्तेततः कार्य संपूज्य बलि पूर्वकं) यह लिखा है ∙ अर्थात् शुभ मुहूर्त में गणपति और भैरव का बलि आदि से पूजन कर पीछे वैक्रांत मणि को निकाले॥

वैक्रांतकाशोधनऔरमारण

वैक्रांन्तवज्रवत्शोध्यं नीलंवालोहितंतथा हयमूत्रेतुतत्सेच्यंतप्तंतप्तंद्विसप्तधा ततस्तुमेषशृंग्युक्त पंचांगेगोलकेक्षिपेत् पुटेन्मूषापुटेरुध्वा कुर्यादेवंचसप्तधा वैक्रांतभस्मतांयाति वज्रस्थानेनियोजयेत्॥

अर्थ॥ वैक्रांत नील हो चाहे लाल दोनों को हीरा के समान शोधन करे ∙ पीछे उस वैक्रांतमणि को तपा २ कर चौदहवार घोड़े के मूत्र में बुझावे ∙ पीछे मेढासिंगी के पचांग को लाकर कूटपीस गोलाकार कर उसमें वैक्रांत को रख देवे ∙ फिर मिट्टी के सरवों में रख ऊपर मिट्टी करके आरने उपलों में गजपुट से फूंक देवे ∙ इस प्रकार

सात वार करने से वैक्रांतमणि की भस्म होवे · यह भस्म हीरा के अभाव में देवे ·॥

दूसराप्रकार

वैक्रांतवज्रवच्छोध्यं ध्मातं सिक्तं नृमूत्रके च
ज्वलन्मृतिमायाति वज्रस्थानेप्रयोजयेत्

अर्थः वैक्रांतमणि को हीरा के समान शोधन करे · तथा वैक्रांत को अग्नि में तपाकर · मनुष्य के मूत्र में बुझावे · और वैक्रांत का मारण हीरा के सदृश होता है · इस भस्म को हीरा के अभाव में देना चाहिये

तीसराप्रकार

कुलित्थक्वाथसंस्विन्नो वैक्रांतः परिशुध्यति म्रि
यतेष्टपुटैर्गंध निंबुकद्रवसंयुतम्॥

अर्थः वैक्रांत को कुलथी के काढ़े में औटाने से शुद्ध होवे · और नींबू के रस में गंधक को पीस वैक्रांत को उसमें लपेट अग्नि देवे इस प्रकार आठ पुट देने से वैक्रांत की भस्म होवे ·॥

चौथाप्रकार

वैक्रांतकस्त्रिदिनं विशुद्धो संस्वेदितो क्षारपटू
निदत्वा अम्लेषुमूत्रेषु कुलित्थरंभा नीरेयवाको
द्रववारिपक्कः॥

अर्थः वैक्रांतमणि · क्षारवर्ग · लवणवर्ग · अम्लवर्ग · मूत्रवर्ग कुलथी का काढा · केलेकारस · अथवा कोदों के काढे में तीन २ दिन स्वेदन करने से वैक्रांत शुद्ध होवे ·॥

पंचमप्रकार

वैक्रांतेषु चतसेषु हयमूत्रं विनिक्षिपेत् पौनपु
ण्येनवाकुर्यात् द्रवं दत्वा पुटं तनु भस्मीभूतं तु

वैक्रांतं वज्रस्थाने नियोजयेत्

अर्थः वैक्रांत को तपाकर उसमें थोडा सा घोडे का पिशाब डाल देवे · इस प्रकार वारंवार करे · और जब खूब गरम होजाय तब थोडा थोडा घोडे का मूत्र डाले तो वैक्रांतमणि भस्म होवे · इस भस्म को हीरा के अभाव में देवे ·॥

वैक्रांतानुपान

भस्मत्वंसमुपागतोविक्रांतको हेम्नास्मृतेनान्वितो पादांशेनकलाज्यवल्लसहितो गुंजोन्मितः सेवितः यक्ष्माणंज्वरणंचपांडुगुदजं श्वासंचकासामयं दुष्टांचग्रहणीमुरः क्षतमुखान्रोगान्जयेद्देहकृत्॥

अर्थः वैक्रांत की भस्म एक रत्ती · सुवर्ण की भस्म चौथाई रत्ती · पीपल · मिरच और मक्खन · इनके साथ खाने से क्षय (खई) ज्वर · पांडुरोग · बवासीर · श्वास · खांसी · असाध्य संग्रहणी · और उरःक्षत इत्यादि रोगों का नाश करे ·॥

सूतभस्मार्द्धसंयुक्तः नीलवैक्रांतभस्मकं सूतभस्मत्वसुभयो स्तुलितंपरिमर्दितं क्षौद्राज्यसंयुतम्प्रातर्गुंजामात्रंनिषेवितं निहंतिसकलान्रोगान्ष दुर्जयानन्यभेषजैः त्रिसप्तदिवसैर्नृणां गंगांभइवपातकं॥

अर्थः पारे की भस्म एक भाग · नीलवैक्रांत की भस्म आधाभाग दोनो के समान मरी अभ्रक लेकर इन सबको शहद और घृत में मिलाकर प्रातःकाल एक रत्ती नित्य खाय तो संपूर्ण दुर्जय (असाध्य) रोगो को दूर करे · इक्कीस दिवस सेवन करने से गंगाजल के समान पवित्र करे ·॥

वैक्रांतभस्मकेगुण

वैक्रांतवज्रसदृशो देहलोहकरोमतः विषघ्नो रसराजस्य ज्वरकुष्टक्षयप्रणत् वैक्रांतस्तु त्रिदोषघ्नःषड्सो देहदार्ढ्यकृत पांडूदरज्वरश्वास कासयक्ष्मप्रमेहनुत॥

अर्थः वैक्रांत के गुण हीरा के समान हैं. और देह को दृढ करे. पारे का विष दूर करे. ज्वर. कोढ. खई. त्रिदोष. पांडुरोग. उदररोग श्वास. खांसी. क्षय. इनको नाश करे. तथा प्रमेह को जीते. यह षट्रस युक्त है॥

वैक्रांतकासत्व

पातन

सत्वपातनयोगेन मर्दितश्चवटीकृतः मूषास्थोघटिकाध्मातो वैक्रांतःसत्वमुत्सृजेत्

अर्थः प्रथम जो सत्वपातन के योग कह आये हैं उनमें वैक्रांत को मिलाकर गोला करे. उस गोले को मूस में रख एक घडी पर्य्यंत प्रचंड अग्नि में धमावे. तो वैक्रांतमणि सत्व को छोड देवे॥

दूसराप्रकार

मोक्षमोरटपालाश क्षारगोमूत्रभावितं वज्रकंदानिशाकल्कं फलचूर्णसमन्वितं तत्कल्कंटंकणंलाक्षाचूर्णं वैक्रांतसंभवं शरावेण समायुक्तं मेषशृंगीद्रवान्वितं पिंडितं मूकमूषास्थं ध्मापितंच हठाग्निना तत्रैवपततेसत्वं वैक्रांतस्यनसंशयः॥

अर्थः मोक्षवृक्ष (मोखावृक्ष) मोरट (मोरा या रवैर इति दक्षिपी

भाषा प्रसिद्ध) और ढाक इन तीनों के खार को गोमूत्र की भावना देवे तदनंतर वज्रकंद (थूहर की जड़) हलदी का कल्क इनमें कंकोली के चूर्ण को मिलाकर पीछे इसमें मेढासिंगी का रस मिलाकर गोला बनावे उस गोले को वज्रमूषा में रख प्रचंड अग्नि में धमावे तौ उसी जगह वैक्रांत का सत्व निश्चय निकले॥

तीसराप्रकार

वैक्रांतस्य पलंचैकं कर्षैकंटंकणस्यच रविक्षीरैर्दिनंभाव्यं मर्द्यंशिग्रुद्रवैर्दिनं गुंजापिण्याक वन्हीनां प्रतिकर्षाणियोजयेत् एतेनगुटिकां कृत्वा कोष्ठयंत्रेधमेद्दृढं शंखकुंन्देंदुसंकाशं सत्ववैक्रांतजंभवेत्

अर्थ - वैक्रांत चार तोले सुहागा एक तोले इन दोनों को एक दिन आक के दूध में घोटे फिर सहजने के रस में एक दिवस घोटे पीछे घूंघची खल तथा चित्रक इनको एक २ तोला लेवे उसमें वैक्रांतिमणि को खरल करे पीछे गोला बनाकर उस गोले को कोष्ठयंत्र में रखकर वंकनाल यानी धोंकनी से धोंके तौ शंख कुंदपुष्प और चंद्रमा के समान सफ़ेद सत्व निकले॥

संपूर्णरत्नोकाशोधन

मारण

स्वेदयेद्दोलिकायंत्रे जयंत्याःस्वरसेनच माणिमुक्ताप्रवालानां यामेकंशोधनंभवेत् कुष्माण्ड्यांस्तंडुलीयेन स्तन्येनचानिषेचयेत् प्रत्येकं सप्तवेलंच तप्ततप्तानिकृत्स्नशः मौक्तिकानि

प्रवालानि तथारत्नान्यशेषतः क्षणाद्विविध वर्णानि म्रियंतेनात्रसंशयः उक्तमादिकंच मुक्ताः प्रवालानिचमारयेत् वज्रवत्सर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा॥

अर्थ॥ सूर्यमणि · मोती · मूंगा · इनको दोलायंत्र मे डालकर जयंती (अरनी) के रस में एक प्रहर स्वेदन करने से शुद्ध होते हैं॥ अथवा हीरा · पन्ना · पुखराज · (पीलेरंग की मणि) माणिक (लाल रंग की मणि) इसको फ़ारसी में आफत कहते हैं इंद्रनील (स्यामतालिये नीले रंग की) गोमेद (इसका रंग पीलायी लियेलाल) होता है · वैदूर्य (इसकी जमीन हरी ऊपर सफ़ेद तीनसूत ऊपर होते हैं) मोती · और मूंगा ये नवरत्न हैं (हीरा को फारसी में अलमासकहते हैं। और खोटे हीरा को भाषा में कासुला कहते हैं · संस्कृत मे खोटे हीरा को वैकांत कहते हैं · और खोटी नीलमणि को लीली कहते हैं · खोटा माणिक नामड़ा कहलाता है · खोटा पुखराज करकन कहाता है) घीगुआर के रस में चौलाई के रस में तथा स्त्री के दूध में सात २ वार गरम कर कर बुझाने से मोती · मूंगा तथा और अनेक प्रकार के रत्न एक क्षण में भस्म होवे · तथा मोती · मूंगा आदि को सीनामकवी के समान मारण करे · अथवा पन्ना · पुखराज · माणिक · इंद्रनील · गोमेद · वैदूर्य · मोती · और मूंगा आदि का हीरा के समान शोधन और मारण करे॥

रसोपरस

सिद्धंपारदभस्मकंच विविधानधातूंश्च लोहानिचप्राहुः किंचमणीनतश्च सकलानसंस्कारः सिद्धिदानयत्संस्कार विहीनमेषुहिभवेद्यद्

न्यथासंस्कृतं तन्मर्त्यंविषवद्विहंति नादिह शो
यावुधैः संस्क्रिया ॥१॥ यत्संस्कृतानरसभगुणा
नथचान्यथावे दोषांश्चयद्यपि दिशंतिरसाद
योमी याश्चेहमांतिस्वलुसंस्कृतं यत्तदेतन्ना
त्रास्यधापि वहुविस्तर भीतिभाग्भिः॥२॥

अर्थः पारा · अभ्रक · सप्तधातु · सप्तउपधातु · रत्न · उपरत्न · ये संपूर्ण संस्कार के करने से गुणदायक होती हैं · यदि ये धातु · उपधातु · और रत्नादिक संस्कार रहित होवें अथवा इनका अन्यथा संस्कार हुआ होवे · तो ये मनुष्य के विष के तुल्य प्राण हरण करते है · रसोपरसादि आदि के विधि पूर्वक संस्कार करने से · जो गुण करते हैं सो और अविधि संस्कार करने से अवगुण करते हैं · सो सव शास्त्र में लिखे हैं · उन सव कोइस ग्रंथ विस्तार(वढने)के भय से नही लिखते ॥

सूर्यकांत

शुद्धःस्निग्धोनिर्व्रणो निस्तुषस्तुयोनिर्घृष्टोव्यो
मनैर्मल्यमेति यः सूर्यांशस्पर्शनिष्ठ्यूतवन्हिजा
त्यः सोयंचकांतेसूर्यकांतः

अर्थः सूर्यकांत मणि चिकनी · व्रणरहित · निस्तुष · घिसने में आकाश के समान स्वच्छ होय · और सूर्य की किरण में रखने से जल उठे · उसको जातिवंत सूर्यकांत कहते हैं ॥

गुण

रविकांतोभवेदुष्णो निर्मलश्चरसायनः वातश्लेष्महरोमेध्यः पूजना द्रवितोषकृत॥

अर्थः सूर्यकांत मणि गरम है · निर्मल है · रसायन · और वादी तथा कफ इनका नाश करे · बुद्धि को वढावे · इसके पूजन से सूर्य

प्रसन्न होते हैं ॥

चंद्रकांत

स्निग्धंश्वेतंपीतभासाश्मतद्धर्णोचित्तंस्वेच्छया
यन्मुनीनांयच्चस्राव यातिचंद्राशुसंगाज्जात्यार
लंचंद्रकांताख्यमेतत ॥

अर्थ = चंद्रकांतमणि चिकनी · सफ़ेद · अथवा पीली · मुनीश्वरों के अंतःकरण के समान निर्मल · तथा चांदनी में रखने से उसमें से जल स्रवने लगे · वह जातिवंत जाननी ॥

गुण

चंद्रकांतस्तुशिशिरः स्निग्धः पित्तास्रतापनुत्
शिवप्रीतिकरः स्वच्छोग्रहालक्ष्मी विनाशनः

अर्थ = चंद्रकांतमणि शीतल · चिकनी · शिव की प्रीति बढाने वाली तथा स्वच्छ होती है · और पित्त रक्तदाह · ग्रहपीडा और अलक्ष्मी की बाधा इनको दूर करे ॥

राजावर्त्त

राजावर्त्तोल्परक्तोरुनीलिमामिश्रितप्रभः गुरु
त्वमसृणः श्रेष्ठस्तदन्योमध्यमः स्मृतः —

अर्थ = राजावर्त्त (रैंटी) थोड़ा लाल कुछ नीलता मिश्रित भारी चकचकाहट युक्त ऐसा उत्तम होता है · इससें विपरीत मध्यम · जानना चाहिये · राजावर्त्त को दक्षिणीभाषा में गोविंदमणि कहते हैं ॥

निर्गारमासितमसृणं नीलंगुरुनिर्मलं बहुच्छा
यं शिखिकंठसमंसौम्यं राजावर्त्तंवदंतिजात्य
मणि ॥१॥ रंगावर्त्तोद्विधाप्रोक्तगुटिकाश्चूर्णभेदतः —

अर्थ = राजावर्त्त गदेला रहित · काला · चिकना · नीलवर्ण · भारी

निर्मल · बहुत काया युक्त · मोर कीसी गर्दन का रंग · सौम्य · ऐसा राजावर्त जातिवंत होता है · गुटिका और चूर्ण के भेद से राजावर्त्त दो प्रकार का है ·॥

गुण

प्रमेहक्षयदुर्न्नाम पांडुश्लेष्मानिलपहः दीपनः
पाचनोवृष्यो राजावर्त्तोरसायनः राजावर्त्तो गुरुः
स्निग्धोशिशिरः पित्तनाशनः सौभाग्यंकुरुतेनॄ
णांभूषणेषु प्रयोजितः॥

अर्थ = प्रमेह · खई · बवासीर · पांडुरोग · कफ और बादी का रोग इनका नाश करे दीपन · पाचन · वृष्य और रसायन भारा · चिकना शीतल · पित्तनाशक · भूषण में धारण करने से पुरुषों को सुंदर ता देने वाला · ये राजावर्त्त में गुण हैं॥

राजावर्तकाशोधन

शिरीषपुष्पार्द्रकरसैः संतप्तस्त्वनिमज्जितः सप्तवारं
भवेत्शुद्धोराजावर्त्तोनसंशयः॥

अर्थ = सिरसके फूल का रस और अदरक इनके रस में राजावर्त्त को तपाकर सातवार बुझाने से शुद्ध होता है ·॥

दूसराप्रकार

निंबुद्रवैः सगोमूत्रैः सक्षारैः स्वेदितो खलु द्वित्रि
वारेणशुध्यंति राजावर्त्तादिधातवः॥

अर्थ = राजावर्त्त को गोमूत्र और खारयुक्त नीबू के रस में दोतीन वार · स्वेदन करने से शुद्धी होवे · आदि शब्द से मोती · मूंगा · फीरोजाआ आदि भी शुद्ध होते हैं ·॥

राजावर्त्तकामारण

लुंगांबुगंधकोपेतो राजावर्त्तोविचूर्णितः पुटना

त्सप्तवारेण राजावर्तोमृतो भवेत्॥

अर्थः- राजावर्त के चूर्ण में गंधक मिलाकर बिजौरे के रस में घोट शराव में रख गजपुट में फूंक देवे. इस प्रकार सातपुट देने से राजाव र्त की भस्म होवे॥

राजावर्तका सत्वपातन

राजावर्तस्य चूर्णं तु कुनटीघृतमिश्रितं विपचेद
यसेपात्रे महिषीक्षीरसंयुतं सौभाग्यपंचगव्येन
पिंडीबद्धं तु कारयेत् ध्मापितं खदिरांगारैः सत्वं
मुंचातिशोभनम्॥

अर्थः- राजावर्त के चूर्ण में मनसिल और घृत मिलाकर लोहे के पात्र में दूध में मिलाकर पकावे. तदनंतर सुहागा पंचगव्य (दूध. दही. घृत. गोमूत्र. गोवर.) से पूर्वोक्त राजावर्त का गोला वनाकर घरिया में रखकर खैरसार के कोलों में बंकनाल से धोंके तो राजा वर्त सत्व को छोड़े॥

पिरोजा

पिरोजं हरितस्यामं भस्मांगं हरितं द्विधा पिरोजं सु
कषायं स्यान्मधुरं दीपनं परं स्थावरं जंगमं चैव
संयोगाच्च यथाविषं तत्सर्वं नाशयेच्छीघ्रं शूल
भूतादिदोषजं॥

अर्थः- पिरोजा हरेरंग का पत्थर होता है. वह भस्मांग तथा हरेरंगका ऐसे दो प्रकार का है. यह कसेला. मधुर. तथा दीपन है. संयोग से स्थावर जंगम विष. शूल. तथा भूतादिकों का विष नाश करता है॥

इति

स्फटिक

यद्गंगातोयबिंदुच्छविमनलतमं निस्तुषंनेत्र्य
हृद्यं स्निग्धंशुद्धांतरालं मधुरमतिहिमंपित्तदा
हास्रहृत् पाषाणेर्नीनिघृष्टं स्फटिकमपिनिजास्व
च्छतांनैवजह्यात्तज्जात्यं जात्वलभ्यंशवियमपि
चिनुतेशैवरत्नंचरत्नम्॥

अर्थः जो स्फटिकमणि गंगाजल के समान स्वच्छ · अग्नि केस मान चकचकाहट · बिंदुरहित · नेत्र और हृदय को हितावह · चिकनी · जिसके भीतर का भाग शुद्ध · मधुर · और अत्यंत शीतल ऐसा हो · पित्तदाह रुधिर के विकार को शांति करे · पत्थर पर घिसने से जिसकी स्वच्छता नजाय · ऐसे स्फटिक को जातिवंत जानना चाहिये · यह रत्नों में एक शिवप्रिय रत्न जानना चाहिये ॥१॥

स्फटिककेगुण

स्फटिकःसमवीर्यः स्यात्पित्तदाहार्तिशोषनुत्
तस्याक्षमालाजपतो धत्तेकोटिगुणंफलम् ॥

अर्थः स्फटिकमणि · समवीर्य है · तथा पित्त दाह और शोषको नाश करे · इसकी माला से जप करने से कोटि (करोड) गुणा फल होवे ॥

सर्वरत्नोंकेलक्षण

स्यामंस्यादिन्द्रनीलस्त्वतिमसृणतनुश्चातिगा
रुत्मतःस्यान्नीलच्छायाऽतिदीप्तोप्ययपिहरि
माणिः सूर्यतप्तोऽग्निमुकस्यात चंद्रांशुस्पर्शीतो
भःस्रवत्सिशशिमणिः पुष्परागस्तुपुष्पप्रस्त्यः
श्रीवज्रमुच्चैर्घनसहमभिनोसांविशस्त्रोहापिंडे

वैडूर्यंयच्छिडालेक्षणरुचिगदितंस्याच्चगोमेद रत्नं गोमूत्राभंविधूमंज्वलदनलनिभंपद्मरा गं वदंतिमुक्ताशंखप्रवालंसरिदधिपतिजं वि प्रवाविख्यातमेत द्राजावर्त्तंतुपीतारुणमृदुसुर भिसौणिजातान्यमाहुः॥

अर्थः इंद्रनीलमणि· स्यामवर्ण· और अत्यंत चिकनी होती है· गरुडमणि· चिकनी और नीलवर्ण· तथा चकचकाहट लिये हो ती है· हरिन्मणि· सूर्य के तेज से अग्नि को प्रगट करे· चंद्रकांत मणि· चंद्रमा की किरण से स्रवती है· पुष्पराग· फूल के पराग के समान पीला होता है· हीरा· को निहाई (लोहे का चौका) पर रखकर घन की चोट लगाने से निहाई तथा घन मे प्रवेश हो जावे· वैडूर्यमणि बिलाव के नेत्रो कीसी कांति वाली होती है· गोमेद· गोमूत्रवर्ण· पद्मराग· निर्धूम अग्नि के समान होता है· और· मोती· शंख· तथा मूंगा· समुद्र मे होते है· और सब विख्या त है· तथा राजावर्त्त· पीत· और अरुण वर्ण तथा चिकना· औ र स्वच्छ होता है· ये सब खानिज है· अर्थात् खान से प्रगट होते है॥

सत्वपातनार्थंसामान्यशोधन

महारसानांसर्वेषांरसानांशुद्धि रुच्यते तथाचो परसानांच शास्त्रदृष्टेनवर्त्मना वंध्याकंदंपीत वेनी स्नुह्यर्कावर्त्तवायसी वारिपिप्पलिकाचैव कदलीसपुनर्नवा कोशातकीमेघनादो वज्रकं दरघंलांगली एषांचैवरसैःसम्यक् पटुक्षीरा म्लसंयुतैः भावितव्यारसाःसर्वे चोपविषापरि। क्रमात् महारसाश्चसर्वेऽपि शुद्ध्यंत्युपरसास्तथा

पश्चाध्मातादिमुंचंति सत्वंच ह्यलसुत्तमम्॥

सत्वपातन

गुडगुग्गुलसौभाग्यं लाक्षासर्जरसः पटु ऊर्णा गुंजाक्षुद्रमीनम स्थीनिशशकस्यच तथामध्वा ज्याविण्याकं तुल्यपेष्यमजापयैः सर्वतुल्यंच धात्वास्यं भूनागाम्लिकाथवा कांतपाषाण चूर्णवा कठिनापि रसाश्चते मर्दयेन्माहिषैःपं च हृदंसर्वगुटीकृताः कर्षमात्रप्रमाणाश्च को ष्ठयंत्रेहृढ्धमे दंगारैः खादरोद्भवैःनिवारथम नाध्रुवं निर्मलंपततेसत्वं असाध्यस्याप्यसं शयः॥

सत्वपड़नेकीपरीक्षा

शकदोम्रः सशब्दश्च यदावैस्वान्नरोभवेत् त दासत्वंतुपतितं जानीयान्नान्यथाक्वचित् तथा ग्नौर्दक्षिणावर्तेसत्वंप्रपतितंवदेत्॥

सत्वकेनम्रकरनेकीविधि

यदिसत्वंतुकाठिनं भवेत्तन्नम्रढ्ढक्रिया सत्वंम मस्तसंग्राह्यं कार्याकिट्टविवर्जयेत् निक्षिप्य वज्रमूषायां वंकनालेनसंधमेत स्तोकंस्तो कंदवन्नागं समाहृत्रिचतुर्गुणं यावत्सकोम लंतावत्समत्वंयोजयेद्रसे॥

मकारान्तर

अथवाकठिनंसत्वं वज्रमूषांतरेस्थितं समर्द कणसौवीरपीष्टं द्रोणपुष्पीरसेनवै खादिरांग रकेध्मातं ढाल्यंतैलेनवै कोमलंजायते

मत्वंनात्रकार्यविचारणात् ॥

नम्नसत्व के खाने और पारे में मिलाने का

प्रमाण

नसत्वंकठिनंस्हते देहेवाकमतेक्वचित तस्मा
त्सत्वंचलोहंच मृदुंकृत्वाप्रयोजयेत ॥

इतिरसार्णवे

सत्वपातनकाले वह्नि लक्षणम ॥

आवर्त्तमानेकनकेपीता नारेसितप्रभा शुल्वे
नीलनिभातीक्ष्णे कृष्णवर्णासुरेश्वरी वंगेज्वा
लाकपोताभा नागेमालिनधूसरा शैलेतुधू
सरादेवि आयसेकपिलप्रभा अयस्कांतेधू
म्रवर्णा शस्यकेलोहिताभवेत वज्रेनानावि
धाज्वाला त्वासत्वेपांडुरप्रभा ॥

शल्बसत्वकीपरीक्षा

नाविस्फुलिंगर्नबुद्बुदाय दायदानचेषापटलं
नशाब्दःस्मूषागतरत्नसमास्थिरंच नदावेशाल्बं
प्रवदंतिसत्वं ॥

तथाच

शल्वेदीप्तिःसशब्दःस्यायदावैस्वानरोभवेत्
लोहावर्त्तसमंज्ञेयं सत्वंपतातिनिर्मलम् ॥

घरियाबनानेकाप्रमाण

षोडशांगुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतंशुभम धा
तुसत्वनिपातार्थं कोष्ठकंचस्वर्णिनी वंसखा
दिस्माद्रक बदरीदारुसंभवैः परिपूर्णाद्रंदांगा
रै स्थपातनकोष्ठकेः भस्त्रयाज्वालमार्गेण ॥

ज्वालयेद्बहुनाशनं ॥

इतिरससिंधौ

सत्व और द्युति के गुण ॥

यस्यद्रव्यस्ययत्सत्वं तद्गुणैस्तच्छताधिकं द्युतिः शतगुणातस्माद्रसयुक्तातोधिका

मूसवनानेकाक्रम

प्रविततमुखभागः संवृतांतःप्रदेशः स्थल विरचितवीरांतर्जलि कोष्टकंस्यात चक्रगलकसमानं चक्रमालंविधेयं ससुषिरनलिकंचान्योन्यमयी दीर्घवृत्ता सिद्धासिध्यसमानित्यं सूतस्यानसमन्विता असिद्धेनोपहास्येत ससिद्धेअभिनंदति ॥ ॥

इतिरत्नप्रकरण समाप्त

अथ विषप्रकरणम

प्रणदेविप्रवक्ष्यामि यत्रोत्पन्नंमहाविषं भेदांस्तस्यवरारोहे यत्रतत्रसाविस्तरं देवदैत्योरगाः सिद्धा अप्सरोयक्षराक्षसाः पिशाचाःकिन्नराश्चैव मिलित्वाचवरानने सकतोवलिराजश्च ब्रह्माद्याश्चदैवकतः मंथानंमंदरंकृत्वा नागराजेनवेष्टितं क्षीराब्धिमथनंतत्र प्रारब्धंसुरसुंदरि निर्गतास्तत्ररत्नानि कामधेन्वादयःप्रिये अमलाकमलोत्पन्ना पश्चात्तुच्चैः श्रवाततः ऐरावतोमहाकायो निर्गतंदेवि चामृतं अतीवमथनादेवि मंदराघातयेगतः अहिराजस्य मादेवि विषज्वालाविनिर्गता ततोतिघोरासाज्वाला निसृतनाक्षीरसागरे प्रलयाग्नल

संकाशः क्रुद्धाः कालइवोत्कटः तांदृष्ट्वाविबुधाः सर्वेदानवाश्चमहाबलाः विषणावदनाः सद्यः प्राप्ताश्चैवमदंतिकं ततस्तैः प्रार्थ्यमानोहमपि चंविषमुत्तमं ततोवशिष्टमभवन्मूल रूपेणत द्विषं पत्ररूपेणकुत्रापि मृत्तिकारूपतः क्वचित् कंदरूपेणकुत्रापि त्रयोदशाविषंविधम्॥

अर्थः—हे पार्वती मैं तेरे आगे विष की उत्पत्ति तथा स्थान और उसके भेद कहता हूं. तू सुन. पहले देवता. दैत्य. सर्प. सिद्ध. अप्सरा. यक्ष. राक्षस. पिशाच. और किन्नरों ने मिलकर समुद्र का मथन किया एक और सब दैत्य राक्षसों को साथ ले बलिराजा हुआ और एक और सब देवताओं को साथ ले ब्रह्माजी खड़े हुए उसमें मंदराचल की रई बनाई औरवासुकीसर्पकीनेती(डोरी) बनाय हे सुर सुंदरी सबने समुद्र मथन का प्रारंभ किया उस समय कामधेनु से आदि ले चौदह रत्न निकले लक्ष्मी. उच्चैश्रवा घोडा. ऐरावत हाथी. तदनंतर अमृत निकला. पीछे अत्यंत मथन करने से और मंदराचल के घसरके देने से हे देवि सर्प को अत्यंत श्रम होने से. उसके मुख में विष की ज्वाला उत्पन्न हुई. वह घोर ज्वाला क्षीरसागर में लीन हो गई. तदनंतर बांकी ज्वाला प्रलय की अग्नि के समान तथा क्रोधित काल के समान हलाहल विष प्रगट हुआ. उसको सब देवता और दैत्य देख कर मलिन मुख होते हुए और मेरे समीप आनकर प्राप्त हुए और मेरी स्तुति की उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर उस उत्तम विष को मैं पीता हुआ. मेरे पीने से जो विष बाकी रहा. वह कहीं जड़ रूप से कहीं पत्र रूप से कहीं मिट्टी रूप से कहीं कंद रूप से प्रगट हुआ. विष के तेरह भेद हैं.

इतिविषोत्पत्ति

विषोंकेभेद

तेषुश्रेष्ठंकंदाविषं त्रयोदशाविधंस्मृतं कर्कटंका
लकूटंच वत्सनाभंहलाहलं वालुकंकर्दमंचैव
सक्तुकंमूलकंतथा सर्षपश्टंगकंदाख्यं मुस्तकंच
महाविषं हरिद्रकमितीप्रोक्तं त्रयोदशाविधांविषं

अर्थ॰ पूर्वोक्त विषों में कंदविष उत्तम है. वह तेरह प्रकार का है. क
र्कट १ कालकूट २ वत्सनाभ ३ हालाहल ४ वालुक ५ कर्दम ६ सक्तु
क ७ मूलक ८ सर्षप ९ श्टंगक १० मुस्तक ११ महाविष १२ और हारि
द्रक १३ ये तेरह विष के भेद हैं॥

कंदहुएविषोंकेवर्ण

कर्कटंकपिवर्णस्यात्काकचंचूनिभंपुनः कालु
कूटंतत्रज्ञेयं वत्सनाभंतुपांडुरं भंगुराकंदवद्दावि
नीलवर्णहलाहलं वालुकंवालुकाभंच कर्दमं
कर्दमोपमं सक्तुकंश्वेतवर्णस्या न्मूलकंदंतु
मूलकं सर्षपंपीतवर्णस्या च्छृंगकंकृष्णपिंगलं
मुस्ताभंमुस्तकंप्रोक्तं रक्तवर्णमहाविषं हरिद्रकं
पीतवर्णाविषभेदाःप्रकीर्तिताः

अर्थ॰ कर्कटविष कपिवर्ण अर्थात् बंदर के वर्ण के समान होता है. का
लकूट कौरा की चोंच कासा वर्ण होता है. वत्सनाभ का पीलावर्ण.
भंगुर कंद के समान. हलाहल नीले वर्ण का होता है. वालुका के स
मान वालुक विष होता है. कीच के समान कर्दम विष होता है. स
क्तुक श्वेत वर्ण का होता है. मूलकविष की सफेद गांठ होती है. पी
लेरंग का सर्षपविष. श्टंगक (सिंगिया) विष काला और पीला
होता है. नागर मोथा के समान मुस्तकविष होता है. महाविष लाल
रंग का होता है. हरिद्रक हलदी केसे रंग का होता है ये विष के भेद हैं॥

मतान्तर

विषंचगरलंक्ष्वेडं कालकूटंचनामतः अष्टादश विधंज्ञेयं विषकंदमथंबुधैः तेष्वष्टौसौम्यभेदाः स्युर्भक्षणात्प्राणनिमानवं दशोग्रभेदाः संस्पर्शादा घ्राणाद्वापिमारकाः सक्तुकोमुस्तकश्चैव कौर्मो दारकसार्षपः सैकतोवत्सनाभश्च श्वेतश्रृंगी तथैवच एतानिभिषजक्कते विषाण्यष्टौसमाहरेत जराव्याधिहराणिस्युर्विधिनाशीलितानिहि ॥

अर्थः विष · गरल · क्ष्वेड · और कालकूट इन नामों से प्रसिद्ध है · कंद का विष अठारह प्रकार का पंडितों ने कहा है · तिन में आठ विष सौम्य हैं · इनके खाने से मरता है · और दश उग्रविष हैं · उनके छूने तथा सूंघने से ही मृत्यु होती है · और सक्तुक · मुस्तक · कौर्म · दारक · सार्षप · सैकत · वत्सनाभ · और श्वेत श्रृंगिक ये आठविष औषधियों के लिये संग्रह करने योग्य हैं · इनके विधि युक्त खानेसे बुढापे और व्याधि का नाश होता है ·

लक्षण

चित्रमुत्पलकंदाभं सुपैष्यंसक्तुवच्छ्वेत सक्तुकं प्रविजानीया दीर्घरोगंमहोत्कटं ॥ ह्रस्ववेगंचरो गघ्नं मुस्तकंमुस्तकाकृति कूर्माकृतिभवेत्कौर्मो दारकोहिफणाकृतिः स्थूलसूक्ष्मकणैर्युक्तंश्वे तपीतैर्विरोमकः ज्वरादिसर्वरोगघ्नः कंदः सैक तउच्यते यः कंदोगोस्तनाकारो दीर्घः पंचमया गुलात नस्थूलोगोस्तनाद्दूर्ध्वं द्विविधोवत्सना भकः आशुकारीलघुस्त्यागी शल्कक्षणोत्य याभवेत प्रयोज्योरोगहरणेजारणायांरसायने

गोश्रृंगाद्विविधाशृंगी श्वेतः स्याद्बहिरंतरे एता निसक्तुकादीनिवातरक्तेत्रिदोषके मेहोन्मादाप स्मृतिषुकुष्टेषुचानियोजयेत्॥

अर्थः— जो चित्रवर्ण कमलकेकंद के समान सहज में पिस जाय तथा सत्तू के समान होवे. उसको साक्तुकविष कहते हैं. यह दीर्घरोग कर्त्ता महा भयंकर है. जिसका वेग हलका रोग नाशक और नागरमोथा के समान होवे. उसको मुस्तक विष कहते हैं. जो कछुवे के सदृशहोतंस कौर्मविषकहैहै रसकेकाल सदृशकोदालकाविष कहते हैं. जो ज्वर नाशक पीली सरसों के समान होवे उसको सार्षप जानना. जो छोटे बड़े कणों कर के युक्त होवे. तथा सफ़ेद किंवा पीला होवे उसको विरोमक विषजानना चाहिये. जो ज्वरादि संपूर्ण रोगों का नाश करता कंदरूप होवे उसे सैकत विष जानना चाहिये. तथा जो कंद गौ के थन के समान पांच अंगुल लंबा होकर बहुत मोटा न होवे. उसे वत्सनाभ विष जानना. वह वत्सनाभ सफ़ेद और काले रंग के भेद से दो प्रकार का है तिनमें सफ़ेद शरीर में जलदी गुण करता है हलका और दस्तावर है. और जो काला है वह इससे विपरीत गुण करता है. यह रोग नाश करने और रसायन के विषय में देना चाहिये. और गोश्रृंग विष दो प्रकार का है एक बाहर भीतर से सफ़ेद होता है. दूसरा बाहर भीतर काला ये कहे हुए सक्तुकादिक विष वातरक्त त्रिदोष. प्रमेह उन्माद उपस्मार (मृगी) और कुष्ठ रोगो में देने चाहिये॥

मतान्तर

कालकूटंवत्सनाभः श्रृंगकश्चप्रदीपनः हालाहलोब्रह्मपुत्र हारिद्रः सक्तुकस्तथा सौराष्ट्रिकइति प्रोक्ताविषभेदाअमीनव॥

अर्थः— कालकूट. वत्सनाभ. श्रृंगक. प्रदीपन. हालाहल. ब्रह्मपुत्र

हारिद्रक · सक्तुक · और सौराष्ट्रिक · ये विष के नौ भेद हैं॥

वर्ज्यविष

कालकूटस्तथामेषशृंगीदर्दुरकस्तथा हाला
हलश्चकर्कोटी ग्रंथिहारिद्रकस्तथा रक्तशृंगी
केशरश्च यमदंष्ट्रश्चपंडितैः त्याज्यानीमानियो
गेषु विषाणिदशतत्वतः॥

अर्थः कालकूट · मेषशृंगी · दर्दुरक · हालाहल · कर्कोटी · ग्रंथि हारिद्रक · रक्तशृंगी · केशर · और यमदंष्ट्र · इन दश विषों को योग में न डालना पंडित ऐसा कहते हैं॥

लक्षणान्तर

वृत्तः कंदोभवेत्कृष्णो जंबीरफलवच्चयः तत्का
लकूटंजानीयात् घ्राणमात्रान्मृतिप्रदं मेषशृंगा
कृतिः कंदोमेषशृंगीतिकथ्यते दर्दुराकृतिकंद
स्याद्दर्दुरः कथितस्तु सः गोस्तनाभं फलौगुच्छे
स्तालवृक्षच्छदस्तथा तेजसायस्यदह्यंतेसमीप
स्थाद्रुमादयः असौहालाहलोज्ञेयो किष्किंधायांहि
मालये दक्षिणाब्धितटेशैते कौंकणेपिचजायते
अनलाभांबहिरंतश्च हालाहलमुदाहृतम् कर्कोट
काभंकर्कोटं रेखाभ्यंतररक्तामृदुः हरिद्राभंगाव
द्ग्रंथिः सः स्यात्कृष्णोतिभीषणः मूलाग्रयोस्तु
वृतः स्याद्वापतः पीतगर्भकः कंचुकाढ्यः स्निग्ध
पर्वोहारिद्रः सक्तुकंदकः गोशृंगाभातिनिर्दिष्टो
नास्यात्सक्तुकप्रवर्त्तते कंदोलघुर्गोस्तनवद्रक्तः
शृंगीतितद्विषं शर्फकंद्रवकिंजल्कमध्यंतर
केशरंविदुः स्वदंष्ट्ररूपसंस्थानं यमदंष्ट्रेतिसोच्यते

रसायनेधातुवादे विषवादेक्कचित्क्कचित् दृशे तानिप्रयुंजीत नभेषज्यरसायने॥

अर्थः—जिसका कंद जंभीरी नीवू के समान गोल और काला होवे उसे कालकूट विष जानना चाहिये. इसकी गंध से अथवा स्पर्श करने से ही मनुष्य मरजावे. जिसका कंद आकृति में वकरी के सींग के समान होवे उसे मेषशृंगी विष कहते हैं. जिसका कंद मेंडक के समान होवे. उसे दर्दुरविष कहते हैं जिसका दाखों के समान गुच्छा होवे और पत्ते ताड के समान होवें और जिसके तेज से पासके सब वृक्ष दहन होजावें उसे हालाहल विष कंद कहते हैं. यह विष किष्किंधापुरी. हिमालय पहाड़. दक्षिणीय समुद्र के किनारे. और कोंकणदेश में होता है. और जो भीतर बाहर से अग्नि के समान होवे और जिसमें कर्कोटक सर्प कीसीज पर रेखा होवें. और नम्र होवे. उसको कर्कोटक विष जानना चाहिये. जिसकी जड़ हलदी की गांठ के आकार होवे और काली होय उसको कृष्णकाविष जानना. जिसका कंद जड से ऊपर तक गोल. वडा. और भीतर कुछ पिलाई लिये और जिसमें छाल अधिक होवे. और जिसकी गांठ चिकनी होवे और ऊपर कांटे होय हलदी के समान पीला होय उसको सक्तुक कहते हैं. जिसका कंद गौ के सींगों से बांधने से गौ की नाक से रुधिर निकले और वह कंद गौ के स्तनों के समान छोटा होय उसको रक्तशृंगी विष कहते हैं. और कुलगीला तथा कुछ सूरवा तथा उसके फूल के सर के तुल्यहोय उसको केपुर विषकहते हैं कुत्ते की डाढ के आकार होवे उसको यमदंष्ट्रा विष कहते हैं. ये दश विष रसायन के विषय में तथा धात वाद में किंवा विष में कहीं २ देते हैं. औषधियों में नहीं डालने चाहिये॥

मतान्तर

वत्सनाभोहारिद्रश्च सक्तुकः सप्रदीपनः सौरा
ष्ट्रिकः शृंगिकश्च कालकूटस्तथैवच हालाह
लो ब्रह्मपुत्रो विषभेदाअमीनव॥

अर्थ॰ वत्सनाभ · हरिद्र · सक्तुक · प्रदीपन · सौराष्ट्रिक · शृंगिक · कालकूट · हालाहल · ब्रह्मपुत्र · ये विष के नौ भेद हैं॥

परीक्षा

पलाशपत्रवत्पत्रंतद्बीजसदृशंफलं स्थूल
कंदोभवेत्तस्य प्रभावस्तुमहानस्मृतः सिंदुवा
रसदृकपत्रो वत्सनाम्याकृतिस्तथा नत्पार्श्वेन
नरोद्वाद्धि वत्सनाभसमाषितं वर्णतोहरितोयस्मा
द्दीप्तिमानदहनप्रदः महामारकरोघ्राणात्कथि
तःसप्रदीपनः वर्णतःकपिलोयस्मात्तथाभव
तिसारकः ब्रह्मपुत्रःसाविज्ञेयोजायतेमलया
चले॥

अर्थ॰ जिसके ढाक केसे पत्ते होवें और ढाक ही केसे बीज होवें · और मोटा कंद उसका प्रभाव बी बडा है · जिसके पत्र निर्गुंडी के समान होवें · तथा वच्छनाभ कासा आकार होवे जिसके पासदू सरा वृक्ष लगे नहीं उसको वत्सनाभ विष कहते हैं और जिसका कंद हरे रंग का अग्नि के समान और जिसकी गंधि सूंघने से नाक मे रुधिर निकले उसको प्रदीपन विष कहते हैं और जिसका कंद कपिलवर्ण तथा सारक (दस्तावर) होय उसको ब्रह्मपुत्र कहते हैं यह मलयाचलपर्वत मे होता है॥

विषकेवर्ण

चतुर्धावर्णभेदेन विषंज्ञेयंमनीषिभिः ब्रह्मक्ष

क्षियविट्शूद्राः श्वेतरक्ताश्चपीतिकाः कृष्णव
र्णः क्रमाद् ज्ञेयो वर्णानामानुपूर्वशः ॥

अर्थः वर्णभेद से विष चार प्रकार का है· ब्राह्मण· क्षत्री · वैश्य · शूद्र· तथा इन चारों वर्णों के विष का रंग क्रम से सफ़ेद· लाल· पीला और काला जानना·

कार्यपरत्वग्राह्यविष

मारणेकृष्णवर्णःस्याद्रक्तस्तुरसकर्मणि पीतव
र्णःक्षुद्रकार्ये श्वेतवर्णोरसायने ॥

अर्थः काले रंग का विष मारणार्थ लेना चाहिये · रसकर्म में लाल· क्षुद्र कर्म में पीले रंग का लेवे · और रसायनिक कर्म में सफ़ेद लेना चाहिये· ॥

मतान्तर

ब्राह्मणःपांडुरस्तेषु क्षत्रियोरक्तवर्णकः वैश्यः
पीतप्रभःकृष्णोवर्णश्चशूद्रउच्यते ब्राह्मणो
दीयतेरोगे क्षत्रियोविषभक्षणे वैश्योव्याधि
षुसर्वेषुसर्पदष्टेचशूद्रकः ॥

अर्थः जो कुछ पिलाई लिये सफ़ेद होवे वह ब्राह्मण विष है· लाल रंग का क्षत्री· पीले रंग का वैश्य और काले रंग का विष शूद्र संज्ञक होता है· इनमें से ब्राह्मण विष रोगों में देते हैं· क्षत्री वर्ण का लालविष विष प्रयोग में देते हैं· संपूर्ण व्याधियों में वैश्य और सर्प के काटे पर शूद्र विष देते हैं·

प्रकारांतर

रसायनेविप्रंविप्रोदेहपुष्टौतुबाहुजः कुष्ठनाशो
प्रयुंजीत वैश्यः शूद्रस्तुघातकः

अर्थः ब्राह्मण विष रसायन में · क्षात्रियविष देहपुष्टि में · कुष्ठ नाशन में

वैश्य • और मारण में रुद्रविष देना चाहिये ॥

ग्रहणयोग्यवि०

उद्धृतफलपाकेन नवंस्निग्धंघनंगुरुः अव्यापन्नं विषहरैरवातात्तपशोषितं॥

अर्थ॥ विष को फल के पकने के पीछे ग्रहण करे और नवीन • चिकना • घना • और भारी ऐसा होवे • तथा विष के हरने वाली वस्तुओं करके दूषित नहो तथा पवन और आतप से शोषित ऐसा विष लेकर उसको शुद्ध करे ॥

शोधनकाप्रथमप्रकार

विषभागांश्चकणवत्स्थूलान कृत्वातुभाजने तत्रगोमूत्रकंक्षिप्त्वा प्रत्यहंनित्यनूतनं शोषयेत्त्रिदिनादूर्ध्वं कृत्वातीव्रातपेततः प्रयोगेषु प्रयुंजीत भागमानेनतद्विषं ॥

अर्थ॥ विष को लाकर उसके छोटे २ टुकडे करे उनको मिट्टी के पात्र में डालकर गोमूत्र भरदेवे • तीन दिन मूत्र में भिगोवे और तेज धूप में रख देवे नित्य नया मूत्र डालाकरे और पुराने को निकाल लिया करे • तीसरे दिन गोमूत्र से निकाल कर धूप में सुखावे इस शुद्ध विष को प्रयोग में भाग प्रमाण डाले॥

दूसराप्रकार

रक्तसर्षपतैलेन लिप्तेवाससिधारितं सक्तुकं मुस्तकंशृंगी वालुकासर्षपाह्वयं वत्सनाभं कर्कटंच कालकूटादिकंतत नजात्वन्यत्प्रयोक्तव्यं विषेतीक्ष्णेचवारिते॥

अर्थ॥ लाल सरसों के तेल से विष को चुपड कर वस्त्र में रखकर सुखालेवे तो सक्तुक • मुस्तक • सिंगिया • वालुक • सर्षप • वत्सनाभ •

कर्कट और कालकूट ये शुद्ध होवें. और रीति से विष नहीं देना क्योंकि अति तीक्षण विष देना वर्जित है.॥

तीसराप्रकार

विषभागांश्चकणवत्स्थूलान् कृत्वातुस्वेदयेत॥
दुग्धेंघटिकापंचशुद्धिमायातितद्विषम॥ १ ॥

अर्थ- विष के मोटे टुकडों को छोटे २ कर गोदुग्ध में पांच घडी स्वेद न करे तो शुद्ध होवे.

चौथाप्रकार

खंडीकृत्यविषंवस्त्रेपरिवद्धंतुदोलया अजा
पयसिसंस्विन्नं यामतः शुद्धिमाप्नुयात विषगं
थिमृलेन्यस्य माहिषेहढमुद्रितं करीषाग्नौपचे
द्यामं वस्त्रपूतंविषंशचि॥

अर्थ- विष की गांठ को टुकडे २ कर कपड़े की पोटली में बांध बकरी के मूत्र में एक प्रहर स्वेदन करे तो विष शुद्ध होवे. अथवा भेंस के गोवर में विष की गांठ रखकर चारों ओर से ढक देवे. पीछे आरने उपलों की एक प्रहर अग्नि देवे. पीछे निकाल वस्त्र में छान ले तो विष शुद्ध होवे.॥

पांचवांप्रकार

कणशोवत्सनाभंच कृत्वाबध्वाचपर्पटं दोला
यंत्रेजलक्षीरे प्रहराच्छुद्धिमृच्छति अजादुग्धे
भावितस्तु गव्यक्षीरेणशोधयेत॥

अर्थ- वच्छनाग विष के वारीक टुकडे कर पोटली बांध दोला यंत्र में पानी और दूध मिलाकर उसमें एक प्रहर पचन करावे तो शुद्ध होवे.॥

इति पांचवां प्रकार.

विषमारण

समटंकणसंमपिष्टं तद्विषंमृतमुच्यते योजयेत्स र्वरोगेषुनविकारंकरोतिहि॥

अर्थ॰ विष के समान सुहागा डालकर घोटे तो विष मरे॰ यह सर्वरोगों में देना चाहिये॰ यह विकार नहीं करता॰

दूसराप्रकार

तुल्येनटंकणेनैव द्विगुणेनोषणेनच विषंसंयोजि तंशुद्धंमृतंभवतिसर्वथा

अर्थ॰ विष के समान सुहागा और दुगनी काली मिरच मिलाकर घोटे तौ शुद्ध और मृत्यु होवे॰॥

विषकेगुण

विषंरसायनंवल्यं वातश्लेष्मविकारनुत् कटु तिक्तंकषायंच मदकारिसुखप्रदं व्यवायिरुद्धि रुद्धाहि कुष्ठवातास्रनाशनं अग्निमांद्यश्वास। काशप्लीहोदरभगंदरं गुल्मपांडुव्रणार्शांसि नाश येद्विधिसेवितं॥

अर्थ॰ वच्छनाग विष रसायन॰ बलकर्त्ता॰ बादी और कफ के वि कारों का नाशक॰ तरिवा॰ कडवा॰ कसेला॰ मदकर्त्ता॰ सुखकर्त्ता॰ व्यवाई॰ कोढ॰ वातरक्त॰ मंदाग्नि॰ श्वास॰ खांसी॰ तापतिल्ली॰ उ दर॰ भगंदर॰ गोला॰ पांडुरोग॰ व्रण॰ बवासीर इन सब रोगों को विष विधि से सेवन करे तौ नाश करे॰॥

गुणान्तर

विषंप्राणहरंप्रोक्तं व्यावायिचविकाषिच अग्नि यंवातकफहृद्योगवाहीमदावहं तदेवयुक्तियुक्तं तु प्राणदायिरसायनं पथ्याशिनांत्रिदोषघ्नं वृंह

णंवीर्यवर्द्धनं येतुर्गुणाविषेऽशुद्धे तेस्युर्हीना वि
शोधनात् तस्माद्विषंप्रयोगेषु शोधयित्वाप्रयो
जयेत्॥

अर्थ-विष प्राणहर्ता व्यवायि (प्रथम सर्वदेह में व्याप्त होकर पी
छे जो पचे) विकाशि (ओज को सुखाय संधियों के बंधन को जो
ढीला करदेवे) आग्नेय. वात. कफ का हरण कर्त्ता. योगवाही और
मदकर्त्ता है. इसी विष को युक्ति के साथ सेवन करने से प्राणदायक
और रसायन है. पथ्य से सेवन करने से त्रिदोष का नाशक है. बृंहण
वीर्य का बढाने वाला. ऐसा है. जो अवगुण अशुद्ध विष में वो शुद्ध
विष में नहीं होते. इसी कारण विष को प्रयोग में शुद्ध कर डालना
चाहिये॥

विषसेवनप्रकार

नानारसौषधैर्येतु दुष्टायांतीहनोगदाः तेनश्यंति
विषेदत्ते शीघ्रवातकफोद्भवाः शरद्ग्रीष्मेवसं
तेच वर्षासुचनदापयेत हेमंतेशिशिरेचैव विधि
नामात्रयार्पयेत चातुर्मासेहरेद्रोगान् कुष्टलू-
तादिकानपि दातव्यंसर्वरोगेषु घृताशिनेहिता
शिनि क्षीराशिनेप्रयोक्तव्यं रसायनरतेनरः ब्रह्म
चर्यविधानंहि विषकल्पेसमाचरेत पथ्येस्वस्थ
मनाभूत्वा तदासिद्धिर्नसंशयः आचार्येणतुभोक्त
व्यं शिष्यप्रत्ययकारकं विषेशुद्धिर्हिनदोषमात्र
या नान्यथाभवेत् सर्वरोगप्रशमनं दृष्टिपुष्टिकरं
विषं॥

अर्थ-जो वात कफात्मक रोग नाना प्रकार की औषधि सेवन करने
से भी नहीं जायं वे रोग विष के सेवन करने से तत्काल नष्ट होवे. शरदऋतु

ग्रीष्म · वर्षा · वसंत · इन ऋतुओं में विधि पूर्वक विष देय · तथा हेमंत और शिशिरऋतु में देय इसके चार महीने सेवन करने से कोढ़ · लूता आदि रोग नाश होवें · इसको सब रोगों में देय · इसपर पथ्य घृत · दूध सेवन करे · तथा हितकारक भोजन करे · इस प्रकार रसायनेच्छू सेवन करे · विष का सेवनकर्त्ता ब्रह्मचर्य में रहे · पथ्य से रहे · प्रसन्न चित्त रहे · तौ विषकल्प की सिद्धि होवे प्रथम शिष्य के संदेह दूर करने को वैद्य आप भक्षण करे · शुद्ध विष की भी अन्यथा मात्रा नहीं होसक्ती है · विष का सेवन करने से सब रोग नाश होवें · तथा दृष्टि को पुष्टि करे ॥

विषमात्राकाप्रमाण

प्रथमेसार्षपीमात्रा द्वितीयेसार्षपद्वयं तृतीयेच चतुर्थेच पंचमेद्दिवसेतथा षष्ठेचसप्तमेचैवक्रम वृध्याविवर्द्धयेत् सप्तसर्षपमात्रेण प्रथमंसप्तकं नयेत् एवंमात्राविषंदेयं तृतीयेसप्तकेक्रमात् वृद्ध्याह्न्यात्प्रदातव्यं चतुर्थेसप्तकेतथा एवंसप्त समायाते परामात्रांभिषग्वरैः स्थिरीकुर्याद्वये च्छंतु ततस्त्यागंतुकारयेत् सेवनक्रम प्रहान्या तु विषकल्पस्तुईरितः एवंमात्रासेवनस्याङ्गुंजा मात्रंतुकुष्टवान् एवमेवाष्ट पर्यंतं परामात्राथ कामता विधिनामात्रयाकाले भवेत्पथ्याशि नांनृणां ॥

अर्थ — विषकी पहले दिन सरसों के समान मात्रा लेनी · दूसरे दिन दो सरसों इसी प्रकार प्रति दिवस एक २ सरसों के प्रमाण बढावे · इ स प्रकार सात दिन में सात सरसों के प्रमाण बढावे · इसी प्रकार दूसरे सप्ताह में भी सात २ ही सरसों देवे तदनंतर तीसरे सप्ताह अर्थात्

चौदह दिन के उपरांत पंदरहवें दिन से फिर मात्रा वढावे. जव चतुर्थी सप्ताह आवे उसमें एक दिन कम और एक दिन विशेष इस क्रम से देवे. इस प्रकार सात सप्ताह पर्य्यंत (४९ दिन) वढावे तो परमावधि की मात्रा होवे. उसको जव तक अपनी इच्छा होवे. तव तक भक्षण करे. तदनंतर घटाता जाय. इस प्रकार विषकल्प का प्रकार कहा कुष्टरोगवाले को एक रत्ती के प्रमाण देय. और नित्य आदगुंजा प्रमाण वढावे यह वहुत भारी मात्रा होती है. यह विष सेवन रोग के सदृश समय पर पथ्य सहित करावे.॥

दूसराप्रकार

एकाष्टकंप्रदेद्यावे दद्यस्तंतिलमात्रया सर्वरोगहरंचूर्णंजायतेशोधितंविषं॥

अर्थ. शुद्धविष प्रथम आठ दिन तिल के प्रमाण देवे. पीछे एक एक तिल नित्य वढावे. इस प्रकार मात्रा के वढाने से सर्वव्याधि नाश होवें.॥

विषकेअनुपान

शिखिककिंरसोपेतं विषमज्वरजिद्विषं विषयष्ट्याह्वयंरास्ना सेव्यमुत्पलकंदकं तंदुलोदकपीतानि रक्तपित्तस्यभेषजं रास्नाविडंगाविफला देवदारुकटुत्रयं पद्मकंक्षौद्रमहतांविषंच श्वासकासजित् सितारसविषक्षीर प्रवालमधुनान्विताः क्षौद्रंशीतमधुक्षीर रजनीकुटजत्वचं च्यवनःप्राशनोपेतं विषंक्षपयतिक्षयं॥ १ ॥

अर्थ. विष लीलाथोथा और पारा युत सेवन करने से विषम ज्वर का नाश करे. मुलहटी. रास्ना. कमलगट्टा का चूर्ण इन के संग चांवलों के धोवन के साथ सेवन करने से रक्तपित्त को

नाश करे· रास्ना · वायविडंग ·त्रिफला · देवदारु · सोंठ ·मिरच · पीपल · कमलगट्टा · शहद ·गिलोय का रस · इनके साथ विष खाने से श्वास ·खांसी · इनका नाश करे ·निर्गुंडी ·पारा ·सिंगिया विष · दूध ·मूंगा की भस्म · और शहद इनके साथ विष सेवन करने से वमन नाश होवे· शहद ·पित्तपापड़े का रस ·मद्य · नोन· हलदी · कूड़ेकीछाल तथा चव्यन माशमवलेह ·इनके साथ विष सेवन करने से खई नाश होवे ·॥

विजयापिप्पलीमूलं पिप्पलीद्वयचित्रकैः पुष्कराह्वमदीद्राक्षा यवानीक्षारदीप्यकैः सिताय ष्टीद्विबृहती सैंधवैः पालिकैःपचेत् सविषार्द्धप लैः प्रस्थं घृतात्सज्जीर्णस्तुकापिवेत दुर्नामभेह गुल्मार्श तिमिरकामिपांडुको गलगंडोन्मादकुष्ठानिचनियच्छति

अर्थ – भांग ·पीपलामूल ·छोटीपीपल · गज पीपल · चित्रक पुहकरमूल · कचूर ·दाख ·अजवायन ·जवाखार ·अजमोद · मिश्री · मुलहटी · दोनोंकटेरी ·संधानोंन ·पालिक · इन सब औषधियों को आध २ पल लेवे· और आधा पल विष लेवे · सर्व प्रस्थ घृत में भूनकर अनुमान माफिक खाय जब विष पचजाय तब उसके ऊपर घृत पान करे ·तो बवासीर ·प्रमेह गोला · अर्शरोग· तिमिर · कामि ·पांडुरोग ·गलगंड ·उन्माद · और कुष्ट इनको दूर करे ·॥७॥

मुस्तावत्सकपाठाग्नि व्योषप्रतिविषाविषं धातकीमोचनिर्यासं चूतास्थिग्रहणीहरं कुष्ठश्रावि षपथ्याजिदंती द्राक्षानिषाद्दषाः शीलाजतुविषं न्यूष मुदावर्त्तीस्मरीहरं॥

अर्थ- नागरमोथा · कुडाकीछाल · पाढ · चित्रक · सोंठ · मिरच · पीपल · अतीस · सिंगियाविष · धायकेफूल · मोचरस · आमकीगुठली · इनके खाने से संग्रहणी नाश होवे · हरड · चित्रक · दंती · दाख · अतीस · अडूसा · शिलाजीत · सोंठ · मिरच और पीपल इन के साथ विष सेवन करने से पथरी और उदावर्त्त इनका नाश होवे ॥

गोमूत्रक्षारसिंधूत्थ विषपाषाणभेदकं वज्र वद्दारयत्यूत दंकतः पीतमश्मरी त्रिफलास ज्जिकाक्षारे विषंगुल्मप्रभेदनं पिप्पलीपिप्प लीमूलं विषंशूलहरंपरं विषंद्रवंतीमधुकद्रा क्षा रास्नासठीकणाः विषवेल्लमिशीक्षीरंगुल्म प्लीहानिवर्हणं प्लीहोदरघ्नंपयसा शताह्वाकृमि जिद्विषम् ॥

अर्थ- गोमूत्र · सेंधानोंन · विष · पाषाणभेद · इनको खाने से पथरी वज्र के समान तोडे · त्रिफला · सज्जीखार · इनमें विष मिलाकर खाने से गोला के रोग नाश होवें · पीपल · पीपलामूल इन के साथ विष खाने से शूल दूर होवे · द्रवंति · महुआ · दाख · रास्ना · कचूर · पीपल · वायविडंग · सोंफ · दूध इनके साथ विष खाने से गोला · तापतिल्ली का नाश करे · दूध के साथ विष तापतिल्ली का नाश करे · सोंफ के साथ विष कृमिरोग का नाश करे ॥७॥

वायसीमूलनिःक्काथपीतंकुष्ठहरंविषं पय सा राजवृक्षत्वक्क्कायंतीवाकुचीवल्गात्सी हृद्वावाकुचायांत्र विषंक्कायेनकुष्ठजित भव ल्गुजैलकजया विडक्षारद्वयंविषं लेपः स

सैंधवः पिष्टोवारिणा कुष्टनाशनः चित्रकार्क जडार्त्तपिप्पलीवाकुचीविषैः सचंद्रकेलैल गजकरंजफलसैंधवैः सव्योषस्वर्जिकाक्षार यवक्षारनिशाद्वयैः पनाधैःशीलितंकुष्टदुष्ट नाडीव्रणापची॥

अर्थ — कंजाकीजड़ के काढे के संग विष कोढ़ को दूर करे. अमलतास की छाल. नायमान. बावची. खैरेटी. दूध. इनके संग विष तापतिल्ली को दूर करे. सुहागे को विष मिला काढा पीने से कोढ़ दूर होवे. बावची. एलुआ. सज्जीखार. जवाखार. और सिंगियाविष. इनमें सेंधानोंन डाल जल से पीसकर लेप करे तो कोढ नाश होवे. चित्रक. आक. गजपीपल. बावची. बच्छनागविष. कपूर. एलुआ. नागकेशर. कंजा का फल. सेंधानोंन त्रिकुटा. सज्जीखार. जवाखार. हलदी. दारूहलदी. इनके सेवन से कोढ़. नाडीव्रण. अपची दूर होवें॥

विषभल्लातकौद्वापि गुंजानिंबफलैर्जयेत् लेपोल्लापित्तैःश्वित्राणिपुंडरीकंचदारुणं ककुंदरुष्कद्वीपिरक्तापर्णेलवालुकं पिष्टंखदिरतोयेन विरानसुर्पितापिवेत श्वित्रीविषेणसघृष्टं ततस्फोटान्केलासजान कंकणेनवि भिद्यारा लेपोलिप्तश्चकोष्टकेः अथवाकरवीरार्कमूलवाकुचिकाविषैःवस्तांबुपिष्टैःसद्वीपिद्विपापिप्पल्युरुष्करैः लाक्षासुरीचमंजिष्टा कुष्टपद्मकशारिवा गुंजामहाकुरवकोलांगलीवज्रकंदकःवाराहीकंदकास्फोतसमाह्वीगिरिकर्णिका अर्कास्वमारयोर्मूलं नागपुष्प

नतनिशे दंतीविषंहस्तिविषं पिप्पल्योमरिचा निचतस्तैलंकटुतैलंवाश्चित्रस्याभ्यंजनंप चेत सवर्णकरणंश्रेष्ठ मास्तिकंयस्यवचो यथो॥

अर्थ — वच्छनागविष · भिलाया · चित्रक · घूंघची · निवौली · इनका लेप अम्लपित्त · चित्रकुष्ट · पुंडरीककुष्ट को नाश करे · कुकुंदरू · रुष्क · गजपीपल · सफेदलजालू · पत्रज · एलुआ इन सबको खैर के पानी में पीसकर तीन दिन रख छोड़े तदनंतर इसमें विष मिलाकर कोढ पर लेप करे · तौ कोढ के फोड़े नाश होवें · अथवा कनेर आक की जड़ · वावची और वच्छनागविष · तथा चित्रक · गजपीपल · उरुष्कर इनको बकरी के मूत में पीसकर लगावे · अथवा लाख · राई · मजीठ · कूठ · पत्राक · सारिवा · घूंघची · कुटकी · कुरवक · कलयारी · थूहर वाराहीकंद · कोविदार · समाह्व · इंद्रजौ · आक · कनेर · इनकी जड़ नागकेशर · लड · हलदी · दंती · वच्छनागविष · नागविष · पीपल मिरच · इनको · इन्ही औषधियों के तेल में अथवा कडवे तेल में मिलाकर चित्रकोढ वाले के उवटना करे तौ सुवर्ण के समान देह का रूप होजावे॥

एरंडतैलत्रिफलागोमूत्रं चित्रकंविषंसर्पिषा सहितंपीतंवातार्तित्वमपोहति कोरकंचीरान् प्कार्ये लांगलीविषसर्षपैः गंधकांकोलमरि चैः सस्नुक्क्षीरैर्विपाचितं जयेज्ज्योतिष्म तीतैलमनलत्वग्गदानपि॥

अर्थ — अंडकातेल · त्रिफला · गोमूत्र · चीता · विष इनको घृतके साथ पिये तौ वादी की पिडा नाश होवें · ग्वारपाठा · सी

सो · कलियारी · वच्छनागविष · सरसों · गंधक अंकोल · मिरच थूहर का दूध · इनको मालकांगनी के तेल में औटाकर लगाने से वादीकृत त्वचा के रोग नाश होवें॥

स्वरसंवीजपूरस्य वचाब्राह्मीरसंघृतं वंध्या पिवतिसाविषं सुपुत्रैः परिवार्यते वीरालांगलि कीदंती विषपाषाणभेदकैः प्रलेपाज्यमूढगर्भी णां प्रलेपोगर्भमोचनः देवदारुविषंसर्पिगो मूत्रंकंटकारिका वचावाकस्खलनंहंतिबु द्धेश्चवरिवर्द्धनं॥

अर्थ— विजोरेकास्वरस · वच · ब्राह्मीकारस · नवीनघृत · इनमें विष को मिलाकर पीने से वंध्या गर्भवती होवे · सफ़ेद कनेर कालियारी · दंती · वच्छनागविष · पाखानभेद · इनका लेप मूढ गर्भ का मोचन करे · देवदारु · विष · गौकाघृत · कटेरी · वच इनका सेवन करने से जीभ के विकार नाश होवें · और बुद्धि वढे॥

विषंसर्पिः सिताक्षौद्रं तिमिरापहमंजनं विषंवै कमजाक्षीरं काल्पितंघृतधूपितं विषंधात्रीफ लरसे रसकृत्परिवारितं अंजनंशंखसहितं प्र गाढंतीमिरंजयेत विषंमिन्द्रायुधंरत्नंचैत्तका चाद्यदंजनं बीजपूररसंघृष्टं विषंतद्वात्सितान्वि तं विषमागाधिकाद्धंच निषेकाचघ्रमंजनम्

अर्थ— घृत · मिश्री · शहद में विष को घिसकर लगावे तो तिमिर रोग नाश होय · अथवा केवल विष कोही वकरी के दूध में लगावे और घृत की धूनी देय अथवा विष में शंख की नाभि मिलाकर आंवले के रस की भावना देकर अंजन करे तो घोर तिमिर नाश

करे। हीरा और विष को स्त्री के दूध में घिसकर लगाने से कांच को नष्ट करे। बिजौर के रस में मिश्री डालकर विषको घिसकर नेत्र में लगावे तौ विष का नाश करे। पीपल। गजपीपल। हल्दी और विष इनका अंजन करने से कांचरोग नाश होवे॥

शल्कार्मजविषंकृष्णायुक्तंगोमूत्रभावितं स मुद्रफेनास्फटिकाकुरुविंदरसांजनं कूर्मपृष्ठं चतुल्यानि तस्यार्द्धांशंमनःशिला अर्द्धमाना मिमरिच सैंधवायोरजांसिच अध्यायस्यांत्तरी दद्यादयसा च समाविषं अंगारधूमसाहितंवस्त मूत्रेणकल्कितैः भल्लातकाग्निसम्पाकवि षैर्वासूत्रपोषितैः लेपोविचर्चिकादद्रूरसिका किटिभापहा॥

अर्थ- पीपल के संग विष गोमूत्र में घिसकर लगाने से शल्लीमरोग नष्ट होवे। समुद्रफेन। फटकरी। हिंगुल। रसोत कछुवे की पीठ इन सबको बराबर लेकर सबसे आधी मन सिल और मनसिल से आधी मिरच तथा सेंधानोंन और लो हचूर सब से दूसरा अधिक भाग लेवे। लोहचूर के समान व च्छनाग विष लेय और घरका धुआं लेय सबको बकरी के मूत्र में घिसकर लगावे। अथवा भिलाए। चित्रक। अमलता स। का गूदा और विष इनको गोमूत्र में पीसकर लेप करने से विचर्चिका। दाद। रसिका। कीटभ। कुष्ट। ये सब नष्ट होवें॥

सम्पाकपत्रत्वङ्मूलं विषंतक्रंचतुर्गुणं वि षंतुवुरुवीजानि वाजिगंधाम्लवेतसं हरिद्राबा मर्मीरास्ना हरितालंमनःशिला पटोलनिंवप

त्राणि कृणागंधकसैंधवं विषदारुशिरीषा
स्थि तक्रलेपेनकुष्ठजित् करंजकरवीरार्क
मालतीरक्तचंदनैः आस्फोटकुष्ठमांजिष्ठास
प्तच्छदनिशानतैः सिंधुवारवचाक्ष्वेलैर्गवां
मूत्रेचतुर्गुणं सिद्धंकुष्ठहृत्तैलं दुष्टव्रणविशो
धनम्

अर्थ — अमलतास के पत्ते · छाल · और जड़ में विष को मि
लाकर फिर चौगुनी छाछ में मिलाकर लेप करे · अथवा वि
ष · बायसी · रास्ना · हरिताल · मनसिल · पटोलपत्र · नीमके
पत्र · पीपल · गंधक · सेंधानोंन · इनको छाछ में मिलाकर ले
प करे · अथवा विष · देवदारु · सिरसकीछाल · इनको छाछ
में मिलाकर लेप करे · तो कुष्टरोग नाश होवे · कंजा · कनेर
आक · मालती के फूल · लालचंदन · पहाडी आवनूस · कूठ · म
जीठ · सतवन · हलदी · छड़ · सिंधुवार · वच · और विष इनस
व को चौगुने गोमूत्र में औटाकर पीछे तेल डालकर तेल बनावे
तो यह तेल कोढ़ और दुष्ट फोडों का नाश करे ॥

कुष्ठाश्वघ्नभृंगार्क मूलस्नुक्क्षीरसैंधवैः तै
लंसिद्धंविषावाप्य मभ्यंगात्कुष्ठजित्परं भ
ल्लातकमरिचद्विहरिद्रा त्रिवृत्घनैः गोमूत्रपि
ष्टैः विषस्यार्द्धपलंनच ब्राह्मीरसार्कजक्षीर गो
शकृद्रससंयुतं प्रस्थसर्षपतैलस्य सिद्धमाशु
व्यपोहति रसाक्रियमधुना पित्तशल्कान्सक
चत्रुत अभीक्ष्णंशीततोयेन सिंचेन्नेत्रेविषार्जि
ते ॥

अर्थ — कूठ कनेर · भांगरा · आककीजड़ · थूहर का दूध · में

धानोंन इनको विष मिलाकर तेल बनावे· इस तेल के लगाने से कोढरोग शांति होवे· चंदन ·देवदारु· मिरच· हलदी · दारुहलदी ·निसोत· नागरमोथ ·ये एक२ पल लेवे· और विष आधा पल लेय· इन सबको गोमूत्र में पीसे ·पीछे ब्राह्मी का रस आक का दूध· गोवर का पानी इन सबको एक२ प्रस्थ लेय· तेल में डालकर तेल बनावे ·इसके लगाने से कुष्ट ·विभूत दूर होवे ·यह रसक्रिया है· इस तेल में शहद और कबीला मिलाकर नेत्रों में लगावे तो शल्कार्म और काचरोग इनका नाश करे· जब विष को नेत्रों में लगावे तब शीघ्र शीतल जल से नेत्रों को धोडाले॥

रक्तचंदनमंजिष्ठातिंत्रिणीफलसूतकैः अय सालोध्रकनकनिशाशंखकणोषणैः मनशिलाकरंजाक्षबीजोम्बाफेनसैंधवैः अजाक्षीरैः समविषैर्वर्त्तयोविहिताहिताः शल्कार्ममांसपिंडेषु ग्रंथिगंडार्बुदेषुच॥

अर्थ॰ लालचंदन ·मंजीठ ·इमलीकेफल· पारा· लोहचूर लोध ·कनक· हलदी· शंखकीनाभि · सोंठ ·मिरच· पीपल· मनसिल· कंजाकीमिंगी · कमलगट्टाकीमिंगी ·वच्च · समुद्रफेन· सेंधानोंन ·और वच्छनाग विष· इन सबको बराबर लेकर बकरी के दूध में वत्ती बनावे यह वत्ती शल्कार्मरोग· मांसपिंड गांठ · गंडरोग · अर्बुद· इत्यादि नेत्र के विकारों को हित कारक है॥

रसोनकंदमरिचविषसर्षपसैंधवैः पिंडेदण हितंकार्यं सुरसारसपोषितैः पूरयेत्सर्पिषाचानुसर्पिरेवचपाययेत मधूकसारमधुकविषघ्नो

रजलैर्घृतं पक्वंसंतर्पणंश्रेष्ठं नक्तांधत्वाचिरो त्थितं अंजनं नरापित्तेन रोचनंमधुरश्रृंगाभिः स्व र्जिकाक्षारसंयुत्य शक्तशक्तवरविषं कर्णयोः पूरणंतीव्र कर्णशूलनिवर्हणं॥

अर्थ – सफेदलहसन · मरिच · विष · सरसों · सेंधानोंन · इनको तुलसी के रस में पीसकर नेत्र में लगावे · और घृत से नेत्रों को पूरण करे · और घृत भोजन करने को देवे · तौ संपूर्ण नेत्ररोग ना श होवें · महुआ · शहद · विष · दूध · जल · घृत सबको एकत्रकर नेत्रों को तर्पण करे · तौ नक्तांध (रतोंध) थोडे दिन का नाश होवे गोलोचन · शहद · काकडासिंगी · सज्जी · सेंधानोंन · सिरका · कांजी वच्छनागविष इन सबको मिलाकर कानों में डालने से कर्णशूल नाश होवे ॥

प्रपौंडरीकमंजिष्ठा विषतिंदुसमुद्भवैः निहंति साधिततैलं गंडूषेणमुखामयान् शाल्मखदि रकंकोल जातीकर्पूरचंदनैः वोलाव्दवालैर्द्वि गुण विषसारांबुपोषितैः मस्मूत्रावटिकात्कृता घ्नन्तिमुखामयान् कटुतैलंविषंनस्यंपलि कास्तोपिकापहं॥

अर्थ – कमलकेपुष्प · मजीठ · विष · कुचला · इनसे तेल को बनाकर कुल्ला करने से · मुख के रोग नाश होवें · शालकीछाल कत्था · कंकोल · जायफल · भीमसेनी कपूर · चंदन · बोल · ना गरमोथा · सुगंधवाला ये सब औषधि समान लेय और इन द्र व्य की मात्रा से दूना विष लेय · और खैरसार के जल और गो मूत्र में गोली बनावे · इसको मुख में रखे तौ मुख के सर्वरोग दूर होवें · कडवेतेल में विष मिलाकर नस्य लेने से पलिका और

अरुंषिका रोग दूर होवें॥

गुंजाटंकणशिग्रुमूलरजनी सम्याकभल्लात का स्नुह्यर्काग्निकरंजसैंधववचा कुष्टाभया लांगली: वर्षाभूषट्भूशिरीष वरणव्योषा श्वमारोविषं गोमूत्रेणमयोहिलुप्तमपचीगं ठ्यर्वुदं श्लीपदान॥

अर्थ — घूंघची · सुहागा · सहजने की जड़ · हलदी · अमलतास भिलावा · थूहर · आक · चित्रक · कंजा · सैंधानोंन · वच · कूठ हरड़ · कलियारी · कंचुरा · घटभू · शिरसकीछाल · सोंठ · मिरच पीपल · कनेर · और वच्छनागविष · इन सबको गोमूत्र में पीसक र लगाने से इंद्रलुप्त · अपची · गांठ · अर्बुद · और श्लीपद इन का नाश होवे॥

विषभक्षणके अधिकारी

अशीतियस्यवर्षाणि चतुर्वर्षाणियस्यवा वि षंतस्यनदातव्यं दत्तंचेद्रोगकारकं नक्रोधि तेनपित्तार्ते नक्लीवराजयक्ष्मिणि क्षुत्तृष्णाश्र मकर्माध्व सेवानिक्षयरोगिणे गर्भिण्यांबाल वृद्धेच नविषंराजमंदिरे नदातव्यंनभोक्तव्यं विषंवाधेत्कदाचन॥

अर्थ — जिसकी ८० वर्ष की अवस्था होवे · अथवा ४ वर्ष की अ वस्था होवे · उसको विष खाने को न देवे · यदि खायतो रोग क रे · और क्रोधी · पित्तप्रकृतिवाला · नपुंसक · क्षयरोगवाला · भूख प्यासा · परिश्रमी · मार्गचलाहुआ · गर्भिणी · बालक · बूढा · औ र राजा को तथा राजा की परिस्कर मात्र को विष भक्षण करने को नदेवे॥

विषसेवनमेंपथ्य

घृतंक्षीरंसिताक्षौद्रं गोधूमास्तंडुलानितत्
मरिचंसैंधवंद्राक्षं मधुरंपानकंहिमं ब्रह्मचर्यं
हिमंदेशं हिमकालंहिमंजलं विषस्यसेवको
मर्त्यो भजेदितिविचक्षणः॥

अर्थ— विष सेवन करनेवाला घृत · दूध · मिश्री · शहद · गेहूं चांवल · कालीमिरच · सेंधानोंन · दाख · मधुर और शीतल ऐसी वस्तु तथा ब्रह्मचर्य · शीतल देश · तथा शीतलऋतु · शीतल जल ये पदार्थ सेवन करे॥

मात्राधिकभक्षणकी प॰

मात्राधिकंयदामर्त्यं प्रमादाद्भक्षयेद्विषं अ
ष्टौवेगास्तदातत्र जायतेतस्यदेहिन उद्वेगंप्र
थमेवेगं द्वितीयेवेपथुर्भवेत वेगेतृतीयेदा
हःस्याच्चतुर्थेपतनंभवेत फेनस्तुपंचमेवेगेष
ष्ठेविकलएवच जडतासप्तमेवेगे मरणंचाष्ट
मेभवेत विषवेगानितिज्ञात्वा मंत्रतंत्रैर्विना
शयेत यावन्नाष्टमवेगंतु संप्राप्नोतिहिमा-
नवः॥

अर्थ— यदि मनुष्य प्रमाद से विष की अधिक मात्रा खाय लेवे तो उसके विष के प्रभाव से आठ वेग होते हैं प्रथम वेग में तो उद्वेग होवे · दूसरे में कंप · तीसरे मे दाह · चतुर्थवेग मे धरती पर गिरना · पांचवे में मुख से · झाग डालना · छटवें वेग में विकलता · सातवें वेग में जडता · आठवे वेग मे मरना ये विष के वेग जानकर मंत्र तंत्र से शांति करे · जब तक मनुष्य को अष्टमवेग न आवे यत्न करे॥

विषकेउतारनेकीवि०

अतिमात्रंयदाभुक्तं वमनंतस्यकारयेत अजा दुग्धंददेत्तावद्यावद्भ्रांतिर्नजायते अजादुग्धंयदा कोष्ठे स्थिरीभवति देहिनः विषवेगंततोऽजीर्णं जानीयात्कुशलोभिषक्॥

अर्थ — किसीनें बहुत विष खालिया होवे. उसको वमन करावे और जब तक वमन (रद्द) करना बंद नहीं होवे तब तक बकरी का दूध पिलावे. जब बकरी का दूध पचजाय उस समय जाने कि विष का वेग उतर गया॥

दूसराप्रकार

विषंहन्याद्रसः पीतोरजनीमेघनादयोःसर्पा क्षिटंकणंवापि घृतेनविषहृत्परम्॥

अर्थ — हलदी और चौलाई तथा सर्पाक्षी और सुहागा इनको घृत के साथ भक्षण करे. तो विष के वेग की शांति होवे.॥

तीसराप्रकार

पुत्रजीवकमज्जावापीतानिंबकवारिणा विष वेगंनिहंत्येव वृष्टिर्दावानलंयथा॥

अर्थ — जीवापोता वृक्ष की छाल. नीब के रस में मिलाकर पीवे तो विष वेग का नाश होवे. जैसें वर्षा होने से दावानल की शांति होती है॥

चौथाप्रकार

गोघृतपानाद्धरते विषंचगरलं च कर्कोटी सकलविषोपविशमनी त्रिमूलीसुरभिजि ह्वाच॥

अर्थ — बांझककोडी को घृत के साथ पीने से विष और गरल

इनका नाश होवे· इसी प्रकार निर्मूली और गोभी भी विष नाशक हैं ॥७॥

अधिकविषकाउपचार

अतिमात्रंयदाभुक्तंतदाज्यटंकणंपिबेत् विषंस
वेगतोनाशमाशुप्राप्नोतिनिश्चितं॥

अर्थ॰ जिस समय कोई अधिक विष खाय और वह अवगुण करे उस समय घृत में सुहागा मिलाकर पिलावे तो वेग सहित वर्त्तमान विष का निश्चय नाश होवे॥

विषसेवनमेंकुपथ्य

कट्वम्ललवणंतैलंदिवास्वप्नाग्निसंतापान अभ्य
स्तेपिविषेयलाद्वर्जनीयान्विवर्जयेत्॥

अर्थ॰ तीखा· खट्टा· नोन· तेल· दिनका सोना· अग्नि मे तापना· धूप में डोलना ये सब विष के अभ्यास वाला मनुष्य त्याग देवे· और जो वस्तु वर्जित हैं उनको भी त्याग दे॥

घृतरहितविषसेवनकेउपद्रव

दृग्विभ्रमंकर्णरुजमन्याश्चानिलजानगदा
न विषंरुक्षाशिनःकुर्यान्मृत्युमेवत्वजीर्णतः

अर्थ॰ दृष्टि का भ्रमण· कानमेंपीड़ा· और अनेक वातजरोग इतने अवगुण रूखा खानेवालेको विष करता है· और विष का अजीर्ण मृत्यु करता है॥

उपविषाणि

स्नुह्यर्कलांगलीगुंजाह्वयारीविषमुष्टिका जेपा
लोन्मत्ताहिफेनंनवोपविषजातयः॥

अर्थ॰ थूहर· आक· कलियारी· घूंघची· कनेर· कुचला

जैपाल (जमालगोटा) धतूरा· और अफ़ीम ·ये नौ उपविष हैं

मतान्तर

भल्लातकंचातिविषं चतुर्भागंचखरवरसं क
रवीरंद्विधाप्रोक्तं माहिफेनंद्विधामतं धत्तुरश्च
चतुर्धास्यात् द्विधागुंजानिर्विषा विषमुष्टिर
लांगलीच गणश्चोपविषाह्वयः॥

अर्थ— भिलावा अतिविष चार प्रकार के खसखस· कनेर दो प्र
कार की · अफीम दो प्रकार की· चार प्रकार का धतूरा· दोप्रका
र की गुंजा (चिरमिटी) कुचला · कलयारी · यह उपविषाख्य
गण हैं॥

अथशोधनम्

पंचगव्येषुशुद्धानिदेयान्युपविषाणिच विषाभा
वप्रयोगेषु गुणस्तुविषसंभवा॥

अर्थ— उपविष पंचगव्य (दूध · दही · घृत · गोमूत्र ·गोवर) में शु
द्ध करे· और इनको विष के अभाव में देवे इन उपविषों के गुण
विषों के समान हैं॥

आक

अर्कद्वयंसरंवातंकुष्टकंडूविषाहम विहंतिप्लीह
गुल्मार्शयकृत श्लेष्मोदरकृमीन॥

अर्थ— सफ़ेद और काले दोनों आक दस्तावर तथा वादी · कोढ़
खुजली · विष · तापतिल्ली ·गोला· ववासीर ·यकृत् · कफोदर
कृमिरोग इनका नाश करे·॥

कलयारी

लांगलीशुद्धिमायाति दिनंगोमूत्रसंस्थितं
कालयारीसराकुष्ट शोफार्शोव्रणशल्यनुत

तीक्ष्णोष्णकृमिन्कुष्ठघ्नी पित्तलागर्भपातनी

अर्थ — कलयारी के टुकडे २ कर एक दिन गोमूत्र में भिगोने से शुद्ध होवे· कलयारी दस्तावर है· कुष्ट· सूजन · बवासीर यकृत · कफोदर · और कृमिरोग · इनका नाश करे॥ व्रणरोग और शूलकानाशकरे· तीखी गरम और **गुंजा** २ पित्तकर्त्ता है· हलकी गर्भपातनकरे

गुंजाकांजिकसंस्विन्ना प्रहराच्छुध्यतिध्रुवम् गुंजालघुर्हिमारूक्षा भेदनीश्वासका सजित् कृष्णाकृष्णकुष्टकंडू श्लेष्मापित्तव्रणापहा

अर्थ — गुंजा (घूंघची) को कांजी में डाल दोलायंत्र में एक प्रहर सिजाने से शुद्ध होवे· गुंजा हलकी है· शीतल· रूखी· भेदक · श्वास · खांसी · कोढ़ · खुजली· कफ· पित्त के विकार व्रण इनको दूर करे·॥

कनेर

हयारीविषवच्छोध्यं गोदुग्धेगोलकेनतु कर वीरद्वयंनेत्र रोगकुष्टव्रणापहं लघूष्णंकृमि कंडूघ्नं भक्षितंविषवन्मतम्॥

अर्थ — दोनों प्रकार की कनेरों के टुकड़े २ कर गौ के दूध में दोलायंत्र में एक प्रहर पचावे· तो शुद्ध होवे· दोनों प्रकार की कनेर हलकी· तथा गरम· नेत्ररोग · कोढ · व्रण · कृमिरोग· और खुजली· इनको दूर करे· खाने से विष के समानगुण करती है॥

कुचला

दोलायंत्रेण संस्वेद्य कांजिकेप्रहरद्वयं किंचिदाज्येनसंभृष्टो विषमुष्टिर्विशुद्ध्यति॥

अर्थ — कांजी के पानी से कुचला को दोलायंत्र में दो प्रहर उ सेवे॰ पीछे घृत में भूने तौ कुचला शुद्ध होवे॥

विषमुष्टिः कटुस्तिक्तस्तीक्ष्णोष्णः श्लेष्मवात
हा सारमेयविषोन्मादहरो मदकरः सरः॥

अर्थ — कुचला॰ तीखा॰ कडवा॰ चरपरा॰ गरम॰ मदकर्त्ता तथा दस्तावर है॰ और बादी कफ़ के विकारों को॰ कुत्ता के विष को नाश करे॰ उन्माद करे॰॥

जैपाल (जमालगोटा)

नविषंविषमित्याहुर्जैपालोविषमुच्यते शोधि
तस्त्वविरेकेषु चमत्कातिकरः परः॥

अर्थ — विष को विष नहीं कहते किंतु जैपाल अर्थात् जमाल गोटा को पंडित जन विष कहते हैं शोधा हुआ जमालगोटा दस्तों में अत्यंत चमत्कार करनेवाला है॰॥

जैपालशोधन

पंचगव्येषुसंशोध्य दूरकार्यंतुजिह्विका त
तोऽम्लवर्गेदशधा क्षारवर्गेत्रिधापुनः कुमारी
कौद्रवंभस्म जलेचैवविशोधयेत् सर्वशुद्ध
स्तुजैपालो वांतिदाहविवर्जितः॥

अर्थ — जमालगोटे को पंचगव्य में शोधकर इसके भीतर से जिह्वा को निकालकर पटक देवे॰ तदनंतर दश वार अम्लवर्ग में और तीनवार क्षारवर्ग में उसी प्रकार घीगुवार के रस में अरहर की राख के जल में शोधकरे इसप्रकार शोधित जैपाल वमन और दाह रहित होता है॰

दूसराप्रकार

जैपालंरहितंत्वग्भिः कुररसैर्जाभिर्मले माहिषे

निशिसंव्यहसुष्णतोयविमलं खल्वेसवा
सोर्दितं लिप्तंनूतनखर्परेषुविगतस्नेहोरजः
संनिभांनिंवूकांबुविभावितश्च वहुशः शुद्धो
गुणाच्छोभवेत॥

अर्थ — जमालगोटे को भैंस के गोवर में तीन दिन गाद देय पीछे उसके वक्कल और भीतर की जिह्वा को दूर कर गरमपानी से धोडाले· और वस्त्र सहित खरल में डाल मर्दन करे· पीछे कोरे खपरे के ऊपर लेप कर देवे· तो उसका तेल सूख जाय· पीछे नीवू के रस में वहुत देर तक घोटे तो शुद्ध और गुणों में निर्मल होवे·॥

तीसराप्रकार

वस्त्रेवध्वातुजेपालं गोमयस्योदकेन्यसेत
पाचयेद्यामस्मात्रंतु जेपालः शुद्धतांव्रजेत

अर्थ — जमालगोटे को वस्त्र की पोटली में वांध गोवर के रस में दोलायंत्र से एक पहर पचावे पीछे उसके भीतर की जिह्वा को निकाल लेवे तो शुद्ध होवे·॥

चौथाप्रकार

जेपालनिस्तुषंकृत्वादुग्धेदोलायुतंपचेत अं
तराजिह्वांपरित्यज्य युंज्याच्चरसकर्माणि॥

अर्थ — जमालगोटे का वक्कल दूर कर कपडे में वांध दूध में दोलायंत्र से पचावे और उसकी भीतर की जिह्वा को निकाल डाले· तो शुद्ध होवे· इसको रसकर्म में डाले॥

जमालगोटाकेगुण

जेपालोतिगुरुस्तिक्तोवांतिकृत् ज्वरकुष्ठनुत
उष्णोगुरुर्व्रणः श्लेष्मकंडूकृमिविषापहः

अर्थ — जमालगोटा अत्यंत भारी कड़वा · गरम · वमनकर्त्ता · तथा ज्वर · कोढ़ · व्रण · कफ · खुजली · कृमिरोग · और विषबाधा · इनका नाश करे ॥

धतूरा

धत्तूरबीजं गोमूत्रे चतुर्यामोषितं पुनः कंडितं नि
स्तुषं कृत्वा योगेषु विनियोजयेत्

अर्थ — धतूरे के बीजों को चार पहर गोमूत्र में भिगोदे · तदनंतर निकालकर सुखा लेवे और भूसी को दूर करदेवे तो शुद्ध होवें पीछे योग में डाले ॥

धतूरेके गुण

धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृत् ज्वरकुष्ठनुत् उ
ष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकंडूकृमिविषापहः ॥

अर्थ — धतूरा उन्माद · कांति · अग्नि · वायु · और ज्वर करे · तथा कुष्ट और गरमी तथा भारी व्रण · कफ · खुजली · कृमिरोग · और विष को दूर करे ॥

अफीम

अहिफेनं शृंगवेरं रसैर्भाव्यं त्रिसप्तधा शुद्धयुक्तं
सुयोगेषु योजयेत्तद्विधानतः

अर्थ — अफीम में अदरक के रस की इक्कीस भावना देने से शुद्ध होवे · तदनंतर योगों में डाले ॥

अफीमके गुण

आफुकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलं
मदकृद्दाहकृच्छुक्रस्तंभनायासमेहकृत् अ
तिसारग्रहण्यां च हितं दीपनपाचनं सेवितं दि
वसैः कश्चितन्नमयत्यन्यया त्तिकृत् ॥

अर्थ – अफीम शोषक॰ग्राही॰कफहर्त्ता॰वात॰पित्त और मद को करे॰ दाह और शुक्र का स्तंभन करे॰ परिश्रम॰प्रमेह॰कोक रे॰ अतिसार॰ संग्रहणी इन में हित कारक हैं॰ दीपन और पाच न है॰ बहुत दिन सेवन करनेवाले को समय पर नमिलने से श रीर में पीडा करे॥

भांग

बब्बुलत्वक्कषायेण भंगां संस्वेद्य शोषयेत
गोदुग्धभावनां दत्वा शुष्कां सर्वत्र योजयेत॥

अर्थ – भांग को बबूल के काढे में स्वेदन करे और गौ के दूध की भावना देकर सुखावे तो शुद्ध होय इसको सर्व योगों में मिलावे॥

भांगकेगुणदोष

विजयाकटुकषायोष्णा तिक्तावातकफापहा सं
ग्राहिवाकप्रदाबल्या मेधाकृद्दीपनीपरा॥

अर्थ – भांग तीखी॰ कषेली॰ गरम॰ कटु॰ वात॰ कफ की दूर क रने वाली॰ संग्राही है॰ वाणी की वृद्धि करे॰ बलकर्त्ता॰ मेधाकर॰ दी पनी अर्थात् अग्नि को दीपन करे॥

थूहर

सेहुंडोरोचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः शू
लमष्ठीलिकाध्मान गुल्मशोफोदरानिलान्
हंतिदोषान्यकृत्प्लीह कुष्ठोन्मादाश्मपांडु
ताः॥१॥

हातिउपविषाणि

अर्थ – थूहर रुच्य॰ कडवी॰ तीखी॰ गरम॰ दीपन॰ तथा भा री॰ है स्थूल॰ अष्ठीलिका॰ अफरा॰ गोला॰ सूजन॰ उदररोग॰

वादी · त्रिदोष · यकृत् · सीहे · कोढ · उन्माद् · पथरी और पांडुरोग इनका नाश करे ॥

संखिया (सोमल)

गौरीपाषाणकः प्रोक्तो द्विविधः श्वेतपीतकः श्वेतः शंखस्यसदृशो पीतोदाडिमकः प्रभः श्वेतः कृत्रिमकः प्रोक्तो पीतपर्वतसंभवः वि षकर्मकरौतौहि रसकर्माणिपूजितौ कृष्णर क्तविभेदेन चतुर्धाकथ्यतेक्वचित् अम्लक्षा रवर्गस्थैः गैरिकाविमलंधमेत् क्रमात्पीतंच रक्तंच सत्वंपततिशोभनं ॥

अर्थ— संखिया दो प्रकार का है एक सफ़ेद् दूसरा पीला सफ़े द् शंख के समान उज्वल होता है · और पीला अनार के समान इनमें सफ़ेद् बनाहुआ होता है · और पीला पर्वत से निकलता है · ये दोनों विष के सदृश कार्य करते हैं · और पारद् के कर्म में पूजनीय हैं · अर्थात् पारे को बंधन करते हैं परंतु कहीं काले और लाल के भेद से चार प्रकार के मानते हैं · संखिया को अम्लवर्ग क्षारवर्ग में गोमूत्र में डालकर घोटे तदनंतर गेरू और विमला को मिलाकर अग्नि में बंकनाल धोकनी से धोंके तो क्रम से पी ला लाल सत्व निकले ॥

विषकेविकारोंकीशांति

अफीमकेविषकीशांति

बृहत्सुद्धारसंदुग्धं पलमानानिसेवणात् नाग फेनविषंयाति सजीवातिचिरंपुमान् ॥ १ ॥ उग्रा सिंधुतथाकृष्णा मज्जामदनकंफलं तप्तनीरे

णतद्वयमहिफेनविषंन्यसेत टंकणंनीलतुत्थं
च घृतयुक्तंचदापयेत तेनवांतिर्भवेत्सद्यनाग
फेनविषंन्यसेत॥

अर्थ- वडी कटेरी का रस एक पल दूध के साथ पीने से अ
फीम का विष नाश होवे· और वह मनुष्य जीवे· अथवा वच
सेंधानोंन· पीपल· मैंनफल की छाल· इनको गरमजल केसा
थ खाने से अफीम का विष दूर होय· अथवा सुहागा· नील·
लीलाथोथा· सब को पीस घृत में मिलाय पिये तो वमन होय·
और अफीम का विष दूर होय·॥

धतूरेकेविषकीशांति

वृंताकफलवीजस्य रसोहिपलमात्रकं भक्ष
णाद्वक्तधत्तूर विषंनस्यातीनिश्चितं॥४॥क
र्पासास्थितथापुष्प जलेनोत्क्वाथपानतः ध
तूरस्याविषंहंति तथालवणसेवनात॥५॥गो
दुग्धप्रस्थमेकंतु शर्करास्यातपलद्वयं॥तत
पानतोविषंयाति धत्तूरस्यतुनिश्चितं॥ ६ ॥

अर्थ- वेगन के वीजों का रस एक पल पीने से धतूरे का विष
निश्चय दूर होवे· अथवा विनौला और कपास का फूल जल
में औटावे· उस जल के पीने से धतूरे का विष नाश होवे·
उसी प्रकार निमक खाने से भी धतूरे का विष नाश होवे· अ
थवा सेर भर गौ का दूध मिश्री दो पल इनको गरम २ पीने से ध
तूरे का विष मिटे॥

वछनाग (सिंगिया) विषकीशां·

पटवणस्यवृक्षस्य रसपलप्रमाणकं शर्करायुक्त
पानेन वत्सनागविषंहरेत॥

अर्थ- हीरवणवृक्षकेरसमें मिश्री मिलाकर पीनेसेव च्छनाग (सींगीया) विषकी शांति होय॥

भिलावेकेविषकीशांति

स्वरसोमेघनादस्य नवनीतनसंयुतः भल्लात कभवंशोफं हंतिलेपेनतत्क्षणात्॥८॥दारु सर्षपमुस्तानि नवनीतेनलेपयेत् भल्लातक विकारोऽयं सद्योगच्छतिनिश्चितं॥९॥नव नीतंतिलंदुग्धं पुनः खंडयुतंनच लेपनाच्छ मयंयातिभल्लातकव्यथात्वरं॥१०॥

अर्थ- चौलाई का रस और मक्खन मिलाकर जहां भिलावे की सूजन होवे. उस जगह लगाने से भिलावे की सूजन तत् क्षण दूर होय. अथवा देवदारू. सरसों. नागरमोथा. इनको मक्खन में मिलाकर लेप करने से सूजन दूर होवे. अथवा मक्खन तिल. दूध. और मिश्री इनको मिलाकर लेप करने से भिलावे की व्यथा नाश हो अथवा मोम. तिली और तिल का तेल इनको औटाकर लगावे तो भिलावे की व्यथा तत्क्ष ण नाश होय.॥

भांगकेविषकीशांति

सुंठीगोदधियुक्ताच पानेभंगाविकारनुत॥

अर्थ- सोंठ के चूर्ण को गौ के दही के साथ सेवन करने से भांग का विकार नाश होय॥

गुंजा (घूंघची) केविषकीशां.

मेघनादरसाम्नाद्यःशर्करायुक्तपानतः उच्च टायाविकारस्य शांतिःस्या दुग्धसेवनात्॥ मधुखर्जुरिस्माद्विकावृक्षाम्लाम्लाचदाडिमी

परुषैराम्लैश्चैव युक्तो सद्यो विकारहृत्॥

अर्थ — चौलाई के रस में मिश्री मिलाकर पीने से गुंजा का विष नाश होय. इसके ऊपर दूध पिये. अथवा शहद. छुहारे. दाख तंतडीक. खट्टा अनार. फालसे. आमले. इनको एकत्र कर खाने से गुंजा का विष मिटे॥

कनेरकेविषकीशांति

सितायुक्तसदादेयंदधिवामाहिषंपयः तथा
चार्कत्वचापीताकणवीरविषापहा॥

अर्थ — मिश्री मिला भैंस का दही अथवा दूध पिये तथा आक की छाल पीने से कनेर का विष नाश होवे॥

थूहरकेविषकीशांति

शीतवारिसितायुक्ता पानेवज्रीविषापहा
वस्त्रवायुतथाकार्या शीतछायांचसेवयेत्
चिंचापत्रजलेपिष्टा मर्दयेत्शांतिकृत्स
दा हेमगैरिजलेपाने स्नुहीचार्कविकार
हृत॥

अर्थ — शीतलजल में मिश्री मिलाकर पीने से थूहर का विकार दूर होवे. अथवा कपडे की पवन और शीतल छाया का सेवन करे अथवा इमली के पत्ते जल में पीसकर लगावे तो थूहर का विष दूर होवे अथवा सुवर्ण गैरिक को जल में घोर कर पीने से थूहर और आक का विकार नाश होय॥

जैपालकेविकारकीशां०

धान्यकंसितयायुक्तं दधिनासहयःपिबेत् देहेजे
पालजांव्याधिंनाशमाप्नोतिनिश्चितं

अर्थ — धनियां और मिश्री दही में मिलाकर सेवन करे तो जमाल

गोटे की संपूर्ण व्याधि नाश होवें ॥

इतिविषप्रकरणम्

अथलोहाष्टक

सुवर्णरजतंताम्रंत्रपुसीसकमायसं षडेतानि चलोहानि कांसीकांस्यपित्तलौ ॥

अर्थ — सोना · चांदी · तामा · रांगा · सीसा · लोहा · ये छः लोह हैं और कासी · पीतल यह दो बने लोह हैं ॥

षटलवण

लवणानिषडुच्यंते सामुद्रंसैंधवंविडं सौवर्च लंरोमकंच चूलिकालवणंतथा ॥

अर्थ — नोन छः प्रकार का है · सामुद्र · सैंधा · विड · काला · रोमक और चूलिका ॥

क्षारत्रय

क्षारत्रयसमाख्यातं यवस्वर्जिकटंकणं

अर्थ — जवाखार · सज्जीखार · और सुहागा ये तीनो क्षारत्रय नाम से प्रसिद्ध हैं ·

मधुरत्रय

घृतंगुडोमाक्षिकंच विज्ञेयंमधुरत्रयं ॥

अर्थ — घृत · गुड · और शहद ये तीनो मधुरत्रय कहलाते हैं ॥

वसावर्ग

जंबूकमंडूकवसावसाकच्छपसंभवा क कोटोशिशुमारीच गोशूकरनरोद्भवा अजो ष्ट्रखरमेषाणां महिषस्यतथावसा वसावर्ग समाख्यातं पूर्वाचार्य्यैसमागतः ॥

अर्थ— स्यार · मेंडक · कछुवा · केकडा · सूस · गो · सूअर मनुष्य · वकरा · ऊंट · गधा · मेंढा · और भैंसा इन तेरहों की वसा को पूर्वाचार्य वसावर्ग कहते हैं॥

मूत्रवर्ग

मूत्राणिहस्तकरभमहिषीखरवाजिनां गोजा
वीनांस्त्रियः पुंसांपुष्पंवीजंतु योजयेत

अर्थ— हाथीका · ऊंटका · भैंसाका · गधेका · घोड़ेका · गौका वकरीका · मेंढाका · स्त्रियों का रज · पुरुषोंका वीर्य ये मूत्रवर्ग कहलाते हैं॥

माहिषपंचक

महिषावुदधिक्षीरं साभिसारंशकृद्रसः तत्पंच
माहिषंज्ञेयं तद्वच्छागलपंचकम्॥

अर्थ— भैंस का मूत्र · दही · दूध · घृत · और गोवर का रस यह माहिष पंचक कहाता है · इसी प्रकार वकरी के मूत्र आदि का छागलपंचक कहाता है·

अम्लवर्ग

अम्लवेतसजंवीर निंवुकंवीजपूरकं चांगेरी च
णकाम्लं च अम्लीकंकोलदाडिमं अंवष्ठांतं
तडीकंच नारंग रसपत्रिका करवंदंतथाचान्य
दम्लवर्गः प्रकीर्तितः

अर्थ— अमलवेत · जंभीरी · नीवू · विजौरा · लोनियां · चनाखार इमली · वेर · अनारदाना · चूका · ततडीक · नारंगी · रसपत्रिका · करोंदा · इनसे आदि ले और भी खट्टी वस्तु अम्लवर्ग कहलाती हैं॥

इति

चणकाम्लश्चसर्वेषां मेकरावप्रशस्यते अ
म्लवेतसमेकंवा सर्वेषामुत्तमोत्तमं रसादीनां
विशुद्ध्यर्थं द्रावणेजारणेहितं

अर्थ— सब खटाइयों में चना की खटाई उत्तम है अथवा अ
म्लवेत उत्तमोत्तम है· पारे आदि के शोधन द्रावण और जारण में
हितकर्त्ता है॥

अम्लपंचक

कोलदाडिमवृक्षाम्ल चुल्लिका चुक्रि कार
सं पंचाम्लकंसमुद्दिष्टं तच्चोक्तंचाम्लपंच
कम्॥

अर्थ— बेर· अनारदाना· तंतडीक· लोनियां· चूका ये पंचा
म्लक कहते हैं॥

पंचमृत्तिका

इष्टिकागैरिकालोणं भस्मवल्मीकमृत्ति
का रसप्रयोगकुशलैः कीर्त्तिताः पंचमृ
त्तिका॥

अर्थ— ईंट का चूर्ण (कुकुआ) गेरू का चूर्ण· नोन का चू
र्ण· और राख· बांबी की मिट्टी ये रस प्रयोग के ज्ञाताओं ने पां
च मट्टी कही हैं॥

विषवर्ग

शृंगीकंकालकूटंच वत्सनाभंसक्तविमं
पित्तंचाविषवर्गोयं सवरःपरिकीर्त्तितः रसक
र्माणिशस्तोयं तद्वेदनवधावापि अयुक्त्यासे
वितश्चापि मारयत्येवानीरवितं॥

अर्थ— सिंगिया· कालकूट· वत्सनाभ· कृत्रिम· और पित्त

यह उत्तम विषवर्ग कहा है· यह रस कर्म में श्रेष्ट है· उपवि ष के नौ भेद हैं इस विष को अयुक्ति पूर्वक खाने से मारडा लता है·॥

उपविषवर्ग

लांगलीविषमुष्टिश्च करवीरजयातथा ति
लकश्कनकोर्कश्च वर्गोह्युपविषात्मकः॥

अर्थ – करयारी· कुचला· कनेर· भांग· तिलकवृक्ष· धतूरा आक यह उपाविष वर्ग हैं॥

दुग्धवर्ग

हस्त्यश्ववनिताधेनु गर्धभः छागिकोपिवा
उष्ट्रकोदुंवराश्वत्थ भानुन्यग्रोधातिल्वकं
दुग्धिकास्नुगणं चैतत्तथैवोत्तम कंठिका
एषांदुग्धेविनिर्दिष्टो दुग्धवर्गोरसादिषु॥१॥

अर्थ – हाथिनी· घोड़ी· स्त्री· गौ· गधी· वकरी· ऊंटनी· गूल र· पीपल· आक· वर· हिंगोट· दुद्धी· थूहर· और उत्तम कं ठिका· इनके दूध को दुग्धवर्ग कहते हैं॥

विट (विष्टा) वर्ग

पारावतस्यचाषस्य कपोतस्यकलापिनः
गृध्रस्य कुक्कुटस्यापि विनिर्दिष्टोहिविड्गणः
शोधनंसर्वलोहानां पुटनाल्लेखनात्खलु॥

अर्थ – कवूतर· नीलकंठ· घरेलू कवूतर· मोर· गीध और कुत्ता· इन सब की विष्टा को विड्गण कहते हैं यह सर्वलोह को पुट देने से शोधन करें॥

रक्तवर्ग

कुसुंभंखदिरोलाक्षा मंजिष्टारक्तचन्दनं

आद्रीवबंधुजीवश्च तथाकपूरगंधिनि मा
क्षिकंचेतिविज्ञेयो रक्तवर्गोतिरंजनः॥ ७ ॥

अर्थ- कसूम· रैवर· लाख· मजीठ· लालचंदन· आद्रीव दुपहरिया· कपूरगंधि· सोनामक्खी· यह रक्तवर्ग कहलाते हैं॥

पीतवर्ग

किंशुकः कर्णिकारश्च हरिद्राद्वितयंतथा
पीतवर्गसमादिष्टो रसराजस्यकर्माणि॥

अर्थ- ढाक· कनेर· दोनोंहलदी· यह पीतवर्ग पारे के कर्म में कहा है॥

श्वेतवर्ग

तगरः कुटजः कुंदो गुंजाजीवंतिकातथा॥
सिताम्भोरुहकंदश्च श्वेतवर्गउदाहृतः॥

अर्थ- तगर· कुडाकाफूल· कुंदकाफूल· गुंजा· घूंघची अरनीकेफूल· सफेदकमल· और उसका कंद· यह श्वेतवर्ग कहलाता है॥

कृष्णवर्ग

कदलीकारवल्लीच त्रिफलानीलिकान
लः पंकः कासीसवाम्लाम्न कृष्णवर्गउदा
हृतः॥

अर्थ- केला· करेला· त्रिफला· नील· चित्रक· कीच· कसीस नयाआम· यह कृष्णवर्ग कहलाता है॥

द्रावणगण

गुडगुग्गुलगुंजाज्य सारघैटंकणान्वितैः दु
ई वारिवल्लोहादेः द्रावणायगणामतः॥

अर्थ — गुड · गूगल · घूंघची · घृत · नोसद्दर · सुहागा · ये कठिन धातुओं के द्राव करने को द्रावणगण कहा है ॥

क्षाराः सर्वेमलंहन्त्यु रस्लेशोधनजारणं मा
द्यविषाणिनिघ्नंति स्नैग्ध्यंस्नेहाःप्रकुर्वते

अर्थ — क्षारवर्ग की भावना देने से पारे आदि धातुओं का मल नष्ट होवे · और अम्लवर्ग की भावना शोधन जारण में हित है · विषवर्ग धातुओं की मंदता दूर करे · और घृत तैलादि स्नेहवर्ग धातुओं में चिकनाहट प्रगट करे ॥

इतिवर्गाः

रसानांतोल्यम

त्रुटिःस्यादणुभिःषड्भिःतैर्लिक्षाषड्भिरी
रिता ताभिःषड्भिःभवेद्यूकः षड्यूकास्तु
रजःस्मृतःषड्रजःसर्षपःप्रोक्तःतैःषड्भि
र्यवईरितःएकागुंजायवैःषड्भिःनिष्पाव
स्तुद्विगुंजकःस्यान्नुंजात्रितयंवल्लोद्वौवल्लो
माषउच्यते ॥

अर्थ — छः अणु की एक त्रुटि संज्ञा है · और छः त्रुटि की एक लिक्षा होती है · छः लिक्षा का एक यूक होता है · और छः यूक की रजसंज्ञा है · छः रजकी एक सरसों होती है · और छः सरसों का एक यव होता है · और छः जौ की एक रत्ती (गुंजा) होती है · और दो रत्ती का एक निष्पाव कहाता है · तीन रत्तीका एक वल्ल होता है · और दो वल्ल का एक मासा होता है ॥

द्वौमाषौधरणंतेद्वौषाणानिष्ककलाःस्मृताः
निष्कद्वयंतुवटकं मचकोलद्दतीरितःस्यात्क्ष
लस्त्रितयंतोलःकर्षोनिष्कचतुष्टयं उदुंबरं

पाणितलंसुवर्णं कवलग्रहः अक्षं विडाल
पदकं शक्तिंपाणितलद्वयं शक्तिद्वयंपल
केचिदन्ये शक्तित्रयंविदुः तदेवकथ्यमुष्टिः ॥८८॥
प्रकुंचंविल्वमित्यपि॥

अर्थ— दो मासे का एक धरण होता है. दो धरण का एक षाण कहाता है. और षाण के सोलहवें हिस्से का नाम निष्क है. और दो निष्क का एक वटक कहाता है. उसीको कोल भी कहतेहैं तीन कोल का एक तोला होता है. और चार निष्क का एक कर्ष होता है. उसको उदुंवर. पाणितल. सुवर्ण. कवलग्रह. अक्ष और विडालपदक. कहते हैं. दो पाणितल को एक शक्ति कहते हैं. दो शक्ति का एक पल होता है. किसी के मत में तीन शक्ति का पल होता है. उसी पल को मुष्टि. प्रकुंच और विल्व भी कहते हैं॥

पलद्वयंतुप्रसृतं तद्वयंकुडवोंजलिः कुडवौ
मानिकातौस्यात्प्रस्थंमानिकेस्मृते प्रस्थद्वयं ॥८९॥
शुभौतौद्वौपात्रकद्वयमाढकं तैश्चतुर्भिर्घटो
माणिः नल्वनर्मणश्शूर्पकाः द्रोणश्चशब्दाः
पर्य्यायाः पलानांशतकंतुला चत्वारिंशत्प
लशतं तुलाभारः प्रकीर्तितः॥

अर्थ— दोपल का एक प्रसृत दो प्रसृत का एक कुडव. और अंजली होती है. दो कुडव की एक मानिका. दो मानिका का एक प्रस्थ. दो प्रस्थ का एक पात्रक. दो पात्रक का एक आढक. चार आढक का एक घट. माणि. नल्वण. शूर्पक. और द्रोण कहलाता है. सोपल का एक तुला. और चार हजार पल का एक भार होता है. परंतु शारंगधर के मत से दो हजार पल

का एक भार होता है॥

टंकं १ कर्षं ४ पलं १६ चापि कुडवं ६४ प्रस्थ २५६ माढकं १०२४ द्रोणा ४०९६ द्रोणी १६३८४ स्वारिकेति ६५५३६ क्रमादेते चतुर्गुणाः रसार्णवादिशास्त्राणि निरीक्ष्य कथितं मया रसोपयोगि यत्किंचिद्दिङ्मात्रं तत्प्रदर्शितम्॥

अर्थ— टंक· कर्ष ·पल ·कुडव· प्रस्थ ·आढक· द्रोण ·द्रोणी और खारी ये क्रम से एक से एक चौगुनी संख्या कही है· अर्थात् टंक से चौगुना कर्ष होता है· और कर्ष से चौगुना पल· पल से चौगुना कुडव· और कुडव से चौगुना प्रस्थ होता है इसी प्रकार और भी जानना · रसार्णवादि शास्त्रों को मैंने देखकर कहा है· (रसका जो कुछ) उपयोगी था उसका दिक देश मात्र दिखला दिया है

पुटोंकीसंज्ञाऔररीति

महापुट

घनचौरसकेगर्त्ते हस्तद्वितयमात्रके करीषैरर्धपूर्णं च मुद्रितं च शरावकं संस्थाप्य चान्यकरीषैः पूरिते तत्र भगर्त्तके अग्निप्रज्वाल्य शीतेच गृह्णीयात्तु शरावकं एतन्महापुटं चोक्तं कृतिभिः पूर्वसूरिभिः॥

अर्थ— फैलाव में चौकोर दो हाथ का गढ़ा करे उसको आरने उपलों से आधा भरे पीछे औषधियुक्त शराव पर कपर मिट्टी कर सुखावे पश्चात् उस गढे के बीच में रखे पीछे आरने उपलों से गढे को भर बंद करदेवे पीछे उसमें आंच लगादे

स्वांग शीतल होने पर शराव को निकाल लेवे. इस पुटको पहले वैद्य महापुट कहते हैं॥

गजपुटकेलक्षण

घनचौरसकेसार्द्धहस्तेचैवतुगर्त्तके पूर्ववद्दी यते चाग्निस्तत्पुटंगजसंज्ञितं माहिषवेत्तिसं ज्ञेयं सूरिभिः समुदाहृतं

अर्थ — जो घन चौरस डेढहाथ गढेला होवे. उसमें आधे में उपला भर वीच में सराव अथवा मूस रखकर अग्नि देवे. इस पुट को गजपुट अथवा माहिषपुट कहते हैं॥

वाराहपुटकेलक्षण

अरत्निमात्रेगर्त्ते यद्दीयतपूर्ववत्पुटं करी षाग्नीतुतत्प्रोक्तं पुटंवाराहसंज्ञितं॥

अर्थ — अरत्निमात्र (कुहनी से लेकर उंगली पर्य्यंत) गढे में पूर्व रीति से आरने उपलों की अग्नि देने को वाराहपुट कहते हैं॥

कुक्कुटपुटकेलक्षण

वितस्तिमात्रगर्त्तेयत्पुटयेत्तत्तुकौक्कुटम

अर्थ — वालिश्त भर चौडे लंवे गढे में पूर्व प्रकार अग्निदेने को कुक्कुट पुट कहते हैं॥

कपोतपुटकेलक्षण

वितस्तिमात्रकेगर्त्ते सप्तभिर्वाथचाष्टभिः वन्योत्पलैः पुटदत्तं तत्तुकापोतसंज्ञितम

अर्थ — वालिश्तभर के गढे में सात वा आठ उपलों की अग्नि देने को कपोतपुट कहते हैं॥

इति

गोवरपुटकेलक्षण

चूर्णीकृतकरीषाग्नौ भूमावेवतुयत्पुटं दीयते तत्पुटंतांभगोवरं समुदाहृतम्॥

अर्थ — पृथ्वी में उपलों का बारीक चूरा करके उसके ऊपर औषधियों को रख ऊपर से कपरमिट्टी कर सराव रखे उसको उपलो के चूरे से बंद कर अग्नि देवे इसको गोवरपुट कहते हैं

कुंभपुटकेलक्षण

मृतघटस्यतुछिद्राणि कृत्वांगुलसमानि वै चत्वारिंशत्ततस्तस्मिन् शीतमुत्सुकचूर्णकं अर्द्धमापूरयित्वाच मुखंदद्याच्छरावकं कर्पटेनमृदालिप्त्वा छायाशुष्कंच कारयेत्॥तस्मिनंगारकान्क्षिप्य चुल्यां वायेष्टकासुच निधायात्रीदिनाच्छीतं गृहीत्वौषधिमाहरेत् एतत्कुंभपुटंज्ञेयं काथितंशास्त्रदर्शिभिः

अर्थ — मिट्टी के गगरा में एक उंगली के समान छेद करके उस आधी गागर को कोलों से भरकर उसमें औषधि भरे पीछे उसके मुख को सराव से बंद कर देवे और ऊपर कपरमिट्टी कर छाया में सुखा देवे जब सूखजाय तब आग के अंगारे डालकर चूल्हे पर अथवा ईंट पर रखकर अग्निदेवे पीछे उसको उतार कर तीन दिन तक शीतल होने देवे जबशीतल होजाय तब औषधियों को निकाललेवे इसको कुंभपुट कहते हैं॥

भांडपुटकेलक्षण

स्थूलभांडतुषापूर्णमध्येमूषासमान्विते व

न्हिनाविहितेपाकं तद्भांडपुटमुच्यते॥

अर्थ॰ बडे घडे को धान के तुषों से भर कर बीच में मूषा को रखे. पीछे अग्नि से यथायोग्य पाक करे इसको भांडपुट कहते हैं॥

वालुकापुट

अधस्तादुपरिस्थाच्च चक्रि काछायतेखलु
वालुकाभिः प्रतप्ताभिः यत्रतद्वालुकापुटं॥

अर्थ॰ मूसा को ऊपर नीचे वालू से भरकर औषधि को परिपक्व करे उसको वालुकापुट कहते हैं॥

भूधरपुट

वन्हिमित्रातृहितोसम्यक निखन्यद्वंगु
लादधः उपरिष्टात्पुटंयत्र पुटंतद्भूधराह्व
यम॥

अर्थ॰ पृथ्वी को दो अंगुल खोदकर उसमें घरिया को रखदेय. और उसके ऊपर पुट देकर अग्नि देवे इस्को भूधर पुट कहते हैं॥

लावकपुट

ऊर्ध्वंषोडशिकामूत्रै स्तुषैर्वागोवरैः पुटं य
त्रतल्लावकाख्यंस्या त्सुमृदुद्रव्यसाधने

अर्थ॰ मूसा के ऊपर मूत्र. तुष और उपलों का पुट जहां दिया जाय उसको लावकपुट कहते हैं. यहपुट नम्रवस्तु के वनाने को उत्तम है॥

इतिपुटो

अथयंत्राध्यायः

अथयंत्राणिवक्ष्यंते रसतंत्राण्यशेषतः स
मालोक्यसमासेन सोमदेवेनसांप्रतम् ॥

अर्थ — अब संपूर्ण रस के ग्रंथों को देखकर संक्षेप से सोमदेव यंत्रों को कहते हैं ॥

यंत्रशब्दकीनिरुक्ति

स्वेदादिकर्मनिर्मातु वार्त्तिकेन्द्रैः प्रयत्नतः यु
ज्यतेपारदोयस्मा तस्माद्यंत्रमितिस्मृतं ॥

अर्थ — स्वेदादिकर्म निर्माण करने को आचार्यो करके यत्न पूर्वक पारा योजना किया जाता है जिनमें इसी कारण इनको यंत्र कहते हैं ॥

कवचीयंत्रम

नातिह्रस्वांकाचकूपीं नचातिमहतींद्दढा
म वाससाकर्दमाक्तेन परिहृत्यसमंततः
संलिप्यमृदुमृत्स्नाभिः शोषयेद्वा तुरश्मि
ना निधायभेषजंतत्र मुखमाच्छादयेत्ततः
कठिन्याद्दृढयावापि पचेद्यंत्रेविधानतः
कवचीयंत्रमेतद्धि रसादिपचनेमतम् ॥ १ ॥

अर्थ — कांच की सीसी न बहुत बड़ी न बहुत छोटी दृढ होय



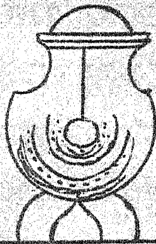
उसपर मुल्तानी मिट्टी में कपड़ा सानकर लपटे इस प्रकार कपरामिट्टी कर धूप में सुखा लेवे पीछे उसमें औषधि भरकर मुखबंद कर वालुकायंत्र आदि में स्थापन कर विधि पूर्वक पाक करे इस प्रकार कपड़ा चढी सीसी को कवचीयंत्र

कहते हैं· इससे पारदादिक की पाक क्रिया होती है॥

दोलायंत्र

निबद्धंसौषधंसूतं भूर्जेत्रुत्रिगुणांबरे रसपो
टलिकांकाष्टे हृदंवध्वागुणनहि संधायपू
र्णकुंभांतः स्वावलंवनसंस्थितान अधःस्ता
तज्वालयेद्वह्निं तत्तदुक्तक्रमेणाहि दोलाय
त्रमिदंप्रोक्तं स्वेदनाख्यंतदेवहि सांबुस्था
लीमुखेवद्धे वस्त्रेस्वेद्यंनिधायच विधाय
पच्यतेयंत्रे स्वेदनंतद्यत्रस्मृतम्॥

अर्थ— औषधि मिला पारा लेकर उसको तीन भोजपत्र से ल पेट कर पीछे उसकी कपडे में पोटली बांधे· और उसको ए क या डेढ़ बालिश्त छोटे काष्ट में बांधकर घड़े में लटका दे वे· और जिसमें पाचन करना होवे उस में आधा घडा जल भरदेवे· उस पोटली को उसके अंदर इस तौर से लटकावे जिसमें उसका पेटा नामिले उस घड़े को चूल्हे पर चढाकर कहे प्रमाण अ ग्नि देवे· इसको दोलायंत्र कहते हैं औ



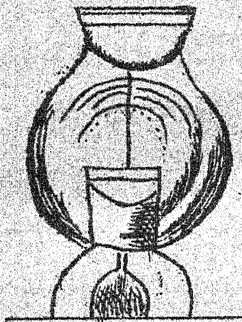
र स्वेदनीयंत्र भी कहते हैं· अथवा जल युक्तपात्र मुखपर कपडा बांध कर उस में जिसको स्वेदन किया चाहते हैं· उसको रखकर भांफ देवे और पचन करावे इसको स्वेदनयंत्र कहते हैं॥

गर्भयंत्र

स्थूलभांडस्यगर्भेतु डाष्टिकांस्थापयेत्ततः॥
पात्रस्याप्यंचोष्टि कोर्ध्वंद्रव्यंस्थूलेचभांड

के पश्चान्मुखेचान्य भांडंघटिकासदृशं
ददेत संधिंलेपततः कृत्वाजलंदत्वोर्ध्वपा
त्रके अग्निंप्रज्वालयेन्मंदं तप्तंनीरंपुनस्त्य
जेत पुनः शीतंजलंदत्वा तमृचेतस्त्यजेत्पु
नः एवंकृतेचोर्ध्वभांडलग्नं तैलादिकंस्रव
त अंतस्थेसूक्ष्मपात्रेच तच्चग्राह्यंप्रयत्नतः
गर्भयंत्रमिदंख्यातं सुगंध्यर्कादिसाधने ॥

अर्थ— वडा घड़ा चूल्हे पर चढाकर उस घडे की पैंदी में ईं
ट का टुकडा रखकर उसपर दूसरा पात्र रखे उसमें चारों औ
र औषधि भर देवे· औषधि स्थापन कर पीछे वडे घड़े केमु
खपर घड़ी के समान वना पात्र रखक
र संधि वंद करदेवे · पीछे वडे घडे के
तले मंदी २ अग्नि जलावे · मुख ढके हु
ए पात्र में पानी भर देवे · जव वह पानी
गरम होजाय तव निकाल उसको दूरक
रे और उसमें शीतल जल भर देवे इस



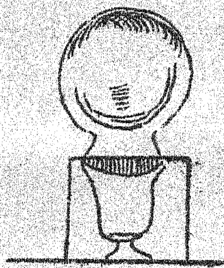
प्रकार वारंवार गरमजल निकालता रहे और शीतलजल भर
ता रहे· इस प्रकार करने से ऊपरले पात्र की पैंदी में वाफज
मती है वोही शीतलजल ऊपर रहने से टपक २ कर भीतर के
कटोरे में गिरती रहती है उसको सावधानी से निकाल लेवे
इसयंत्र को गर्भयंत्र कहते हैं ॥

प्रकारांतर

गर्भयंत्रंप्रवक्ष्यामि पिष्टिकाभस्मकारकं॥
चतुरंगुलदीर्घांतु त्र्यंगुलोन्मितविस्तराम्
मृन्मयींउदृढांमूषां वर्तुलंकारयेन्मुखं लव

सुखेसंस्थाप्यछिद्राणि कृत्वाचैवशरावके
शरावसहितंपात्रं गर्त्तस्थेभाजनेन्यसेत॥
संधिलेपंततःकृत्वा गर्त्तमापूर्यमृत्स्नया
पश्चादग्निंचप्रज्वाल्य स्वांगशीतंसमुद्धरे
त् पश्चात्तत्पात्रमध्यस्थं पात्रयुक्त्यास
माहरेत् तदंतस्थंतुतैलं ग्रण्हीयाद्विधिपूर्व
कं पातालाख्यमिदंयंत्रं भाषितंशंभुना
स्वयं॥

अर्थ— एक हाथ गहरा गढा खोदे. उसमें बडे मुख का पात्र रखे. पीछे दूसरे पात्र में औषधि रखकर उसके ऊपर छेद वाला शराव ढक देवे. और उस शराव समेत गढेवाले पात्र के ऊपर उलटा रखे ताकि दो नों का मुख मिलजावे पीछेसं धि लेप कर देवे. और उस गढे को मिट्टी से भरदेवे. और ऊपर अग्नि जलावे. तो शराव केछि द्र द्वारा तेल अथवा अर्क खिंचकर नीचे के पात्र में गिरे. पी छे स्वांगशीतल होने पर तेल अथवा अर्क के पात्र को यु क्ति से निकाल लेवे. इसयंत्र को पतालयंत्र कहते हैं यह शिव ने कहा है॥

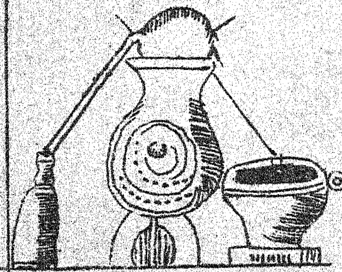


तेजोयंत्र

भांडेचार्द्धप्रमाणेन द्रव्यस्याप्यंप्रयत्नतः
तन्मुखाद्दिनलीयंत्रं संस्थाप्यंचनिरोधयेत
पश्चान्मंदाग्निप्रज्वाल्य जलंदत्त्वोर्ध्वपा
त्रके तत्तसनालिकाद्वारा निःसार्यंच पुनःपुनः

नीचस्थनलिकावक्रे भांडस्याप्यंद्वितीय कम् तस्मिन्नर्कश्चसंधायी गृण्हीयात्तुवि विशेषतः तेजोयंत्रमितिख्यातं तथान्यैर्ल वकंमतं॥

अर्थ— एक वडा पात्र लेकर उसको आधा द्रव्य से भरउ सके ऊपर दो नली का यंत्र रखे पीछे संधि लेपकर उसके नीचे मंदाग्नि जलावे ऊपर के पात्र में जल भर देवे· जब



वह जल गरम होजाय तब नली के द्वा रा निकाल डाले इसी प्रकार जब २ गरम होवे· तब२ निकाल डाले नीचे की नली के मुख पर एक पात्र स्था पन करे· उसमें सब अर्क खिंचकर इकट्ठा होवे इसको तेजोयंत्र कहतेहैं· और कोई इसको लंबकयंत्र भी कहते हैं॥

कच्छपयंत्र

खर्परंपृथुकंसम्यक विस्तारंतस्यमध्य तः आलवालंपुटेकृत्वा तन्मध्येपारदं क्षिपेत ऊर्ध्वाधस्तुविडंदत्वा मल्लेनारुध्य यत्नतः ऊर्ध्वंदेयंपुटंतस्य यंत्रंकच्छपसं ज्ञकम् जारणार्थंरसस्योक्तं गंधादीनांविशे षतः॥



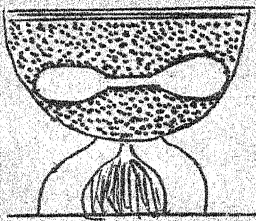
अर्थ— मोटा और वडा खीपरा लेवे उसके वीच में थामलासा वनावे उस में पारा भर देवे· उसके ऊपर नीचे वि ड देवे· तदनंतर मल्ल ऊपर लेपकर

बंद करे उसके ऊपर ढकना देकर ऊपर उसके अग्नि का पुटदेवे यह पारद की गंधक जारणे को कच्छपयंत्र कहा है ॥

तुलायंत्र

वृन्त काकारमूषेद्वे तयोः कुर्यादधः खलु प्रदेशमात्रांनलिका मृदालिप्तसुगंधिकां तत्रैकस्यांक्षिपेत्सूत मन्यस्यांगंधचूर्णकं निरुध्यमूषयोर्वक्त्रे वालुकायंत्रकेक्षिपे त् गंधाधोज्वालयेदग्नि तुलायंत्रमुदाहृ तम् तालगंधाश्मसाराणां जारणार्थमुदा हृतम् ॥

अर्थ- वैंगन के आकर दो मूषा बनावे उनके नीचे प्रादे श अंगूठा से लेकर तर्जनी तक मान को प्रादेश कहते हैं इतनी बडी नली बनावे उन दोनो मे जोड़ देकर मिट्टी से



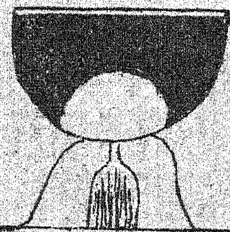
संधि लेपकर एक मूषा में पारा भरे दूसरे में गंधक का चूर्ण भरे पीछे उनको वालुकायंत्र में रखकर गंधक के नीचे अग्नि जलावे तो पारे काजारण होवे इसको तुलायंत्र कहते हैं इसयंत्र से हरिताल गंधक लोह इनका जारण होता है ॥

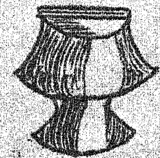
जलयंत्र

उपर्यापस्तलेतापो मध्येचरसगंधको जलयंत्रमिदंगोप्य यंत्रंश्रेष्ठंसमीरितं अस्मि नस्वर्णादिसूतत्वं गंधकादिचजारयेत् । कृत्वालोहमयींपात्री मधोमुखसमन्वि तं सुखमध्येक्षिपद्द्रव्यं पात्रवक्त्रंनिरु

घर्षयेत् लोहचक्रिकपारुख्वा तत्संधिंसाधु
लेपयेत् नास्मिन्कोष्ठादीपेदस्ने छागंलोह
रजोन्वितम् पुनः पुनश्चसंरक्ष्के पुनरेभि
श्चलेपयेत् लोहवल्कबव्वूल कार्थेन
परिमर्दितं जीर्णकिट्टकारजः सूक्ष्म गुडचूर्ण
समान्वितम् लेपयेत्खलुतत्प्रोक्तं दुर्भेद्यं
सलिलैःखलु खटिकंपलु किट्टैश्च महि
षीदुग्धमर्दितैः यत्नयास्वत्नुया रुद्धेनगं
तुंदामतरसः विदग्धवनितांप्रौढ प्रेम्णाव
द्धःपुमानिव ततोजलंविनिक्षिप्य वह्निंप्र
ज्वालयेदधः अथवाकारयेन्मूषा पात्रल
ग्नामधोमुखीं लोहनामनुरूपाश्च तन्मू
र्षमुखरोधनी दत्वाचान्यातयोःसंधिं वि
लेप्यानास्हगादिभिः जलमूर्ध्वांविनिक्षि
प्य निस्संदेहाविपाचयेत जलयंत्रंतुवहु
भिर्दिनैरंवाहिजायते॥

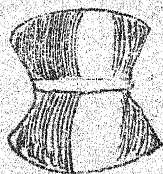
अर्थ — ऊपर जल नीचे अग्नि बीच मे पारा गंधक रखकर पचन करे. उसको जलयंत्र कहते हैं. इसयंत्रमेंसुवर्ण.अभ्रकसत्व गंधक आदि जारण करे एकलोह का वडा पात्र वनावे कि जिसका मुख नीचे को होवे. उसके मुख में पारा आदि द्रव्यों को भर पात्र





णस्यविंशतिर्भागा भागएकस्तुगुग्गुलोः सु
श्लक्ष्णंपेषयित्वातु वारंवारंपुनःपुनः मूषा
लेपंदृढंकृत्वा लवणाद्यमृदादिभिः कर्ष
तुषाग्निनाभूमौ स्वेदयेन्मृदुमानावित् अ
होरात्रंत्रिरात्रंवा रसेंद्रोभस्मतांव्रजेत ॥१॥

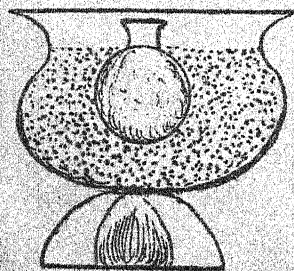
अर्थ— पारे की पिष्टि का भस्म कर्त्ता गर्भयंत्र को कहता हूं



चार अंगुल लंबी और तीन अंगुल चौडी ऐसी मिट्टी की दृढ मूषा बनावे और उसका गोल मुख करे. तदनंतर नोंन के वीस भाग. गूगल एक भाग इन दोनो को महीन पीसकर मूषा के ऊपर दृढ लेप करे. लवणादि मिट्टी से प्रथम पारे की पिट्टी रखे पीछे मुखबंद कर लेप करे पीछे जमीन में गढा खोदकर तुषाग्नि में मंद २ स्वेदन करे. तो एक दिनरातमें अथवा तीन रात्रि में पारा भस्म होवे.॥

हंसपाकयंत्र

खर्परंसिकतापूर्णं तन्कतस्योपरिंन्यसेत
अपरंखर्परंतत्र शनैर्मृद्वग्निनापचेत पंच
क्षारैस्तथामूत्रै लवणत्रावदुततःहंसपाकः
समाख्यातो यंत्रंतद्वार्तिकोत्तमैः॥



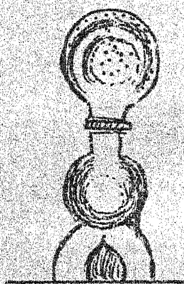
अर्थ— एक बडा खपरा बालू से भरा लेवे. उसमें औषधियों को रख ऊपर से दूसरा खिपरा मुख से मुख मिलाकर दृढ बंद कर देवे. इस प्रकार पांचों क्षारोंमें. मूत्रोंमें. नोंनोंमें. मंद

अग्नि से पाक करे. इस यंत्र को हंसपाक कहते हैं॥

विद्याधरयंत्र

अधःस्थाल्यांरसंदीत्वा विदध्यात्तन्मुखो परि स्थालींमूर्ध्वमुखींसम्यक् निरुध्य मृदुमृत्स्नया ऊर्ध्वस्थाल्यांजलंक्षिप्त्वा चुल्यामारोप्ययत्नतः अधस्ताज्ज्वालये द्वन्हिं यावत्प्रहरपंचकम् स्वांगशीतात्ततो यंत्रा गृन्हीयाद्रसमुत्तमम् विद्याधराभिधं यंत्र मेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम्॥

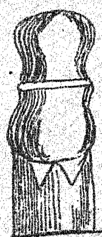
अर्थ— भीतर से चिकनी ऐसी दो हांडी लेवे. प्रथम एक हांडी में पिसा हुआ डली का शिंगरफ़ अथवा घुटा हुआ पारा डाल दूसरी हांडी के मुख पे हांडी मिलाकर वंदकर देवे. और दोनों की संधी मुलतानी मिले कपडे से वंद कर देवे. और ऊपर की हांडी पर जल भर देवे. जव २ जल



गरम होवे तव २ निकालकर शीतल भरदे. इन दोनों को चूल्हे पर रखकर नीचे अग्नि वलावे इस प्रकार पांच प्रहर अग्नि देवे पीछे स्वांगशीतल होने पर ऊपर की हांडी में जो पारा लगा होवे. उसको युक्ति से निकाल लेवे. इसको यंत्र के जानने वाले विद्याधरयंत्र कहते हैं॥

डमरूयंत्र

यंत्रस्थाल्युपरिस्थालीं न्युजांदत्वानिरुध्यते यत्रंडमरुकाख्यंत द्रसभस्मकृते हितम्॥

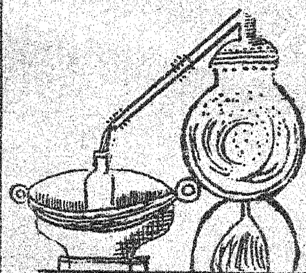


अर्थ— एक हांडी के मुख में दूसरी हांडी का मुख जोडकर संधियों को मुलतानी मिट्टी से बंद करे. इसयंत्र को डमरूयंत्र कहते हैं यहयंत्र पारद की भस्म के लिये उत्तम है॥

ऊर्ध्वनलिकायंत्र

भांडकंठादधश्छिद्रे वेणनालंविनिक्षिपेत् समानंकरकंवापि भांडंतत्रनिवेशयेत् संधिलिप्वाचनालाग्रे काचभांडंनिधापयेत॥ अधस्ताज्ज्वालवेद्धास्यं टंकयंत्रमितिस्मृतम॥

अर्थ— एक घडा (गगरा) लेकर उसके गले में छेद करे उसमें बांस की नली वा समान नरसल की लकडी जो पोली होवे. उसको उसमें प्रवेश कर और मुख पर उतना बडा ढकना देकर संधि लेप कर देवे. नली के मुख पर कांच का पात्र देवे. उसको पानी के किसी पात्र में रखे पीछे पूर्वोक्त घडे को भट्टी पर रखकर नीचे अग्नि देवे. तो अग्नि के ऊपरवाले पात्र में से औषधियों का अर्क खिचकर दूसरे पानी वाले पात्र में आकर इकट्ठा होवे. इसयन्त्र को टंकयंत्र कहते हैं. इससे ही अत्तार लोग सब प्रकार के अर्क खींचते हैं॥

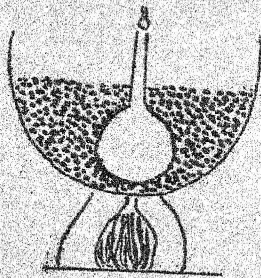


इति

वालुकायंत्र

भांडेवितस्तिगंभीरे मध्यांनिहितकूपिके
कूपिकाकंठपर्य्यंतं वालुकाभिश्चपूरि
ते भेषजंकूपिकासंस्थं वन्हिनायन्नपाचि
ते वालुकायंत्रमेतद्धी यंत्रतंत्रबुधैःस्मृतं

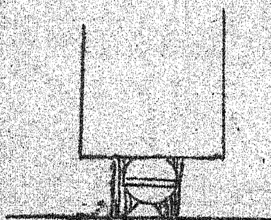
अर्थ— वालिश्त भर गहरा मिट्टी का पात्र लेकर उसकी पेंदी में पैसे के वरावर छिद्र करे. उसपर ठीकरी रखे कि जिसके दोनों तर्फ छिद्र रहें. पीछे उसमें आतिशी शीशी को रख उस शीशी के कंठ तक वालू रेत भर देवे. पीछे उस शीशी में औषधि भर मुख वंद करदेवे उस वालुका यंत्र को चूल्हे पर रख कहे हुए प्रमाण पचन करावे. इस यंत्र को यंत्रवेत्ता पुरुष वालुका यंत्र कहते हैं॥



भूधरयंत्र

वालुकासुसमस्तांगं गर्तेमूषारसान्विता॥
दीप्तोपलैः संहणया यंत्रंभूधरनामकम्

अर्थ— मूषा में पारा भरकर वंदकर वालूमें परिपूर्ण करे. उस वालू के ऊपर आरने उपलों की अग्नि देवे उस को भूधरयंत्र कहते हैं॥



पातालयंत्र

हस्तप्रमाणंनिम्नंच गर्तंकृत्वाप्रयत्नतः त
स्मिन भांडंचसंस्थाप्य तथान्यपात्रमाहरेत
तस्मिन्नौषधवर्गंच दत्वान्यंच शरावकं

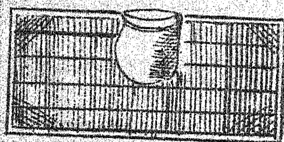
के मुख को ढक देवे. लोहे की टिकिया से बंद कर देवे. और उसकी संधियों को खूब दृढ बंद करदेवे. और उसकी संधियों में लोहचूर बकरे के रुधिर में सान कर लगावे. उसको वारवार सुखा२ कर उसका लेप करे पीछे पुरानी ईंट का कूकुआ गुड इनको बबूल के काढे में मिलाकर लेप करे. तो यहजल से भेदने में नहीं आवे. अर्थात् पानी नहीं झरे और उसपर खडिया नोन. लोहचूरा इनको भैंस के दूध में खरलकर लेप करे. तो पारा इस मुद्रा को त्याग कर नहीं जावे जैसे चतुर औ युवा स्त्री के प्रेम में फसा पुरुष उसको छोडकर नहीं जाता पीछे ऊपर जल भरकर नीचे अग्नि जलावे. अथवा पात्र से चिपटी नीचा मुख ऐसी मूषा बनावे. उसपर पत्र जमाकर मुख बंद करे. और उसकी संधियों को पूर्वोक्त प्रकार बंद करे. अर्थात बकरा के रुधिर में लोह की रज मिलाकर लेप करे. और चूना. गुड. पुरानीईंट का कूकुआ इनमें बबूल की छाल का काढा मिलाकर लेप करे पीछे सुखाकर ऊपर जल भरे और निस्संदेह अग्नि पर पाचन करे यह जलयंत्र बहुत दिनों में सिद्ध होता है.॥

गौरीयंत्र

गौरीयंत्रंप्रवक्ष्यामि सुखदंजारणाविधौ अष्टांगुलोच्छ्रुयाकृत्वा चतुरस्त्रासमोष्ठि का सूतनामात्समुत्कृत्य मध्येचूर्णेनल पयेत श्लक्ष्णंवस्त्रकृतांपीठिं कृत्वाप्राव च्छताम्रजां रूप्यजांहेमजांवापि सत्वेनापि विनिर्मितां निवेश्यतत्रचोर्ध्वाधो बलेश्चू र्णपिया पच तस्यांपिष्ट्याश्चतुर्थांश वारं

वारविशोषयेत् चक्केरवर्परचक्रींतु दत्वा लेप्याविशोष्यच ऊर्ध्वंहयरवुराकारं पुटं दद्याल्लघूत्पलैः

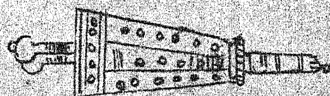
अर्थ— अब जोरण विषे सुरवकारक ऐसा गौरी यंत्र कहताहूं आंठ अंगुल ऊंची और लंबी चौड़ी चौ रवूंटी ऐसी समधरात ल ईंट लेकर, उसके बीच में गढ़ा करे, उसको कांच से साफ कर बीच में चूना लेप करे, तदनंतर अभ्रकसत्त्व, सोना, चां



दी इनमें घोटी पारे की पिष्ठी को पूर्वो क्त ईंट के गढे में भरकर ऊपर नीचे गं धक का चूर्ण बिछावे परंतु गंधकका चूर्ण पारे की पिष्ठी का चतुर्थांश लेवे पीछे उस छेद पर रवीपरा की टिकड़ी रख संधि लेप कर देवे, पीछे सुरवाकर उसके ऊपर घोड़े के खुर के समान आरने उपलों की अग्नि देवे, इसको गौरीयंत्र कहते हैं॥

कोष्टयंत्र

हस्तप्रमाणंदीर्घार मष्टसंख्यांगुलंतियक समभूभागेयदितं वृत्तंस्वत्कमसंपन्नं वाता यनाद्विवृत्तवृत्त भस्त्रीसुखतुल्यमित्यधो भागे प्रथमेंपशफवशानाले भस्त्राभिर्वा ऽ भ्रसत्वार्थ इदमेवकोष्टयंत्रं पूर्णविद्याद्य योचितांगारैः

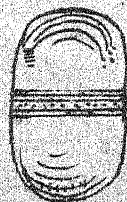


अर्थ— एक ऐसी लकड़ी लेवेजो ऊपर से नवरही होवे, और लंबाव में एक हाथ तथा चौड़ाव में चार

अंगुल होवे. परंतु तिरछा आठ अंगुल होवे. उसको समान पृथ्वी में रखकर भीगी हुई गाढी मिट्टी उस लकड़ी पर चढावे. औरदोनों और सुडौल मुख गोल करे. परंतु नीचेला मुख छोटा बनावे. पीछे सावधानी से उस लकडी को अचक निकाल लेवे तदनंतर उसको धूप में सुखाकर पीछे भट्टी में वा अंगीठी में छिद्र कर उस कोष्टिका को अच्छे प्रकार रख देवे. और उसके पिछले भाग में पशु के वसाकी नाल अथवा धोंकनी बांध तदनंतर भट्टी में पक्के कोले डालकर अभ्रक आदि सत्व निकालने को रखे. और अग्नि देय. और धोकनी से खूब धमावे. इस यंत्र को कोष्टयंत्र कहते हैं. इसकी क्रिया लुहारों से भलेप्रकार मालूम होसक्ती है॥

वज्रमूषा

वर्तुलागोस्तनाकारा वज्रमूषाप्रकीर्त्तिता द्वौभागौतुषदग्धस्य एकोवल्मीकमृत्ति का: लोहकिट्टस्यभागैकं श्वेतपाषाणभागकं नरकेशसमंकिंचित् छागीक्षीरेणपाचयेत यामद्वयंदृढंमर्द्य तेनमूषाचसंपुटं शोषयित्वारसंक्षिप्त्वा तत्कल्कैः संधिलेपितं वज्रमूषाइदंस्याता सम्यकसूतस्य मारणे॥



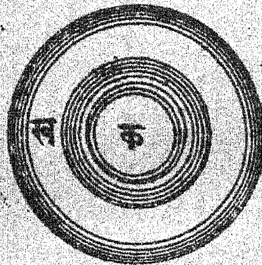
अर्थ— दो भाग तिनकों की राख. एक भाग बांबी की मिट्टी. एक भाग लोहे की कीट. एक भाग सफ़ेद पत्थर का चूरा. कुछ मनुष्य के बाल डाले. सबको एकत्रकर बकरी के दूध मेंऔ

दावे पीछे दो प्रहर पर्य्यंत अच्छी रीति से बारीक पीसे · पीछे उस मिट्टी को गौ के थन के सदृश गोल और लंबी मूषा बनावे · पीछे उसका ढकना बनावे · पीछे धूप में सुखाय भीतर पारा भर ढकना से ढक देवे · इसकी संधी उसी मिट्टी से बंद करे यह पारे के मारणे को वज्रमूषा यन्त्र कहा है · इसीकी अंधमूषा कहते हैं ॥

चक्रयंत्र

गर्त्तवाह्येभवेद्वक्रो मध्येगर्त्तेरसंकुरु चक्रयंत्रमिदंसिद्धं वाह्येगर्त्तेदहत्पुटं

अर्थ — पहले गोलाकार एक गड्ढा खोदे और उसके थोड़े दूर पर पहले के चारों ओर खाई के आकार दूसरा गढ़ा खोदे · पहले गढे में पारा रखे और दूसरे में अग्निपुट देवे · इसको चक्रयंत्र कहते हैं ॥



इष्टकायंत्र

मध्येगर्त्तसमायुक्तामिष्टकांकारयेद्भिषक गर्तेचैवसमास्थाय तस्यांसूतादिकं न्यसेत दत्वापरिसरावंच संधिमस्त्रंवणे लिंपेत तदूर्ध्वासिकताकिंचित दद्यादेयं पुटंलघु इष्टकायंत्रमेतद्धि जारयेद्गंधकादिकम् ॥



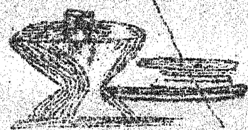
अर्थ — बीच में गढेलायुक्त एक ईंट लेवे · उस गढेले में पारे आदि की पिठी भर ऊपर सराव से मुख बंद कर उसकी संधियों को नोन मिट्टी से बंद

कर देवे · पीछे एक गढ़ा खोद उसमें उस ईंट को रख देवे. और ऊपर से थोडी वालू चुरक देवे · पीछे ईंट पर थोड़ा अग्नि का पुट देवे इसको ढ़ाष्टिकायंत्र कहते हैं॥

कोष्ठिकायंत्र

षोडशांगुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतंसमम
धातुसत्वनिपातार्थं कोष्ठिकंपरिकीर्त्तितम
वंशखादिरमाधूक वदरीदारुसंभवैः परि
पूर्णंहृदांगारैः रधोवातनकोष्ठके मात्रया
ज्यालमार्गेण ज्वालयेद्धुताशनम्॥ १॥

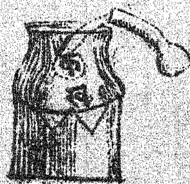
अर्थ — कोष्ठिकायंत्र सोलह अंगुल विस्तार में एक हाथ चौडा होना चाहिये · यह कोष्ठिका यंत्र संपूर्ण धातुओं के सत्व पातन करने को कहा है· वांस· खैर· महुवा· और वेर की लकडी के कोलाओं से उसको परिपूर्ण करे· नीचे के मार्ग में अर्थात् धोंकनी के धमाने से अग्नि को प्रज्वालित करे इस यंत्र को कोष्ठिकायंत्र कहते हैं यह कोष्ठकायंत्र का दूसरा प्रकार कहा·॥



वकयंत्र

दीर्घकंठकाचकुप्यां गिलयेत्काचभांडकम
तिर्यकत्वर्पचेच्चूल्यां वकयंत्रमिदंस्मृतम

अर्थ — वडी गर्दन की एक कांच की शीशी लेवे · उस शीशी के कंठगतभाग को दूसरी कांच की शीशी में प्रवेश कर देवे · इसको वकयंत्र कहते हैं पीछे उस आधारपात्र को वालुका



यंत्र में स्थापित करे. और नीचे अग्नि देवेतो उस शीशी की औषधियों का रस बाफ होकर दूसरी शीशी में प्राप्त होय जिसमें रस इकट्ठा होवे उसको किसी जल के पात्र में स्थिति करे.॥

नाडिकायंत्र

विनिधायघटेद्रव्य कनीयांशमधोमुखं घटमन्यमुखेतस्य स्थापयित्वापयोमुखं मृद्रुस्द्भिःसमालिप्य नाडिकांविनिवेशयेत यंत्रात्कुंडलितांभित्वा जलद्रोणमहन्नमास आधारभांडपर्यंत ततस्त्यांविधारयेत अधस्ताज्ज्वालयेद्वन्हिं यावद्वाष्पो विशेदधः गृन्हीयादाधारगतं निर्मलंरसमुत्तमम नाडिकायंत्रमेतद्धि मुनिभिःपरिकीर्त्तितम॥

अर्थ— एक घडे में औषधि भरे. और दूसरा छोटा पात्र उसके मुख पर रखकर दोनों के मुख चिकनी मिट्टी से ल्हेस देवे पीछे उस यंत्र में से एक गोल नल लेकर दूसरे जल के पात्र में डाल देवे. उस जल के पात्र में से भी निकाल दूसरे आधार पात्र में डाल देवे पीछे पूर्वोक्त यंत्र को चूल्हे पर रख नीचे अग्नि जलावे तो अग्नि के ऊपर वाले घडे में जो द्रव्य है. वो



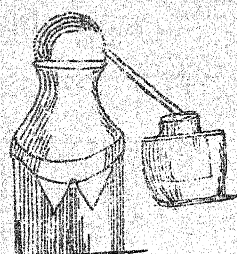
भाफ रूप होकर. नाली के रस्ते जल के पात्र में शीतल और इकट्ठी होकर नीचे के आधार पात्र में गीरे उसमें गिरे हुए निर्मल पारे को सावधानी से निकाल लेवे. इस यंत्र के द्वारा

गुलावजल और उत्तम २ अर्क आदि निकालते हैं. इस यंत्र को नाडि कायंत्र कहते हैं.॥

वारुणीयंत्र

ऊर्द्ध्वतोयसमायुक्तं जलद्रोणीविवर्जितं ॥ तोय संवेष्टिताधार सृजुनाडीसमन्वितं यंत्रंतद्वारुणी संज्ञंसुरासाधनकर्मणि ॥

अर्थ – पूर्वोक्त नाडिकायंत्र के समीप जलद्रोणी अर्थात् जलका पात्र रहता है॥ और जलद्रोणी रहित केवल ऊपर जलका ही

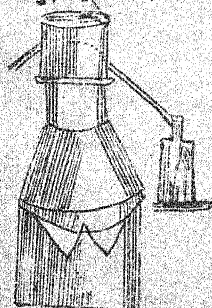


पात्र रहे उसको वारुणीयंत्र कहते हैं इसका नल सीधा होना है. इस यंत्र का आधार भांडजल का पात्र ऊपर रहता है इसके द्वारा दारू खींचते हैं.॥

दूसराप्रकार

बीजद्रव्यंघटेदत्वा संछाद्यान्येनतन्मुखं मृदासुखंविलिप्याथ नाडींवंशादिसंभवाम् यंत्रादाधारगांकृत्वा स्रावयेद्वह्विनारसम् वारुणीयंत्रमेतद्धि सुरासंसाधनेसुखम्

अर्थ – और एक प्रकार का सामान्य वारुणी यंत्र होता है एक मद्य (दारू) निकालने को घडा लेवे. उसका मुख किसी छोटे



पात्र से दोनों के मुख मिलाकर बंद करे. और संधियों को मुल्तानी मिट्टी से लेस देवे. पीछे ऊपर के पात्र में बांस आदि का नलवा लगाकर किसी दूसरे आधार पात्र में मिलादेवे. उस आधार पात्र के नीचे शीतलजल भरा रखे इस प्रकार बना वारुणीयंत्र सुरा (मद्य

आदि बनाने को शस्त्र है॥

तिर्यकपातयंत्र

घटेरसंविनिक्षिप्य सजलंघटमन्यकं तिर्य
कमुखंद्वयोः कृत्वा तन्मुखंरोधयेत्सुधीः
रसाधोज्वालयेदग्निं यावत्सूतोजलंवि
शेत् तिर्यकपातनमित्युक्तं सिद्धैर्नागार्जु
नादिभिः॥

अर्थ — दो घड़े तिरछे रखे · दोनों के मुख आपस में मिला देवें इसको तिर्यकपातन यंत्र कहते हैं · एक घडे में पारा और दूसरे में जल भरे दोनों घडों के मुख की संधि भले प्रकार बंद करे · पारे वाले घडे के तले अग्नि जलावे · अग्नि के प्रभाव से पारा उड़कर जलवाले घडे में प्रवेश करे इसक्रिया को तिर्यक पातन कहते हैं॥



शेष यंत्र उत्तरखंड में लिखे जायँगे

नानातंत्रान्वीक्ष्य स्वमतं संयोज्य यत्नतः सुभगं
रसराजसुंदरेऽस्मिन्मध्यमखंडस्तु पूर्णतां नीतः

इति श्री माथुर दत्तराम प्रणीते रसराज सुन्दर

मध्यम खंडः समाप्त

समाप्तोयं मध्यमखण्ड

नं.	नाम किताब	की.	मह.
१	रसराज सुंदर के प्रथम खण्ड का पूर्व भाग	७)	ɔ
२	तथा उत्तर भाग	।ऽ)	ɔ
३	रसराज सुंदर का मध्यम खण्ड	।ऽ)	ɔ
४	पूर्व खण्ड और मध्यम खण्ड मिले	१)	ɔ
५	रसराज सुंदर का उत्तर खण्ड छप रहा है २ मास पीछे मि·		
६	माधव निदान भाषाटीका	२।)	ɔ
७	हंसराज निदान भाषाटीका विलायती काग़ज़ पर	१ऽ)	ɔ
८	तथा पतले काग़ज़ पर	॥ऽ)	ɔ
९	नाडी प्रकाश भाषा टीका	ɔ॥	॥
१०	अजीर्ण मंजरी भाषा टीका	ɔ॥	॥
११	वैद्यजीवन भाषा टीका	।ऽ)	ɔ
१२	रमल नव रत्न ज्योतिष भाषा टीका	।ऽ)	ɔ
१३	अमृत सागर बंबई का	३)	।ɔ
१४	इलाजुल्ल ग़ुरबा भाषा हिन्दी	॥ऽ)	ɔ
१५	दशम सकंध भागवत भाषा टीका मोटा काग़ज़	५)	॥)
१६	तथा पतला काग़ज़	३)	॥)
१७	संस्कृत प्रवेशिनी भाषा सह	ɔ)	॥
१८	योग चिन्तामणि भाषा टीका सह	॥।)	ɔ

निघंट रत्नाकर भाषाटीका और मूल अखबार के तौरपर छापनेका विचार है जिन साहबों को लेना मंजूर हो वह नीचे लिखे पते से पत्र द्वारा बहुत जल्द लिखें ताकि उनके पास नमूना भेजा जावे इसका प्रबंध आषाढ मास से होगा॥ दत्तराम चौबे

नई सडक

(मथुरा)